(७) बादर तेउ काय पर्याप्ताके स्थान कहा है ?

अढ़ाईद्वीप और दो समुद्रोंमें निर्व्याघातापेक्षा तथा पदरह कर्म भूमिमें और व्याघातापेक्षा और पाचों महाविदेहमें बादर तेउ कायके स्थान है, उत्पात समुदघात और स्थान तीनोलोकके असंख्या तमें भाग है

(८) बादरतेउ कायके अपर्याप्ताका स्थान कहा है ? जहां पर बादरतेउ कायके पर्याप्ताका स्थान है। वहीं अपर्याप्ताका भी स्थान है। उत्पात लोकके असंख्यातमें भाग "दोसु उड्ढ कवाडेसु तिरिय लोयतट्टेय" अर्थात उर्ध्व १८०० योजन, तिरछा ४५ लक्ष योजनका कपाट तिरछा लोकके अन्त तक याने सम्भूरमणके बाहरकी वेदिका तकके जीव आके मनुष्य लोकके तेउ काय पने उत्पन्न होते हे। समुदघात सर्व लोकमें स्थान लोकके असंख्यातमें भाग।

(९) सूक्ष्मतेउ कायके तीनो बोल सर्व लोक पृथ्वी कायवत्.

(१०) बादर वायु काय पर्याप्ताके स्थान कहा है? सात घण वायु, सात तण वायु, घणवायु तण वायुके वलीयोमें अधो-लोके, पाताल कलशा, भुवनपतिके भुवनोंमें भुवनके विस्तारमें भुवनके छिद्रमें नारकी और नारकीके विस्तारमें। उर्ध्वं वैमानमें वैमानके विस्तारमें वैमानके छिद्रमें। तिरछा लोक पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण दिशा विदिशा में सर्व लोकाकाशके छिद्रमें याने सर्व लोककी पोलारमें वायु कायका स्थान है। उत्पत्त और समुद्घात लोकके घणे असंख्यातमें भागमें है।

(११) बादर वायु कायके अपर्याप्ताका स्थान कहा है ? जहा बादर वायु कायका पर्याप्ता है वहा अपर्याप्ता भी है। उत्पात समुद्घात सर्व लोकमें स्थान लोकके घणे असंख्यातमें,

(१२) **सुक्ष्म वायु** कायके पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी कायवत् ।

(१३) **बादर वनस्पति** कायके पर्याप्ताका स्थान कहा है ? जहा पर जल है उन सब स्थानोंमें वनस्पति काय है (जलमें वनस्पति कायकी नियमा है । उत्पात, समुद्घात सर्व लोकमें स्थान लोकके असंख्यातमें भाग है ।

(१४) **बादर वनस्पति** कायके अपर्याप्ताका स्थान कहा है ? जहा पर्याप्ता वहा अपर्याप्ता भी है । उत्पात् समुदघात सर्व लोकमें स्थान लोकके असंख्यातमें भाग है ।

(१५) **सूक्ष्म वनस्पति** कायके पर्याप्ता अपर्याप्ता सर्व लोक व्यापी है । यावतपृथ्वी कायवत कहना ।

(१६) **बेरिन्द्री, तेरिन्द्री, चौरिन्द्री** और तीर्यच पचेन्द्रीके पर्याप्ता अपर्याप्ताका स्थान जहा जल है वहा इनकी नियमा है परन्तु उर्ध्वलोक मेरु पर्वतकी वापी तक और अधोलोक सलीला वती विजय तक बेरिन्द्री आदि जीवोंके स्थान है । उर्ध्व देवलोकोंकी वपी आदिमें बेरिन्द्री आदि जीव नहीं है ।

(१७) **मनुष्य** पर्याप्ता अपर्याप्ताके स्थान कहा है ? अढाईद्वीपमें पन्दरह कर्मभूमी तीस अकर्म भूमी छप्पन अन्तरद्वीपोंमें मनुष्य उत्पन्न होते है उत्पात्, समुद्घात और स्थान लोकके असंख्यातमें भाग है ।

(१८) **नारकी** पर्याप्ता अपर्याप्ताके स्थान कहा है ? सातों नरकके ८४ लक्ष नरकवासमें नारकी उत्पन्न होते है । उत्पात ... स्थान लोकके असंख्य ...

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं० ४६

संग्रहक—

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी।

(१९) **देवताओंके** पर्याप्ता अपर्याप्ताका स्थान कहां है? भुवनपति देवता अधोलोक रत्नप्रभा नारकीके आन्तरोंमें ७७२००००० भवनोंमें। वाणव्यतरोंके असंख्याते नगर तिरछे लोकमें है। और ज्योतिषीयोंके भी असंख्याते विमान तिरछा लोकमें हैं वे उनके स्थान है। वैमानिक देवता उर्द्धलोकमें उत्पन्न होते है, उनके ८४९७०२३ विमान है। इन्हीं स्थानोंमें देवता उत्पन्न होते हैं। उत्पात, समुद्घात, स्थान लोकके असंख्यातमें भाग है। देवता नारकीके स्थान और परिवारका वर्णन सविस्तार आगे वर्णन करेंगे।

(२०) **सिद्ध भगवानका** स्थान कहा है? चौदे राज-लोकके अग्र भाग अर्थात् सिद्धशिलाके ऊपर एक योजनके २४वें भाग याने ३३३ धनुष्य ३२ अगुल प्रमाण क्षेत्र है। वहा सास्वत आबाधित सुखमें सिद्ध भगवान विराजते हैं। इति।

यन्त्र।

मार्गणा	उत्पन्न	समुद्घात	सस्थान
पाच सूक्ष्म स्थावर प० अ०	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक
बादर पृथ्वी पाणी वना० अप०	सर्वलोक	सर्वलोक	लो अ मा
,, तेउकायके अप०	तीर्च्छोलोक	सर्वलोक	मनुष्य लोक
,, वायुकायके अप०	सर्वलोक	सर्वलोक	लो अ मा
,, तेउकायके पर्या०	लोक० अस	लोक अस	मनु० लोकमे
,, वायुकायके पर्या०	लोकके घणा अस० भाग	लोकके घणा अस० भाग	लोकके घणा अस० भाग
,, पृथ्वी पाणी पर्या०	लोक० अस	लोक अस	लोक अस
,, वनस्पति पर्या०	सर्व लोकमे	सर्वलोकमे	लोक अस
शेष १९ दडकके जीव	लोक० अस	लोक अस	लोक अस०

सेवभते सेवभते तमेवसच्चम्।

थोकडा न० २

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३

(५ इन्द्रीयोंकी अल्पाबहुत्व)

(१) सबसे स्तोक पचेन्द्री (२) चौरिन्द्री वि शेषा (३) तेरिन्द्री वि० (४) बेरिन्द्री वि० (५) अनेन्द्री अनतगुणा (६) एकेन्द्री अनन्तगु० (७) सइन्द्री वि०

२

(१) सबसे स्तोक पचेन्द्री अपर्याप्ता (२) चौरिन्द्री अप० वि० (३) तेरिन्द्री अप० वि० (४) बेरिन्द्री अप० वि० (५) एकेन्द्री अप० अनन्तगु० (६) सइन्द्री अप० वि०

३

(१) चौरिन्द्री पर्याप्ता सबसे स्तोक (२) पचेन्द्री प० वि० (३) तेरिन्द्री पर्या० वि० (४) बेरिन्द्रि पर्या० वि (५) एकेन्द्रिय पर्या० अन० गु० (६) सइन्द्री पर्या० वि०

४

(१) सइन्द्रीय अपर्याप्ता सबसे स्तोक (२) सइन्द्रीय पर्याप्ता सख्यात् गु०

(१) बेरिन्द्री पर्याप्ता सबसे स्तोक (२) बेरिन्द्री अपर्याप्ता अस० गु० एव तेरिन्द्री चौरिन्द्री और पचेन्द्रीका भी कह देना

५

(१) चोरिन्द्री पर्या० स्तोक (२) पचेन्द्रीपर्या० वि० (३) बेरिन्द्री पर्य० वि० (४) तेरिन्द्री पर्या० वि० (५) पचेन्द्री अप० अस० गु० (६) चौरिन्द्री अप० वि० (७) तेरिन्द्री अप० वि० (८) बेरिन्द्री अप० वि० (९) एकेन्द्री अप० अन० गु०

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं० ८६

श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध

या

थोकडा प्रबन्ध।

भाग ११ वा

सम्पादक—
श्रीमदुपकेशगच्छीय
मुनि ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

द्रव्य सहायक और प्रकाशक—
श्री सघ फलोदि सुपनाकी आमदसे
प्रबन्धकर्ता—
शा० मेघराजजी मोणोयत
मु० फलोधि (मारवाड)

प्रथमावृत्ति १०००] [वीर स० २४४७

(१०) सइन्द्री अप० वि० (११) एकेंद्री पर्य० स० गु०
(१२) सइन्द्री पर्या० वि० (१३) सइन्द्री वि०

सेवभंते सेवभंते तमेव सचम् ।

थोकडा न० ३

श्री पन्नवणा सुत्र पद ३

(छे कायके २० अल्प०)

१

(१) त्रस काय सबसे स्तोक (२) तेउकाय असं० गु० (३) पृथ्वीकाय वि० (४) अप्पकाय वि० (५) वायुकाय वि० (६) अकाय अन० गु० (७) वनस्पति अन० गु० (८) सकाय वि०

२

(१) त्रसकाय अपर्याप्ता सबसे स्तोक (२) तेउकाय अप० असं० गु० (३) पृथ्वीकाय अप० वि० (४) अप्पकाय अप० वि० (५) वायुकाय अप० वि० (६) वनस्पतिकाय अप० अन० गुणा (७) सकाय अप० वि०

(३)

(१) त्रसकाय पर्याप्ता सबसे स्तोक (२) तेउकायक पर्या० असं० (३) पृथ्वीकाय पर्या० वि० (४) अप्पकाय पर्या० वि० (५) वायुकाय पर्या० वि० (६) वनस्पतिकाय पर्या० अन० (७) सकाय पर्या० वि०

४

(१) सकाय अपर्याप्ता सबसे स्तोक (२) सकाय पर्याप्ता)
संख्यातगुणा एव पृथ्वी अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति

(१) सबसे स्तोक त्रस काय पर्याप्ता (२) त्रसकाय अपर्याप्ता असं० गु०

५

(१) सबसे स्तोक त्रस काय पर्याप्ता (२) त्रस काय अपर्या० असं०गु० (३) तेऊ काय अपर्या० असं०गु० (४) पृथ्वी काय अपर्या०वि० (५) अप्प काय अपर्या० वि० (६) वायु काय अपर्या० वि० (७) तेऊ काय पर्या० सं०गु० (८) पृथ्वीकाय पर्याप्ता वि० (९) अप्पकाय पर्या० वि० (१०) वायु काय पर्याप्ता वि० (११) वनस्पति काय अपर्या० अनं०गु० (१२) सकाय अपर्या० वि० (१३) वनास्पति काय पर्या० सं० गु० (१४) सकाय पर्या० वि० (१५) सकाय वि० ।

६

(१) सबसे स्तोक सूक्ष्म तेऊ काय (२) सूक्ष्म पृथ्वी काय वि० (३) सूक्ष्म अप्प काय वि० (४) सूक्ष्म वायु काय वि० (५) सूक्ष्म निगोद असं० गु० (६) सूक्ष्म वनास्पति काय अनं० (७) सूक्ष्म वि०

७

(१) सबसे स्तोक सूक्ष्म तेऊ काय अपर्या० (२) सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्या० वि० (३) सूक्ष्म अप्पकाय अपर्या० वि० (४) सूक्ष्म वायु काय अपर्या० वि० (५) सूक्ष्म निगोद अपर्या० असं० गु० (६) सूक्ष्म वनस्पति अपर्या० अनं० गु० (७) सूक्ष्म अपर्या वि०

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं० ८६

श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध

या

थोकडा प्रबन्ध।

भाग ११ वा

सम्पादक—

श्रीमदुपकेशगच्छीय

मुनि ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

द्रव्य सहायक और प्रकाशक—

श्री संघ फलोधि सुपनाकी आमदसे

प्रबन्धकर्ता—

शा० मेघराजजी मोणोयत

मु० फलोधि (मारवाड)

प्रथमावृत्ति १०००]   [वीर सं० २४४७

८

(१) सबसे स्तोक सूक्ष्म तेऊ कायका पर्या० (२) सूक्ष्म पृथ्वी काय पर्या० वि० (३) सूक्ष्म अप्प काय पर्या० वि० (४) सूक्ष्म वायु काय पर्या० वि० (५) सूक्ष्म निगोद पर्या० अस० गु० (६) सूक्ष्म वनस्पति काय पर्या० अन० गु० (७) समुचय सूक्ष्म पर्या० वि०

(१) सबसे स्तोक सूक्ष्म अपर्याप्ता (२) सूक्ष्म पर्याप्ता स० गु० एव पृथ्वी, अप्प, तेउ, वायु, वनस्पति और निगोद भी कहना ।

१०

(१) सबसे स्तोक सूक्ष्म तेऊ काय अपर्याप्ता (२) सूक्ष्म पृथ्वी काय अपर्या० वि० (३) सूक्ष्म अप्प काय अपर्या० वि० (४) सूक्ष्म वायु काय अपर्या० वि० (५) सूक्ष्म तेऊ काय पर्या० स० गु० (६) सूक्ष्म पृथ्वी काय पर्या० वि० (७) सूक्ष्म अप्प काय पर्या० वि० (८) सूक्ष्म वायु काय पर्या० वि० (९) सूक्ष्म निगोद अपर्या० अस० गु० (१०) सूक्ष्म निगोद पर्या० स०गु० (११) सूक्ष्म वनास्पति काय अपर्या० अन० गु० (१२) सूक्ष्म समुचय अपर्या० वि० (१३) सूक्ष्म वनास्पति काय पर्या० स० गु० (१४) समुचय सूक्ष्म पर्या० वि० (१५) समुचय सूक्ष्म वि०

११

सबसे स्तोक बादर त्रसकाय (२) बादर तेऊ काय अस० गु० (३) बादर प्रत्येक० शरीर वनस्पति काय अस० गु० (४) बादर निगोद अस० गु० (५) बादर पृथ्वी काय अस० गु०

विषयानुक्रमाणिका।

(६) बादर अप्पकाय अस० गु० (७) बादर वायुकाय अस० गु० (८) बादर वनास्पति काय अन० गु० (९) बादर समुचय वि०

१२

(१) सबसे स्तोक बादर त्रसकाय अपर्या० (२) बादर तेऊ काय अपर्या० अस० गु० (३) बादर प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय अपर्या० अस० गु० (४) बादर निगोद अपर्या० अस० (५) बादर पृथ्वीकाय अपर्या० अस० गु० (६) बादर अप्प काय अपर्या० अस० गु० (७) बादर वायु काय अपर्या० अस० गु० (८) बादर वनस्पति काय अपर्या० अन० गु० (९) बादर समु चय अपर्या० वि०

१३

(१) सबसे स्तोक बादर तेऊ काय पर्या० (२) बादर त्रस काय पर्या० अस० गु० (३) बादर प्रत्येक शरीर वनस्पति काय पर्या० अस० गु० (४) बादर निगोद पर्या० अस० गु० (५) बादर पृथ्वीकाय पर्या० अस० गु० (६) बादर अप्पकाय पर्या० अस० गु० (७) बादर वायुकाय पर्या० अस० गु० (८) बादर वनस्पतिकाय पर्या० अन० गु० (९) बादर पर्याप्ता वि०

१४

(१) सबसे स्तोक बादर पर्याप्ता (२) बादर अपर्याप्ता अस० गु० एव पृथ्वी, अप्प, तेऊ, वाऊ, प्रत्येक शरीर वनास्पति और बादर निगोद भी कहना।

(१) सबसे स्तोक बादर त्रसकाय पर्याप्ता (२) बादर अपर्या० अस० गु०

श्री रत्नप्रभसूरी सद्गुरुभ्यो नम

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध

भाग ११ वां

थोकडा न० १

श्री पन्नवणा सूत्र पद २

(स्थान पद)

चौवीस दडकके जीव कौनसे स्थानमें, कितने क्षेत्रमें और कहासे आके उत्पन्न होते है और समुदघात कितने क्षेत्रमें करते है यह सब इस थोकडे द्वारा समझाये जावेगे।

(१) बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ताके स्थान कहा है ? सातों नारकीका पृथ्वी पिंड और इसीपभारा पृथ्वी, अधोलोकमें पाताल कलसा भुवनपति देवके भुवन (रत्नमय है), नारकीके नरकावासा कुंभी आदि (पृथ्वी मय है) उर्ध्व लोकमें विमान, विमानका विस्तार, विमानका पृथ्वी पिंड और देवताओंके सयनासनादि जितने रत्नोंके पदार्थ है वे सब पृथ्वी कायके उत्पन्न होनेका स्थान है, तिरछेलोकमें पर्वत, कूट, शिखर, प्रासाद, विजय, वक्खार पर्वत, भरतादि क्षेत्र और वेदिकादि साश्वते पदार्थमें पृथ्वी कायके जीव उत्पन्न होते हैं जिनके तीन भेद है।

(१) उत्पन्न—लोकके असख्यातमें भागसे आके उत्पन्न होते है।

१५

(१) सबसे स्तोक बादर तेऊ काय पर्या० (२) बादर त्रस काय पर्या० अस० गु० (३) बादर त्रस काय अपर्या अस० गु० (४) बादर प्रत्येक शरीर वनस्पति काय पर्या० अस० गु० (५) बादर निगोद पर्या० अस० गु० (६) बादर पृथ्वी काय पर्या० अस० गु० (७) बादर अप्प काय पर्या० अस० गु० (८) बादर वायु काय पर्या० अस० (९) बादर तेऊ काय अपर्या० अस० गु० (१०) बादर प्रत्येक शरीर वना० काय अपर्या० अस० गु० (११) बादर निगोद अपर्या० अस० गु० (१२) बादर पृथ्वीकाय अपर्या० अस० गु० (१३) बादर अप्प काय अपर्या० अस० गु० (१४) बादर वायु काय अपर्या० अस० गु० (१५) बादर वनस्पति काय पर्या० अन० गु० (१६) बादर पर्या० वि० (१७) बादर वनस्पति काय० अपर्या० अस० गु० (१८) बादर अपर्या० वि० (१९) समुच्चय बादर वि०

१६

(१) सबसे स्तोक बादर त्रसकाय (२) बादर तेऊकाय अस० गु० (३) बादर प्रत्येक शरीर वन० काय अस० गु० (४) बादर निगोद अस० गु० (५) बादर पृथ्वी काय अस० गु० (६) बादर अप्पकाय अस० गु० (७) बादर वायु काय अस० गु० (८) सुक्ष्म तेऊ काय अस० गु० (९) सूक्ष्म पृथ्वी काय वि० (१०) सूक्ष्म अप्प काय वि० (११) सूक्ष्म वायु काय वि० (१२) सूक्ष्मनिगोद अस० गु० (१३) बादर वन०

(२) स्थान—उत्पन्न होनेका स्थान भी लोकके असंख्यात भाग है।

(३) समुद्घात भी लोकके असंख्यात भाग है।

( ) **बादर पृथ्वी** कायके पर्याप्ताके स्थान कहा है? जहां बादर पृथ्वी कायके पर्याप्ताका स्थान है वहीं बादर पृथ्वी कायके अपर्याप्तका भी स्थान है परन्तु उत्पात समुद्घात सब लोकमें है। क्योंकी सूक्ष्म जीव सर्व लोक व्यापी है और वे जीव मरके पृथ्वी कायमे आते है। इसलिये अपर्याप्त अवस्थामें सर्व लोक कहा। (स्थान) लोकके असंख्यातमें भाग है।

( ) **सूक्ष्म पृथ्वी** कायके पर्याप्त ऽपर्याप्ता सब एक ही प्रकारके है। इसमे तरतमता नही है कारण ये दोनों प्रकारके जीव लोकव्यापी है। इसलिये इनका उत्पात, स्थान और समुद्घात तीनो सब लोकमें है।

(४) **बादर अप्प** कायका स्थान कहा है? सातों घणोदधि, सातों घणोदधिके वलीया, अधोलोकके पाताल कलशोंमें, भुवनपतिके भुवनोंमें, भुवनके विस्तारमें, उर्ध्व लोकके वैमानमें, वैमानके विस्तारमें, अच्युत देवलोकके वैमान तक है। तिरछालोकमें तालाव, कूवा, नदी, द्रह, वापी, पुष्करणी आदि द्वीप समुद्र जहां जलका स्थान है वहा बादर अप्प काय उत्पन्न होती है। उत्पात, स्थान और समुद्घात तीनों लोकके असं० भाग है।

(५) **बादर अप्प** कायके अपर्याप्ताका स्थान कहा है? जहा पर बादर अप्प काय पर्याप्ता है वहा अपर्याप्ता भी हैं उत्पात, समुद्घात सर्व लोकमें है और स्थान लोकके असं० भागमें है। दृष्टीकायवत्।

(६) सूक्ष्म अप्प काय पर्याप्ताऽपर्याप्ता तीनों सर्व लोकमें है।

काय अन॰ गु॰ (१४) वादर वि॰ (१५) सूक्ष्म वन॰ काय अस॰ गु॰ (१६) सूक्ष्म वि॰

१७

(१) वादर त्रसकाय अपर्या॰ सबसे स्तोक (२) वादर तेऊ काय अपर्या॰ अस॰ गु॰ (३) वादर प्रत्ये॰ वन॰ अपर्या॰ अस॰ गु॰ (४) वादर निगोद अपर्या॰ अस॰ गु॰ (५) वादर पृथ्वी॰ अपर्या॰ अस॰ गु॰ (६) वादर अप्प॰ अपर्या॰ अस॰ गु॰ (७) वादर वायु॰ अपर्या॰ अस॰ गु॰ (८) सूक्ष्म तेऊ॰ अपर्या॰ अस॰ गु॰ (९) सूक्ष्म पृथ्वी॰ अपर्या॰ वि॰ (१०) सूक्ष्म अप्पकाय अपर्या वि॰ (११) सूक्ष्म वायु॰ अपर्या वि॰ (१२) सूक्ष्म निगोद अपर्या॰ अस॰ गु॰ (१३) वादरवन॰ अपर्या॰ अन॰ गु॰ (१४) वादर अपर्या॰ वि॰ (१५) सूक्ष्मवन॰ अपर्या॰ अन॰ गु॰ (१६) सूक्ष्म अपर्या वि॰

(१८)

(१) सबसे स्तोक वादर तेऊ॰ पर्या॰ (२) वादर त्रसकाय पर्या॰ अस॰ गु॰ (३) वादर प्रत्ये॰ वन॰ पर्या॰ अस॰ गु॰ (४) वादर निगोद पर्या॰ अस॰ गु॰ (५) वादर पृथ्वी॰ पर्या॰ अस॰ गु॰ (६) वादर अप्प॰ पर्या॰ अस॰ गु॰ (७) वादर वायु॰ पर्या॰ अस॰ गु॰ (८) सूक्ष्म तेऊ॰ पर्या॰ अस॰ गु॰ (९) सूक्ष्म पृथ्वी॰ पर्या॰ विशे॰ (१०) सूक्ष्म॰ अप्प॰ पर्या॰ विशेष (११) सूक्ष्मवायु॰ विशेष (१२) सूक्ष्म निगोद पर्या॰ अस॰ गु॰ (१३) वादर वन॰ पर्या॰ अन॰ गु॰ (१४) वादर पर्या॰ वि॰ (१५) सूक्ष्मवन॰ पर्या॰ अस॰ गु॰ (१६) सूक्ष्मपर्या॰ वि॰

(१९)

(१) सबसे स्तोक बादर पर्या० (२) बादर अपर्या० अस० गु० (३) सूक्ष्म अपर्या० अस० गु० (४) सूक्ष्म पर्या० स० गु० एवं पृथ्वी, अप्प० तेऊ०, वायु, वन० और निगोद भी कहना।

(१) सबसे स्तोक बादर त्रसकाय पर्या० (२) बादर त्रसकाय अपर्या० अस० गु०

(२०)

(१) सबसे स्तोक बादर तेऊ पर्या० (२) बादर त्रसकाय पर्या० अस० गु० (३) बादर त्रसकाय अपर्या० अस० गु० (४) बादर प्रत्ये० वन० पर्या० अस० गु० (५) बादर निगोद पर्या० अस० गु० (६) बादर प्रथ्वी० पर्या० अस० गु० (७) बादर अप्प० पर्या० अस० गु० (८) बादर वायु काय पर्या० अस० गु० (९) बादर तेउ काय अपर्या० अस० गु० (१०) बादर प्रत्ये० वना० अपर्या० अस० गु० (११) बादर निगोद अपर्या० अस० गु० (१२) बादर प्रथ्वी० अपर्या० अस० गु० (१३) बादर अप्प० अपर्या० अस० गु० (१४) बादर वायु० अपर्या० अस० गु० (१५) सूक्ष्म तेऊ० अपर्या० अस० गु० (१६) सूक्ष्म प्रथ्वी० अपर्या० वि० (१७) सूक्ष्म अप्प० अपर्या० वि० (१८) सूक्ष्म वायु० अपर्या० वि० (१९) सुक्ष्म तेऊ० पर्या० स० गु० (२०) सुक्ष्म पृथ्वी० पर्या० वि० (२१) सुक्ष्म अप्प० पर्या० वि० (२२) सुक्ष्म वायु० पर्या० वि० (२३) सुक्ष्म निगोद अपर्या० अस० गु० (२४) सुक्ष्मनिगोद पर्या स० गु० (२५) बादर वन० पर्या अन० गु० (२६) बादर पर्या० वि० (२७) बादर वन० अपर्या० असं० गु० (२८) बादर

(७६) एव सुवर्णादि ८ देवोंका ४८ सूत्र होता है

(७७) समुचय तिर्यंच	अन्तरमहूर्त	३ पल्योपम
(७८) सुमचय एकेन्द्रिय	,,	२२००० वर्ष
(७९) सूक्षम एकेन्द्रिय	,,	अन्तरमहूर्त
(८०) बादर एकेन्द्रिय	,,	२२००० वर्ष
(८१) समुचय पृथ्वीकाय	,,	२२००० वर्ष
(८२) सूक्ष्म ,,	,,	अतर मुहुर्त
(८३) बादर ,,	,,	२२००० वर्ष
(८४) समुचय अपकाय	,,	७००० वर्ष
(८५) सूक्ष्म ,,	,,	अन्तर मुहुर्त
(८६) बादर ,,	,,	७००० वर्ष
(८७) समुचय तेउकाय	,,	३ दिनकी
(८८) सूक्ष्म ,,	,,	अन्तर मुहूर्त
(८९) बादर ,,	,,	३ दिनकी
(९०) समुचय वायुकाय	,,	३००० वर्ष
(९१) सुक्ष्म ,,	,,	अन्तर मुहूर्त
(९२) बादर ,,	,,	३००० वर्ष
(९३) समुचय वनास्पतिकाय	,,	१०००० वर्ष
(९४) सूक्षम ,,	,,	अन्त मुहूर्त
(९५) बादर ,,	,,	१०००० वर्ष
(९६) बेंद्रिय	,,	१२ वर्ष
(९७) तेंद्रिय	,,	४९ दिन
(९८) चौरिन्द्रिय	,,	६ मास
(९९) समुचयतिर्यंच पाचेन्द्रिय	,,	३ पल्योपम

वि० (२९) बादर वि० (३०) सूक्ष्मवन० अपर्या० अस० गु० (३१) सूक्ष्म अपर्या० वि० (३२) सूक्ष्मवन० पर्या० स० (३३) सूक्ष्म पर्या० वि० (३४) सूक्ष्म वि०

(१) जीव स्तोक (२) पुद्गल अन० गु० (३) काल अन० गु० (४) सर्व द्रव्य वि० (५) सर्व प्रदेश अन० गु० (६) सर्व पर्याय अन० गु०

सवभत सेवभत तमेव सचम् ।

—❧—

थोकडा न० ४

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३

(खेताणु वाई)

लोक तीन है तथपि यहा पर लोकके ६ विभाग कर व्याख्या करते है।

(१) उर्द्ध लोक ज्योतिषियोंके ऊपरके तलेसे उर्द्ध लोक गिना जाता है जिसमें बारह वैमानिक देव, किल्विषिया तीन, लोकांतिक नव, ग्रैवेक नव, पचाणुत्तर विमान और मेरूके वापी अपेक्षा तिर्यच भी मिलते है। तिर्यचके ४८ भेद है जिसमें बादर तेउ कायके पर्यासा अपर्याप्ता वर्जके ४६ भेद मिलते है अर्थात् देवतोंके ७६ और तिर्यचके ४६ मिल्के १२२ भेद जीवके हैं।

(२) अधो लोक मेरू पर्वतकी समभूमिसे ९०० योजन नीचे जावे वहा तक तिरछालोक है उसके नीचे अधोलोक है जिसमें ७ नारकी १० भुवनपति १५ परमाधामि और शलिलावती विजया अपेक्षा मनुष्य और तिर्यच भी मिलते है अर्थात् अधो-

(१००) सनी तिर्यंच ,,	,,	३ पल्योपम
(१०१) असनी तिर्यंच ,,	,,	कोटपूर्व
(१०२) समुचय जलचर ,,	,,	,,
(१०३) सज्ञी जलचर ,,	,,	,,
(१०४) असनी ,, ,,	,,	,,
(१०५) समुचय थलचर	,,	३ पल्योपम
(१०६) सनी थलचर	,,	३ ,,
(१०७) असज्ञी थलचर	,,	८४००० वर्ष
(१०८) समुचय खेचर	,,	पल्योपमनो असं० भाग
(१०९) सज्ञी खेचर	,,	,,
(११०) असनी खेचर	,,	७२००० वर्ष
(१११) समुचय उरपरि सर्प	,,	कोडपूर्व
(११२) सज्ञी ,, ,,	,,	,,
(११३) असज्ञी ,, ,,	,,	५३००० वर्ष
(११४) समुचय भुजपरि ,,	,,	कोडपूर्व
(११५) सज्ञी भुजपरि सर्प	,,	,,
(११६) असज्ञी ,, ,,	,,	४२००० वर्ष
(११७) समुचय मनुष्य	,,	३ पल्योपम
(११८) सज्ञी मनुष्य	,,	,,
(११९) असनी मनुष्य	,,	अन्तर मुहूर्त
(१२०) व्यंतर देव	१०००० वर्ष	१ पल्योपम
(१२१) व्यंतरकी देवी	१०००० वर्ष	॥० पल्योपम
(१२२) समुचय जोतीषी देव	$\frac{1}{8}$ पल्योपम	१ पल्योपम १ लक्षव

लोकमें १४ नारकी ५० देवता १ मनुष्य ४८ तिर्यंच सर्व ११५ भेद जीवोंके मिलते हैं ।

(३) तिरछा लोक मेरू पर्वतके समभूमिसे ९०० योजन उर्ध्व लोक अर्थात् ज्योतषियोंके ऊपरके तले तक और अधोलोक नीचे ९०० योजन एवं १८०० योजन जाडपनेमें तिरछा लोक है जिसमें तिर्यंचके ४८ मनुष्यके ३०३ देवताओंके ७२ सर्व मिलके ४२३ भेद जीवके मिलते हे ।

(४) उर्ध्व लोक तिरछा लोक ज्योतीषीयोंके ऊपरके तलेकी १ प्रदेशके प्रतरमे और उर्ध्व लोकके नीचेका एक प्रदेशी प्रतर इन्हीं दोनों प्रतरोंको उर्ध्व लोक तिरछा लोक कहते है देवताओं-का गमनागमन तथा जीव मरके उर्ध्व लोकके या तिरछा लोकके अन्दर उत्पन्न हो या गमनागमन करते समय यह दोनों प्रतरोंको स्पर्श करते हैं ।

(५) अधीलोक तिरछा लोक यह भी जीवोंके गमनागमनके समय दोनों प्रतरोंको स्पर्श करते है ।

(६) तीनों लोक=उर्ध लोक अधो लोक और तिरछा लोक इन्हीं तीनों लोकको एक ही साथमें स्पर्श करे देवता देवीके आने जानेके अपेक्षा या जीव मरणांतिक समुदघात करते वखत तीनों लोकका स्पर्श करते हैं

अथ २४ दंडकके जीव ऊपर बताये ६ लोकमें कौनसा जीव किस लोकमें न्यूनाधिक वह अल्पा बहुत द्वारे बतावेंगें

(२०) बोलोंकी अल्पा बहुत

समुचय एकेन्द्रिय और पांच स्थावर एवं ६ बोल इन्हीं ६

(१२३) समुच्चय जोतीषीकी देवी $\frac{१}{८}$ पल्योपम १पल्योपम ५०००० ,,

(१२४) चन्द्र विमान देव ०। पल्योपम १पल्योपम १००००० ,,

(१२५) ,, ,, देवी ,, ०॥ ,, ५०००० ,,

(१२६) सूर्य विमाय देव ,, १ ,, १००० ,,

(२२७) ,, ,, देवी ,, ०॥ ,, ५०० ,,

(११८) ग्रह विमान देव ,, १ ,,

(१२९) ,, ,, देवी ,, ०॥ ,,

(१३०) नक्षत्र विमान देव ,, ०॥ ,,

(१३१) ,, ,, देवी ,, ०। ,,

(१३२) तारा विमान देव $\frac{१}{८}$ ०। ,,

(१३३) ,, ,, देवी $\frac{१}{८}$ $\frac{१}{८}$,, साधिक

(१२४) समुच्चय वैमानिक देव १पल्योपम ३३ मागरोपम

(१३५) ,, ,, देवी ,, ५५ पल्योपम

(१३६) सुधर्म देवलोक १ ,, २ सागरोपम

(१३७) ,, देवी १ ,, ५० पल्योपम

(१३८) परिगृहिता ,, ७ ,,

(१३९) अपरिगृहिता ,, ५० ,,

(१४०) ईशान देवलोक १ ,, साधिक २ सागरोपम साधिक

(१४१) ,, ,, देवी ,, ५५ पल्योपम

(१४२) परिगृहिता ,, ९ ,,

(१४३) अपरिघृहिता ,, ५५ ,,

(१४४) सनत कुमार देवलोक २ सागरोपम ७ सागरोपम

(१४५) महेन्द्र देवलोक २ सागरोपम साधिक ७, सागरोपम साधिक

बोलोंका पर्याप्ता और अपर्याप्ता करनेसे १८ बोल तथा समुचय जीव १९ और समुचय तियच एव २० बोल

(१) स्तोक उर्ध्व लोक तिरछा लोकमें

(२) अधो लोक तिरछा लोकमें विशेष

(३) तिरछा लोकमें असख्यात गुण

(४) तीनो लोकमें असख्यात गुण

(५) उर्ध्व लोकमें असख्यात गुण

(६) अधोलोकमें विशेष

(३) बोल नारकीका

समुचय नारकी और (२) पर्याप्ता (३) अपर्याप्ता

(१) स्तोक तीनों लोकमें

(२) अधोलोक तिरछा लोक असख्यात गुण

(३) अधोलोक असख्यात गुण

(६) बोल भुवनपतियोंका

(१) समुचय भुवनपति (२) पर्याप्ता (३) अपर्याप्ता (६) एव तीन बोल देवीका

(१) स्तोक उर्ध्व लोकमें

(२) उर्ध्व लोक तिरछा लोक असख्यात गुण

(३) तीनों लोकमें सख्यात गुण

(४) अधोलोक तिरछा लोकमे असख्यात गुण

(५) तिरछा लोकमें असख्यात गुण

(६) अधोलोकमें असख्यात गुण

(४) बोल

(१४६) ब्रह्म देवलोक		७	सागरोपम	१०	सागरोपम
(१४७) लातक देवलोक		१०	„	१४	„
(१४८) महा शुक्र	„	१४	„	१७	„
(१४९) सहस्त्र	„	१७	„	१८	„
(१५०) आनत	„	१८	„	१९	„
(१५१) पानत	„	१९	„	२०	„
(१५२) अरण	„	२०	„	२१	„
(१५३) अचुत	„	२१	„	२२	„
(१५४) प्रथम	ग्रैवेग	२२	„	२३	„
(१५५) दुजी	„	२३	„	२४	„
(१५६) तीजी	„	२४	„	२५	„
(१५७) चोथी	„	२५	„	२६	„
(१५८) पाचमी	„	२६	„	२७	„
(१५९) छट्ठी	„	२७	„	२८	„
(१६०) सातमी	„	२८	„	२९	„
(१६१) आठमी	„	२९	„	३०	„
(१६२) नवमी	„	३०	„	३१	„
(१६३) च्यार अनुत्तर विमान		३१	„	३२	„
(१६४) सर्वार्थ सिद्ध वैमान		३२	„	३३	„

ऊपर कहे हुवे १६४ बोलोंमें १ असज्ञी मनुष्य केवल अपर्याप्ता ही होता है वास्ते १६४ बोल्के अपर्याप्ताकी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तकी और उत्कृष्ट भी अन्तर महूर्तकी होती है और १६३ बोलोंके पर्याप्ताकी स्थिति जघन्य अपनी अपनी जघन्य

(१) तिर्यचणी (२) समुचयदेव (३) समुचयदेवी (४) पा चेन्द्रीका पर्याप्ता

(१) स्तोक उर्ध्व लोकमें

(२) उर्ध्व लोक तिरछा लोकमें असख्यात गुण

(३) तीनों लोकमें सख्यात गुणा

(४) अधोलोक तिरछा लोक सख्यात गुण

(५) अधोलोक सख्यात गुणा

(६) तिरछा लोक तीन बोल सख्यात गुणा पाचे द्रीयना पर्याप्ता असख्यात गुणा

(६) बोल मनुष्यका

(१) समुचय मनुष्य (२) पर्याप्ता (३) अपर्याप्ता एव (३) मनुष्यणीका

(१) स्तोक तीनों लोकमें

(२) उर्ध्व लोक तिरछा लोकमें मनुष्य असं० गु० मनुष्य णी सख्या० गु०

(३) अधोलोक तिरछालोक सख्यात गुणा

(४) उर्ध्वलोक सख्यात गुणा

(५) अधोलोक सख्यात गुणा (६) तिरछालोक सख्यात गुणा

(२) बोल व्यतर, तीन (३) देवका (३) देवीका

(१) स्तोक उर्ध्व लोक

(२) उर्ध्व लोक तिरछा लोक असख्यात गुणा

(३) तीनों लोकमें सख्यात गुणा

स्थितिमें अतर महुर्त न्यून और उत्कृष्टी अपनी अपनी उ० स्थितिसे अतर महुर्त न्यून समझना ।

१६४ समुचय बोल ऊपर वत् ।
१६४ अपर्याप्ताके
१६३ पर्याप्ताके
४०१ सर्व स्थिति पदका ४९१ बोल

सेवभते सेवभते तमेवसचम् ।

थोकडा न० ७

श्री पन्नवणासूत्र पद ५

(पज्जवा)

लोकमें पदार्थ दो प्रकारके है जीव और अजीव–जीव अनन्ते है और उनके ५६३ मेद हैं जिसका समावेश २४ दडकमें किया गया है । और अजीव भी अनन्ते है जिसके ५६० भेद है । इन सबको द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव ये चार भेद करके अलग २ बतलावेंगे जैसे द्रव्य—परमाणु, द्विप्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी क्षेत्र—एक आकाश प्रदेशसे यावत् असख्यात आकाश प्रदेश । काल—एक समयकी स्थितिसे यावत् असख्यात समयकी स्थिति वाला । और भावसे—वर्णादि २० बोलवाला जिसमें एक गुणसे यावत् अनन्त गुण पर्यन्त अनन्ते भेद है । वेहसव इस थोकड़े द्वारा पाठकोंको ऐसी सुगम रीतिसे बतलावेंगे कि हरकोई भी थोडे परिश्रमसे लाभ उठा सके । परन्तु इस थोकडेका रहस्य बहुत गभीर है । इस लिये पाठक वर्ग पहिले गहन दृष्टि द्वारा

(४) अधो लोक तिरछा लोक असख्यात गुणा
(५) अधोलोक सख्यात गु० (६) तिरछालोक सख्यात गुणा

(६) बोल ज्योतिषी देवका (३) देवीका (४)

(१) सर्व स्तोक उर्ध्व लोक (२) उर्ध्व लोक तिरछा लोक अस० गु०
(३) तीनों लोकमें स० गु० (४) अधोलोक तिरछा लोक अ० गु०
(५) अधो लोक स० गु० (६) तिरछा लोक अस० गु०

(६) बोल वैमानिक देवका (३) देवीका (४)

(१) स्तोक उर्ध्व लोक तिरछा लोक (२) तीनों लोकमें स० गु०
(३) अधो लोक तिरछा लोक स० गु० (४) अधो लोक स० गु०
(५) तिरछा लोक स० गु० (६) उर्ध्व लोक अस० गु०

(६) बोल तीन विकलेन्द्री (३) पर्याप्ता (३) अपर्याप्ता

(१) स्तोक उर्ध्व लोक (२) उर्ध्व लोक तिरछा लोक अस० गु०
( ) तिरछा लोक अस० गु० (४) अधो लोक तिरछा लोक अ० गु०
(५) अधो लोक स० गु० (६) तिरछा लोक स० गु०

(५) बोल

(१) समुचय पांचेन्द्रिय (२) अपर्याप्ता (३) समुचय त्रसकाय
(४) त्रसकाय पर्याप्ता (५) त्रसकाय अपर्याप्ता
(१) स्तोक तीनों लोकमें (२) उर्ध्व लोक तिरछा लोक सख्यात गु०
(३) अधो लोक तिरछा लोकमें सख्यात गु०
(४) उर्ध्व लोक सख्यात गु० (५) अधो लोक सख्यात गु०
६) तिरछा लोक अस० गु०

इसको समझ लें क्योंकि इस थोकडेको भाषा रूपसे विस्तारपूर्वक न लिखकर यत्ररूपसे ऐसा सुगम बनाकर लिखा है कि कंठस्थ करनेवालोंके लिये बहुत ही लाभदायक और उपयोगी है। परन्तु पहिले इस यत्रको समझनेके लिये जो नीचे परिभाषा लिखी है उसको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये विना परिभाषाके समझे यत्रसे इतना लाभ न होगा। इसलिये परिभाषाका समझना अति आवश्यकीय है।

पज्जवा-पर्यव-पर्याय-विभाग-हिस्सा यह सब एकार्थी हैं।

हे भगवान! पज्जवा कितने प्रकारके हैं? गौतम! दो प्रकारके—जीव पज्जवा और अजीव पज्जवा। जीव पज्जवा क्या संख्याते, असंख्याते, या अनन्ते हैं? गौतम! संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं। क्योंकि असंख्याते नारकी, असंख्याते भुवनपती, असंख्याते पृथ्वीकाय, असंख्याते अपकाय, असंख्याते तेउकाय, असंख्याते वायुकाय, अनन्ता वनस्पतिकाय, असंख्याते बेरिन्द्री, असंख्याते तेरिन्द्री, असंख्याते चोरिन्द्री, असंख्याते तीर्यच पचेन्द्री, असंख्याते मनुष्य, असंख्याते व्यन्तर, असंख्याते ज्योतिषी, असंख्याते वैमानिक और अनन्ता सिद्ध हैं इस वास्ते हे गौतम अनन्ते पज्जवे कहा है। यह सामान्यतासे पूछा। अब विशेषतासे पूछते हैं।

हे भगवान्! नारकीके नेरियेकि पज्जवा कितने हैं? गौतम अनन्ते एव यावत् चौवीस दंडक ये पज्जवा जीवके ज्ञानादि गुणोंकी अपेक्षा और शरीरके वर्णादिकी अपेक्षासे कहे गये हैं जिसका स्वरुप यत्रसे समझ लेना।

पुद्गल क्षेत्रापेक्षा

(१) स्तोक तीनों लोकमें (२) उर्ध्व लोक तिरछा लोक अनत गुणा
(३) अधो लोक तिरछा लोक विशेषा (४) तिरछा लोक अस० गु०
(५) उर्ध्व लोक अस० गु० (६) अधो लोक विशेषा

द्रव्यक्षेत्रापेक्षा

(१) स्तोक तीनों लोकमें (२) उर्ध्व लोक तिरछा लोक अनत गु०
(३) अधो लोक तिरछा लोक विशेषा (४) उर्ध्व लोक अस० गु०
(५) अधो लोक अनत गु० (६) तिरछा लोकमें सख्यात गु०

पुद्गल दिशा पेक्षा

(१) स्तोक उर्ध्व दिशा (२) अधो दिशा विशेषा
(३) ईशान नैऋत कोण अस० गु० (४) अग्नि वायव्य कोण विसेषा
(५) पूर्व दिशा अस० गु० (६) पश्चिम दिशा विशेषा
(७) दक्षण दिशा विशेषा (८) उत्तर दिशा विशेषा

द्रव्य दिशा पेक्षा

(१) स्तोक अधोदिशा (२) उर्ध्व दिशा अनत गुण
(३) ईशान नैऋत अनत गुण (४) अग्निवायु दिशा विशेषा
(५) पूर्व दिशा अस० गु० (६) पश्चिम दिशा विशेषा
(७) दक्षण दिशा विशेषा (८) उत्तर दिशा विशेषा

॥ इति ॥

सेवभते सेवभते तमेव सचम् ।

परिभाषा।

नारकी २-याने नारकी नारकी परस्पर द्रव्यपने तुल्य है क्योंकि वह भी एक जीव है और वह भी एक जीव है या जितने गनतीमें एक तर्फ है उतने ही दूसरी तर्फ है इसलिये परस्पर तुल्य कहा। जब द्रव्य तुल्य है तो प्रदेश पने भी तुल्य होगा क्योंकी सब जीवोंके प्रदेश बराबर है किसीका भी प्रदेश न्यूनाधिक नहीं है। इस वास्ते प्रदेश पने तुल्य कहा है।

अवगाहना चोठाण वलीया (४) अवगाहना शरीरकी ऊचाईको कहते है वह परस्पर चार प्रकारसे न्यूनाधिक है। जैसे एक नारकी की अवगाहना अगुलके असख्यातमें भाग है। और दूसरेकी ५०० धनुष्यकी है। तो असख्यात् गुण वृद्धि, असख्यात गुण हानी यह पहिला भागा हुवा। (१) एक नारकीकी अवगाहना ५०० धनुष्यकी है और दूसरेकी ५०० धनुष्यसे अगुलके असख्यतम भाग न्यून है। तो असख्यात भाग हानी। यह दूसरा भागा हुवा ॥२॥ एक नारकीकी अवगाहना ७॥। धनुष्य ६ अगुल है। और दूसरेकी ४०० धनुष्य है तो सख्यात गुण वृद्धि, सख्यात गुण हानी यह तीसरा भागा हुवा (३) और एक नारकीकी अवगाहना ५०० धनुष्य है और दूसरेकी ४९९ धनुष्य है तो सख्यात् भाग वृद्धि, सख्यात भाग हानी यह चौथा भागा हुवा। (४)

स्थिति—चौठाण बलिया (४)=जैसे एक नारकीकी स्थिति १०००० वर्षकी है और दूसरेकी ३३ सागर है तो असख्यात

थोकडा नं० ९

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३

(२५६ ढिगला)

(१) सर्वसे स्तोक जीव आयुष्य कर्म बाधनेवाला है
(२) अपर्याप्ता जीव सख्यात गुणा है
(३) सूता जीव सख्यात गुणा है
(४) समोहिया जीव सख्यात गुणा है
(५) सात वेदनेवाला जीव सख्यात गुणा है
(६) इन्द्रिय बहुता जीव सख्यात गुणा है
(७) अनाकार उपयोगवाला जीव सख्यात गुणा है
(८) साकार उपयोगवाले जीव सख्यात गुणा है
(९) नोइन्द्रिय बहुता विशेषा
(१०) असाता वेदनेवाला विशेषा
(११) असमोहिया जीव विशेषा
(१२) जागता हूवा जीव विशेषा
(१३) पर्याप्ता जीव विशेषा
(१४) आयुष्य कर्मका अबन्धका विशेषा

इन्हीं १४ बोलोंको ठीक ठीक समझमें आमानेके लिये शास्त्रकारोंने सर्व जीवोंके २५६ ढिगले (विभाग) करके बतलाये हैं

(१) आयुष्य कर्मके बाधनेवालोंका १ ढिगला
(२) आयुष्य कमके अबधकके २५९ ,,
(३) अपर्याप्ता जीवोंके २ ,,

गुणाधिक, असख्यात् गुणहीन यह पहिला भागा १ और एककी ३३ सागर दुसरेकी ११ सागरसे अन्तर मुहूर्त न्यून यह अस ख्यात् भाग अधिक और असख्यात भाग हीन दुसरा भागा २ और एक नारकीकी १ सागर दुसरेकी ३३ सागर यह सख्यात गुणाधिक और सख्यात गुण हानी तीसरा भागा हुवा ३ और एककी १२ सागर दुसरेकी २९ सागर यह सख्यात् भाग अधिक सख्यात् भाग हीन चौथा भागा हुवा ४ जहा तीनका अक हो वहा पहिला भागा न्यून समझना

वर्णादि २० लिखा है वहा वर्ण ५ गध २ रस ५ स्पर्श ८ एव २० उपयोग ९ लिखा है वहा ३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन एव ९ * तरतमताका जो कठक है उसमें जो छेठाण वलीया (षट गुण हानी वृद्धि) है सो यह हानी वृद्धि वर्णादि २० तथा उपयोग १२ की समझनी वह अतरे कोष्टकमें (१) का अक रखा गया है जिसका विवर्ण निचे देखो

१ अनन्ते भाग न्यून । अनन्ते भागाधिक ।
२ असख्याते भाग न्यून । असख्याते भागाधिक ।
३ सख्याते भाग न्यून । सख्याते भागाधिक ।
४ सख्याते गुण न्यून । सख्याते गुणाधिक ।
५ असख्याते गुण न्यून । असख्याते गुणाधिक ।
६ अनन्ते गुण न्यून । अनन्ते गुणाधिक ।

---

* उपयोग १२ है वह जिस बोलमें जितना पावे वह वह देख समझना ।

(४) पर्याता जीवोंके २९४ ढिगला
(५) सूता जीवोंके ४ „
(६) जागता जीवोंके २९२ „
(७) समोहिया मरण वालोंके ८ „
(८) असमोहिया मरण वालोंके २४८ „
(९) सात वेदनेवालोंके १६ „
(१०) असाता वेदनेवालोंके २४० „
(११) इन्द्रिय बहुता जीवोंके ३२ „
(१२) नोइन्द्रिय बहुता जीवोंके २२४ „
(१३) अनाकार उपयोगवाले जीवोंके ६४ „
(१४) साकार उपयोगवाले जीवोंके १९२ „

सेवभते सेवंभते तमेव सचम् ।

थोकडा न० ६

श्री पन्नवणासूत्र पद ४

(स्थितिपद)

नाम	जघन्यस्थिति	उत्कृष्टस्थिति
(१) समुचय नरक	१०००० वर्ष	३३ सागरोपम
(२) रत्नप्रभा „	१०००० वर्ष	१ सागरोपम
(३) शार्करप्रभा „	१ सागरोपम	३ „
(४) वालुकाप्रभा „	३ „	७ „
(५) पकप्रभा „	७ „	१० „
(६) धुमप्रभा „	१० „	१७ „

यह षट्गुण हानिवृद्धि है जिसको शास्त्रकारोंने 'छट्ठाणवडिए' कहते हैं और कोष्टकमें ४–३–२–१ का अंक स्थिति या अवगाहानामें रखा जाता है वहांका संकेत।

नम्बर १–६ को छोड देनासे चौठाणवडिए।
न० १–६–२ छोडनेसे तीठाण वडिए।
न० १–५–६ छोडनेसे तीठाण वडिए।
न० १–२–५–६ छोडनेसे दुठाण वडिए।
न० १–२–३–५–६ छोडनेसे एक ठाण वडिए
विशेष खुलासा मुनिमत्तग जो से रूबरू करो।

सामान्यतसे २४ दण्डकका यन्त्र

नंबर मार्गण	द्रव्य	प्रदेश	अवगाहना	स्थिति	वर्णादि २०	उपयोग	तरतमता
१ नारकी २	तुल्य	तुल्य	४	४	२०	९	६
२ असुकुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
३ नाग कुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
४ स्वर्ण कुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
५ विद्युत्कुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
६ अग्निकुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
७ द्वीप कुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
८ दिशा कुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
९ उदधी कुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
१० वायु कुमार २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६

(७) तमप्रभा „ १७ „ २२ सागरोपम
(८) तमतमाप्रभा „ २२ „ ३३ „
(९) समुचय देवता १०००० वर्ष ३३ सागरोपम
(१०) समुचय देवी „ ५५ पल्योपम
(११) समुचय भुवनपति „ १ सागरोपम साधिक
(१२) समुचय भुवनपतिदेवी „ ४॥ पल्योपम
(१३) समुचय दक्षिणका भुवनपति „ १ सागरोपम
(१४) समुचय दक्षिणका भुवनपतिदेवी „ ४॥ पल्योपम
(१५) समुचय उत्तरका भुवनपति „ १ सागरोपम साधिक
(१६) समुचय उत्तरका भुवनपतिदेवी „ ३॥ पल्योपम
(१७) समुचय असुरकुमार देव „ १ सागरोपम साधिक
(१८) समुचय असुरकुमार देवी „ ४॥ पल्योपम
(१९) चमरेंद्रिकेदेव „ १ सागरोपम
(२०) चमरेंद्रिकी देवी „ ४॥ पल्योपम
(२१) बलेन्द्रके देव „ १ सागरोपम साधिक
(२२) बलेंद्रकी देवी „ ३॥ पल्योपम
(२३) समुचय नागकुमार देव „ देशोना २ पल्योपम
(२४) समुचय नागकुमार देवी „ „ १ „
(२५) दक्षिण नागकुमार देव „ १॥ „
(२६) दक्षिण नागकुमार देवी „ ॥। „
(२७) उत्तर नागकुमार देव „ देशोना २ पल्योपम
(२८) उत्तर नागकुमार देवी „ „ १ „

१२ पृथ्वीकाय २	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१३ अप्प काय २	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१४ तेउकाय २	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१५ वायुकाय २	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१६ वनस्पति काय २	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१७ बेइन्द्री २	तु०	तु०	४	३	२०	५	६
१८ तेरिन्द्री २	तु०	तु०	४	३	२०	९	६
१९ चोरिन्द्री २	तु०	तु०	४	३	२०	६	६
२० तियच पचेन्द्री २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
२१ मनुष्य २	तु०	तु०	४	४	२०	२ १०	तु ६
२२ व्यतर २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
२३ ज्योतिषी २	तु०	तु०	४	२	२०	९	६
२४ वैमानिक २	तु०	तु०	४	३	२०	९	६
२५ सिद्ध	तु०	तु०	३	०	०	२	०

२४ दडकका विशेष विवर्ण

सकेत् सुचना

ज० जघन्य० अव० अवगाहना
म० मध्यम० च० चक्षु दर्शन
उ० उत्कृष्ट० अच० अचक्षु दर्शन

जघनय अवगाहना नारकी जघन्य अवगाहना नारकीपरे माफिक सब जगह कहना

नंबर	मार्गणा	द्रव्य	प्रदेश	अवगाहना	स्थिति	वर्णादि २०	उपयोग	तरतमता
१	ज० अव०नारकी २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	४	२०	९	६
२	म० अव०नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
३	उ० अव०नारकी २	तु०	तु०	तु०	४	२०	९	६
४	ज० स्थिति नारकी २	तु०	तु०	४	तु	२०	९	६
५	म० स्थिति नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
६	उ० स्थिति नारकी २	तु०	तु०	४	तु०	२०	९	६
७	ज०काला गुणनारकी २	तु०	तु०	४	४	१तु१९	८	६
८	म०कालागुण नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
९	उ०कालागुण नारकी २	तु०	तु०	४	४	१तु१९	९	६

६६ एवं शेष नीलादि उगणीस बोलोंका तीन तीन बोल (ज० म० उ०) गिननेसे ६७

नंबर	मार्गणा	द्रव्य	प्रदेश	अवगाहना	स्थिति	वर्णादि २०	उपयोग	तरतमता
६७	ज० मतिज्ञान नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	१तु९	६
६८	म० मतिज्ञान नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	६	६
६९	उ० मतिज्ञान नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	१तु५	६

८४ एवं शेष दो ज्ञान तीन अज्ञान ५ बोलोंके १५ भेद मति ज्ञानवत्०

नंबर	मार्गणा	द्रव्य	प्रदेश	अवगाहना	स्थिति	वर्णादि २०	उपयोग	तरतमता
८५	ज० च० नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	१तु८	६
८६	म० च० नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
८७	उ० च० नारकी २	तु०	तु०	४	४	२०	१तु८	६

(४) अवगाहनानाम=शरीरका प्रमाण
(५) प्रदेशनाम=परमाणुवादि प्रदेश
(६) अनुभाग नाम=शुभाशुभ प्रकृतिके रस

समुचय एक जीव और नरकादि चौवीस दंडकके एकेक जीव आयुष्य कर्मके साथमें उपर कहे छे बोल बांधते हैं एवं २५ को छो गुना करनेसे १५० भांगे एवं बहु वचनकी अपेक्षा भी १५० कुल ३०० इसी तरह तीनसौ निद्धत्त और तीनसौ निकाचित बंध होता है एवं ६०० यह छेसो नामकर्म छेसो गोत्रकर्म और छेसो नामगोत्रकर्मके साथ लगानेसे सब मिलाके १८०० भांगे आयुष्य कर्मके हुवे

जब जाती नाम निद्धत्त आयुष्य बांधते हैं व कितनी आकर्षनासे पुद्गल ग्रहण करते हैं अर्थात् आयुष्य कर्मके पुद्गलोंको खेंचते हैं जैसे पाणी पीती हुई गाय पानीको खेंचे वैसे जीव पुद्गलोंको खेंचता है वह कितनी आकर्षनासे खेंचता है ?

एक दो तीन यावत् उत्कृष्ट आठ कर्मकी आकर्षनासे खेंचते हैं इसमें एकसे यावत् आठ कर्मके आकर्ष करनेवाले जीवोंमें ज्यादा कम कौन है सो अल्पाबहुत्व करके बताते हैं

(१) आठ कर्मकी आकर्षना करनेवाले जीव सबसे स्तोक–
(२) सात ,, ,, ,, जीव संख्यातगुणा
(३) छे ,, ,, ,, ,, ,,
(४) पांच ,, ,, ,, ,, ,,
(५) चार ,, ,, ,, ,, ,,

चौरिन्द्री

६६ अवगाहना, स्थिति और वर्णादि २० वेरि द्रीवत्

६७ जं० मतिज्ञान चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	१तु३	६
६८ म० मतिज्ञान चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	४	६
६९ उ०मतिज्ञान चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	१तु३	६

७२ एव श्रुतिज्ञानके भी तीन बोल

७३ ज०मति अज्ञान चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	१तु२	६
७४ म०मति अज्ञान चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	४	६
७५ उ०मति अज्ञान चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	१तु१	६

७८ एव श्रुत अज्ञानके ३ बोल

७९ ज० च० चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	१तु१	६
८० म० च० चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	६	६
८१ उ० च० चौरिन्द्री	२	तु०	तु०	४	३	२०	१तु५	६

८४ एव अचक्षु दर्शनके तीन बोल

तीर्यंच पचेन्द्री

१ ज० अव० ती० पचेंद्री	२	तु०	तु०	तु०	३	२०	६	६
२ म० अव० ती० पचेंद्री	२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
३ उ० अव० ती० पचेंद्री	२	तु०	तु०	तु०	३	२०	९	६
४ ज० स्थिति ती० पचेंद्री	२	तु०	तु०	४	तु०	२०	४	६
५ म० स्थिति ती० पचेंद्री	२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
६ उ० स्थिति ती० ,,	२	तु०	तु०	४	तु०	२०	६	६
७ ज०कालागुण ती० ,,	२	तु०	तु०	४	४	१तु१९	९	६

(६) तीण ,, , ,, ,, ,,
(७) दो ,, ,, ,, ,, ,,
(८) एक ,, ,, ,, ,, ,,

जेसे जाति नाम निरूपकी समुचयजीवापेक्षा एक अल्पा बहुत्व बताइ है इसी माफिक गतिनामादि छे बोलोंकी अल्पा बहुत्व समुचय जीवोंकी करणी एव नरकादि २४ न्डक पर छे छे अल्पाबहुत्व करनेसे १५० अल्पाबहुत्व यावत उपरवत् १८०० मार्गोकी अल्पाबहुत्व कालेना इति

सेवभते सेवभते तमेव सचम् ।

थोकडा न० ११

श्रीपन्नवणा सूत्र पद १०

(चरमपद)

चरमकी अपेक्षा अचर्म होता है और अचर्मकी अपेक्षा चरम होता है इसमें क्रमसेक्म दो पदार्थ होना चाहिये यहापर रत्नप्रमादि एकेक पदार्थका प्रश्न है इसके उत्तरमें एक अपेक्षा नास्ति है और दूसरी अस्ति है इसीको स्यादवाद धर्म कहते हैं

हे भगवान ! पृथ्वी कितने प्रकार की है ? गौतम ! आठ प्रकार की है रत्नप्रभा, शर्करप्रभा, बालुप्रभा, पकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभ, तमतमाप्रभा और इशी प्रभारा (सिद्धशीला)

हे भगवान ! रत्न प्रभा नरक क्या (१) चरम है (२) अचरम है (३) घणा चरम है (४) घणा अचरम है (५) चर्म प्रदेश है (६) अचम प्रदेश है ? गौतम ! रत्नप्रभा नरक द्रव्या

८ म० फालगुण ती०पचेंद्री २ तु० तु० ४ ४ २० ९ ६
९ उ० फालगुण ती० ,, २ तु० तु० ४ ४ १तु१९ ९ ६
६६ एव शेष नीलादि १९ बोलोंके ५७ बोल
६७ ज०मतिज्ञान ती० पचेंद्री १ तु० तु० ४ ४ २० १तु२ ६
६८ म०मतिज्ञान ती० पचेंद्री २ तु० तु० ४ ४ २० ६ ६
६९ उ०मतिज्ञान ती० पचेंद्री २ तु० तु० ४ ३ २० १तु९ ६
७२ एव श्रुतज्ञानके ३ बोल
७३ ज०अवधिज्ञानी ती० पचेंद्री २ तु० तु० ४ ३ २० १तु५ ६
७४ म०अवधिज्ञानी ती० पचेंद्री २ तु० तु० ४ ३ २० ६ ६
७५ उ०अवधिज्ञानी ती० पचेंद्री २ तु० तु० ४ ३ २० १तु९ ६
८४ एव तीन अज्ञानके ९ बोल
८५ ज० च०ती० पचेन्द्री २ तु० तु० ४ ४ २० १तु८ ६
८६ म० च० ती० पचेन्द्री २ तु० तु० ४ ४ २० ९ ६
८७ उ० च० ती० पचेन्द्री २ तु० तु० ४ ४ २० १तु८ ६
९० एव अचक्षु दर्शनके तीन बोल
९१ ज०अवधिदर्शन ती०प० २ तु० तु० ४ ३ २० १तु८ ६
९२ म०अवधिदर्शन ती०प० २ तु० तु० ४ ३ २० ९ ६
९३ उ०अवधिदर्शन ती०प० २ तु० तु० ४ ३ २० १तु८ ६

मनुष्य ।

१ ज० अव० मनुष्य २ तु० तु० तु० ३ २० ८ ६
२ म० अव० ,, ,, तु० तु० ४ ? २० २तु१० ६
३ उ० अव० ,, ,, तु० तु० तु० १ २० ६ ६
४ ज० स्थिति ,, ,, तु० तु० ४ तु० २० ४ ६

पेक्षा एक है इसलिये चर्मादि ६ बोल नहीं हो सकते दूसरी अपेक्षा यदि रत्न प्रभा नरकके दो विभाग कर दिये जावे एक मध्य विभाग दूसरा अन्त विभाग और फिर उत्तर दिया जाय तो इसमें चरम पदका अस्तित्व होता है यथा यह रत्न प्रभा नरक द्रव्या पेक्षा (१) चर्म है क्योंकि मध्यके भागकी अपेक्षा बाहर (अन्त) का भाग चर्म है (२) अचर्म अन्तेके भाग की अपेक्षा मध्यका भाग अचर्म है क्षेत्रकी अपेक्षा (३) चम प्रदेश है। क्योंकि मध्यके प्रदेशकी अपेक्षा अन्तका प्रदेश चर्म है (४) अचर्म प्रदेश है क्योंकि अन्तके प्रदेशकी अपेक्षा मध्यका प्रदेश अचर्म है

जैसे रत्न प्रभा नारकी कही वैसे ही सातों नरक १२ देवलोक ९ ग्रैवेक ५ अनुत्तर १ इसी प्रभारा पृथ्वी १ लोक और एक अलोक एव ३६ बोलोंको उपरवत् चार चार बोल लगानेसे १४४ बोल होते हैं

उपर बताये हुवे रत्न प्रभादि ३६ बोलोंके चर्म प्रदेशमें तरतमता है उसकी अल्पाबहुत्व कहते हैं

रत्न प्रभा नारकोके चमाचर्म द्रव्य और प्रदेशकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अचर्म द्रव्य (२) चरम द्रव्य अस० गु०
(३) चर्माचर्म द्रव्य वि० (१) सबसे स्तोक चर्म प्रदेश
(२) अचर्म प्रदेश असं० गु० (३) चमाचर्म प्रदेश वि०

द्रव्य और प्रदेशकी सेमील अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अचर्मद्रव्य (२) चर्म द्रव्य अस० गु०

५ म० स्थिति मनुष्य २ तु० तु० ४ ४ २० ७तु१० ६
६ उ० स्थिति ,, ,, तु० तु० ४ तु० २० ६ ६
७ ज० कालागुण ,, ,, तु० तु० ४ ४ १तु१९ २तु१० ९
८ म० कालागुण ,, ,, तु० तु० ४ ४ २० २तु१० ६
९ उ० ,, ,, ,, तु० तु० ४ ४ १तु१९ २तु१० ६
६६ एव शेष नीलादी १९ बोलोंके ५७ बोल
६७ ज० मतिज्ञानी मनुष्य २ तु० तु० ४ ४ २० १तु३ ६
६८ म० ,, ,, ,, तु० तु० ४ ४ २० ७ ६
६९ उ० ,, ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० १तु६ ६
७१ एव श्रुतज्ञानके तीन बोल
७३ ज० अवधिज्ञानी ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० १तु६ ६
७४ म० ,, ,, ,, तु० तु० ४ ३ २० ७ ६
७५ उ० ,, ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० १तु६ ६
७६ ज० मन पर्यवज्ञानी ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० १तु६ ६
७७ म० मन पर्यवज्ञानी ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० ७ ६
७८ उ० मन पर्यवज्ञानी ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० १तु६ ६
७९ केवलज्ञानी मनुष्य ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० २ तु०
८० ज० मतिअज्ञानी ,, ,, तु० तु० ४ ४ २० १तु३ ६
८१ म० मतिअज्ञानी ,, ,, तु० तु० ४ ४ २० ६ ६
८२ उ० मतिअज्ञानी ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० १तु६ ६
८५ एव श्रुतअज्ञानी तीन बोल
८६ ज० विभगज्ञानी मनुष्य २ तु० तु० ४ ४ २० १तु५ ६

(३) चर्माचर्म द्रव्य वि० (४) चर्म प्रदेश अस० गु०
(५) अचर्म प्रदेश अस० गु० (६) चर्माचर्म प्र० वि०

इसी तरह अलोक छोडके शेष ३५ बोलोंकी अल्पा बहुत्व कह देना

अलोकके द्रव्यकि अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अचर्म द्रव्य (२) चर्म द्रव्य अस० गु०
(३) चर्माचर्म द्रव्य वि०

प्रदेश

(१) सबसे स्तोक चर्म प्रदेश (२) अचर्म प्रदेश अनन्त गु०
(३) चर्माचर्म प्रदेश वि०

द्रव्य प्रदेशकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अचर्म द्रव्य (२) चरम द्रव्य अस० गु०
(३) चर्माचर्म द्रव्य वि० (४) चर्म प्रदेश अस० गु०
(५) अचर्म प्रदेश अनन्त गु० (६) चर्माचर्म प्रदेश वि०

लोका लोकके चर्माचर्म द्रव्यकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक लोकालोकका चर्मद्रव्य
(२) लोकका चर्म द्रव्य अस० गु०
(३) अलोकका चर्म द्रव्य वि०
(४) लोका लोकका चर्माचर्म द्रव्य वि०

लोका लोकके चर्माचर्म प्रदेशकि अल्पा०

(१) स्तोक लोकका चर्म प्रदेश (२) अलोकका चर्म प्रदेश विशेषा
(३) लोकका अचर्म प्रदेश अस० गु०
(४) अलोकका अचर्म प्रदेश अनन्त गु०

८७ म० विभगज्ञानी मनुष्य २ तु० तु० ४ ४ २० ६ ६

८८ उ० विभगज्ञानी ,, ,, तु० तु० ३ ३ २० १तु१ ६

८९ ज० च० ,, ,, तु० तु० ४ ४ २० १तु१ ६

९० म० च० मनुष्य २ तु० तु० ४ ४ २० १० ६

९१ उ० च० मनुष्य २ तु० तु० ३ ३ २० १तु९ ६

१०० एव अचक्षु दर्शनके ९ बोल अवधी दर्शनके ९ बोल और केवल दर्शन केवल ज्ञानवत्

ज्योतीषी और वैमानिक

१ ज० अव० ज्योतिषी २ तु० तु० तु० ३ २० ९ ६

२ म० अव० ज्योतिषी २ तु० तु० ४ ३ २० ९ ६

३ उ० अव० ज्योतिषी २ तु० तु० तु० ३ २० ९ ६

४ ज० स्थिति ज्योतिषी २ तु० तु० ४ तु० २० ९ ६

५ म० स्थिति ज्योतिषी २ तु० तु० ४ ४ २० ९ ६

६ उ० स्थिति ज्योतिषी २ तु० तु० ४ तु० २० ९ ६

७ ज० कालागुण ,, २ तु० तु० ४ ३ १।तु१९ ९ ६

८ म० कालागुण ,, २ तु० तु० ४ ३ २० ९ ६

९ उ० कालागुण ,, २ तु० तु० ४ ३ १।तु१९ ९ ६

६६ एव नीलादी १९ बोलोंके ५७ बोल

६७ ज० मतिज्ञानी ज्योतिषी २ तु० तु० ४ ३ २० १तु९ ६

६८ म० ,, ,, ,, तु० तु० ४ ३ २० ९ ६

६९ उ० ,, ,, ,, तु० तु० ४ ३ २० १तु९ ६

८४ एव श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान और तीन अज्ञान इन ५ बोलोंके १५ बोल

(९) लोका लोकका चर्माचर्म प्रदेश वि०

लोकालोक द्रव्य प्रदेश चर्माचर्म कि अल्पा०

(१) सर्वसे स्तोक लोकालोकका चर्म द्रव्य
(२) लोकका चर्म द्रव्य असं० गु०
(३) अलोकका चर्म द्र य वि०
(४) लोकालोकका चर्माचर्म द्रव्य विशेषा०
(५) लोकका चर्म प्रदेश असंख्यात गु०
(६) अलोकका चर्म प्रदेश विशेषा
(७) लोकका अचर्म प्रदेश असंख्यात गु०
(८) अलोकका अचर्म प्रदेश अनन्त गु०
(९) लोकालोकका चर्माचर्म प्रदेश विशेषा०

ऊपरके नव और सर्व, द्रव्य, प्रदेश, पर्याय एवं १२ बोलोंकी अल्पा बहुत

(१) सर्वसे स्तोक लोकालोकका चर्म द्रव्य
(२) लोकका चर्म द्रव्य असं० गु०
(३) अलोकका चर्म द्रव्य विशेषा
(४) लोकालोकका चर्माचर्म द्रव्य विशेष
(५) लोकका चर्म प्रदेश असं० गु०
(६) अलोकका चर्म प्रदेश विशेष
(७) लोकका अचर्म प्रदेश असं० गु०
(८) अलोकका अचर्म प्रदेश अनन्त गु०
(९) लोकालोकका चर्माचर्म प्रदेश विशेषा०
(१०) सर्व द्रव्य विशेषा

८५ ज० च० ज्योतिपी २ तु० तु० ४ १ २० १तु८ ६
८६ म० च० ,, ,, तु० तु० ४ ३ २० ९ ६
८७ उ० च० ,, ,, तु० तु० ४ १ २० १तु८ ६
९३ एव अचक्षुदर्शन और अवधिदर्शनके ६ बोल

ज्योतिषीके माफक वैमानिकका भी दडक समझ लेना

सिद्धोंमें शरीर अवगाहना नहीं है किन्तु आत्म प्रदेश जो आकाश प्रदेश अवगाहे है उसकी अपेक्षासे

१ ज० अव० सिद्ध २ तु० तु० तु० ० ० २ तु०
२ म० ,, ,, ,, तु० तु० १ ० ० २ तु०
३ उ० ,, ,, तु० तु० तु० ० ० २ तु०
४ केवलज्ञानी केवलदर्शनी सिद्ध २ तु० तु० ३ ० ० १ ०
सर्व बोल सख्या भी २५-९२-९३०-६७१-८१-८१-८२ -९३-१००-९२-९३-४ एव १४१२ बोल जाणवा इति

सेवभते सेवभते तमेवसच्चम् ।

थोकडा न० ८

श्री पन्नवणासूत्र पद ५

(पज्जवा)

थोकडा न० १में जो जीव पज्जवाकी परिभाषा बतलाई है उसी परिभाषासे इस थोकडेको समझ लेना इसमें उपयोग १२ नहीं है क्योंकि उपयोग जीवका गुण है अजीवका नहीं ।

हे भगवान ! अजीव पज्जवा सख्याते, असख्याते या अनंते है ? गौतमा सख्याते, असख्याते नहीं किंतु अनते है । क्योंकि

(११) सर्व प्रदेश अनन्ता गु०
(१२) सर्व पर्याय अनन्ता गु०

सेवमभंते सेवमभंते तमेव सचम् ।

थोकडा नं० १२

सूत्र श्री पन्नवणा पद १०

रत्नप्रभादि नरकमें अपेक्षा लेके चर्म अचम कहा है परन्तु परमाणुके तों दो विभाग हो नहीं सक्ते हैं इस लिये शास्त्रकारने चरम अचरम और अवक्तव्य यह तीन विकल्प किये हैं सो इस थोकडे द्वारा बतलावेंगे ।

चमाचर्म और अवक्तव्य इन तीनोंके २६ भागे होते है इनको नीचे यत्रमें लिखेंगे जहा एकका अंक है वहा एक वचन समझना और तीनका अंक है वहा बहू वचन समझना। असंयोगी भागा ६

नं०	चर्म		अचर्म		अवक्तव्य
(१)	१	(३)	१	(५)	१
(२)	३	(४)	३	(६)	३

द्विसयोगी भागा १२

चर्म-अचर्म		चर्म अवक्तव्य		अचर्म अवक्तव्य	
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

तीव पाच प्रकारके है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाक, आका-
स्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल जिसमें धर्मास्तिकाय और
धर्मास्तिकाय असख्यात २ प्रदेशी है। और आकाशास्तिकाय,
द्गलास्तिकाय अनत प्रदेशी है तथा कालका भी अनता समय है
र एकेक प्रदेशके अदर अगरु लघु पर्याय अनतो २ है इसीको
जवा कहते है इसलिये अनता पज्जवा है। यहा पर पुद्गलास्ति-
ायकी ही व्याख्या करी है।

अजीव पचवोंको शास्त्रकारने दश द्वार करके बतलाये है।
द्रव्य २ क्षेत्र ३ काळ ४ भाव ५ अवगाहना ६ स्थिति
भाव ८ प्रदेश अवगाहना ९ प्र० स्थिति १० प्र० भाव

द्रव्य

ावर	मगणा		द्रव्य	प्रदेश	अवगाहना	स्थिति	वर्ण	तरतमता
१	परमाणु पुद्गल २		तु०	तु०	तुल्य	४	१६	६
२	दोप्रदेशी	स्कध २	,,	,,	तुल्यस्यात १	४	१६	६
३	तीन ,,	,,	तु०	तु०	प्रदेशन्यूनाधि	४	१६	६
४	चार ,,	,,	तु०	तु०	कएवयावत १०	४	१६	६
५	पाच ,,	,,	तु०	तु०	प्रदेशकी पृच्छा	४	१६	६
६	छे ,,	,,	,,	,,	मैंक्रमस ९ प्रदे	४	१६	८
७	सात ,,	,,	,,	,,	शन्यूनाधिकस	४	१६	६
८	आठ ,,	,,	,,	,,	मझना	४	१६	६
९	नौ ,,	,,	,,	,,	,,	४	१६	६

त्रिकसयोगी भागा-८

चर्म	अचर्म	अव०	चर्म	अचर्म	अव०
१	१	१	३	१	१
१	१	२	३	१	३
१	२	१	२	३	१
१	२	३	३	२	२

ऊपर लिखे २६ भागोंसे कौनसा भागा किस जगह मिलता है सो बतलाते है

(१) परमाणु पुद्गलमे एक भागा पावे-अवक्तव्य ०

(२) दो प्रदेशी स्कंधमें दो भागा पावे-पहिला और तीसरा (दोनो एकेक प्रदेश रोका हो तो तीसरा और दोनो एक प्रदेश रोका हो तो पहिला) ०० ०

(३) तीन प्रदेशीमें चार भागा-यथा १-३-९-११ स्थापना १-३ पूर्ववत नवमा ००० इग्यारहवा ०० ०

(४) चार प्रदेशीमें सात भागा यथा १ ३-९ १०-११-१२ -१३ जिसमें चार पूर्ववत दसमों ०००० इग्य ०० बारमा ००० तेरमें ००० ०

(५) पाच प्रदेशी इग्यारह भागा यथा १-३-७-९-१० ११-१२-१३-२३-२४-२५ जिसमें सात पूर्ववत् शेष सातमों ००० तेवीसमा ० ०० ० चौवीसमों ००० ० पचीसमों ०००० ०

१० दश ,, ,, ,, ,, ,, ४ १६ ६
११ सख्यात प्रदेशी स्कंध २ ,, ,, ,, २ २ ४ १६ ६
१२ असख्यातप्रदेशी स्कंध २ ,, ,, तु० ४ ४ ४ १६ ६
१३ अनन्त प्रदेशी स्कंध २ , ,, तु० ६ ४ ४ २० ६

(क्षेत्र)

१ एक आकाश प्रदेश अवगाहा२ तु० ६ तु० ४ १६ ६
२ दो ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
३ तीन ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
४ चार ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
५ पाच ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
६ छे ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
७ सात ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
८ आठ ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
९ नौ ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
१० दश ,, ,, ,, तु० ६ तु० ४ १६ ६
११ सख्यात् आ० प्र० अव० २ तु० ६ २ ४ १६ ६
१२ असख्यात आ० प्र० अव० २ तु० ६ ४ ४ २० ६

(काल)

१ एक समयकी स्थितिका पुद्गल २ तु० ६ ४ तु० २० ६
२ दो ,, ,, ,, तु० ६ ४ तु० २० ६
३ तीन ,, ,, ,, तु० ६ ४ तु० २० ६
४ चार ,, ,, ,, तु० ६ ४ तु० २० ६

(६) छे प्रदेशीमें १९ भागा यथा १-३ ७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१९-२३-२४-२५-२६-जिसमें ११ भागा पूर्ववत्, आठमो ०००० चवदमो ०० उगणीसमो ००० छवीसमो ००००

(७) सात प्रदेशीमें १७भागा जिसमें १५पूर्ववत् २०-२१ वीसमो ००० इकीसमो ००

(८) आठ प्रदेशीमें १८ भागा जिसमें १७ पूर्ववत् बाईसमो ००

(९) नव प्रदेशी १८ भागा पूर्ववत्

(१०) दश प्रदेशीमें १८ भागा पूर्ववत्

(११) सख्यात प्रदेशीमें १८ भागा पूर्ववत

(१२) असख्यात प्रदेशीमें १८ भागा पूर्ववत्

(१३) अनत प्रदेशीमें १८ भागा पूर्ववत

पूर्वके २६ भागामेंसेमें १८ भागा काममें आते है और शेष ८ भागा २-४-५-६-१९-१६-१७-१८ यह आठ भागा काममें नहीं आते केवल परूपणा रूप ही है।

इस भागोंको कठस्थकर फिर गीतार्थके पास खूब अच्छी तरहसे समझोगे तो द्रव्याणुयोगमें रमणता करते हुवे अनत कर्मोंकी निर्जरा करोगे किं बहूना

सेव भते सेव भते तमेव सच्चम ।

५ पाच	,	,,	,,	तु० ६ ४ तु० २० ६
६ छे	,,	,,	,,	तु० ६ ४ तु० २० ६
७ मात	,,	,,	,,	तु० ६ ४ तु० २० ६
८ आठ	,,	,,	,,	तु० ६ ४ तु० २० ६
९ नौ	,,	,,	,,	तु० ६ ४ तु० २० ६
१० दश	,,	,,	,,	तु० ६ ४ तु० २० ६
११ सख्याता	,,	,,	,,	तु० ६ ४ २ २० ६
१२ अस०	,,	,,	,,	तु० ६ ४ ४ २० ६

(भाव)

१ एक गुण काला पु०२		तु०	६	४	४	१	तुल्य	१९	६
२ दो	,,	,	तु०	६	४	४	स्वगुण तु०	१९	६
३ तीन	,,	,,	तु०	६	४	४	,, तु०	१९	६
४ चार	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
५ पांच	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
६ छे	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
७ सात	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
८ आठ	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
९ नौ	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
१० दश	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
११ सख्यात	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
१२ अस०	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
१३ अनन्त	,,	,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६

२६० एव शेष वर्णादि १९ बोलोके पूर्ववत् २५७ बोल ८॥

थोकडा न० १३

सूत्र श्री पन्नवणा पद १०

(सस्थान)

ससारमें जितने पुद्गल हैं वह किसी न किसी आकारमें अवश्य है उस आकारको शास्त्रकारोंने सस्थान कहा है वह इस थोकड़े द्वारा कहेंगे

हे भगवान ! सस्थान कितने प्रकारके हैं ? सस्थान पाच प्रकारके हैं यथा—

(१) परिमडल— गोल चूडीके आकार पदार्थ

(२) वड—गोल लड्डूके आकार पुद्गल

(३) त्रस—तिखूने सिंघोडेके आकार पुद्गल

(४) चौरस—चोखूने चौकीके आकार पुद्गल

(५) आयतन—लम्बा वासके आकार पुद्गल *

हे भगवान ! परिमण्डल सस्थान इस लोकमें क्या सख्याते असख्याते या अनते हैं ? सख्याते, असख्याते नही किंतु अनत है एव यावत् आयतन सस्थान पर्यन्त कहना यह पाचो सस्थान लोकमें अनते अनते हैं

हे भगवान ! परिमण्डल सस्थान क्या सख्याते, असख्यात या अनत प्रदेशी है ? परिमण्डल सस्थान स्यात् सख्यात, स्यात्

---

* भगवती सूत्र श २५ उ० ३ में सस्थान छे प्रकारके कहे है, जिसमें पांचतो पूर्ववत् और छट्ठा अनवस्थित जो इन पांचोंसे विलक्षण हो वह सब अनवस्थित कहलाता है ।

इसी माफक निकलनेका भी सूत्र कहना परन्तु सिद्धोंको वर्ज देना क्योंकि सिद्ध पीछे नहीं निकलते हैं ।

नारकीके ~रीया एक समय कितने उत्पन्न होते हैं ? एक समय १-२-३ यावत् संख्याते असंख्याते उत्पन्न होते हैं एवं पांच स्थावर वर्जके शेष १९ दंडक भी कह देना । पांच स्थावरमें प्रति समय असंख्याते उत्पन्न होते हैं किंतु वनस्पति कायमें स्वकायापेक्षा प्रति समय अनंते भी उत्पन्न होते हैं इसी माफक चौवीस दंडकका चवण द्वार भी कह देना और सिद्ध भगवान उत्पन्न होते है परंतु चवते नहीं हैं।

कौनसे दंडकके जीव परभवका आयुष्य किस समय बांधते हैं ? नारकी, देवता और युगल मनुष्य अपने आयुष्यके शेष ६ मास बाकी रहनेपर परभवका आयुष्य बांधते हैं शेष जीवोंका आयुष्य दो प्रकारका है एक सोपक्रमी, दुसरा निरुपक्रमी जो निरुपक्रमी होता है वह नियमा अपने आयुष्यके तीजे भाग अर्थात् दो भाग आयुष्य वीतजानेपर तीजे भागकी सुरुमें पर भवका आयुष्य बांधते हैं और सोपक्रमी आयुष्यवाले जीव तीजे भाग नौमें भाग सतावीसमें भाग इकीयासीमें भाग २४३ में भाग यावत् आयुष्यका शेष अन्तर मुहुर्त रहते हुवे परभवका आयुष्य बांधते हैं

आयुष्यकर्मके साथ छेबोलोका बंध होता है

(१) जातिनाम=एकेन्द्रीयादि
(२) गतिनाम=नरकादि
(३) स्थितिनाम=अन्तर मुहुर्तसे यावत् ३३ सागर

असख्यात स्यात् अनत प्रदेशी है एव यावत आयतन सस्थान भी समझना

हे भगवान ' सख्यात प्रदेशी परिमण्डल सस्थान क्या सख्यात प्रदेश अवगाह्या है या असख्यात् या अनत प्रदेश अवगाह्या है ? सख्यात प्रदेशो गाह्या है परन्तु असख्यात अनन्त प्रदेश नहीं एव यावत् आयतन सस्थान भी कहना

हे भगवान् ' असख्यात प्रदेशी परिमण्डल सस्थान क्या सख्या० अस० या अनन्त प्रदेश अवगाह्या है ? स्यात् सख्यात् स्यात् असख्यात प्रदेश अवगाह्य परन्तु अनन्त प्रदेश नहीं एव यावत् आयतन सस्थान भी कहना

हे भगवान ' अनन्त प्रदेशी परिमडल सस्थान क्या स० अस० या अनन्ता प्रदेश अवगाह्या है ? स्यात् सख्यात० स्यात्० अस० प्रदेश अवगाह्या है । किन्तु अनन्ता नहीं क्योंकि लोक असख्यात प्रदेशी है एव आयतान०

हे भगवान ' सख्यात प्रदेशी परिमडल सस्थन सख्यात प्रदेश अवगाह्या क्या चरम है, अचर्म है, घणा चर्म है घणा अचर्म है, घणा अचर्म है, चर्म प्रदेश है या अचर्म प्रदेश है ? रत्न प्रभा नारकीके माफिक प्रथम पक्षसे छे पद निषेध करना-दूसरी अपेक्षा चार पदका उत्तर दिया है एव-

(२) असख्यात प्रदेशी परिमडल सख्यात प्रदेश अवगाह्या

(३)	,,	,,	,,	अस०	,, ,,
(४)	अनन्त	,,	,,	स०	,, ,,
(५)	,,	,,	,,	अस०	,, ,,

यह पाच सूत्र रत्नप्रभा नारकीके माफिक समझना एव यावत आयतन सस्थान भी कहना अब अल्पाबहुत्व कहते हैं।

(१) स० प्रदेशी परिमडल स० प्र० अवगाह्याकी अल्पा०

(द्रव्य)

(१) सबसे स्तोक अचर्म द्रव्य (२) चरम द्रव्य स० गु०
(३) चरमाचर्म द्रव्य वि०

(प्रदेश)

(१) सबसे स्तोक चर्म प्रदेश (२) अचर्म प्रदेश स० गु०
(३) चर्माचर्म प्रदेश वि०

(द्रव्य प्रदेश)

(१) सबसे स्तोक अचर्म द्रव्य (२) चर्म द्रव्य स० गु०
(३) चर्माचर्म द्रव्य वि० (४) चर्म प्रदेश स० गु०
(५) अचर्म प्रदेश स० गु० (६) चर्माचर्म प्रदेश वि०
एव आयतन सस्थान भी कहना,

(२) अस० प्रदेशी परिमडल सस्थान सख्यात प्रदेश अवगाह्योंकी अल्पा० तीनों उपरवत समझ लेना।

(३) अस० प्रदेशी परिमण्डल सस्थान अस० प्रदेश अवगाह्योंकी तीनों अल्पा० उपरवत समझ लेना परन्तु जहा सख्याता कहा है वहा असख्याता कहना रत्नप्रभा वत्।

(४) अनत प्रदेशी परिमडल सस्थान सख्यात प्रदेश अवगाह्योंकी तीनों अल्पाबहुत्व सख्यात प्रदेशी सख्यात प्रदेश अवगाह्योंकी माफिक समझना परन्तु सक्रमण अनत।

परतर भर जाय परन्तु एक रुप कम रहे मुकेलगा समुचयवत् इसी माफक तेजस कार्मण भी समझना वैक्रिय शरीरका बधेलगा स्यात् मिले स्यात् नमिले अगर मिले तो संख्याता मिले क्योंकि सज्ञी मनुष्य ही वैक्रिय करते हैं, मुकेलगा समुचयवत्–आहारिकका बन्धेलगा स्यात् मिले स्यात् नमिले अगर मिले तो संख्याता मिले और मुकेलगा समुचयवत्

व्यतर देवतामें औदारिक और आहारिकके बन्धेलगा नहीं है और मुकेलगा समुचय वत् वैक्रिय बन्धेलगा असंख्याता है कालसे असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी क्षेत्रसे ७ राजका चौतरा कीने श्रेणी परतरसे विषम सुचि अगुल क्षेत्र लीजे जिस्में संख्याता सौ योजन (तीन सौ योजन) की एकेक व्यतरको बैठनेके लिये जगह दी जावे तो सम्पूर्ण परतर भर जावे मुकेलगा समुचय माफक अनंता, तेजस कर्मण वैक्रियकि माफक

ज्योतिषीमें औदारिक आहारिकका बन्धेलगा नहीं है और मुकेलगा समुचयकि माफक अनन्ता है वैक्रिय शरीरका दो भेद है (१) बन्धेलगा (२) मुकेलगा जिसमें बन्धेलग असंख्याता है कालसे असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी क्षेत्रसे ७ घनराजका चौतरा कीजे जिसमें विषय सुचि अगुल क्षेत्र लीजे उसमें आकाश प्रदेश आवे जिसमें २५६ प्रदेश एकेक ज्योतिषीको बैठनेके लिये जगह दी जावे तो सपूर्ण परतर भर जाय इतना वैक्रिय शरीरका बन्धेलगा है मुकेलगा अनन्ता समुचय वत् तेजस कर्मणाका बन्धेलगा मुकेलगा वैक्रियकी माफक

(५) अनत प्रदेशी परिमटल सस्थान असख्यात प्रदेश अवगाह्योंकी तीनों अल्पा बहुत्व रत्नप्रभा वत परन्तु सक्रमण अनत गुणा कहना एव यावत आयतन सस्थन भी कहना ।

सेवभते सेवभते तमेव सचम

थोकडा न० १४

श्री पन्नवणा सूत्र पद १०

(चर्माचर्म)

द्वार—(१) गति (२) स्थिति (३) भव (४) भाषा (५) श्वासोश्वास (६) आहार (७) भाव (८) वर्ण (९) गध (१०) रस (११) स्पर्श ।

(१) हे भगवान् ! एक जीव गतिकी अपेक्षा क्या चर्म है या अचम है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है अर्थात् जिन्हों जीवोंको तद्‌भव मोक्ष जाना है वे गतीकी अपेक्षा चरम है कारण वे जीव अब फिर गतीमें न आवेंगे और जिसको अभी मोक्ष जानेमें देरी है या न जावेगा वे गतीकी अपेक्षा अचर्म है । कारण वारवार गतीमें भ्रमण करेगा ।

नारकीके नेरीया गतीकी अपेक्षा चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म स्यात् अचर्म भावना उपरवत् इसी माफिक २४ दडक यावत् वेमानिक तक कहना।

घणा जीवकी अपेक्षा क्या चर्म है या अचर्म है ? चर्म भी अचर्म भी घणा एव यावत् २४ दडक समजना ।

वैमानिक देवोंमें औदारिक आहारिक आहारिकका बन्धेलगा नहीं है और मुक्केलगा अनता समुचयवत् वैक्रिय शरीरका बन्धेलगा असख्याता कालसे असख्याती अवसर्पिणी असख्याती उत्सर्पिणी क्षेत्रमे ७ घनराजके परतर श्रेणीमेंसे विषय सुचि अगुल क्षेत्र लीजे जिसमें आकाश प्रदेश आवे जैसे २५६ जिस्का विर्गमूल कीजे सो प्रथम १६-४-२ दुजा और तजेका गुणा करनेसे ८ प्रदेश आते हैं इतना (अस०) वक्रियका बन्धेलगा है मुक्केलगा अनता समुचय वत् एव तेजस कामण भी समझना इति

सेव भते सेव भते तमेव सच्चम्।

थोकडा न० १६

श्री पन्नवणा सूत्र पद १३

(परिणाम पद)

जिस-परिणती पने प्रणमें उसे परिणाम कहते है जैसे जीव स्वभावसे निर्मल, सच्चिदानद है परतु पर प्रयोग कषायमें प्रणमणेसे कषाई कहलाता है यह उपचरित नयकी अपेक्षा है इसका विवरण इस थोकडे द्वारा कहा जायगा वह परिणम दो प्रकारके होते हैं (१) जीव परिणाम (२) अजीव परिणाम हे भगवान! जीव परिणाम कितने प्रकारके हैं? जीव परिणाम दश प्रकारके है यथा-(१) गति परिणाम (२) इन्द्रिय० (३) कषाय० (४) लेश्या० (५) योग० (६) उपयोग० (७) ज्ञान० (८) दर्शन० (९) चारित्र० (१०) वेद० ये दश द्वार चौवीस दडक पर उतारे जावेगे।

(२) स्थितिकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म स्यात् अचर्म एव यावत २४ दडक।

घणा नारकी स्थितीकी अपेक्षा चर्म है या अचर्म है ? चर्म भी घणा अचर्म भी घणा एव यावत् २४ दडक कहना।

(३) भवकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एव यावत् २४ दटक भी कहना

घणा नारकीकी अपेक्षा चर्म भी घणा और अचर्म भी घणा एव यावत् २४ दडक समझ लेना

(४) नारकी भाषाकी अपेक्षा चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात अचर्म है एव पाच स्थावर वर्जके शेष १९ दण्डक भी समझलेना घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा और अचर्म भी घणा

(५) श्वासो श्वासकी अपेक्षा नारकी चर्म है कि अचर्म है ? स्यात चर्म स्यात् अचर्म एव यावत २४ दण्डक घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा और अचर्म घणा।

(६) आहारकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है। स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एव यावत २४ दटक घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा अचर्म भी घणा।

(७) भाव (औदयकादि) अपेक्षा नारकी चर्म है कि अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एव यावत् २४ दटक घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा अचर्म भी घणा।

(१) गति परिणामके ४ भेद है—नरकगति, त्रियच० मनुष्य० और देवगति

(२) इन्द्रिय परि०के ५ येद हैं=श्रोतेन्द्रिय, चक्षु० घ्राण० रस० और स्पर्श०

(३) कषाय परि०के ४ भेद है=क्रोध, मान, माया और लोभ

(४) लेश्या परि०के ६ भेद है=कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म, शुक्ल

(५) योग परि०के ३ भेद है=मनयोग, वचनयोग और काययोग

(६) उपयोग परि०के २ भेद हैं=साकार और अनाकार उपयोग

(७) ज्ञान परि० के ८ भेद हैं=मतिज्ञान, श्रुति० अवधि० मनपर्यव० केवल० मति अज्ञान, श्रुति अज्ञान, और विभगज्ञान

(८) दर्शन परि० के ३ भेद है=सम्यक्त्व दृष्टी, मिथ्या० और मिश्र दृष्टी

(९) चारित्र परि० के ७ भेद है=सामायिक चा०, छेदोपस्थापनिय०, परिहारविशुद्धी, सुक्ष्म सम्पराय० यथाख्यात० अचारित्र और चरिताचारित्र

(१०) वद परि० ३ भेद है=स्त्री, पुरुष, नपुसक

उपर लिखे दश द्वारोंके ४५ बोल हैं और समुचय जीवमें (१) अनेन्द्रिय (२) अकषाय (३) अलेशी (४) अयोगी (५) अवेदी ये ५ बोल भी मिलते हैं इनको मिलानेसे ५० बोल होते हैं

(८) वर्ण, गध, रस, स्पर्शके २० बोलोंकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एव २४ दडक भी समझ लेना घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा और अचर्म भी घणा ।

सेव भते सेव भते तमेव सचम् ।

थोकडा नबर १५

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद १२

(पाच शरीर)

जीव अनादिकालसे इन्ही घोर ससारके अन्दर परिभ्रमण कर रहा है । जिन्हीका मूल कारण जीव स्वगुणोंको छोडके पर-गुणों (पुद्गलोमें) में रमणता करते हुवे पुराणे सयोगको छोडते है और नये नये सयोगको धारण करते हैं । " सजोगा मूल जीवाण पत्तो दु ख परपरा " सबसे निकट सब घ जीवके शरीरसे है इन्ही शरीरके लिये चैतन्य इतना तो विचारशून्य बन जाता है कि जिन्होंको उचित अनोचित हिताहित भक्षाभक्षका भी भान नहीं रहेता है । परन्तु यह ख्याल नहीं है कि इस जीवने ऐसा नाश मान कितने शरीर कीया होगा वह इस थोकडे द्वार बताये जावेगा।

शरीर पाच प्रकारका है यथा

(१) औदारीक शरीर–हाड मासादि सयुक्त
(२) वैक्रय शरीर–हाड मास रहित कपुर या पारावत्
(३) आहारीक शरीर–पूर्वधर मुनियोंके होता है

समुचय जीव पूर्वोक्त ९० बोल पने प्रणमते हैं इसलिये ९० बोल अस्ति भाव पने हैं

(१) नारकीके दंडकमें २९ बोल=गति एक नारकी, इन्द्रिय पाचों ५ कषाय ४ लेश्या ३ योग ३ उपयोग २ ज्ञान ६ (ज्ञान ३ अज्ञान ३) दर्शन ३ चारित्र एक असयम, वेद एक नपुंसक

(११) भुवनपती और व्यन्तरमें ३१ बोल=२९ पूर्वोक्त और एक लेश्या एक वेद अधिक

(३) ज्योतिषी, सौधर्म, इशान देवलोकमें २८ बोल=तीन लेश्या कम करनी

(५) तीजेसे बारहवें देवलोकमें २७ बोल=एक वेद कम करना

(१) नौग्रैवेकमें २६ बोल=एक दृष्टी कम करनी

(१) पाच अनुत्तर विमानमें २२ बोल=एक दृष्टी और तीन अज्ञान कम करना

(३) पृथ्वी, पानी, वनस्पतिमें १८ बोल=१-१-४-४-१-२-२-१-१-१ एव १८

(२) तेउ, वाउमे १७ बोल=एक लेश्या कम करनी

(१) बेरिंद्रिय में २२ बोल-जिसमें १७ पूर्ववत् और एक रसेंद्रिय, एक वचनयोग, दो ज्ञान, एक दृष्टी, एव ५ बोल अधिक

(१) तेरिंद्रियमें २३ बोल-एक घ्राणेन्द्रिय अधिक

(१) चौरिन्द्रियमें २४ बोल-एक चक्षुन्द्रिय अधिक

(४) तेजस शरीर-आहारकी पाचन क्रिया करे।

(५) कारमाण शरीर-कर्मोका खजाना रूप।

इन्हों पाचो शरीरोंका स्वामि कौन है। नारकि देवतोंमें तीन शरीर है वैक्रय, तेजस कारमण। तथा पृथ्वी० अप० तेउ० वनस्पति वेन्द्रि तेन्द्रि चौरिन्द्रिय इन्ही सात बोलोंमें औदरिक० तेजस० कारमण० तीन शरीर पावे तथा वायु काय और तीर्यच पाचेन्द्रिमें शरीर च्यार पावे, औदारीक० वैक्रय० तेजस कारमण० और मनुष्यमें शरीर पाचों पावे, औदारीक० वैक्रय आहारीक० तेजस० कारमण इति।

प्रत्येक शरीरके दो दो भेद होते है (१) बन्धेलक=वर्तमान में बन्धा हुवे है (२) मुकेल्क=भूतकालमें बान्ध बान्ध छोड आये थे वह।

(१) औदारिक शरीरके दो भेद है (१) बन्धेलक (२) मुकल्क जिस्मे बधेल्क औदारीक शरीर असख्यात है अर्थात् वर्तमानमें सर्व जीवापेक्षा औदारीक शरीर असख्याते है यह प्रत्येक समय एकेक औदारीक शरीर गीना जावें तो गीनते २ असख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी पुरण हो जाय और क्षेत्रसे एकेक औदारीक शरीरको एकेकाकाश प्रदेश पर रखा जावे तो असख्याते लोक पूर्ण हो जा इतना औदारिक शरीरका बन्धेल्क है

नोट-जीव दो प्रकारके है (१) प्रत्येक शरीरी (२) साधारण शरीरी जिस्में प्रत्येक शरीरी जीव असख्यात है वह असख्याते शरीरके वधक है और साधारण शरीरवाले जीव अन्ता

(१) तीर्यंच पचेन्द्रिमें ३९ बोल=क्रमश १-९-२-६-३-२-६-३-२-३

(१) मनुष्यमें ४७ बोल=तीन गति कम करना

विशेष विस्तार गुरु गमसे सीखो समझी

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नंबर १७

श्रीपन्नवणा सूत्र पद १३

(अजीव परिणाम)

अजीव-जो पुद्गल हे उसका भी स्वाभाव परिणमने का हे और उनके दश भेद हे (१) बन्दन (२) गति (३) सस्थान (४) भेद (५) वर्ण (६) गध (७) रस (८) स्पर्श (९) अगुरु लघु (१०) शब्द

(१) **बन्धन**=स्निग्ध, स्निघका बन्धन नहीं होता रूक्ष रूक्षका बन्धन नहीं होता जैसे रखसे राखका घृतसे घृतका बन्ध नहीं होता स्निग्ध, और रक्षका बन्ध होता है वह भी सममात्राका बध नहीं होता परन्तु विषम मात्राका बध होता है जैसे परमाणु परमाणुका बन्ध नहीं होता परमाणु दो प्रदेशीका बन्ध होता है ।

(२) **गति**-पुद्गलोंकी गति दो प्रकारसे होती है । एक स्पर्श करता हुआ जैसे पानी पर तीतरी चले, और दूसरी अस्पर्श करता हुवा जैसे आकाशमें पक्षी । -

है परन्तु साधारण अनन्ता जीवों एकत्र होके एक ही शरीरके बधक है वस्ते अनन्ता जीवोंका भी असख्याते शरीर है

(२) मुकेलगा–औदारिक शरीरके मुकेलगा अनन्ता शरीर है, वे कितना अनन्ता है ? एकेक समय एकेक औदारिक शरीरका मुकेलगा निकाले तो अनन्ती उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी वितित हो=क्षेत्रसे–एकेक औदारिक शरीरका मुकेलगाको एकेक आकाश प्रदेश पर रखे तो सम्पूर्ण लोक और लोक जैसे अनन्ते लोक पूर्ण हो जाय=द्रव्यसे–अभव्यसे अनन्त गुणा और सिद्धोंके अनन्तमें भाग इतने औ रिकके मुकेलगा है

(२) वैक्रिय शरीरका दो भेद–एक बधेलगा, दूसरा मुकेलगा–जिसमें बधेलगा असख्याता है एकेक समय एकेक वैक्रिय शरीर निकाल तो असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी व्यतीत हो–क्षेत्रसे–चौदह राजलोक घन चौरस करने पर सात राज लम्बा और सात राज चौडा होता है (देखो शीघ्र बोध भाग ८) उसके उपरके परतरकी एक प्रदेशी श्रेणी है–जिसके असख्याते भागमें जितने आकाश प्रदेश आवे उतने वैक्रिय शरीरका बधेलगा है दूसरा मुकेलगा अनन्ता है औदारिक शरीर वत्

(३) आहारक शरीरका दो भेद–बधेलगा और मुकेलगा जिसमें बधेलगा स्यात् मिले स्यात् न मिले अगर मिले तो जघन्य १–२–३ यावत् उत्कृष्ट प्रत्येक हजार मुकेलगा अनन्ता औदारिक शरीर वत् क्योंकि मूलकाल अनन्ता है उसमें अनन्ते जीवोंने आहारक शरीर करके छोडा है

(३) सस्थान=सस्थान आकारको कहते है जो क्रमसे कम दो परमाणु और ज्यादामें सख्याते, असख्याते या अनन्ते परमाणुवोंसे बनता है। जिसके परिमडल सस्थान वट स० त्रस स० चौरस स० अयतन स०।

(४) भेद-पुद्गल भेदनेसे पाच प्रकारसे भेदाता है। यथा (१) खडा भेद-जेसे काष्टादि जो भेदनेके बाद फिर न मिले। (२) परतर-भोडल, अलगोलादि। (३) चूर्ण-गहू, बाजरी, सुठ, मरिचादि। (४) उकलीया-मूग, मोठादिकी फली जो तापसे फटे। (५) अणुतडीया-पानी सुख जाने पर मट्टीकी रेखा।

(५) वर्ण-काला, नीला, लाल, पीला, सफेद ये मूल वर्ण पाच है और इनके सयोगसे अनेक होते है जेसे वैगनी, मजागरी, बदामी, केसरीयादि

(६) गन्ध-सुगन्ध और दुर्गन्ध

(७) रस-तिक्त, कटु कषायलो, खाटो और मधुर (मीठो) मूल रस पाच है और नमकको सामिल करनेसे छ रस कहे जाते है

(८) स्पर्श-कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध और रुक्ष

(९) अगरु लघु-न हलका और न भारी जेसे परमाणवादि प्रदेश, मन, भाषा और कार्मण शरीरादिके पुदगल

(१०) शब्द-दो भेद, सुस्वर, दुस्वर

सेवभते सेवभते तमेव सचम्।

(४) तेजस शरीरका दो भेद–बधेलगा और मूके-लगा जिसमें बधेलगा अनन्ता है कालसे एकेक समय एकेक तेजस शरीर निकाले तो अनन्ती उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी व्यतीत होती है क्षेत्रसे–एकेक तेजस शरीर एकेक आकाश प्रदेश पर रखे तो लोक जैसे अनन्ता लोक पूर्ण होते हैं द्रव्यसे–सिद्धोंसे अनन्त गुणे सर्व जीवसे अनन्तमें भाग है कारण सिद्धोंके तेजस शरीर नहीं है इसलिये अनन्तमें भाग कम कहा और मुकेलगा अनन्ता है काल क्षेत्र पूर्ववत् द्रव्यसे सब जीवोंसे अनन्त गुणा और सब जीवोंका वर्गमूल करनसे अनन्तमो भाग कम, वर्ग उसे कहते हैं के बराबरी की सख्याको परस्पर गुणा करना

(५) कार्मण शरीरके दो भेद–तेजस शरीरवत् समझ लेना, कारन तेजस शरीर है वहा कार्मण शरीर नियमा है इसलिये सदृसही समझना

इति समुच्चय जीव

नारकीमें औदारिक, आहारक शरीरका बधेलगा नहीं है और मूकेलगा अनन्ता है समुच्चयवत् और वैक्रियका दो भेद है बधेलगा और मूकेलगा जिसमें बधेलगा असख्याता हैं कालसे असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी क्षेत्रसे–चौदह राजलोकका घन चौतरा सात राज प्रमाण है उसके एक प्रदेशी श्रेणीका प्रतर लीजे जिसमें विषय सूचि अगुल क्षेत्रमें जितने आकाश प्रदेश आवे उसके प्रथम वर्ग मूलको दूसरे वर्ग मूलसे गुणा करे उतना है, याने असत्य कल्पनासे २५६ आकाश प्रदेश है उसका पहिला वर्गमूल

थोकडा नं० १८
श्री पन्नवणा सूत्र पद १५
(इन्द्रिय पद)

इन्द्रिय पदका पहिला उद्देशा शिघ्रबोध भाग ९में छप चुका है. इस ससारार्णवमें परिभ्रमण करते हुवे एकेक जीवने भूत कालमें कितनी २ इन्द्रिया करी है, वर्तमानमें कौनसा जीव कितनी इन्द्रिया बाधके बैठा है भविष्यमें कौनसा जीव कितनी इन्द्रिय बाधेगा यह सब इस थोकडे द्वारा कहेंगे

इन्द्रिय दो प्रकारकी है *द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय जिसमें द्रव्येन्द्रियके ८ भेद यथा कानदो, नेत्रदो, घ्राण दो (घ्राणके दो स्वर होते हैं) जिह्वा एक, स्पर्श एक एवं आठ इन्द्रियोंको चौवीस दण्डक पर चार २ द्वारसे उतारेंगे।

नारकी १ भुवनपति १० व्यंतर १ ज्योतिषी १ वैमानिक १ तिर्यंच पचेन्द्री १ मनुष्य १ एव १६ दडकमें द्रव्येंद्रिय आठ पावे एकेन्द्रियके पाच दडकमें द्रव्येन्द्रिय एक स्पर्शेन्द्रि पावे. बेरिन्द्रिय में (२) रस और स्पर्श तेरिन्द्रियमे ४ दो घ्राण जादा चौरिन्द्रियमें ६ दो चक्षु जादा (चक्षु २ घ्राण २ रस १ स्पर्श१)

हे भगवान ! एक नारकीके नेरीयाने भूतकालमें द्रव्येन्द्रिय कितनी की थी वर्तमानमें कितनी है भविष्यमें कितनी करेगा ? एक

* द्रव्येन्द्रिय दोनो कानो द्वारा इष्ट अनिष्ट शब्द श्रवण करना कथचित् कोइ पचेंद्रिय एक कानसे न भी सुन तो द्रव्यापक्षा एक द्रव्येंद्रिय सुन्य कही जाती है और शब्द सुनके राग द्वेष करना यह भावेंद्रिय हैं

सोलह हुवा और दूसरा सोलहका वर्गमूल चार हुवा और तीसरा चारका वर्गमूल दो हुवा यहा पहलेसे और दूसरेसे गुणा करना है इसलिये पहिला वर्गमूल १६ और दूसरा ४को परस्पर गुणा करनेसे ६४ हुवे इतने वैक्रिय शरीर है अर्थात् विषमसुचि अगुलके प्रदेशका वर्गमूल करके प्रथम वर्गमूलको दूसरे वर्गमूलसे गुणा करे उतना है और वे भी असख्याते होते हैं और वैक्रिय शरीरका मूके लगा अनन्ता है समुचयवत् तेजस, कर्मणका बधेलगा वैक्रियवत् और मूकेलगा समुचयवत्

असुरकुमार देवताओंमें औदारिक आहारकका बधेलगा नहीं है मूकेलगा अनन्ता है समुचयवत् और वैक्रियका दो भेद बधेलगा, मूकेलगा जिसमें बधेलगा असख्याता है कालसे असख्याती उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी क्षेत्रसे ७ राजघन चौतरा कीजे जिसकी श्रेणी परतर एक प्रदेशीके असख्यातमें भाग क्षेत्रसे विषम सूची अगुलमें जितना प्रदेश (असख्याता) आवे उसका प्रथम वगमूल निकालना और जितना प्रदेश प्रथम वर्गमूलमें आवे उनके असख्यातमें भागमें जो आकाश प्रदेश आये है उतने असुरकुमारके वैक्रिय शरीरका बधेलगा है-जैसे असत्य कल्पनासे प्रदेश २५६ है जिसका प्रथम वर्गमूल १६ दूसरा ४ और तीसरा २ है तो यहा प्रथम वर्गमूलके असख्यातमें भाग जितना आकाश प्रदेश आवे उतने हैं और तेजस, कार्मणका बधेलगा वैक्रियवत् तीनोंका मूकेलगा अनन्ता समुचयवत्

एव नागादि नव निकायके देवता भी समझना

नारकी के नेरीया भूतकालमें नारकीपने अनती वार उत्पन्न हुवा इसलिये अनन्ती इन्द्रिया की है वर्तमान कालमें ८ इन्द्रिय बाधके बैठा है- भविष्यमें द्रव्येंद्रिय ८-१६-१७ सख्याती, असख्याती या अनन्ती करेगा क्योंकि जो नारकीसे निकलके मनुष्यका भव कर मोक्ष जायगा उसकी अपेक्षा ८ इन्द्रिय कही और जो नारकीमे त्रियच पचेंद्रियका भवकर मनुष्य भवमें मोक्ष जायगा उसकी अपेक्षा १६ कही और नारकीसे त्रियच पचेंद्रियका भव कर फिर पृथ्वी कायका भव करे और वहासे मनुष्य भवमें मोक्ष जानेवाला जीव १७ इन्द्रिय करेगा और जिसको ज्यादा भव भ्रमण करना है वह सख्याती, असख्याती या अनन्ती इन्द्रिया करेगा इसी तरह सब जगह समझ लेना

एक असुरकुमारके देवताका प्रश्न-भूतकालमें अनन्ती इन्द्रिया वर्तमान कालमें आठ भविष्य कालमें ८-९-१७ सख्याती, असख्याती या अनन्ती इसमें नौ कहनेका कारण यह है कि असुरकुमारसे निकल पृथ्वी कायमें उत्पन्न हो फिर मनुष्य भवकर मोक्ष जायगा उसकी अपेक्षासे कहा शेष पूर्ववत्-एव यावत् स्तनितकुमार भी कहना

एक पृथ्वी कायके जीवकी पृच्छा-भूतकालमें अनन्ती इन्द्रिया वर्तमान काल एक स्पर्शेंद्रिय भविष्यमें ८-९-१७ सख्याती, अस० या अनन्ती भावना पूर्ववत् एव अप्प काय तथा वनस्पति काय भी समझ लेना

एक तेउ कायके जीवकी पृच्छा-भूतकालमें अनन्ती इन्द्रिया,

पृथ्वी कायमें वैक्रिय, आहारिकके बधेलगा नहीं है मूके-लगा अनन्ता है समुचयवत् पृथ्वी कायमें औदारिक शरीरके दो भेद हैं (१) बन्धेलगा (२) मूकेलगा जिसमें बधेलगा असख्यात है कालसे एकेक समयमें एकेक औदारिक शरीर निकाले तो अस० उत्सर्पिणि, अवसर्पिणि व्यतीत हो जाय क्षेत्रसे एकेक आकाश प्रदेशपर एकेक औदारिक शरीर रखते सम्पूर्ण लोक और ऐसे असख्याते लोक पूर्ण हो जाय मुकेलगा अनन्ता अभव्यसे अनन्त गुणा और सिद्धोंसे अनन्तमें भाग है तेजस कार्मणका बधेलगा औदारिक जितना और मूकेलगा अनन्ता समुचयवत् इसी माफक अप् काय, तेऊकाय, वायुकाय और वनस्पति काय भी समझना परन्तु वायु कायमें वैक्रिय शरीरका बधेलगा अस० है वे समय २ निकाले तो क्षेत्र पल्योपमके असख्याता भाग समय हो उतना और वनस्पतिमें, तेजस कार्मणका बधेलगा अनन्ता है कालसे अनन्ती उत्सर्पिणि, अवसर्पिणि क्षेत्रसे अनन्ता लोकाकाश जितना द्रव्यसे सर्व जीवसे अनन्ता गुणा और सर्वजीवोंका वर्ग मूल करनेसे अनन्तमें भाग ऊणा (न्यून) है

बेइन्द्रियमें औदारिक शरीरके दो भेद है बधेलगा और मूके-लगा जिसमें बन्धेलगा असख्याता है कालसे असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी क्षेत्रसे सात राजका घन चौतरा कराना जिसके श्रेणी परतरके असख्यातमें भाग जिसका विषमसूचि अस-ख्याता कोडा कोडी योजन क्षेत्र लीजे उसमें आकाश प्रदेश आवे उनको वर्गमूल कीजे जैसे ६५५३६ का वर्गमूल २५६ और २५६ का वर्गमूल १६ और इसका वर्ग ४ इनका२ सर्व वर्गमूलोंको

वर्तमानमें एक और भविष्यमे ९–१० स० अस० या अनन्ती एव वायू काय भी समझना

एक तेरिन्द्रिय जीवकी पृच्छा–भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें दो भविष्यमें नव, दश, स० अस० या अनन्ती भावना पूर्ववत एव तेरिन्द्रिय परन्तु वर्तमानमें ४ एव चौरिन्द्री परतु वर्तमानमें ८ (यहा आठ नहीं कहनेका कारण यह है कि तेऊ, वायू और विकलेन्द्री अनन्तर भव मोक्षगामी नहीं होते है ।

एक त्रियच पचेंद्रीकी पृच्छा–भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें ८ भविष्यमें ८–९–१७ स० अस० या अनन्ती भावना पूर्ववत।

एव मनुष्यकी पृच्छा–भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें ८ भविष्यमें कोई करेगा कोई न करेगा (तद्भव मोक्षगामी) जो करेगा वह ८–९–१० स० अस० या अनन्ती भावना पर्ववत् ।

व्यन्तर देवकी पृच्छा–भूतकालमें अनन्ती वर्तमानमें ८ भविष्यमें ८–९–१० स० अस० य अनन्ती भावना पूर्ववत् एव ज्योतिषी पहिला, दूसरा देवलोक भी समझ लेना ।

तीजा देवलोककी पृच्छा–भूतकालमें अनन्ती वर्तमानमें ८ भविष्यमें ८–१६–१७ स० अस० या अनन्ती एव यावत् नौग्रैवेक तक कहना ।

एकेक विजय वैमान देवकी पृच्छा–भूतकालमें अनन्ती वर्तमानमें ८ भविष्यमें ८–१६–२४ सख्याती करेगा क्योंकि विजय वैमानके देवता पृथ्व्यादिमें नहीं उत्पन्न होने एव वैजियन्त, जयन्त, अपराजित ।

इकठा करनेसे २७८ प्रदेश होते हैं इतनी २ जगह एकेक वेरिन्द्रियको देतो सम्पूर्ण परतर भरजाय और मुकेलगा समुचयवत् इसी माफक तेजस कार्मणका बधेलगा मुकेलगा भी समझना

वेरिन्द्रियमें वैक्रिय आहारकका बधेलगा, नहीं है मूकेलगा समुचयवत् एव तेरिन्द्रिय, चौरिंद्रिय और तियच पचेंद्रिय भी समझना परन्तु तिर्यंच पचेन्द्रियमें वैक्रिय शरीरका बधेलगा भुवन पतिकी माफक तथा क्षेत्रके वर्गमूलमें १६ प्रदेश आया था जिसके असंख्यातमें भाग तिर्यंच पचेन्द्रियमें वक्रिय शरीरका बधेलगा है शेषाधिकार वेरिंद्रियवत्

मनुष्यमें औदारिक शरीरका दो भेद है बधेलगा और मूके लगा जिसमें औदारिक शरीरका बधेलगा स्यात् सख्याता स्यात असख्याता कारण मनुष्य सज्ञी सख्याते है और असज्ञी असख्याते जो सख्याते हैं वे तीजा जमल परतरके ऊपर और चौथा जमल परतरके अन्दर (जमल परतरके आठ अक होते हैं) अर्थात् २९ अक जितने सन्नी मनुष्य है–७९२२८१६२५१४२६४३३७-५९३५४३९५०३३६ इतनी सख्याके मनुष्य हैं अथवा १ को छिन्नव (९६) बार गुणा करे इतना मनुष्य है और जो असख्याते औदारिक है वे कालसे असख्याती उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी और क्षेत्रसे लोकका धन चौतरा कीजे जिसके एक आकाशकी श्रेणी परतर जिसमें आकाश प्रदेशकी असत्य कल्पना ६५५३६ जिसका वर्गमूल–२५६–१६–४–२ दुजेको चौथेसे गुणा करनेसे ३२ प्रदेश प्रमाण एकेक मनुष्यको बैठनेके लिये स्थान दे तो सम्पूर्ण

सर्वार्थ सिद्ध वैमानके एकेक देवताकी पृच्छा–भूतकालमें अनती, वर्तमानमें आठ भविष्यमें आठ क रण एकावतारी है

इतिद्वारम्

घणा न रकीके नेरीयोंकी पृच्छा–भूतकालमें अनन्ती, वर्तमान कालमें असख्याती क्योंकि असख्यात नारकी है और भविष्यमें अनती इन्द्रिया करेगा क्योंकि नारकीके जीवोंमें भव्या भव्य दोनों हैं एव यावत् नौग्रैवेक तक कहना और वनस्पतिमें जीव अनन्ते हैं पर तु औदारिक शरीर असख्याते हैं इस लिये इन्द्रिय असख्याती कही और मनुष्यमें वर्तमानापेक्षा स्यात् सख्याती स्यात् असख्याती समझना

घणा विजय वैमानके देवोंकी पृच्छा–भूतकालमें अनन्ती वर्तमान कालमें असख्याती और भविष्यमें असख्याती करेगा एव वैजयन्त, जयन्त और अपराजित भी समझना

घणा सर्वार्थसिद्ध वैमानके देवोंकी पृच्छा–भूतकालमें अनती, वर्तमानमें सख्याती और भविष्यमें सख्यातीइन्द्रिया करेंगे।

इति द्वारम

एकेक नारकीके नेरीया नारकापने द्रव्येंद्रियोंकी पृच्छा–भूतकालमें अनती वर्तमानमें आठ भविष्यमें कोई करेगा कोई न भी करेगा करेगा वह ८–१६–२४ स० अस० या अनन्ती इन्द्रिया करेगा.

एकेक नारकी कानेरीया असुरकुमारपने द्रव्येन्द्रिया कितनी–भूतकालमें अनन्ती वर्तमानमें एक भी नहीं और भविष्यमें कोई करेगा कोई न भी करेगा जो करेगा वह ८–१६–२४ स० अस० या अनन्ती इन्द्रिया करेगा एव यावत् स्तनितकुमार।

एक नारकीका नेरीया पृथ्वीकायपने द्रव्येन्द्रिया कितनी ? भूतकालमें अनती, वर्तमानमें एक भी नहीं भविष्यमें जो करेगा तो १-२-३ सख्याती असख्याती अनती एव यावत् वनस्पतिकाय, एव बेइन्द्रिय परतु भविष्यमें अगर करेगा तो २-४-६ सख्याती असख्याती अनती एव तेरिंद्रिय परतु भविष्यमें अगर करेगा तो ४-८-१२ सख्याती असख्याती अनती एव चौरिंद्रिय परतु भविष्यमें करेगा तो ६-१२-१८ सख्याती असख्याती अनती एव तिर्यंच पचिन्द्रिय परतु भविष्यमें करेगा तो ८-१६-२४ सख्याती असख्याती अनती एव मनुष्यमें परतु भविष्यमें नियमा करेगा वह स्यात ८-१६-२४ सख्याती असख्याती अनती ।

व्यतर ज्योतिषी वैमानीक यावत् नौग्रैवेक तक भूतकालमें अनती वर्तमान एक भी नहीं भविष्यमें कोई करे कोई न करे अगर करे तो ८-१६-२४ सख्याती अस० अन० ।

एकेक नारकीका नेरिया विजय वैमानपने द्रव्येन्द्रिय कितनी ? भूतकालमें एक भी नहीं की थी वर्तमान कालमें एक भी नहीं भविष्यमें कोई करेगा कोई न करेगा अगर करेगा तो ८-१६ कारण विजय वैमानके देवता दो भवसे अधिक नहीं करते एव विजयन्त, जयत, अपराजित

एव सर्वार्थसिद्ध परतु भविष्यमें जो करेगा वह आठ कारण एक भव ही करता है यह एक नारकीके नेरियेको २४ दडक पर उतारा है इसी माफक १० भुवनपतियोंको भी कह देना स्वस्थान पर वर्तमान आठ द्रव्येंद्रिय है पर स्थानमें नहीं है शेष नारकीवत् समझना इसी माफक पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय और तिर्यंच

और औदारिकके मिश्रको असाम्वता कहा है वह मनुष्यमें उत्पन्न होनेका १२ मुहूर्तका विरहकालकी अपेक्षा है ।

हे भगवान गति कितने प्रकारकी है ? गति पाच प्रकारकी है ।

(१) प्रयोग गति—जो पूर्व १४४ भागे कह=आये हैं इसी माफक समझना

(२) ततगति—जो ग्राम नगर आदिको जा रहा है परन्तु जहा तक नगरमें प्रवेश न हुवा अर्थात राहस्ते चलता है उसको ततगति कहते हैं

(३) बन्दण छेदण गति—जीवसे शरीरका अलग होना शरीरसे जीवका अलग होना

(४) उववाय गति—उत्पन्न गतिके तीन भेद है (१) क्षेत्र उत्पन्न गति (२) भवो उत्पन्न गति (३) नो भवो उत्पन्न गति । जिसमें (१) क्षेत्र उत्पन्न गतिके पाच भेद है यथा—

(१) नरकमें उत्पन्न क्षेत्र जिसका रत्नप्रभादी सात भेद है

(२) तिर्यचमें उत्पन्न जिसका एकेंद्रियादि पाच भेद है

(३) मनुष्यमें उत्पन्न जिसका गर्भज समुत्सर्म दो भेद है

(४) देवतामें जिसका भुवनपतियादि ४ भेद है

(५) सिद्ध उत्पन्न गतिके अनेक भेद है जम्बूद्वीपादि अढाई द्वीप ४५ लक्ष योजनमें कोई भी प्रदेश ऐसा नहीं है कि वहासे सिद्ध न हुवा हो अर्थात् सर्व स्थानसे सिद्ध हुवे है अत्र यहा पर अढाई द्वीप दो समुद्रमें जितने पर्वत और क्षेत्र है उनका नाम सर्व यहा पर कह देना

(२) भवो उत्पन्न गति—नरकादि चार गतिमें उत्पन्न

पाचेंद्रिय भी समझना परन्तु वर्तमान् स्वस्थानमें जितनी इद्रिय है उतनी कहना।

एव मनुष्य नारकीपणे कितनी द्रव्येन्द्रिया करेगा ?

भूतकाल अनती वर्तमान्में एक भी नहीं भविष्य कोई करेगा कोई नहीं, अगर करेगा वह ८–१६–२४ सख्याती असख्याती अनती एव असुरादि १० भुवनपति भी कहना। पृथ्वीपणे भूत काल अनती वर्तमानमें एक भी नहीं भविष्यमे जो करेगा तो १–२–३ यावत सख्याती असख्याती अनती एव यावत् वनस्पति एव वेन्द्रिय परन्तु भविष्यमें करेगा तो २–४–६ तेरिन्द्रिय ४–८। १२ चौरिन्द्रिय ६–१२–१८ तिर्यंच पाचेन्द्रिय ८-१६–२४ यावत सख्याती असख्याती अनती करेगा।

एक मनुष्य–मनुष्य पणे द्रव्येंद्रिय कितनी करेगा भूत० अनती वर्तमान आठ भविष्यमें कोई करे कोई न करे अगर करे तो ८–१६–२४ सख्याती असख्याती अनती करेगा व्यतर ज्योतिषी वैमानिक यावत नौग्रैवेक तक भुत अनती वर्तमान एक भी नहीं भविष्य अगर करेगा तो ८-१६ २४ सख्याती असख्याती अनती।

चार अनुत्तर वैमानके देवतापणे कितनी द्रव्येंद्रिया करेगा ?

भूतकाल किसीने की किसीने नहीं की जिसने की उसने आठ तथा शोला वर्तमान नहीं भविष्य कोई करेगा नहीं करेगा जो करेगा वह ८–१६ करेगा और सर्वार्थसिद्ध पणे मनुष्य भूतकाल किसीने की किसीने नहीं की और करी उसने नियमा आठ वर्तमान नहीं भविष्य करेगा तो आठ करेगा।

(१७) बधणाविमोयण गति--जैसे अम्र अवडी बीला कबीट इत्यादि पक जाने पर भूमि पर पडते हैं अन्तराले गति करते हैं उन्हींको बन्धण विमोयण गति कहते हैं

कण्ठस्थ करनेके लिये स्वरूप लिखा है विशेष विस्तार गुरु मुखसे समझो इति

सेवभते सेवभते तमेव सचम् ।

इति शीघ्रबोध या थोकड़ा प्रबन्ध

भाग ११ वा

व्यंतर ज्योतीषीका बोल २४ दंडक पर असुर कुमारकी माफक कह देना ।

सौधर्म देवलोकसे नौग्रैवेक तकके एक एक देवता कितनी द्रव्येंद्रिया करेगा ? असुर कुमारके माफक परन्तु इतना विशेष है कि विजयादिक वैमानमें भूतकाल किसीने करी किसीने नहीं करी जिसने करी है तो ८ करी है वर्तमान नहीं भविष्य आठ या सोला करेगा और सर्वार्थसिद्ध वैमानमें भूतकाल नहीं वर्तमान नहीं भविष्य करेगा तो आठ करेगा

एकेक विजय वैमानका देवता नारकीपणे भूतकाल द्रव्येंद्रिय अनतीकी वर्तमान नहीं भविष्य नहीं करे एव यावत् पांचेंद्रिय तिर्यंच तक। मनुष्यपणे भूतकाल अनती वर्तमान नहीं भविष्य नियमा करेगा-स्यात ८-१६-२४ सन्ख्याती । वाणाव्यंतर जोतिषीमें भूतकाल अनती वर्तमान और भविष्य नहीं ।

सौधर्म देवलोकपणे भूतकाल अनती वर्तमान नहीं भविष्य करेगा तो ८-१६-२४-सख्याती एव यावत् नौग्रैवेक तक समझना विजयादि ४ अनुत्तर वैमानपणे भूतकाल करी होवो ८ भविष्यमें करेगा तो आठ । सर्वार्थ सिद्धपणे भूत वर्तमान नहीं । भविष्य करेगा तो आठ करेगा इसी माफक विजयन्त व जयन्त अपराजीत ।

एकेक सर्वार्थ सिद्ध वैमानके देवता नारकीपणे द्रव्येन्द्रिय भूतकाल अनती वर्तमान और भविष्यमें नहीं एव यावत मनुष्यवर्जके नौग्रैवेक तक समझना मनुष्यमें अतीता अनती वर्तमान नहीं भविष्यमें नियमा आठ करेगा । विजयादि ४ अनुत्तर वैमानके

देवपणे मूतकाल किसीने की किसीने नहीं की की तो आठ मान और भविष्य एक भी नहीं और सर्वार्थ सिद्धपणे ० नहीं वर्तमान आठ भविष्य नहीं।

इति द्वारम्

घणा जीव आपसमे द्रव्येन्द्रिया ?

घणा नारकीका नेरिया नारकीपणे द्रव्येन्द्रिया कितनी करी? भूतकाल अनती वर्तमान असख्याती भविष्य कालमें अनती करेगा एव यावत् नौग्रैवेक परन्तु परस्थानमें वर्तमान एक भी नहीं कहना।

घणा नारकीका नेरिया पाच अनुत्तर वैमानपणे द्रव्येन्द्रिय भूतकाल और वर्तमानमें एक भी नहीं करी भविष्यमे असख्याती करेगा

यह नारकीका दडक २४ दडक पर कहा इसी माफक तिर्यच पचेन्द्रिय तक भी कह देना परन्तु वनस्पतिके दडकका जीव भविष्यमें सर्व ठेकाणे यावत सर्वार्थसिद्ध तक अनती द्रव्येन्द्रिय करेगा कारण जीव अनता है।

घणा मनुष्य नारकीपणे द्रव्येंद्रिय भूतकाल अनती वर्तमान नही भविष्यमें अनती एव यावत् नौग्रैवेक तक परन्तु मनुष्य स्वस्थानमें वर्तमान स्यात सख्यात स्यात असख्यात कहना।

चार अनुत्तर वैमान पणे० मूतकाल सख्यात वर्तमान नहीं भविष्य स्यात सख्यात स्यात् असख्यात और सर्वार्थसिद्ध पणे मूतकाल वर्तमान नहीं भविष्य स्यात सख्यात, स्यात असख्यात एव व्यतर जोतिषी वैमानिक यावत नौग्रैवेक तक समझना। घणा च्यार अनुत्तर वैमानका देवता नारकी पणे द्रव्येंद्रिय मूतकाल अनती वर्तमान और भविष्य नहीं एव जोतिषी तक समझना

ज्ञान बगेचेके पुष्पोंको कब सूंघोगे ?

भेट ! भेट !! ४५ पुस्तकों भेट !!!

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमालासे जैन सिद्धांतोंके तत्त्वज्ञान मय आज तक ४९ पुष्प प्रसिद्ध हो चुके हैं वह ज्ञानवृद्धिके लिये जैन साधु साध्वि ज्ञानभंडार पाठशाला और लायब्रेरीको भेट देनेका निश्चय किया गया है।

सद्गृहस्थ मंगानेवालोंकि मात्र रु १) किंमतसे ४९ पुस्तकें भेजी जावेगीं।

पोष्ट खरचाकी सबके लिये वी० पी० की जावेगीं।

जल्दी कीजिये यह सरत केवल एक ही मासके लिये है पुस्तकें सीलकमें होगीं वहा तक भेजी जावेगीं।

लिखो-श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला

मु० फलोधि-मारवाड़।

प्रकाशक-मेघराज मुणोत-फलोधि (मारवाड़)
मूलचंद किसनदास कापडिया "जैन विजय" प्रि० प्रेस-सुरत।

परन्तु मनुष्य पणे भविष्यमें असम्याती करेगा एव सोधर्मसे यावत् नौग्रैवेक तक।

च्यार अनुत्तर वैमान पणे अतीता असरव्याती वर्तमान असम्याती भविष्य असख्याती सर्वार्थसिद्धपणे भूतकाल नहीं वर्तमान नहीं भविष्य असख्याती। घणा सर्वार्थसिद्धका देवता नारकी पणे द्रव्येन्द्रिय भूतकाल अनती वर्तमान भविष्य एक भी नहीं एव मनुष्य वर्जके यावत् नौग्रवेक तक समझना मनुष्य पणे अतीना अनती वर्तमान नहीं भविष्य सख्याती।

च्यार अनुत्तर वैमानपणे भूतकाल सख्याती वर्तमान और भविष्य नहीं सर्वार्थसिद्ध वैमानका घणा देवता घणा सर्वार्थ सिद्ध वैमानका देवता परणे द्रव्येन्द्रिय भूतकालमेंएक भी नहीं वर्तमानमें सख्याती भविष्य कालमें एक भी नहीं करेगा।

इति द्वारम्।

हे भगवान भाव इन्द्रिया कितनी हैं ? भाव इन्द्रिया ५ हैं यथा श्रोतेन्द्रिय चक्षु इन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय जैसे द्रव्येन्द्रिया ८ को २४ दडक परच्यारद्वार करके उतारी गई हैं इसी माफक भाव इन्द्रिया ५ है उसको २४ दडकपर उपरवत् च्यार २ द्वार उतरने चाहिये यदि द्रव्येन्द्रिय कठस्थ हो जायगी तब भाव इन्द्रियका उपयोग सहजमें हो जायगा इस लिये यहापर इसका विवरण नहीं किया इति।

सेवभते सेवभते तमेव सचम्

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः।

अथ श्री

शीघ्रबोध

या

थोकडा प्रबन्ध

भाग १२ वां.

संग्राहक–

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनि
श्रीज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

प्रकाशक -
श्रीसंघ फलोधी सुपनादिकि आवद से

प्रबन्ध कर्ता–
शाह मेघराजजी मोणोयत मु० फलोधी

प्रथमावृत्ति १००० वीर सं० २४४८

थोकड़ा नं० १९
श्रीपन्नवणा सूत्र पद १६
(प्रयोग पद)

जिनका चलन स्वभाव है उसको प्रयोग कहते हैं वे प्रयोग दो प्रकारके हैं (१) शुभ (२) अशुभ दोनों प्रकारको क्रियामें मदद करते हैं प्रयोगकी प्रेरणा प्रथमसे तेरहवा गुणस्थान तक है जिसमें प्रथमसे दशमें गुणस्थान तक प्रयोगके साथ कषायका संयोग होनेसे सकषायकी क्रिया लगती है और ११-१२-१३ गुणस्थानमें प्रयोगके साथ कषायका संयोग नहीं है अर्थात् वहा अकषायी है वास्ते इर्यावहीकी क्रिया लगती है इस लिये प्रथम प्रयोगके स्वरूप को खूब दीर्घदृष्टीसे समझना जरूरी है।

हे भगवान् प्रयोग कितने प्रकारके है ?

प्रयोग १५ प्रकारके हैं यथा—सत्य मनयोग, असत्य मनयोग, मिश्रमनयोग, व्यवहारमनयोग, सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, मिश्रवचनयोग, व्यवहार वचनयोग, औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र कामयोग, वैक्रिय काययोग, वैक्रिय मिश्र काययोग, आहारिक काययोग, आहारिक मिश्र काययोग कारमण काययोग, इन्हीं १५ प्रयोगोंको २४ दंडक पर उतारेंगे

समुचय जीवमें प्रयोग १५ पावे

नारकी और देवताओंमें प्रयोग पावे ११=४ मनका ४ वचनका १ वैक्रियकाययोग १ वैक्रिय मिश्रकाययोग १ कारमण काययोग।

ज्ञान बगेचेके पुष्पोंको कब सूंघोगे ?

भेट ! भेट !! ४५ पुस्तकों भेट !!!

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमालासे जैन सिद्धान्तोंके तत्त्वज्ञान मय आज तक ४९ पुष्प प्रसिद्ध हो चुके हैं वह ज्ञानवृद्धिके लिये जैन साधु साध्वि ज्ञानभंडार पाठशाला और लायब्रेरीको भेट देनेका निश्चय किया गया है ।

सद्गृहस्थ मगानेवालोंको मात्र रु १) किंमतसे ४५ पुस्तकें भेजी जावेगीं ।

पोष्ट खरचाकी सबके लिये बी० पी० की जावेगीं ।

जल्दी कीजिये यह खबर केवल एक ही मासके लिये है पुस्तकें स्टोकमें होगीं वहां तक भेजी जावेगीं ।

लिखो—श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला

मु० फलोधि—मारवाड ।

प्रकाशक—मेघराज मुणोत—फलोधि (मारवाड)
मुद्रक किसनदास कापडिया "जैन विजय" प्रि० प्रेस—

पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, बेंद्रिय, तेन्द्रिय, चौन्द्रिय, इन ७ बोलोंमें प्रयोग ३ पावे औदारिक काययोग, औदारिक मिश्रकाययोग, कारमाण काययोग परन्तु तीन वैकलेंद्रिमें व्यवहार भाषाधिक होनासे ४ योग। वायु कायमें प्रयोग पावे ५=२ पूर्वोक्त वैक्रिय और वैक्रय मिश्र काययोग एव पाच तथा तिर्यंच पाचेंद्रियमे प्रयोग १३ पावे आहारिककाययोग आहारिक मिश्र काय योग दो वर्जके।

मनुष्यमें १५ प्रयोग पावे

किस दंडकमें कितने प्रयोग सास्वते है ?

समुचय जीवोंमें प्रयोग १५ है जिसमें १३ सास्वते मिलते हैं और आहारिककाययोग तथा आहारिक मिश्र काययोगमें दोनों प्रयोग कभी मिलते हैं कभी नहीं भी मिलते कारण यह दोनों प्रयोग पूर्वधर मुनिराजके होते हैं अगर इनका विकल्प किया जाय तो ९ भागा होते हैं।

(१) तेरह योग सर्वकालमें सास्वते मिले

(२) तेरह सास्वता और आहारिकका एक

(३) „ „ घणा

(४) „ आहारिकका मिश्र एक

(५) „ „ घणा

(६) „ आहारिकका एक मिश्रका एक

(७) „ „ „ „ घणा

(८) „ „ घणा „ एक

(९) „ „ घणा „ घणा

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं० ७९

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः।

अथ श्री

शीघ्रबोध

या

थोकडा प्रबन्ध

भाग १२ वां

संपादक—

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनि

श्रीज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

प्रकाशक—

श्रीसंघ फलोधी सुपनादिकि आवंद से

प्रबन्ध कर्त्ता—

शाह मेघराजजी मुणोयत मु० फलोधी

प्रथमावृत्ति १००० वीर सं० २४४८

नारकीमें प्रयोग ११ है जिसमे १० सास्वते हैं और कारमण असास्वता है जिसका भागा ३ है (१) दश प्रयोग सास्वता (२) दश प्रयोग सास्वता और कारमण एक मिले (३) दश प्रयोग सास्वता और कारमण घणा मिले एव देवताओंके १४ दडकमें तीन तीन भागा सर्व ४२ भागे हुवे ।

पाच स्थावरमें भागा नहीं होता है

तीन विकलेंद्रियमें प्रयोग ४ पावे जिसमें ३ सास्वता कारमण असास्वता भागा ३ (१) तीन प्रयोगवाला घणा (२) तीन प्रयोगवाला घणा और कारमण एक (३) तीन प्रयोगवाला घणा कारमणका भी घणा एव ९ भागा

तिर्यंच पाचेद्रियमें प्रयोग पावे १३ जिसमें १२ सास्वता कारमण असास्वता जिसका भागा ३ (१) बारहका घणा (२) बारहका घणा कारमण एक (३) बारहका घणा कारमण घणा ।

मनुष्यमें प्रयोग १५ पावे जिसमें ११ सास्वता ४ असास्वता सो (१) आहारिक (२) आहारिकमिश्र (३) औदारिक मिश्र (४) कारमण जिनके भागा ८१ सर्व भागोंके अदर ११ का सास्वता बोलना चाहिये

(१) इग्यारहका घणा आहारिकका एक
(२) ,, ,, ,, घणा
(३) ,, ,, आहारिकका मिश्र एक
(४) ,, ,, ,, घणा
(५) ,, ,, औदारिकका मिश्र एक
(६) ,, ,, घणा

विषयानुक्रमणका ।

(७) „ „ कार्मणका एक

(८) „ „ „ घणा

द्विक सयोगी २४ भागा

आहारिक०	मिश्र०	आहारिक०	औ० मिश्र	आहारिक०	कार्मण
१	१	१	१	१	१
१	२	१	२	१	२
२	१	२	१	२	१
२	२	२	२	२	२

आ० मिश्र	औ० मिश्र	आ० मिश्र	कार्मण	औ०	कार्मण
१	१	१	१	१	१
१	२	१	२	१	२
२	१	२	१	२	१
२	२	२	२	२	२

त्रिक सयोगी ३२ भागा

आ०	आ० मिश्र	औ० मिश्र	आ०	आ० मिश्र	कार्मण
१	१	१	१	१	१
१	१	२	१	१	२
१	२	१	१	२	१
१	२	२	१	२	२
२	१	१	२	१	१
२	१	२	२	१	२
२	२	१	२	२	१
२	२	२	२	२	२

भूमिका ।

प्यारे वाचक वृन्दो !

श्री जिनेन्द्रदेवोंके फरमाये हुवे जैनागमों स्याद्वाद गभीर शैली जिन्होंके प्रत्येक व्याख्यासे चारों अनुयोगका ज्ञान हो शक्ता था परन्तु कालके प्रभावसे बुद्धि—बलकी हानि देखके श्रीमदार्य रक्षत सूरीजी महाराजने चारों अनुयोगोंको भिन्न भिन्न रूपसे रच कर भव्यात्माओं पर परमोपकार किया है ।

(१) **द्रव्यानुयोग**—जिसमें नय निक्षेप स्याद्वाद षट् द्रव्य जीव अजीव चैतयके साथ कर्मोंका सयोग या वियोग आत्मा या पुद्गलों की शक्ति इत्यादि वस्तु धर्मका प्रतिपादन है ।

(२) **गीणतानुयोग**—जिसमे नरकके नरका वासा देव लोके वैमान या क्षेत्रका लम्बा चौडा ऊर्ध्व अधो तीरछा क्षेत्र तथा ज्योतिषी देवोंके चलन क्षेत्रका परिमाण इत्यादि ।

(३) **चरणानुयोग** जिसमें साधू श्रावकोंकी क्रिया कल्प कायदा आदि ।

(४) **धर्म कथानुयोग**—जिसमें महा पुरुषोंके प्रभावीक चरित्र है इन्ही च्यारों अनुयोगके अदर प्रवेश करनेके लिये प्रथम च्यार व्यवहारीक शास्त्रोंकी आवश्यकता है ।

(१) द्रव्यानुयोगके लिये—न्यायशास्त्र
(२) गणतानुयोगके लिये-गणत शास्त्र
(३) चरणानुयोगके लिये–नीतिशास्त्र
(४) धर्म कथानुयोगके लिये–अलकार शास्त्र

आ०	औ० मिश्र	का०	आ० मिश्र	औ० मिश्र	कार्मण
१	१	१	१	१	१
१	१	३	१	१	३
१	३	१	१	३	१
१	३	३	१	३	३
३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३

चतुष्क संयोगी भागा १६

आ०	आ०मिश्र	औ०मिश्र	कार्मण	आ०	आ०मिश्र	औ०मिश्र	का०
१	१	१	१	३	१	१	१
१	१	१	३	३	१	१	३
१	१	३	१	३	१	३	१
१	१	३	३	३	१	३	३
१	३	१	१	३	३	१	१
१	३	१	३	३	३	१	३
१	३	३	१	३	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३

इति भागा ८१

एव भागा ९–४२–९–३–८१ सर्व १४४ भागा हुवा इति

नोट मनुष्यमें वैक्रिय मिश्र काययोगको सास्वत कहा है सो टीका कार कहते हैं कि विद्याधर वैक्रिय करते हैं इस अपेक्षासे है

इन्ही च्यारों व्यवहारीक शास्त्रोंकि साहितासे च्यारों अनुयोगमें सुखपूर्वक प्रवेश कर शक्ते है। पूर्वोक्त च्यारानुयोगमें शास्त्र कारोंने मौख्य आत्मकल्याणके लिये द्रव्यानुयोग फरमाया है सिवाय इन्होंके नान है वह सर्व शुष्क ज्ञान है इसी लिये आत्मरसीक भाइयोंको जहा तक बने वहा तक स्वशक्ति माफीक द्रव्यानुयोगके लिये प्रयत्न करना चाहिये।

यह बात आप लोक अच्छी तरहसे जानते है कि उच्च पदार्थको प्राप्त करनेको पुरुशार्थ भी उच्च कोटीका होना चाहिये। परन्तु जमाने हालमें कीतनेक भाइ ऊपरसे अच्छा टोल रखनेवाले अच्छी सुन्दर टाईटलके कीताबो बहुतसी एकत्र कर अल्मारीमें रख देते हैं कभी कीसी किताबके ४–५ पेज और कभी किसी किताबके पेज देखते है पढना अच्छा है परन्तु उन्होंसे जहा तक स्वरूप ही ज्ञान कण्ठस्थ न कीया जावेंगे वहा तक बढके आगेके लिये इतना लाभ नहीं उठा सकेगा उन्हीं द्रव्यानुयोग रसीक भाइयोंसे हम नम्रता पूर्वक निवेदन करते है कि आप एक तरहका व्यसन डीडाल दो कि इतना पाठ प्रतिदिन कण्ठस्थ करेगे या पढना करलो।

कण्ठस्थ ज्ञान करानेके लिये लेखकोंकी लेखक शैली भी ऐसी होनि चाहिये कि जिसमें ज्यादा विस्तार न करते हुवे मूल वस्तु और वस्तुका स्वरूप थोडा हीमें बतला दिया जाकि स्वल्प परिश्रममें कण्ठस्थ हो जा बाद मे विस्तारवाले ग्रन्थ भी सुख पूर्वक पढता जा और टीका मूल रहस्यको समझता जा यह साधन तब ही पाती होगा कि कुछ ज्ञान कण्ठस्थ करोगे।

नय भाग पमाणेहिं, जे आया सायवायण,
सम्मदिठि उस नाओं, भणिय वीयरायहिं ॥१॥

जो नय भागा परिमाण और स्याद्वाद कर आत्माको जाणि है उन्हींको ही वीतराग देवोंने सम्यग्दष्टि कहा है वास्ते पूर्वोक्त द्रव्यानुयोगमें प्रवेश होनेके लिये वर्तमानमें जो आगम है जिन्हींकि अंदर श्री **पन्नवणाजी** सूत्र जिन्होंका ३६ पद है वह सूत्र श्री वीरप्रभुके २३वें पाट पर श्री श्यामाचार्य महाराज वीर निर्वाण तीनसो वर्ष बाद रचा था वह सूत्र केवल द्रव्यानुयोगमय है जिस्की विस्तार वृति श्री मलियागिरी आचार्य महाराजने करी है वह पन्नवण सूत्र बहुत कठिन है परन्तु उन्हींको सुगम अर्थात् एकेक विषयको एकेक थोकडा रूप बनाके कुल ३६ पदोंका ६९ थोकडे इतने तो सुगम है कि जिन्होंको स्वल्प परिश्रमसे कण्ठस्थ करनेवाला मानों एक पन्नवण सूत्रको ही कण्ठस्थ किया हो वह ६९ थोकडे सबके सब आज तक छप चुके है परन्तु कोनसा भागमें कोनसा कोनसा थोकडा छपा है उन्हीके लिये निचे अनुक्रमणका दि जाती है ।

नम्बर थोकडे	पन्नवणा सूत्रके पद	थोकडेके विषय	शीघ्रबोधके भागोंमें
१	पद १	जीव विचार	भाग २जोंमें
२	,, २	स्थान पद	भाग ११मोंमें
३	,, ३	दिशाणुवाइ	भाग १में
४	,, ३	अल्पाब० १०२	भाग ९में

वेदनाधिकारे सञ्ज्ञी मूतके स्थान अमयी सम्यग्दृष्टी और असज्ञी मूतके स्थान मायी मिथ्यात्वदृष्टी कहना तथा मनुष्यमें क्रियाधिकारे सरागी वीतरागी या प्रमादि अप्रमादीका भेद नहीं कहना कारण कृष्ण लेश्यावाले सर्व प्रमादि होते है शेष पूर्ववत् एव १९८

(३) निल लेश्याके १९८ भागा कृष्णवत

(४) कपोत लेश्याके १९८ भागा कृष्णवत

(५) तेजो लेश्यामें १८ दडक है (तेउ वायु तीन वैकले न्द्रीय नारकी एव ६ वर्जके) विशेष है कि मनुष्यमें क्रियाधिकारे सरागी वीतरागी नहीं हो परन्तु प्रमादी अप्रमादीमें क्रिया पूर्ववत् कहना एव १८ कोनी गुण करनासे १६२ भागा होता है।

(६) पद्मलेश्यामें दडक तीन—तीर्यंच पाचेन्द्रिय मनुष्य और वैमानिक देवे सर्वाधिकार तेजो लेश्यावत तीनको नौ गुण करनेसे २७ भागा होता है।

(७) शुक्ललेश्या ये तीन दडक पूर्ववत् परन्तु मनुष्यमें क्रियाधारे सरागी वीतरागी प्रमादि अप्रमादिका भेद और क्रिय समुच्चयवत कहेना तीनको नौ गुण करनेसे २७ भागा होते हैं

एव भागा २१६–२१६–१९८–१९८–१९८–१६२ २७–२७ सर्व १२४२

सेवभंते सेवंभते तमेव सच्चम

५	,,	३	इन्द्रिय अल्प०	भाग११ में
६	,,	३	छेड़ाया अल्प०	भाग११ ,,
७	,,	३	षट्द्रव्य अल्पा०	भाग ८ ,,
८	,,	३	दिगला २९६	भाग११ ,,
९	,,	३	९९ अल्पा०	भाग ८ ,,
१०	,,	३	खेताणुवाइ	भाग११ ,,
११	,,	३	९८ अल्पा०	भाग १ ,,
१२	,,	४	स्थिति पद	भाग११ ,,
१३	,,	५	जीव पर्यव	भाग११ ,,
१४	,,	५	अजीव पर्यव	भाग११ ,,
१५	,,	६	विरहद्वार	भाग १ ,,
१६	,,	६	उवठणाद्वार	भाग११ ,,
१७	,,	६	गत्यागिघार	भाग ९ ,,
१८	,,	६	आयुष्यकाभांगा	भाग११ ,,
१९	,,	७	श्वासोश्वास	भाग ३ ,,
२०	,,	८	सज्ञापद	भाग ३ ,,
२१	,,	९	योनिपद	भाग ३ ,,
२२	,,	१०	चरमपद	भाग११ ,,
२३	,,	१०	चरमभागा२६	भाग११ ,,
२४	,,	१०	सस्थानचरय	भाग११ ,,
२५	,,	११	चरमद्वार १०	भाग११ ,,
२६	,,	११	भाषाद्वार १८	भाग ३ ,,
२७	,,	१२	शरीर परिमाण	भाग११ ,,

(१६) सज्ञी तीर्यचमें लेश्या ६ पावे।

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० स० गु० (३) तेजो० स० गु० (४) कापोत० अस० गु० (५) निल० वि० (६ कृष्ण० वि०

(१७) असज्ञी तीयचमें लेश्या ३ पावे

(१) स्तोक कापोत० (२) निल० वि० (३) कृष्ण० वि०।

(१८) सज्ञी तीर्यंच सज्ञी तीर्यंचणिके १२

(६) अल्पाबहुत्व न०१५के माफिक (७) कापोत० तीर्यंच असं० गु० (८) निल० तीर्यंच वि० (९) कृष्ण तीर्यंच वि० (१०) कापो० तीर्यंचणि अस० गु० (११) निल० तीर्यंचणि वि० (१२) कृष्ण० तीर्यंचणि वि०

(१९) सज्ञी तीर्यंचके ६ असज्ञी ती० पा ३

(६) अल्पाबहुत्व सोलमीवत् (७) कापोत ले० असज्ञी ती० अस० गु० (८) निल० असज्ञी ती० पा० वि० (९) कृष्ण० असज्ञी० ती० पा० वि०।

(२०) सज्ञी तीर्यंचणि असज्ञी ती० पा० पूर्ववत्

(२१) सज्ञीत यंच तीर्यंचणि और असज्ञी तीर्यंच

(१२) अल्पा० अठारवींवत् (१३) कापो० असज्ञी ती० पा० अस० गु० (१४) निल० असज्ञी ती० पा० वि० (१५) कृष्ण० असज्ञी० ती० पा० वि०।

(२२) समु० तीर्यंच सज्ञीतीर्यंचणिका १२

(६) अल्पा० १९ वत् (७) कापोत० तीर्यंचणि स० गु० (८) निल० तीर्यंचणि० वि० (९) कृष्ण० तीर्यंचणि वि०

(१०) कापो० तीर्यंच असणु० (११) निल० तीर्यंचवि० (१२) कृष्ण तीर्यंच वि० ।

(२३) समु० मनुष्यके ६ बोल

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० स० गु० (३) तेजो० स० गु० (४) कापोत० अस० गु० (५) निल० वि० (६) कृष्ण वि०

(२४) मनुष्यणिका ६ बोल

पूर्ववत परन्तु चोथो बोलस० गुणा

(२५) मनुष्य मनुष्यणिका १२ बोल

(१) स्तोक शुक्ल० मनुष्य (२) शुक्ल स्त्रि० स० गु० (३) पद्म० पु० स० गु० (४) पद्मस्त्रि सगु० (५) तेजो० पु० स० (६) तेजो० स्त्रि० स० गु० (७) कापो० स्त्रि० स० गु० (८) निल० स्त्रि वि० (९) कृष्णस्त्रि० वि० (१०) कापो० मनुष्य अस० गु० (११) निल० म० वि० (१२) कृष्ण० म० वी०

(२६) सज्ञी मनुष्यके ६ बोल

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० स० गु० (३) तेजो० स० गु० (४) कापोत० स० गु० (५) निल० वि० (६) कृष्ण० वि० ।

(२७) असज्ञी मनुष्यके ३ बोल

(१) कापोत० स्तोक (२) निल० वि० (३) कृष्ण० वि०

(२८) सज्ञी मनुष्यके ६ असज्ञीके ३

५१	,, २६	वेदतो बधे	,,	५ ,,
५२	,, २७	वेदतो वेदे	,,	९ ,,
५३	,, २८	आ० द्वार ११	,,	३ ,,
५४	,, २८	आ० द्वार१२	,,	१२ ,,
५५	,, २९	उपयोगपद	,,	१२ ,,
५६	,, ३०	पासणियापद	,,	१२ ,,
५७	,, ३१	सनीपद	,,	१२ ,,
५८	,, ३२	सयतिपद	,,	१२ ,,
५९	,, ३३	अवधिपद	,,	१० ,,
६०	,, ३४	परिचारणापद	,,	१२ ,,
६१	,, ३५	वेदनापद	,,	१० ,,
६२	,, ३६	समुदघाता	,,	१२ ,,
६३	,, ३६	छदमस्थसमु०	,,	१२ ,,
६४	,, ३६	कषायसमु०	,,	१२ ,,
६५	,, ३६	केवलीसमु०	,,	१० ,,

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला ओफिस तीर्थ ओशिया। इन्हीं सस्थाद्वारे स्वल्प समयमे आजतक निम्न लिखित पुष्प प्रसिद्ध हो चुके है कार्य चालु है।

नंबर	पुष्पोंके नाम	आवृति	पुष्प सख्य
१	प्रतिमा छतिशी	३	१९०००
२	गयवर विलाश	२	२०००
३	दानछतिशी	२	३०००
४	अनुकम्पा छतिशी	२	३०००

(अल्पा० न० २६ वत्) (७) कापोत० असनीमनुष्य असं गु० (८) निल० असज्ञी मनु०, वि० (९) कृष्ण० असज्ञी मनु० वि।

(२९) मनुष्यणि और असनी मनु० उपरवत

(३०) मनुष्य मनुष्यणिके १२ बोल

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० मनुष्य पुरुष (२) शुक्ल मनुष्य स्त्रि० स० गु० (३) पद्म पु० स० गु० (४) पद्म० स० गु० (५) तेजो० पु० स० गु० (६) तेजो स्त्रि० स० गु० (७) कापो० पु० स० गु० (८) कापो० स्त्रि० स० गु० (९) निल० पु० वि० (१०) निल० स्त्रि० स० गु० (११) कृष्ण पु० वि० (१२) कृष्ण० स्त्रि० स० गु०।

(३१) मनुष्य मनुष्यणि और असंज्ञी मनुष्य

(१२) अल्प० न० ३० वत् (१३) कापोत० असं० मनुष्य० अस० गु० (१४) निल० असज्ञी० मनु० वि० (१५) कृष्ण० अस० मनु० वि०।

(३२) समु० देवतोंमें लेश्या ६ पावे

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० अस० गु० (३) कापो० अस० गु० (४) निल० वि० (५) कृष्ण० वि० (६) तेजो० सख्यात गु०।

(३३) समु० देवीमें लेश्या ४ पावे

(१) स्तोक कापोत० (२) निल० वि० (३) कृष्ण० वि० (४) तेजो० संख्या० गु०।

(३४) समु० देवता देवीका १० बोल।

५	प्रश्नमाला	२	२०००
६	स्तवन सग्रह भाग १ लो	४	४०००
७	पैंतीस बोल थोकडो	१	१०००
८	दादा साहिबकी पूजा	१	२०००
९	देवगुरु वन्दनमाला	१	५०००
१०	स्तवन सग्रह भाग २ जो	२	२०००
११	लिंग निर्णय	१	१०००
१२	स्तवन सग्रह भाग ३ जो	२	३०००
१३	चर्चाकी पब्लिक नोटीश	१	१०००
१४	सिद्ध प्रतिमा मुक्तावली	१	१०००
१५	बत्तीस सूत्र दर्पण	१	५००
१६	जैन नियमावली	१	१०००
१७	चौरासी आशातना	१	१०००
१८	डके पर चोट	१	५००
१९	आगम निर्णय प्रथमाङ्क	१	१८००
२०	चैत्यवन्दन स्तवनादि	१	१०००
२१	जैन स्तुति	१	१०००
२२	सुबोध नियमावली	२	७०००
२३	प्रभु पूजा	२	२०००
२४	जैन दीक्षा	१	१०००
२५	व्याख्या विलास	१	१०००
२६	शीघ्रबोध भाग १	२	२०००
२७	,, ,, २	१	१०००
२८	,, ,, ३	१	१०००

(१) स्तोक शुक्ल० देवता० २) पद्म० देवता अस० गु० (३) कापोत० देवता० अस० गु० (४) निल० देवता वि० (५) कृष्ण० देवता वि० (६) कापोत० देवीस० गु० (७)निल० देवी० वि० (८) कृष्ण० देवी० वि० (९) तेजो० देवता० स० गु० (१०) तेजो० देवी० स० गु०

(३५) भुवनपति देवोंमे ४ लेश्या पावे

(१) स्तोक तेजो लेश्या० (२) कापोत० अस० गु० (३) निल० वि० (४) कृष्ण० वि०

(३६) भुवन० देवीमे ४ लेश्या देववत्

(३७) भुवन०देव-देवीका ८ बोल।

(१) स्तोक तेजो० देव (२) तेजो० देवीस० गु (३) कापोत० देव अस० गु० (४) निलदेव वि० (५) कृष्ण देव वि० (६) कापोत० देवीस० गु० (७) निल० देवी० वि (८) कृष्ण० देवी वि०।

(३८) ३९-४० वाणमित्र देव भुवन० वत्

(४१) ज्योतिषी देव देवीके

(१) स्तोक तेजो० देव० (२) तेजो० देवीस० गु०

(४२) वैमानिक देवके ३ बोल

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० अस० गु० (३) ते अस० गु०

(४३) वैमानिक देवी देवके ४ बोल

(३) अल्प० न०, ४२ वत् (४) तेजो० देवीस०गु०

(४४) समु० चार जातके देवतोंके १२ बोल

२९	,, ,, ४	१	१०००
३०	,, ,, ५	१	१०००
३१	सुख विपाकसूत्र मूल	१	५००
३२	शीघ्रबोध भाग ६	१	१०००
३३	दश वैकालीकसूत्र मूल	१	१०००
३४	शीघ्रबोध भाग ७	१	१०००
३५	मेझर नामो	२	४५००
३६	तीन निर्नामा लेखका उत्तर	१	१०००
३७	ओशीय ज्ञान लिष्ट	१	१०००
३८	शीघ्रबोध भाग ८	१	१०००
३९	,, ,, ९	१	१०००
४०	श्री नन्दीसूत्र मूल पाठ	१	१०००
४१	श्री तीर्थयात्रा स्तलन	१	२०००
४२	शीघ्रबोध भाग १०	१	१०००
४३	अम साधु शा माटे थया	१	१०००
४४	विनति शतक	१	१०००
४५	द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका	१	६०००
४६	शीघ्रबोध भाग ११	१	१०००
४७	,, ,, १२	१	१०००
४८	,, ,, १३	१	१०००
४९	,, ,, १४	१	१०००

कुल एक लक्ष पुष्प (१०००००)

(१) स्तोक शुक्ल० वैमानिक देव (२) पद्म० वैमानिक देव अस० गु० (३) तेजो० वैमनिक देव अस०, गु० (४) तेजो० भुवन० देव अस० गु० (५) कापोत० भुवन० अस० गु० (६) निल० भुवन० वि० (७) कृष्ण० भुवन० वि० (८) व्यतर तेजो० अस० गु० (९) कापोत० व्यतर० अस०गु० (१०) निल० व्यतर वि० (११) कृष्ण० व्यतर० वि० (१२) ज्योतिषी तेजो० स० गु० ।

(४५) समु० च्यार जातिकी देवीका १० बोल

(१) स्तोक तेजो० वैमानिक देवी (४) बोल भुवनपति (४) व्यतर (१) जोतीषीका देवतोंवत् समझाना ।

(४६) समु० देवी देवताओंके २२ बोल

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० वैमानिक देव
(२) पद्म लेश्या० „ अस० गु०
(३) तेजो लेश्या० „ „
(४) „ „ देवी० स० गु०
(५) तेजो० भुवन० देव० अस० गु०
(६) कापोत० „ „ „
(७) निल० „ „ विशष
(८) कृष्ण० „ „ „
(९) तेजो० „ देवी० स० गु०
(१०) कापोत० „ „ अस० गु०
(११) निल० „ „ वि०

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पु० न० ४७

श्री रत्नप्रभसूरी सद्गुरुभ्यो नम

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध।

भाग १२वां

थोकडा न० १

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद १७ उ० १

(लेश्याके ९ द्वार)

(१) शरीर (२) आहार (३) उश्वास (४) कर्म (५) वर्ण (६) लेश्या (७) वेदना (८) क्रिया (९) आयुष्य इति।

(१) शरीर (१) आहार (३) उश्वास यह तीन द्वार साथमें ही कहते हैं।

(प) नारकी सर्व बराबर शरीराहारोश्वास वाला है।

(उ) नारकी दो प्रकारके है (१) महाशरीरा (२) स्वल्प शरीरा जिसमें महाशरीरा नारकी है वह बहुतसे पुद्गलोंका आहार लेते हैं परिणमाते है या उश्वास भी बहुत लेते हैं या बारबार पुद्गलोंको लेते हैं परिणमाते हैं और जो स्वल्प शरीरा नारकी हैं वह स्वल्प पुद्गलोंको लेते हैं परिणमाते हैं या ठेर ठेरके लेते हैं परिणमाते हैं या स्वल्प श्वासोश्वास लेते है वास्ते बराबर नहीं हैं।

(१२) कृष्ण	"	"	"
(१३) तेजो०	बाणमित्रा	देव	अस०गु०
(१४) कापोत	"	"	"
(१५) निल०	"	"	वि
(१६) कृष्ण०	"	"	"
(१७) तेजो०	"	देवी०	स० गु०
(१८) कापोत०	"	"	अस० गु०
(१९) निल०	"	"	वि०
(२०) कृष्ण०	"	"	वि०
(२१) तेजो०	ज्योतिषी देव०		स० गु०
(२२) तेजो	"	देवी	स० गु०

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्

थोकडा न० ४

सूत्रश्री पन्नवणाजी पद १७ उ० ३

(लेश्याधिकार)

हे भगवान्‌! नारकीमें क्या नेरीया उत्पन्न होते हैं या अनेरीया? गौतम! नारकीमें नेरीया उत्पन्न होते है अनेरीया नहीं याने जो मनुष्य, तीर्यचमें बैठा हुवा जीव जिसने नारकी का आयुष्य बाधा है वह भविष्यमें नारकीमें ही जावेगा इस लिये शास्त्रकारोंने भवि-नारकी कहा इसी माफक २४ दंडक भी समझना।

(४) **कर्म**—सर्व नारकीके क्या कर्म बराबर है ?

नारकी दो प्रकारके है (१) पहले उत्पन्न हुवे (२) पीछेसे उत्पन्न हुवे जिस्मे जो पेहले उत्पन्न हुवे नारकी है वह विशुद्ध कर्मवाले है कारण वह बहुतसे अशुभ कर्म भोगव चुका है शेष स्वल्प कर्म राहा और जो पीछेसे उत्पन्न हुवे है वह अविशुद्ध कर्मवाला है कारण उन्होंको हाल सर्व अशुभ कर्म भोगवणा रहा है जेसे दो केदी केदखानामे है जिस्से एक तो ११ मास केदमे रहा अब एक ही मासमे छुट जावेगा दुसरा एक ही मास केदमे रहा और ११ मासमे छुटेगा इ ही दोनों केदियोंमे परिणामोंकी विशेषता अवश्य होती है।

(५) **वर्ण** (६) **लेश्या** (**कान्ति**)—यह दोनों द्वार कर्म माफीक समझना।

(७) **वेदना**—सर्व नारकीके वेदना क्या बराबर है।

नारकी दो प्रकारके है (१) सज्ञी भूत (२) असज्ञी भूत (अर्थात् यहसे सज्ञी जीव मरके नारकीमें आवे या नारकीमें पयाप्ता तथा सम्यग्दृष्टी हो इन्ही तीनोंको सज्ञीभूत कहते है इन्हीसे विप्रीतको असज्ञीभूत कहते है उन्होंको स्वल्प वेदना जेसे यहापर इज्जतदार आदमीको स्वल्प भी ठपका मीलने पर बड़ा ही रंज होता है और जो नो लायकको केद तक भी होना पर भी कुच्छ नहीं इसी माफीक सम्यग्दृष्टी नारकीको मानसी महावेदना होती है इतनी मिथ्यादृष्टीयों नहीं होती है

(८) **क्रिया**—सर्व नारकीको क्रिया बराबर है ?

(१) स्तोक शुक्ल० वैमानिक देव (२) पद्म० वैमानिक देव असं० गु० (३) तेजो० वैमनिक देव असं०.गु० (४) तजो० भुवन० देव असं० गु० (५) कापोत० भुवन० असं० गु० (६) निल० भुवन० वि० (७) कृष्ण० भुवन० वि० (८) व्यंतर तेजो० असं० गु० (९) कापोत० व्यंतर० असं०गु० (१०) निल० व्यंतर वि० (११) कृष्ण० व्यंतर० वि० (१२) ज्योतिषी तेजो० सं० गु० ।

(४५) समु० च्यार जातिकी देवीका १० बोल

(१) स्तोक तेजो० वैमानिक देवी (४) बोल भुवनपति (४) व्यंतर (१) जोतीषीका देवतोंवत् समझाना ।

(४६) समु० देवी देवताओंके २२ बोल

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० वैमानिक देव
(२) पद्म लेश्या० ,, असं० गु०
(३) तेजो लेश्या० ,, ,,
(४) ,, ,, देवी० सं० गु०
(५) तेजो० भुवन० देव० असं० गु०
(६) कापोत० ,, ,, ,,
(७) निल० ,, ,, विशष
(८) कृष्ण० ,, ,, ,,
(९) तेजो० ,, देवी० सं० गु०
(१०) कापोत० ,, ,, असं० गु०
(११) निल० ,, ,, वि०

नारकी तीन प्रकारके है (१) सम्यग्दृष्टी (२) मिथ्यादृष्टी (३) मिश्रदृष्टी जिसमे सम्य०को आरभ कि, परिगृह कि, माया कि, और अपच्चरकाण कि, एव च्यार क्रिया लागे और मिथ्या० मिश्र० को ४ पूर्ववत् और पाचमी मिथ्यात्व कि एव पाच क्रिया लागे।

(९) आयुष्य–सर्व नारकीके आयुष्य बराबर है

नारकी च्यार प्रकारके है (१) बरावर आयुष्य और साथहीमें उत्पन्न हुवे (२) बराबर आयुष्य और विषमोत्पन्न हूवे (३) विषमायुष्य और साथमें उत्पन्न हूवे (४) विषम आयुष्य और विषमही उत्पन हूवे ॥ १ ।

यह नारकी के दडकपर नौ द्वार उतारे गये है इसी माफक २४ दडकोंपर भी नौ नौ द्वार उतार देना परन्तु जो विशेषता है बाह निचे लिख देते है। (१३) देवतोंका १३ दडक नारकी माफीक है परन्तु कर्म वर्ण लेश्या नारकीसे विप्रीत समझना कारण पहले उत्पन्न हूवे देवता शुभ कर्म बहुतसा भोगव चुका है शेष रहा है वास्ते अविशुद्ध है ओर पीच्छेसे उत्पन्न हूवे उन्होंको बहुतसे शुभ कर्म बाकी है इसी माफीक वर्ण और लेश्याभी समझना

(८) पाच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय नरकवत् परन्तु वह सर्व असज्ञी होनासे असज्ञीभुत वेदना ओर मिथ्याद्रष्टी होनासे क्रिया पाचों लगती है।

(१) तीर्यंच पाचेन्द्रिय नारकीवत् परन्तु क्रियाधिकारे तीर्यंच तीन प्रकारका है (१) सम्यग्द्रष्टी (२) मिथ्या० (३) मिश्र० जिसमे सम्यग्द्रष्टीके दो भेद है (१) असयति (२) सयता

(१२) कृष्ण	,,	,,	,,
(१३) तेजो०	वाणमित्रा	देव	असं० गु०
(१४) कापोत	,,	,,	,,
(१५) निल०	,,	,,	वि
(१६) कृष्ण०	,,	,,	,,
(१७) तेजो०	,,	देवी०	सं० गु०
(१८) कापोत०	,,	,,	असं० गु०
(१९) निल०	,,	,,	वि०
(२०) कृष्ण०	,,	,,	वि०
(२१) तेजो०	ज्योतिषी देव०		सं० गु०
(२२) तेजो	,,	देवी	सं० गु०

सेवभंते सेवभंते तमेव सचम्

थोकडा नं० ४

सूत्रश्री पन्नवणाजी पद् १७ उ० ३

(लेश्याधिकार)

हे भगवान-! नारकीमें क्या नेरीया उत्पन्न होते हैं या अनेरीया ? गौतम ! नारकीमें नेरीया उत्पन्न होते हैं अनेरीया नहीं याने जो मनुष्य, तीर्यंचमें बैठा हुवा जीव जिसने नारकी का आयुष्य बांधा है वह भविष्यमें नारकीमें ही जावेगा इस लिये शास्त्रकारोंने भवि नारकी कहा इसी माफक २४ दंडक भी समझना।

सयति जिसमे सयतासयति (श्रावक) को आरभी की परिगृहकि ओर मायाकि यह तीन क्रिया लागे कारण अन्तानुवन्धी चोकडीसे मिथ्यात्वकि क्रिया ओर अप्रत्याख्यानाकि चोकडीसे अपचरका णकि क्रिया लगती है वह दोनो चोकडी श्रावकके न होनासे दोनों क्रियाके अभाव है अगर अन्य स्थानपर श्रावकको व्रता व्रती कहा है वह परिग्रहकी अपेक्षा कहा है। शेष नरकवत्।

(१) मनुष्य-मनुष्य दो प्रकारके होते है (१) महाशरीरा वह बहुत पुद्गलोंका आहार करते है परन्तु ठेर ठेरके (युगल मनु ष्यापेक्षा) (२) स्वल्प शरीरा नरकवत् तथा क्रियाधिकारे मनुष्य तीन प्रकारका (१) सम्यग्दृष्टी (२) मिथ्या (३) मिश्र० जिसमें भी सयतिका दो भेद हैं (१) सरागी (२) वीतरागी जिसमें वीत रागीके पाच क्रियासे कोई भी क्रिया नहीं है जो सरागी है उन्होंका दो भद है (१) प्रमत सयति (२) अप्रमत सयति जो अप्रमत० उन्होंको एक मायकी क्रिया है जो प्रमत है उन्होंको आरभ कि और माया कि यह दो क्रिया है सयतासयतके तीन सम्यग्दृष्टीके चार मिथ्यात्वी मिश्रके पांचो क्रिया लागे पूर्ववत्।

एव २४ दडकपर ९ द्वार उतारणासे २१६ भागा हुवे।

। अथ, लेश्याके साथ ९ द्वार केहते हैं।

नरकादि २४ दडक। लेश्या सयुक्त पर नौ नौ द्वार पूर्ववत् केहनेसे २१६ भागा होता है।

(१) कृष्णलेश्यामें—ज्योतिषी वैमानि वर्जके २२ दडक है ५ पूर्ववत् ९ द्वार कहनेसे १९८ भागा होते है परन्तु नरकादिमें

हे भगवान्! नारकीसे नेरीया निकलने है के अनेरीया? गौतम! नेरीया नही निकलते अनेरीया निकलते हैं क्योंकी नारकीसे निकलकर फिर तद भव नारकीमें उत्पन्न नहीं होगा परन्तु मनुष्य, तीर्यंचमें उत्पन्न होगा इस लिये अनेरीया कहा। एव १३ दडक देवताओंका भी कहना और पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्री तीर्यंच पचे द्री और मनुष्य एव १० दडक औदारिक शरीरके हैं ये स्वकाय तथा परकाय दोनोंमें उत्पन्न होते है इसलिये पृथ्वीकायकी पृच्छामें पृथ्वीकायसे पृथ्वीकाय भी निकले और अपृथ्वीकाय भी निकले एव यावत मनुष्य भी कहना।

मनुष्य तीर्यंच मरके नारकीमें जानेवाला है उसको अगर मरते समय जो कृष्ण लेश्या आगई तो वह नारकीमें भी कृष्ण-लेश्यामे ही उत्पन्न होगा और नारकीसे निकलेगा वह भी कृष्ण-लेश्यामें ही निकलेगा अर्थात् नारकी, देवताओंके [१]तीनो स्थान पर एक ही लेश्या रहती है, एव नारकी अपेक्ष कृष्ण, नील, कापोत और देवताओंकी अपेक्ष छेओं लेश्या कही यह १४ दडक कहे

जो जीव कृष्णलेश्यामें मरके पृथ्वी कायपने उत्पन्न हुवा है वह क्या कृष्णलेश्यामें ही मरेगा? पृथ्वीकायके लिये यह नियमा नहीं है वह स्यात् कृष्ण, नील, कापोत इन तीन लेश्याओंको परस्पर तेजो लेश्यावाला जीव नियमा लेश्या बदलता है क्योंकी तेजोलेश्या अपर्याप्त अवस्थामें ही रहती है पर्याप्ति अवस्थामें नहीं

१ मरते समय उत्पन्न होते वखत और सम्पुण आयुष्य।

हती एव अप्प० वनस्पतिकाय भी कहना और तेऊ, वाऊ तीन
वेकले द्रीमें तीन लेश्या रहती है। और तीर्यच पचेन्द्री
था मनुष्यमें छे लेश्या होती है और वे अपनी ९ लेश्यामें मर
े और उत्पन भी होते हैं।

कृष्ण लेशी नारकी अवधी ज्ञानसे नील लेशीकी अपेक्षा
नरा क्षेत्र जाणे देखे वह भी अविशुद्ध जाणे देखे जैसे कोई
ुरुप धरतीके तले खडा है और दूसरा पुरुप शम भूमीपर खडा
है तो शम भूमीकी अपेक्षा धरतीके तलेका मनुष्य कमक्षेत्र
ख शका है।

निल लेशी अवधीज्ञानी नारकी कापोत लेशी अवधी०की अपेक्षा
कम क्षेत्र सोभी अविशुद्ध देखता है जैसे एक पुरुप धरती पर
और दूसरा पर्वत पर खडा है तात्पर्य यह है कि विशुद्ध लेश्यासे
ज्ञान भी विशुद्ध होता है। यहा पर देवताओंका अधिकार नहीं
है परन्तु देवताओंमें भी विशुद्ध लेश्याओंको विशुद्ध ज्ञान होता है।

कृष्ण, नील, कापोत, तेजो और पद्म इन पाच लेश्यावालोंको
ज्ञान हो तो स्यात् दो स्यात तीन स्यात् चार होते है जैसे—

दो–मति, श्रुति ज्ञान

तीन–मति, श्रुति, अवधिज्ञान

तीन–मति, श्रुति, मन पर्यवज्ञान

चार–मति, श्रुति, अवधि, मन पर्यज्ञान

शुक्ल लेश्यामें पूर्ववत् २–३–४ या केवल ज्ञान भी होता
[कारण शुक्ल लेश्या १३ वें गुणस्थान तक होती है।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्।

एव ४८ सूत्र होता है जिन्होंको पूर्वोक ८० के साथ गुणा करनेसे ३८४० भांगा होता है

६४८० कर्मभूमिका भागा ३८८० अकर्म भूमिका

सर्व गर्भके भांगा---१०३२०

सेवभंते सेवभंते तमेवसचम् ।

थोकडा नंबर ७

सूत्र श्रीपन्नवणाजी पद १९

(दर्शन पद)

वस्तुकों अवलोकन कर उन्हीपर श्रद्धा (प्रतित) करना उन्हीका नाम दर्शन है। दर्शनमें मीख्य हेतू मूल मोहनिय कर्म है । मोहनिय कर्मका मूलसे क्षय होजानेपर सम्यग्दर्शनकि प्राप्ती होती है उन्हीको क्षायक दर्शन भी केहते है तथा मोहनिय कर्मको उपशम करनेसे उपशम दर्शनकि प्राप्ती होती है इन्ही दोनों दर्शनोंकों सम्यग्दर्शन कहा जाते है । तथा मोहनिय कर्मका प्रबलोदय होनेपर वस्तुकी विपीत श्रद्धना होती है उन्हीको मिथ्या दर्शन केहते है तथा मिश्र मोहनिय कर्मोदय वस्तुमें सत्यासत्यकी कल्पना होती है उन्हीकों मिश्र दर्शन केहते है अर्थात् ।

(१) सम्यग्दर्शन=वस्तुको यथार्थ श्रद्धना ।

(२) मिथ्या दर्शन-वस्तुकों विपीत श्रद्धना ।

(३) मिश्र दर्शन=वस्तुमे सत्यासत्यका विकल्प करना अर्थात् सत्य वस्तु होनेपर सत्यासत्यकि कल्पना या असत्य वस्तु होनेपर भि सत्यासत्यकि कल्पना करना ।

थोकडा न० ५

सूत्र श्री पन्नवणाजी उ० ४

(लेश्याद्वार १५)

(१) परिणामद्वार (२) वर्णद्वार (३) गन्धद्वार (४) रसस्पर्शद्वार (५) शुद्धद्वार (६) प्रशस्थ० (७) सक्लष्ट० (८) शीतोष्ण० (९) गतिद्वार (१०) परिणाम० (११) प्रदेश० (१२) अवगाहा० (१३) वर्गणा० (१४) स्थान० (१५) अल्पाबहु० ।

(प्र) लेश्या कितने प्रकारकि है ।

(उ) लेश्या छे प्रकारकी है यथा-(१) कृष्ण लेश्या० (२) निल लेश्या (३) कापोत लेश्या० (४) तेजो लेश्या (५) पद्म लेश्या (६) शुक्ल लेश्या० ।

(१) **परिणामद्वार**-कृष्ण लेश्याके वर्ण गन्ध रस और स्पर्श निल लेश्या पणे परिणामता है जैसे दुधके अदर खटाइ (छास) देनासे वह दुद्ध दहि पणे परिणमता है तथा वस्त्रके नया नया रंग देनासे वर्णान्तर होता है इसी माफिक अध्यवसायोंकी प्रेरणासे अर्थात् शुद्ध अध्यवशास पूर्व जो अशुभ वर्णादि था उन्होंके शुभ वर्णादि पणे परिणामते है और अशुद्ध अध्यवशासे पूर्वमों शुभ वर्णादि था उन्होंकों अशुभ पणे परिणमायें इसी म फीक पेहला कृष्ण लेश्याके अशुभ वर्णादि थे उन्हीकों शुभाध्यवशाकि प्रेरणासे निललेश्या पणे परिणामाने । इसी माफीक अधिक २ तर शुभ प्रेरणासे कृष्ण कापोत पणे एव तेजो लेश्या पणे एव पद्म लेश्या पणे एव शुक्ल लेश्या पणे परिणमे । एव निल लेश्याका परिणाम अशुभाध्यवशासे कृष्ण लेश्या परिणमते है और शुभाध्यावशासे कापोत-तेजो-पद्म-शुक्ल लेश्यापणे परिणमते है एव

प्रत्येक दंडकके जीवोंमें कितने २ दर्शन है ।

(१) सातोनरकमे पूर्वोक्त तीनो दर्शन है परन्तु सातवी नरकके उपर्यातामें एक मिथ्या दर्शन मीलता है ।

(२) दश भुवनपतियोंमें पूर्वोक्त तीनों दर्शन है परन्तु पन्दरा परमाधामी देवोंमें एक मिथ्या दर्शन है ।

(३) पाचस्थावर=पृथ्वीकाय अपूकाय तेउकाय वायुकाय वनास्पति काय इ होंमें एक मिथ्या दर्शन है ।

(४) तीन वैकलेन्द्रिय=बेरिन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरिन्द्रिय तथा असनी तीर्यंच पाचेन्द्रिय=जल्चर स्थलचर खेचर उरपुर भुजपुर इन्द्री आठबोलोंके अपर्याती अवस्थामें सम्यग्दर्शन और मिथ्यादर्शन और पर्यातावस्थामें दर्शन एक मिथ्यादर्शन है ।

(५) सन्नी तीर्यंच पाचेन्द्रियमें दर्शन तीन पूर्ववत ।

(६) मनुष्य=असन्नी मनुष्य तथा छपन्न अन्तरद्विपोंके मनुष्योंमें दर्शन एक मिथ्या दर्शन, और तीस अकर्म भूमि युगल मनुष्योंमें दर्शन दो (१) सम्यग्दर्शन (२) मिथ्यादर्शन शेष पन्दरा कर्म भूमि मनुष्योंमें तीनों दर्शन पूर्वोक्त पावे

(७) वाणमित्र और ज्योतीषी देवोंमें तीनों दर्शन पूर्ववत

(८) वैमानिक देवोंमें तीन, कल्बिषी देवोंमें दर्शन एक मिथ्या दर्शन, नौग्रावैगके देवतोंमे दर्शन दो पावे (१) सम्यग्दर्शन (२) मिथ्यादर्शन और पाचाणुत्तर वैमानके देवोंमें दर्शन एक स० शेष वैमानिक देवामें दर्शन तीनों पावें ।

उपर कये हुवे सर्वस्थानोंके अपर्याता जीवोंमें मिश्र दर्शन नहीं मीलता है कारन मिश्र दर्शन हमेंसों पर्याप्ती अवस्थामें ही

छे लेश्याको पर्स्पर बदलानेसे ३६ भागा होता है। यह द्रव्य लेश्याका पलटण सभाव है वह औदारीक शरीरवाले १० दडकके लिये है परन्तु नारकी देवतोंके १४ दण्डकके लिये नहीं है कारण नारकी देवतोंके द्रव्य लेश्या भव प्रत्य होती है अध्यव-शाकी प्रेरणासे भाव लेश्या परिणाम रूपमे तफावत होती है परन्तु वर्ण गन्ध रस स्पर्श रुप जो पुद्गल है वह नहीं बदलते है हा पुद्गलोंमे तीव्र मन्दता गुण होता है परन्तु मूलसे नहीं बदलते है। जैसे मणि रत्नके अदर जेसा रङ्गका तागा पोया जाय वैसा ही रङ्ग कि प्रभा उन्हीं मणिके अन्दर भापमान होगा परन्तु मणि आपका स्वरूपको कबी नही छोडेगा

(२) **वर्ण द्वार**—लेश्याके प्रेरणामे पुद्गल एकत्र होता है उन्ही पुद्गलोंके अदर वर्णादि होते है।

(१) कृष्ण लेश्याका श्याम काजलसा वर्ण है

(२) निल०का निला शुक पाखवान् निला वर्ण है।

(३) कापोत० का पारेवाकी ग्रीवा जेसा वर्ण है

(४) तेजो० हींगलुके माफिक लाल वर्ण है

(५) पद्म० हलदिके माफिक पेत वर्ण है

(६) शुक्ल मोक्ताफलके हार माफिक श्वेत वर्ण है

(३) **गन्द धार**—कृष्ण० निल०-कापोत० इन्ही तीनो लेश्याका गध जैसे मृत्यु सर्प श्व न खर नर इत्यादि इन्होंसे ही अधिक दुर्गन्ध होते है और तेजो० पद्म० शुक्ल इही तीनों लेश्याकी अच्छी सुगन्ध पदार्थ जेसे कोष्ट चम्पा चम्पेली जाइ मोगरादिसे भी अधिक सुगन्ध है।

होता है और सम्यग्दर्शन तथा मिथ्या दर्शन मृत्यु होके परभव गमन करते समय साथ ही चलता है परन्तु मिश्र दर्शन परभव साथ नही चलता है।

(९) सिद्ध भगवान्में दर्शन एक सम्यग्दर्शन है। इति।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्

थोकडा नम्बर ८

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद २१

(मरणाति समुद्घात)

जीव मरणानिक समुद्घातकर परभव गमन करते है उन्ही समय रहस्तेमें तेजस कारमण शरीर ही रहते है उन्हीं समय तेजस शरीर कि कितने विस्तारवाली अवगाहाना होती है वह इस थोकडा द्वारा बतलावेगा।

। मरणातिक समुदघात और तेजसावगाहाना।

समुच्चय जीव समु० एकेन्द्रिय और पाच स्थावर जो मरणातिक समुदघात करे तो विस्कभ पहूलपने जाडी तो शरीर परिमणे और लबाईमें जघन्य अगुलके असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट लोकान्त तक होती है—

तीन वैकलेंद्रिय और तीर्यंच पाचेंद्रिय जाडी पहुली तो शरीर परिमाणे लबाईये ज० अगु० अस० भाग उ० तीरच्छा लोकान्त तक एव मनुष्य परन्तु उत्कृष्ट मनुष्यलोक परिमाण

नारकी और देवतोंमे विस्कभ और जाडी तो शरीर परिमाणे लम्बाईमें निचे यत्र परिमाणे समझना

(४) **रस द्वार**–

(१) कृष्ण० कडवा तुंबा जेसा कटुक रस है

(२) निल० सुठ पीपर जेसा तीखा रस है

(३) कापोत० कचा आम्र जेसा खाटा रस है

(४) तेजो० पका हुवे आम्र या कविट जेसा रस है।

(५) पद्म० उतम जातके वारूणिमद जेसा रस है

(६) शुक्ल० शकर खीजुर पकी द्राख जेसा रस है।

(५) **स्पर्शद्वार**–कृष्ण० निल० कापोत इन्हीं तीनों लेश्याका स्पर्श करवोतकी धार शाकवनास्पतिसे भी अधिक स्पर्श है और तेजो० पद्म शुक्ल इन्ही तीनों लेश्याके स्पर्श कोमल जेसेमखन बुरवनास्पति और सरसवके पुष्पोंसे अधिक कोमल है।

(६) **शुद्ध** (७) **प्रशस्थ** (८) **सक्लिष्ट** कृष्ण० निल० कापोत यह तीनों लेश्या अशुद्ध–अप्रशस्थ और सक्लिष्ट है और तेजो० पद्म० शुक्ल यह तीनों लेश्या शुद्ध प्रशस्थ–असक्लिष्ट है।

(९) **शीतोष्णा**–कृष्ण० निल० कापोत यह तीनों लेश्या शीत और रूक्ष है और तेजो पद्म शुक्ल उष्ण और स्निग्ध है।

(१०) **गतिद्वार**–कृष्णादि तीन लेश्या दुर्गति ले जानेवाली है और तेजो पद्म शुक्ल यह तीनों लेश्या सुगति लेजाने वाली है।

(११) **परिणामद्वार**–आयुष्यबन्ध समय जो लेश्या जाति है उन्हीको परिणाम कहते है वह आयुष्यका बन्ध आयुष्यके ३–९–२७–८१ या २४३ मे भागमें होते है अगर न हो तो आयुष्यका अन्तम अन्तर महूतमें तो आवश्य होता है।

मार्गणा	जघन्य	उत्कृष्ट		तीरछा लोक
		अधोलोक	ऊर्ध्वलोक	
सातों नरक	१०००० जो०	सातवा नरक तक	पाङग वन तक	सभूरमणसमुद्र
१० भुवन० व्यंतर जोतीषी सुधर्म इशान देवलोक	अगुलके असं० भाग	तीजी नरकका चरमा त	इसी पभारा पृथ्वी तक	सभूरमणसमुद्रकी बाहारकि वेदिका
तीजासे आठवा देवलोक	"	पाताल कलशों केदुने तीजे भाग	बारहा देवलोक तक	सभूरमणसमुद्र तक
नवामासे बारहवा देवलोक तक	"	शलीलावती विजयातक	स्व स्व वैमान तक	मनुष्य क्षेत्र
नौग्रीवेग नव जोरवान अनुतर वैमान	विद्याधरों कि श्रेणी	अधोलोक ग्राम	स्व स्व वैमान तक	मनुष्य क्षेत्र तक

मेग भले सेघ भले तमेव सघम्

(१२) **प्रदेशद्वार**-एकेक लेश्याके अनत अनत प्रदेश है रण स्थुल अनत प्रदेशी स्कध होता है वह लेश्याके गृहनयोग ता है ।

(१३) **अवगाहा**-एकेक लेश्याके जो अनन्ता अनन्ता देश है वह असख्याते असख्याते आकाश प्रदेश अवगाह्या होता है)

(१४) **वर्गणाद्वार**-एकेक लेश्याके स्थानोंमें अनत अनति र्गणा यों है ।

(१५) **अल्पाबहुत्वद्वार**—(स्थानापेक्षा)

(१) द्रव्य जघ य स्थान

(१) स्तोक कापोत लेश्याका जघन्य द्रव्यस्थान
(२) नील लेश्याका जघन्य द्रव्य असख्यात गुणा
(३) कृष्ण ,, ,, ,, ,,
(४) तेजो ,, ,, ,, ,,
(५) पद्म ,, ,, ,, ,,
(६) शुक्ल ,, ,, ,, ,,
(७) एव ही बोलो कि प्रदेशकी अल्पा० भी समझना

(२) द्रव्य और प्रदेशकी शामिल स्थान

(१) स्तोक कापोत लेश्या जघन्य द्रव्य
(२) नील लेश्याका जघन्य द्रव्य असख्यात गुणा
(३) कृष्ण ,, ,, ,, ,,
(४) तेजो ,, ,, ,, ,,

थोकड़ा नं० ९

श्री पन्नवणा सूत्र पद २३ उ० १

(कर्मप्रकृती)

द्वार–कितनी प्रकृती १ कैसे बांधे २ कितने स्थान ३ कितनी प्रकृति वेदे ४ अनुभाग कितने ५

हे भगवान् ! कर्मोकी प्रकृती कितनी है ? कर्मोंकी प्रकृती आठ हे यथा ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, वेदनिय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय,

नरकादि २४ दंडकके जीवोंके कर्म प्रकृती आठ आठ है यावत् वैमानिक

जीव आठ कर्मोकी प्रकृती किससे बांधता है ? ज्ञानावर्णिय कर्मके उदयसे दर्शनावर्णिय कर्मकी इच्छा करता है अर्थात् ज्ञानावर्णिय कर्मके प्रबल उदय होनेसे सत्य वस्तुका ज्ञान नहीं होता इससे सत्य वस्तुको असत्य देखे यह दर्शनावर्णियकी इच्छा की और दर्शनावर्णिय कर्मके उदयसे दर्शन मोहनीय कर्मकी इच्छा हुई अर्थात् असत्यको सत्य कर मानना इस दर्शन मोहनियसे मिथ्यात्वका प्रबलोदय होता है और मिथ्यात्वसे आठों कर्मोका बंध होता है इस वास्ते कर्मोके बंधका मूल कारण मिथ्यात्व है और मिथ्यात्वका मुल कारण अज्ञान है एवं नरकादि २४ दंडकके जीवोंके आठ २ कर्मोका बंध समझना।

ज्ञानावर्णिय कर्मोका बंध कितने स्थानपर होता है ? रागसे (माया लोभ) द्वेषसे (क्रोधमान) इन राग द्वेषकी चार प्रकृतियोंको अर्थात् क्रोधमान माया लोभ इस चंडल चौकड़ीसे ज्ञाना

(५) पद्म ,, ,, ,, ,,
(६) शुक्ल ,, ,, ,, ,,
(७) कपोत लेश्यका जघन्य प्रदेश अनन्त गुणा
(८) नील ,, ,, ,, असख्यात गुणा
(८) कृष्ण ,, ,, ,, ,, ,,
(१०) तेजो ,, ,, ,, ,, ,,
(११) पद्म ,, ,, ,, ,, ,,
(१२) शुक्ल ,, ,, ,, ,, ,,

जैसे तीन अल्प बहूत जघन्य स्थानकि कही है वैसे ही तीन उत्कृष्ट स्थानकि कहना ६ ।

(७) द्रव्य जघन्य उत्कृष्ट स्थान

(१) कापोत लेश्या जघन्य द्रव्य स्थान स्तोक
(२) नील ,, ,, ,, असख्यात गुणा
(३) कृष्ण ,, ,, ,, ,, ,,
(४) तेजो ,, ,, ,, ,, ,,
(५) पद्म ,, ,, ,, ,, ,,
(६) शुक्ल ,, ,, ,, ,, ,,
(७) कापोत ,, उत्कृष्ट ,, ,, ,,
(८) नील ,, ,, ,, ,, ,,
(९) कृष्ण ,, ,, ,, ,, ,,
(१०) तेजो ,, ,, ,, ,, ,,
(११) पद्म ,, ,, ,, ,, ,,
(१२) शुक्ल ,, ,, ,, ,, ,,

वर्णीय कर्मका बध होता है एव नरकादि २४ दटकमें समझना इसी माफक नहुवचनापेक्षा भी राग द्वेषसे कर्म बन्धता है नरकादि २४ दडकमें एक वचनके २५ बोल और बहुवचनके २५ बोल कुल ५० बोल इतने ज्ञानावरणीयके हुए। इसी माफिक दर्शनावर्णी आदि आठ कर्मोंके ५०–५० बोल लगानेसे ४०० बोल हुवे।

एक जीव नानावर्णीय कमवेदे ? कोई वेदे कोई नहीं वेदे (केवली) और नरकादि २३ दडक नियमा वदे मनुष्य कोई वेदे कोई नहीं वेदे (केवली) एव २५ बोल बहु वचनका भी समझना एव दर्शना वर्णिय मोहनिय तथा अन्तराय और वेदनिय, आयुष्य, नाम, गोत्र इन चार कर्मोंका एक वचन या बहुवचनापेक्षा सब जीव निश्चय वेदे एव ८ कर्मोके ४०० भागे होते हैं

अनुभाग द्वारा–हे भगवान ! जीव ज्ञानावर्णिय कर्म बान्धे रागद्वेषसे स्पर्श आत्माके प्रदेशोंके साथ विशेष कर बांधे और स्पर्श किये ज्ञानावर्णिय कर्मका सचय किये चितके एकत्र किये, ज्ञानावर्णिय कर्म उदय आने योग्य हुवे विपाक प्राप्त हुवे फलदेनेके सन्मुख हुवे यहा भावार्थ यह है क जीवके कर्मोका प्रेरक कौन है ? निश्चय नयसे जीव कर्मोका आकर्ता है कर्मोका कर्ता कर्म ही है परन्तु यहा पर व्यवहार नयकी अपेक्षासे उत्तर देते हैं। जीवने ही कर्म किया है (रागद्वेषसे) यावत् जीवने ही कर्म उदय निष्पन्न किये हैं जीवने ही भोग रस पन प्रणमाये हैं जीवने ही उन कर्मोको उदीर्णा की है अन्य जीवके भी कर्मोकी उदीर्णा होती है वह अन्य जीव ही करते हैं कर्मोका उदय उदीर्णासे

(८) एव जघन्य उत्कृष्ट प्रदेशकी अल्प बहुत्व स्थान
(९) द्रव्य प्रदेशके जघन्य उत्कृष्ट स्थान

(१) कापोत	लेश्या	जघन्य	द्रव्य	स्थान	स्तोक
(२) नील	,,	,,	,,	,,	असंख्यातगु०
(३) कृष्ण	,,	,,	,,	,,	,,
(४) तेजो	,,	,,	,,	,,	,,
(५) पद्म	,,	,,	,,	,,	,,
(६) शुक्ल	,,	,,	,,	,,	,,
(७) कापोत	,,	उत्कृष्ट	,,	,,	,,
(८) नील	,,	,,	,,	,,	,,
(९) कृष्ण	,,	,,	,,	,,	,,
(१०) तेजो	,,	,,	,,	,,	,,
(११) पद्म	,,	,,	,,	,,	,,
(१२) शुक्ल	,,	,,	,,	,,	,,
(१३) कापोत	लेशी	जघन्य	प्रदेश		अनन्तगुणा
(१४) नील	,,	,,	,,		असंख्यातगुणा
(१५) कृष्ण	,,	,,	,,		,,
(१६) तेजो	,,	,,	,,		,,
(१७) पद्म	,,	,,	,,		,,
(१८) शुक्ल	,,	,,	,,		,,
(१९) कापोत	,,	उत्कृष्ट	,,		,,
(२०) नील	,,	,,	,,		,,
(२१) कृष्ण	,,	,,	,,		,,

प्राप्त होनेपर असाता (नरकादि गति) साता (देवादि गति) और जितनी स्थिति बन्धी हे वह और जिस भवका बन्ध हे वह भोगने लगता है जो पुद्गल अच्छे या खराब उदयमें आने हे वे भोगने लगे इसी माफक जीवको कर्म भोगने पटते हैं यह ज्ञानावर्णिय कर्मका विपाक अनुभाग दश प्रकारसे भोगता हे यथा

(१) श्रोत्रेन्द्रिय द्वारा शब्द सुने नहीं
(२) अगर सुन भी ले तो समझे नहीं
(३) चक्षु इन्द्रिय द्वारा रूप देख सके नहीं
(४) अगर देखले तो समझे नहीं
(५) घ्राणेन्द्रियद्वारा पुद्गलोंको सूघ न सके
(६) अगर सूघ भी ले तो समझ न सके
(७) रसेन्द्रिय द्वार स्वाद न ले सके
(८) अगर स्वादले भी तो समझे नहीं
(९) अच्छे स्पर्शको वेदे नहीं
(१०) अगर वेदे तो समझे नहीं

जो वेदते हे वे पुद्गल एक या अनेक विशेष स्वभावसे बादलवत् प्रणमते है और उमे भोगते हैं परन्तु ज्ञानवर्णीय कर्मके प्रबल उदयसे जान नहीं सक्ते यह ज्ञानवर्णिय कर्मका फल याने विपाक है कि जीवको अज्ञानी बना देता है

(२) दर्शनावर्णिय कर्म उदय होनेसे जीवको नौ प्रकारका अनुभाग होता है

(१) निद्रा सुखसे सोवे सुखसे जागे
(२) निद्रा निद्रा—दुःखसे सोवे दुःखसे जागे

(२२) तेजो " " " "
(२३) पद्म " " " ,
(२४) शुक्ल " " " ,

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्

थोकडा नंबर ६

सूत्र श्रीपन्नवणाजी पद १७ उ० ६

[गर्भकी लेश्या]

कितनेक लोक कहते हैं कि जैसे माता पिताकि ले
होती है वैसे ही उन्होंकि गर्भके जीवोंकि लेश्या होती परन्तु
बात एकात नहीं है कारण जीव सर्व कर्माधिन है और
सर्व जीवोंके स्वरुप विचित्र प्रकारका है वह इस थोक
बताया जायगे।

(प्र) हे भगवान्। लेश्या कितने प्रकारकि है।

(उ) लेश्या छे प्रकार कि है यथा कृष्ण लेश्या,
कापोत लेश्या० तेजो० पद्म० शुक्ल लेश्या।

१२ समुचय मनुष्य—मनुष्यणि समुचय कर्मभूमि
मनुष्यणी, भरतक्षेत्रके कर्मभूमि मनुष्य-मनुष्यणि एव ए
मनुष्य मनुष्य णे, पूर्व विदेहके मनुष्य मनुष्याणे एव पश्चिम
मनुष्य मनुष्यणि एव १२ बोलोंमें लेश्या छेछे पावे।

२४ पूर्ववत् धातकिखण्डद्विपमें दुगुण क्षेत्र होना
कों दुगुण करनेसे २४ बोल होता है

३४ पुष्कर्द्ध द्विपमें भी धातकि खण्ड बरावर ही

(३) प्रचला—बैठा बैठा निद्राले

(४) प्रचला प्रचला—चलता हुवा निद्राले

(५) स्यनद्धि—दिनका चिन्तन किया कार्य निद्रामें करे इस निद्रामें वासुदेव जितना बल होता है

(६) चक्षुदर्शनावर्णिय— बराबर देख नही सकता

(७) अचक्षु दर्शनावर्णिय—चक्षुके सिवाय चार इन्द्रियोंसे सम्पूर्ण काम न ले सके।

(८) अवधिदर्शनावर्णिय—अवधिदशनहोने न दे

(९) केवल दर्शनावर्णिय—केवल दर्शन होने नदे

(३) इसी माफक वेदनी कर्म भी समझना परन्तु वेदनी कर्मके दो भेद है साता वेदनी और असातावेदनी जिसमें साता वेदनी का अनुभाग ८ प्रकारका है

(५) मनोज्ञशब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श

(६) मन हमेसा अच्छा रहना (समाधीसे)

(७) वचन हमेसा अच्छा रहना (मधुर बोलनेसे)

(८) काय—अंगोपांग अच्छा होना (हाथकी चतुरतादि)

वेदनीका इससे विप्रीत अशुभ फल समझना

(४) मोहनिय कर्मके उदय अनुभागके पाच भेद हैं यथा

(१) मिथ्यात्व मोहनीय—इसके उदयसे वस्तुकी विप्रीत श्रद्धा होती है

(२) मिश्रमोहनीय—इसके उदयसे मिश्रभाव होता है

(३) सम्यक्त्व मोहनीय—इसके उदयसे वस्तुकी यथार्थ श्रद्धा होती है परन्तु क्षायक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं होने देता

१६ समुचय अकर्म भूमि (युगल) मनुष्य–मनु यदुणि छपन्न अन्तर द्विपके मनुष्य-मनुष्यणि एव हेमयके मनुष्य मनुष्यणि एव एरण वयके २ हरिवासके २ रम्यकवासके २ देवकूरूके २ उत्तर कूरूके २ एव सर्व १६ बोलोंमे लेश्या पावे च्यार च्यार कृष्ण, निल कापोत तेजो लेश्या पावे

३२ धातकि खण्ड द्विपमे दुगुणक्षेत्र होनासे १६से दुगुण होनासे ३२ बोलोंमे च्यार च्यार लेश्या पावे

३२ पुष्करर्द्ध द्विपमे भी ३२ बोलोंमे लेश्या च्यार च्यार पावे ।

॥ कर्म भूमियोंके गर्भका विचार ॥

(१) कृष्ण लेश्यावाली मातामे कृष्ण लेश्या० पुत्रका जन्म
(२) ,, ,, निल ,, ,, ,,
(३) ,, ,, कापोत ,, ,, ,,
(४) ,, ,, तेजो० ,, ,, ,,
(५) ,, ,, पद्म, ,, ,, ,,
(६) ,, ,, शुक्ल ,, ,, ,,
(१२) एव निल लेश्यावाली माता ६ लेश्यावाला पुत्रका जन्म
(१८) एव कापोत ,, ,, ६ ,, ,, ,,
(२४) एव तेजो ,, ,, ६ ,, ,,
(३०) पद्म ,, ,, ६ ,, ,,
(३६) शुक्ल ,, ,, ६ ,, ,,
(३७) कृष्णले० पितासे० कृष्ण० पुत्रका जन्म
(३८) ,, ,, निल ,, ,,

(४) कषाय मोहनिय–इसके उदयसे अन्तानुबन्धी आदि १६ प्रकृतियोंका उदय होता है

(५) नोकषाय मोहनीय–इसके उदयसे हास्यादि नौ प्रकृतियोंका उदय होता है

(५) आयुष्य कर्मके उदय अनुभागके चार भेद हैं

(१) नारकीका आयुष्य वेदे
(२) त्रियचका ,,
(३) मनुष्यका ,,
(४) देवताका ,,

(६) नाम कर्मके उदय अनुभागके दो भेद हैं शुभ नाम कर्म और अशुभ नाम कर्म जिसमें शुभ नाम कर्मके अनु भाग १४ प्रकारके हैं

(१) इष्ट शब्दका मिलना
(२) इष्ट रुपका मिलना
(३) इष्ट गन्धका मिलना
(४) इष्ट रसका मिलना
(५) ,, स्पर्शका मिलना
(६) ,, गति (देवादि)
(७) ,, स्थिति
(८) ,, शरीर लावण्य
(९) इष्ट यशोकीर्ति
(१०) इष्ट उत्थानादि वीर्य
(११) इष्टाकार
(१२) इष्ट स्वर
(१३) कन्त स्वर
(१४) प्रीय स्वर
(१५) मनोज्ञ स्वर
(१६) विशेष मनोज्ञ

अशुभ नाम कर्मके १६ बोल इससे विप्रीत समझना (७) गोत्र नाम कर्मके उदय अनुभागके दो भेद हैं ऊच गोत्र और

(३९) ,, ,, कापोत ,, ,,
(४०) ,, ,, तेजो ,, ,,
(४१) ,, ,, पद्म ,, ,,
(४२) ,, ,, शुक्ल ,, ,,
(४८) निल ,, ६ लेश्याके छेसुत्र
(५४) कापोत ,, ६ ,, ,,
(६०) तेजो ,, ६ ,, ,,
(६६) पद्म ,, ६ ,, ,,
(७२) शुक्ल ,, ६ ,, ,,
(१०८) मातापिता दोनोको सेमील ३६ सुत्र

पूर्वनो कर्म भूमिका २॥ द्विपके १२–२४–२४ एव ६० बोल कहा था इन्हीकों १०८ गुणा करनेसे ६४८० भाग होता है।

अकर्म भूमि मनुष्योंकि गर्भ

(१) कृष्णलेश्या० मातासे कृष्णलेश्या० गर्भ
(२) ,, ,, निल ,, ,,
(३) ,, ,, कापोत ,, ,,
(४) ,, ,, तेजो ,, ,,
(८) निललेश्या मातासे ४ सूत्र
(१२) कापोत लेश्या० मातासे ४ सुत्र
(१६) तेजोलेश्या० मातासे ४ सुत्र
(३२) मातावत् पिताका भी १६ सूत्र
(४१) माता और पिता दोनोंकि साथ गर्भका १६ सुत्र

नीच गोत्र जिसमें ऊच गोत्रके ८ भेद हैं तथा निचगोत्रके आठ भेद

	(ऊचगोत्र)	(नीचगोत्र)
(१) जाति	विशेष उत्तम	जातिमद
(२) कुल	,, ,,	कुलमद
(३) बल	,, ,,	बलमद
(४) रुप	,, ,,	रुपमद
(५) तप	,, ,,	तपमद
(६) सूत्र	,, ,,	सूत्रमद
(७) लाभ	,, ,,	लाभमद
(८) एश्वर्य	,, ,,	एश्वर्यमद

(८) अन्तराय कर्मके उदय अनुभाग ५ प्रकारके हैं यथा

(१) दानान्तराय—दान दे न सके
(२) लाभान्तराय—लाभकी प्राप्ति न हो
(३) भोगा ,,—छती वस्तु भोग न सके
(४) उपभोगा ,,—वार २ भोग न सके
(५) वीर्या ,,—कोई काममें पुरुषार्थ कर न सके

इति

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १०

सूत्र श्री पन्नवणा पद २८ उ० २

(आहार पद)

(१) जीव (२) भव्य (३) सज्ञी (४) लेश्या (५) द्रीष्टी

(६) सयति (७) कषाय (८) ज्ञान (९) योग (१०) उपयोग (११) वेद (१२) शरीर (१३) पर्याप्ती इति

समुचय जीव तथा २४ दंडक और सिद्ध भगवान् एवं २६ बोलके वचनापेक्षा और बहु वचनापेक्षा सर्व ५२ बोल प्रत्यद्वारके प्रत्येक बोलपर उतारे जावेंगे परन्तु जिन्ही बोलमें जो दंडक पावेगा उन्हीको ही गृहन किया जावेगा

(१) जीवद्वार--एक जीव क्या आहारीक है या अनाहारीक है ? स्यात आहारीक है स्यात अनाहारीक है कारण यहापर समुचय जीवका प्रश्न होनासे स्यात् शब्द रखा गया है क्योंकि परभवगमन करते समय या चौदवा गुणस्थान या सिद्धोंके जीवानाहारीक है शेषाआहारीक है

एवं २४ दंडक भी समझना तथा सिद्ध भगवान् अनाहारी है। समुचय घणा जीव आहारीक भी घणा अनाहारीक भी घणा घणासिद्ध अनाहारीक है घणा नारकीके जीवोंके उत्तरमे तीन भागा होते है यथा (१) घणा नारकी मे आहारीक जीवों सदाकाल सास्वता है (२) आहारीक नारकी घणा और अनाहारीक एक जीव भीले (३) आहारीक नारकी घणा और अनाहारीक भी घणा एवं पाच स्थावर वर्जके १९ दंडकमें तीन तीन भागा कर नेसे ५७ भागा हुवे पाच स्थावरोंके बहू वचनमें आहारीक भी घणा अनाहारीक भी घणा इतिद्वारम् भागा ५७

(२) भव्य--समुचय एक भव्य जीव और २४ दंडकोंके एकेक जीव, स्यात् आहारीक स्यात अनाहारीक। बहू वचन समुचय

होनापर साधु मार्ग स्वकारकर समिति गुप्ती पाचमहाव्रत चरण सतरी, करणसतरिके पालक हो उन्होंको सयति कहते है। वह छटा गुणस्थानसे चौदवा गु० तक मीलते है।

(२) **असयता**=जिन्होंके व्रत पच्चरकाण कुछ भी न हो वह जीव पेहलेसे चोथा गुणस्थान तक मीलते है जिन्होंके तीन भेद हैं।

(१) अनादि अनान्त अभव्यापेक्षा प्र० गु०

(२) अनादि सान्त भव्यापेक्षा ,, ,,

(३) सादि सान्त-पाचनेसे इग्यारवे गुणस्थान जाके पीछा पडे हूवे पेहलासे चौथा गु० तक

(३) **सयतासयत**-कुच्छ व्रत हों कुच्छ अव्रत न हो एसा जो पाचवे गुणस्थान व्रतते हूवे श्रावक लोक।

(४) **नोसयति नोअसयति नोसयतासयता**-सिद्धभागवान्।

समुचय जीव सयति है असयति है सयतासयत है नोसयति नोअसयंति नोसयतासयत यह च्यारो प्रकारका है

नारकी देवता पाचस्थावर तीन वैकलेन्द्रिय असज्ञी मनुष्य तीर्यच तथा युगल मनुष्य यह सर्व असयति है कारण इन्होंके व्रत नही होते है।

सन्नीतीर्यच पांचेन्द्रिय असयति है तथा सयतासयती भी है कारण तीर्यचोंको जातिस्मर्ग ज्ञान होनासे पूर्व भवमे जो व्रत लिया हो वह व्रत तीर्यचके भवमे भी धारण करते है वास्ते तीर्यचमे भी श्रवक मीलते है।

जीव और पाच स्थावरमें आहारीक भी घणा अनाहारीक भी घणा शेष १९ दटकोंमें तीन तीन भागा पूर्ववत् एव ५७ भागा एव अभव्य जीवोंका भी पूर्व भव्यवत् ५७ भागा समझना। नो भव्य नो अभव्य एक जीव और घणा जीवों अपेक्षा आहारीक नही किंतु अनाहारीक है एव सिद्ध भी समझना इतिद्वारम् ११४ भागा

(३) **सज्ञीद्वार**–समु० जीव १ और १६ दडक एक वचन स्यात आहारीक स्यात अनाहारीक बहू वचनापेक्षा जीवादि १७ दडकमें तीन तीन भागा होनासे ५१ भांगा होता है। असन्नी समु० जीव और २२ दटक एक वचनापेक्षा स्यात आ हारीक स्यात अनाहारीक। बहू वचनापेक्षा समु० जीव और पाच स्थावरमें आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा

तीन वैकलेन्द्रिय और तीर्यंच पाचेन्द्रिय इन्ही च्यार बोलोंमे तीन तीन भागा पूर्ववत् एव १२ भागा तथा नारकी दश भुवनपति व्यतर मनुष्य इन्ही तेरहा दडकके प्रत्येक दडकमें छे छे भागा होते हैं। यथा—

(१) आहारीक एक (२) अनाहारीक एक
(३) आहारीक एक अनाहारिक एक युगम्
(४) „ „ , घणा
(५) „ घणा „ एक
(६) „ „ „ घणा

एव १३ दडकके ७८ भागा हूवे। नोसज्ञी नोअसज्ञी समु० जीव और मनुष्य स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक।

सज्ञी मनुष्यमे सयति असयति समतासयति तीनो प्रकारके जीव मीलते है ।

सिद्ध भगवान् नोसयति नोअसयति नोसयतासयति है ।

(१) स्तोक सयति जीव (२) सयतासयति असख्यातगुण (३) नोसयति नोअसयति नोसयतासयति अनतगुणा (४) अस यति अनन्तगुणा । इति ।

सेवभते सेवभते तमेवसचम् ।

थोकडा न० १९

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३४

(परिचारणा पद)

(१) अणन्तर आहार (२) अभोगाहार (३) आहारके पुद्ग लोंका जानना (४) अध्यवशाय (५) सम्यक्त्व द्वार (६) परिचा रणा द्वार ।

(१) **अणन्तर**—नारकीके नेरिया उत्पन्न होते समय जो आहारके पुद्गल गृहन करते हैं फिर शरीरको उत्पन्न करते है फिर पुद्गलोंको यथायोग्य परिणमाते है फिर इन्द्रियों निपजाते है फिर उर्ध्व अधोगमन या शब्दादि परिचारणा करते है फिर उत्तर वैक्रय रुप वैक्रय बनाते हैं इसि माफिक १३ दडक देवतोंको भी समझना परन्तु देवतोंमें पेहले वैक्रय करे बादमें शब्दादि परिचारणा करते है च्यार स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय यह सात बोलोंमें वैक्रय न होना से नरकवत् पाच बोल केहना और वायुकाय तथा तीर्यंच पचेंद्रि और मनुष्यमे नरकवत् छे बोल केहना द्वारम् ।

बहू वचनापेक्षा समु० जीवमें आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा। मनुष्यमें भागा ३ सिद्ध भगवान् एक या बहू वचन अनाहारी है सब भागा ५१–१२–७८–३ एवं १४४ भागे।

(४) लेश्याद्वार—स लेश्या समु० जीव और २४ दडक एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्यातानाहारीक बहुत वचनापेक्षा समु० जीवों और पाच स्थावरमें आहारीक घणा अनाहारीक त्रिघणा। शेष १९ दडकके तीन तीन भागा करनेसे ५७ एव कृष्ण लेश्या परन्तु दडक २१ ज्योतीषी वैमानिक वर्जके वास्ते भाग १७ दडकका ५१ एव निल लेश्याका ५१ कापोत लेश्याका ५१ एव-तेजो लेश्यामें दडक १८ समु० जीव और १८ दडक एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्यातानाहारीक बहू वचनापेक्षा समु० जीव और १९ दडकमें तीन तीन भागा ४८ और पृथ्वी पाणी वनास्पतिमें छे छे भागा (असज्ञीवत्) एव १८ मीलके ६६॥ पद्मलेश्या समु० जीव और तीन दडक एक वचन पूर्ववत् बहू वचनापेक्षा तीन तीन भागा १२ एव शुक्ल लेश्याका भी भागा १२ तथा अलेश्य समु० जीव मनुष्य और सिद्ध एकवचन या बहू वचन सर्व अनाहारीक है भागा ५७–५१–५१–५१–६६–१२–१२ कुल भागा ३०० द्वारम्।

(५) द्रीष्टीद्वार—सम्यग्द्रीष्टी समु० जीव और १९ दडक एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्यातना हारीक बहू वचनापक्षा समु० जीव और १६ दडकमें तीन तीन भागा ५१ और तीन वैकलेन्द्रियमें छे छे भाग एव १८ भागा। मिथ्या द्रीष्टी समु०

(१) अभोग-समु० जीव आहार लेते है वह जानते हुवे या अजानते हुवे दोनों प्रकारसे लेते है, नरकादि १९ दंडकके जीवों दोनों प्रकार तथा पाच स्थावर अजानते हुवे भी आहार करते है।

(४) आहारके पुद्गल-नारकी आहार करते है वह आहारके पुद्गलोंको नारकी न देखते है न जानते है कारण नारकी के रोम आहार है और पुद्गलोंका बहुत सूक्ष्मपणा होनासे उपयोग-कि इतनी तीव्रता नहीं है कि उन्हीं सुक्ष्म पुद्गलोंको जाने या देखे। इसी माफीक १० भुवनपति व्यंतर और जोतीषी देव तथा पाच स्थावर ए रोमाहारी है तथा बेरिन्द्रिय तेन्द्रियके चक्षु अभाव है। चौरिन्द्रिय कितनेक जीव न जाने न देखे परन्तु आहार करे और कितनेक जीव न जाने परन्तु देखे और आहार करते है। तीर्यंच पाचेन्द्रियको च्यार भागा होते है।

(१) न जाने न देखे परन्तु आहार करे (असन्नी नेत्र हीन)

(२) न जाने देखे आहार करे (असनी नेत्रोंवाला)

(३) जाने न देखे ,, ,, (सनी नेत्र हीन)

(४) जाने देखे आहार करे (सन्नी नेत्रोंवाला)

इसी माफीक मनुष्यमें भी च्यार भागा समझना और वैमानिक देव दो प्रकारके है (१) मायावान् वह मिथ्यात्वी (२) अमायवान् सम्यग्द्रीष्टी जो मिथ्यत्ववाला न जाने न देख आहार करे। सम्यग्द्रीष्टीके दो भेद है। (१) अणन्तर उत्पन्न हुवा न जाने न देखे ,, (२) परंपर उत्पन्न हुवा जिन्होंका दो भेद (१) अपर्याप्ता न जाने न देखे० (२) पर्याप्ता जिन्होंका दो भेद है। (१) अनो-

जीव और २४ दडक एक वचनापेक्षा पूर्व वत् बहू वचनापेक्षा समु० जीव और पाच स्थावर ये आहारीक घणा और अनाहारीक भी घणा शेष १९ दटक ये भागा तीन तीन (५७) मिश्र द्रीष्टी समु० जीव और १६ दडक एक वचन या बहू वचन आहारीकहै तथा सिद्ध भगवान् एक या बहू वचनापेक्षा अनाहारीक है सर्व भागा ९१-१८-५७ कुल १२६ द्वारम्

(८) **सयतिद्वार**-सयति समु० जीव और मनुष्य एक वचनापेक्षा स्यातादारीक स्यातनाहारीक (केवली अपेक्षा) बहू वचनापेक्षा तीन तीन भागा ६ असयति सो मिथ्यातिवत् ५७ भागा सयतासयति समु० जीव और मनुष्य तथा तीर्यंच पाचे न्द्रिय एक या बहु वचनापेक्षा आहारीक है। नोसयति नोअस यति नोसयतासयति समु० जीव और सिद्ध भगवान् एक या बहू वचनापेक्षा अनाहारीक है। ६-५७ कुल ६३ भागा हुवे इतिद्वारम्

(९) **कषायद्वार**-सकषाय क्रोधकषाय मान माया लोभ कषाय प्रत्येक समु० जीव और चौवीस चौवीस दटक एक वचनापेक्षा [illegible] स्याताहारीक बहू वचनापेक्षा सकषाय १९ दडकमें तीन तीन भागा ५७ क्रोध कषाय छे दडकमें तीन तीन १८, १३ दडक देवतावोंमे छे छे भागा ७८ एव मान कषाय माया कषाय पाच दडकमें तीन तीन भागा १५-१५ नारकी देवतोंका १४ दडकमें छे छे भागा ८४-८४ एव लोभ कषाय पर तु नारकीमें छे भागा शेष १८ दडकमें तीन तीन भागा ५४ दोष सर्वकषायके समु० जीव और पाच स्थावरमें आहारीक घणा और अनाहारीक

पयोगवान् न जाने न देखे० (२) उपयोग वाले हैं वह जाने देखे और आहार करे विशेषो उपयोगवान् होनासे।

(४) **अध्यवशाय**-अध्यवशा प्रत्येक जीवोंके असख्याते असख्याते हे वह प्रशस्य अप्रशस्थ दोनों प्रकारके होते हैं वह २४ दडकोंकि जीवोंके हैं।

(५) **अभिगम**-सम्यक्त्ववान् जीव होते हैं वह वस्तुको यथार्थ जानते हैं (२) मिथ्यात्ववान् वस्तुको विप्रीत जाने (३) मिश्रवान् वस्तुको मिश्रभावे जाने नरकादि १६ दडक मनवालोंको तीनों प्रकारका जान पणा होता है शेष ८ दडक अर्थात् पाच स्थावर तीन वैकलेन्द्रियको एक मिथ्यात्व होनासे मिथ्याभिगम होता है और वैकलेन्द्रिय अपर्याप्तावस्थामें सम्यग्द्रष्टी होता है परन्तु स्वल्पकाल होनेसे गौणपण है।

(६) **परिचारणा**-यह द्वार विशेष देवताओंकि अपेक्षाहै देवता तीन प्रकारके है जिस्मे(१) भुवनपति व्यतर ज्योतिषी सौधर्मेशान देव लोकके देव, देवी और परिचारणा (मैथुन) सहित है (२) तीजासे बारहवा देवलोकके देव हे वह देवी रहीत और परिचारणा सहीत है (३) नौग्रीवेग और पाचानुतर वैमानके देव हैं वह देवी और परिचारण रहीत है परन्तु एसा देव नहीं हैं कि जिन्होंके देवी हो और परिचारणा रहीत हो।

परिचारणा पाच प्रकारकि है और उन्होंका स्वामी

(१) कायपरिचारणा (मनुष्यकि माफीक) स्वामि भुवनपति व्यतरज्योतीषी सौधर्म ईशानदेवलोक के देव

भी घणा। अकषाय समु० जीव मनुष्य और सिद्ध है जिसमें समु० जीव और मनुष्य एक वचनापेक्षा स्यात् आहरिक स्यात् अनाहारीक बहुवचन समु० आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा मनुष्यमें भागा ३ सिद्ध भागवान् एक या बहु वचन अनाहारीक है। एवं ५७-१८-७८-१९-१९-८४-८४-६-५४-३ कुल ४१४ भागा हुवे

(८) ज्ञानद्वार-सनानी, मतिज्ञानी, श्रुतिज्ञानी समु० जीव और १९ दंडक एक वचन पूर्ववत् बहु वचन जीवादि तीन तीन भागा परन्तु तीन वैकलेन्द्रिमें छे छे भागा १८-१८-१८ ५१-५१-५१ अवधिज्ञानमें समु० जीव और १६ दंडक है जिसमें तीर्यंच पाचेन्द्रि एक या बहु वचन आहारीक है शेष एक, वचन पूर्ववत् बहु वचन तीन तीन भागा ४८। मन पर्यव ज्ञान समु० जीव और मनुष्य एक या बहुवचन आहारीक है। केवल-ज्ञान समु० जीव मनुष्य और सिद्ध जिसमें समु० जीव और मनुष्य एक वचनापेक्षा स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक बहु वचनापेक्षा समु० आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा मनुष्यमें भागा ३ सिद्ध एक या बहुत वचन अनाहारीक है। समु० अनान मति अनान श्रुतिअनान जीवादि २५ दंडक एक वचनापेक्षा स्यात् आहारीक स्यात् नाहारीक बहु वचनापेक्षा समु० जीव और पाच स्थावरमें आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा शेष १९ दंडकमें तीन तीन भागा ५७-५७-५७। विभंग ज्ञानी समु० जीव १६ दंडक जिसमें तीर्यंच पाचेन्द्रिय और मनुष्य तो एक या बहु वचनापेक्षा आहारीक है शेष समु०

(२) स्पर्श परिचारण हस्तादिसेस्वामि तीजा चोथा देव लोकके देव।

(३) रूप परिचारणा–स्वामि पाचवा छठा देवलोकके देव।

(४) शब्द परिचारणा–स्वामि सातवा आठवा दे० देव।

(५) मन–परिचारणा स्वामि–नव–दश इग्यारवा बारहवा दे० देव, शेप नौग्रीवेंग वा पाचाणुत्तर वैमानका देव अपरिचारणा वान् है।

परिचारणा–जब देवतावोंको काय परिचारणाकि इच्छा होती है तब देव मनसे देवीकों स्मरण करते ही देवीका अग स्फुरकता है या आसासे कुच्छ सकेत होनासे देवीको ज्ञान होता है कि मेरा मालीक देव मुजे याद करते है यह देवी उसी समय उत्तर वैक्रयसे अच्छा मनोहर द्रव्य शृगार कर देवके पास हाजर होती है तब वह कामातुर देव उन्हीं देवीके साथ मनुष्यकी माफीक काय परिचरणा (मैथून) सेवन करते हैं।

(प्र) हे स्वामिन् उन्हीं देवतावोंके वीर्यके पुद्गल है।

(उ) देवतोंके वीर्य है किन्तु मनुष्योंके जो गर्भ धारण वीर्य है वेसा देवोंके नहीं है परन्तु काम शान्त वीर्य देवतोंके है वह वीर्य देवीके श्रोत्तेन्द्रि चक्षुइन्द्रिय घ्रणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय इन्हीं पाचों इन्द्रयपणे या मनपणे इष्टपणे मनोज्ञपणे विशेष मनोज्ञपणे शुभ शोभाग्य रुप योवन गुण(विषय) लावण्य कन्दर्प इन्हीं १७ बोलोंपणे वारवार परिणमता है अर्थात् देवी देवताकोंको उन्हीं समय कामसे शान्ती होती है।

आहार पदके १३ द्वारके कुल भागा।

(१) समुच्चयद्वार भागा	९७	(८) ज्ञानद्वार	"	४७४
(२) भव्यद्वार	"	११४	(९) योगद्वार	"	११४
(३) सन्नीद्वार	"	१४४	(१०) उपयोगद्वार		११४
(४) लेश्याद्वार	"	३००	(११) वेदद्वार		१७४
(५) द्रष्टीद्वार	"	१३६	(१२) शरीरद्वार		१७७
(६) सयतिद्वार	"	६३	(१३) पर्याप्तीद्वार		६००
(७) कषायद्वार		४१४	कुल भागा २८७१ हुवे।		

इति।

सेवभंते सेवभंते तमेव सचम्

थोकड़ा नं० ११

सूत्र श्रीपन्नवणाजी पद २९

(उपयोग पद)

(प्र) उपयोग कितने प्रकारके हैं ?

(उ) उपयोग दो प्रकारके हैं यथा (१) साकर उपयोग (२) अणाकार उपयोग जिसमें साकर उपयोग ८ प्रकारके हैं यथा (१) मतिज्ञान (२) श्रुतज्ञान (३) अवधिज्ञान (४) मन पर्यवज्ञान (५) केवलज्ञान (६) मतिअज्ञान (७) श्रुतअज्ञान (८) विभंगज्ञान और अनाकार उपयोग ४ प्रकारका है (१) चक्षुदर्शन (२) अचक्षुदर्शन (३) अवधिदर्शन (४) केवलदर्शन।

स्पर्शपरिचारण वाले देवों कि इच्छा होते ही देवी द्रव्य मनोहर रूप शृंगारकर पूर्ववत् तीजे चोथे देवलोकमें अपने स्वामि देवोंकी सेवामें हाजर होती है वह देवता देवीके स्तनादिसे स्पर्श करतो ही कामसे शान्ती हो जाते है। देवताके वीर्यका पुद्गल देवीके १७ बोलपणे परिणमते है अर्थात् हस्तादि स्पर्शसे देव देवीको शान्तपणा होता है।

रुप परिचारण वाला देवोंको इच्छा होते ही देवी द्रव्य मनो हर रूप वैक्रय अतित सुन्दराकार बनाके पाचवे छठे देवलोकके देवों पासे हाजर होती है वह देव उन्ही देवीका रूप देखतोंही मनको शान्त कर लेते है। देवके वीर्यके पुद्गल देवीके १७ बोल पण परिणमते है।

शब्द परिचारणा वाला देवोंकी इच्छा होते ही देवी वैक्रयसे मनोहर वैक्रय बनाके सातवा आठवा देवलोकके देवोंकी सेवामें हाजर होती है वहापर अति मनोहर कण्ठ सुस्वर अर्थात् पञ्चम स्वरसे इस कदरका गयान करे कि वह कामोतुर देव उन्ही देवीका शब्द सुनते ही कामसे शान्त हो जाते हैं। देवके वीर्यका पुद्गल देवीके १७ बोल पणे परिणमते है।

मनपरिचारणा-वालेके काम इच्छा होते ही देवीयों पेहला दूसरे देवलोकमें उन्हीं देवोंके सदिशा उभी रहे के अपना द्रव्य मनसे ही देवतायोंकी कामाग्निको मन हीसे शान्त कर देती है। देवता देवीके मन मीलनेसे देवतोंकी शान्तपणा होते ही उन्होंका वीर्यका पुद्गलों वहासे छुटते है वह असख्याते योजनके

अब नरकादि २४ दंडक पर इन्हींको उतारते हैं।

दंडक	उपयोग	साकार	अनाकार
समुच्चय जीवमें	२	८	४
१ नारकी	२	६	३
१३ देवता	२	६	३
५ स्थावर	२	३	१
१ बेन्द्रिय	२	४	१
१ तेन्द्रिय	२	४	१
१ चौरेन्द्रिय	२	४	२
१ तिर्यंच पांचेंद्रिय	२	६	३
१ मनुष्य	२	८	४

सेवभंते - सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० १२

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३०

(पासणिया उपयोग)

(प्र) पासणिया (देखनेवाला) उपयोग कितने है।

(उ) पासणिया उपयोग दो प्रकारके है (१) साकार पासणिया (२) अनाकार पासणिया, जिसमें साकार पासणियाके ६ भेद हैं यथा श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, श्रुतिअज्ञान विभंगज्ञान और अनाकार पासणिया

अंतरे पर रही हुइ देवीयोंके पूर्वोक्त १७ बोलोंपण परिणमते है अर्थात् देवी उत्पन्न होनाका स्थाना पेहले दूसरे देवलोकमें है और देवता बोलानेसे आठवा देवलोक तक जा शक्ती है आगे जानेकी विषय देवीकी नहीं है। पेहले दूसरे देवलोकके देवोंकि काममें आति है अर्थात् उन्हीं देवीयोंको अपरिगृहीता देवीयोंकि नामसे आलेखाइ जाती है।

देवोंके काममे	देवलोकमे	देवी‌की स्थिति
सुधर्म देवोंकि	सौधममे	१ पल्योपमसे ७ पल्योपम
इशान देवोंकि	इशानमे	१ पल्यो०से ९ पल्योपम
सनत्कुमारके	सौधर्ममे	७ पल्यो०से १० पल्यो०
महेन्द्र देवोंके	इशानमे	९ ,, १९ ,,
ब्रह्म देवोंके	सौधर्ममे	११ ,, २० ,,
लंकत ,,	इशानमे	२१ ,, २५ ,,
महाशुक्र देवोंकि	सौधर्ममे	२६ ,, ३० ,,
सहस्र ,,	इशानमे	३१ ,, ३५ ,,
आणत ,,	सौधर्ममे	३६ ,, ४० ,,
प्राणत ,,	इशानमे	४१ ,, ४५ ,,
आरण ,,	सौधर्ममे	४६ ,, ५० ,,
अच्युत देवोंकि	इशानमे	५१ ,, ५५ ,,

देवतायोंमे परिचारणके सुखोंकि अल्पा०

(१) स्तोक काय परिचारणवालोंका सुख

(२) स्पर्श ,, ,, अनंतगुणा

यथा चक्षुदर्शन अवधिदर्शन, केवलदर्शन ये दोनों उपयोग नरकादि दडक पर उतारा जावेगा।

दडक	उपयोग	साकार पासणिया	अनाकार पासणिया
समुचय जीव	२	६	३
१ नारकी ७	२	४	२
१३ देवता	२	४	२
५ पाच स्थावर	१	१	०
२ बेंद्रिय तेन्द्रिय	१	२	०
१ चौरेंद्रिय	२	२	१
१ तिर्यंच पाचेन्द्रिय	२	४	२
१ मनुष्य	२	६	३

(प्र) केवली है सो इस रत्नप्रभा नरकको आकार हेतू द्राष्टात वर्ण सस्थान परिमाण–करके जिस समयमें जानते समय देखते है या नही ?

(उ) केवली जिस समय रत्नप्रभा नारकीको पूर्वोक्त आकारसे जानते है उसी समय नहीं देखे।

(प्र) क्या कारण है !

(उ) जो केवलियोंके साकार उपयोग है वह ज्ञान है और अनाकार उपयोग है वह दर्शन है इस वास्ते जिस समयमें जानते हैं उस समय न देखे और जिस समयमें देखते हैं उस समय

(३) रुप ,, ,, ,,
(४) शब्द ,, ,, ,,
(५) मन ,, ,, ,,
(६) अपरिचारणवालाका सुख ,, ,,

परिचारणवाला देवोंकी अल्प०

(१) स्तोक अपरिचारणवाला देव
(२) मन परिचारणवाला देव संख्यातगुणा
(३) शब्द ,, ,, असंख्यातगुणा
(४) रुप ,, ,, ,,
(५) स्पर्श ,, ,, ,,
(६) काय ,, ,, ,,

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नं० ११

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३५

(वेदना पद)

शीत १ द्रव्य २ शरीर ३ साता ४ दुःख ५ अभुगमीया ६ निंदा ७

(१) वेदना तीन प्रकारकी है—शीत वेदना, उष्ण वेदना, और शीतोष्ण वेदना । समुचय जीव तीनो प्रकारकी वेदना वेदते हैं।

पहिली, दुजी, तीजी नारकीमें उष्ण वेदना है कारण इन तीनों नरकके नेरीया शीत योनीके है । चौथी नारकीमें उष्ण वेदनावाले नेरीया बहुत है और शीत वेदनावाले नेरीया कम है

नहीं जाने भावार्थ यह है कि समय बहुत सूक्षम है एक समयमें दो उपयोग (ज्ञान और दर्शन) नहीं होशक्ते हैं परंतु जिसी समय केवलियोंके केवल ज्ञान है उसी समय केवल दर्शन मौजूद है ज्ञान और दर्शन युगपत् समय मोजूद है जैसे रत्नप्रभा नारकी कही है वैसे ही ७ नारकी १२ देवलोक नौग्रैवेक अनुत्तर वैमान इस प्रभारा पृथ्वी और परमाणु द्विप्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी स्कन्ध भी समझना इस विषय पूर्वाचार्योंका भी मतान्तर हे देखो प्रज्ञापना सूत्र ।

(प्र) हे भगवान् ! केवली अनाकार अहेतु यावत् अप्रमाणकर जिस समय रत्नप्रभा नरकको जानते हैं उसी समय देखें !

(उ) जिस समय जाने उस समय नहीं देखे भावना पूर्ववत् यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक समझना

सेवभंते सेवभंते तमेवसचम् ।

थोकडा नम्बर ११

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३१

(सज्ञी पद)

(१) सज्ञी–सज्ञी जीवोंका आयुष्य बन्धा हूवा हो तथा मनके साथ इन्द्रियोंके उपयोगमें वर्तता हो वह जीव पहेला गुणस्थानसे बारहवा गुणस्थान तक मीलते है ।

(२) असज्ञी–असज्ञी पणाका आयुष्य बन्धा है मन रहित इन्द्रियमें वर्ते यह जीव पेहले दुसरे गुणस्थानमें मीलते हैं ।

(३) नोसज्ञी नोअसज्ञी–इन्द्रियका उपयोग रहित अर्थात्

अर्थात् शीत, उष्ण दोनों वेदना है। पाचवींमें उष्ण वेदनावाले कम और शीत वेदनावाले जादा है। छट्ठी नारकीमें शीत वेदना है और सातमी नारकीमें महाशीत वेदना है। शेष असुरादि २३ दडकमें तीनों प्रकारकी वेदना है। द्वारम्।

(२) वेदना चार प्रकारकी है—द्रव्य, क्षेत्र, काल और भवसे-समुच्चय जीव और २४ दडकमें चारों प्रकारकी वेदना पावे।

(१) द्रव्य वेदना— इष्ट अनिष्ट पुद्गलोंकी वेदना

(२) क्षेत्र वेदना—नरकादि क्षेत्रकी वेदना

(३) काल वेदना—शीत, उष्ण कालकी वेदना

(४) भाव वेदना—अनुभाग रस मद तिव्रादि। द्वारम्

(३) वेदना तीन प्रकारकी है-शारीरिक, मानसिक और शरीरी मानसिक। समुच्चय जीवोमें तीनो प्रकारकी वेदना है और सज्ञी सोलह (१६) दडकमें भी तीन प्रकारकी वेदना पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रियमें एक शारीरिक वेदना है। द्वारम्

(४) वेदना तीन प्रकारकी है-साता, असाता और साता असाता समुच्चय जीव और २४ दडकमें तीनों प्रकारकी वेदना है। द्वारम्

(५) वेदना तीन प्रकारकी है-सुख, दु ख और सुखदु ख समुच्चय जीव और २४ दडकमें तीनो प्रकारकी वेदना है। द्वारम्

(६) वेदना दो प्रकारकी है-आभ्युपगमीया (उदीर्णा करके—और लोच तथा तपश्चर्यादि करके) औपक्रमीया (उदय आनेसे)

केवलज्ञान होनेपर इन्द्रियोंके उपयोगकी जरूरत नही है वह जीव १३–१४ गुणस्थान या सिद्धोंके जीवोंको नोसज्ञीनो असज्ञी कहा जाता है।

समुचय जीव और मनुष्य तीनों प्रकारके होते हैं सनी—असज्ञी—नोसज्ञी नोअसज्ञी।

पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय समुत्सम तीर्यंच पाचेद्रिय और मनुष्य यह सर्व असज्ञी मन रहीत है।

पेहली नरक दशभुवनपति व्यतरदेव और छप्पन अन्तर द्विपोंका मनुष्य सनी होता है परन्तु कितनेक जीव अपर्याप्ताव स्थामें असज्ञी भी पाया जाते है कारण यहासे असज्ञी तीर्यंच मरके उक्त स्थानामें जाते है उन्हीकों अपर्याप्ती अवस्थामें शास्त्रकारोंने असज्ञी गीना है इमापेक्षा।

ज्योतीषी देव वैमानिकदेव और सनीतीर्यंच पाचेन्द्रि तथा तीस अकर्मभूमि युगल मनुष्य यह सर्व सनी मनवाले है।

सिद्ध भगवान् नोसज्ञी नोअसज्ञी है।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्।

थोकडा नम्बर १४

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३२

(सयति पद)

(१) **सयति**–जिन्होंके अन्तानुबन्धीचोक, अप्रत्याख्यानि चोक, प्रत्याख्यानीचोक, एव १२ तथा मिथ्यात्वमोहनि, मिश्र मोहनि, सम्यक्त्वमोहनिय, एव १५ प्रकृतियोंका क्षय या उपशम

(९) तिर्यच पचेन्द्रिमें पाच पावे देवतावत

(१) मनुष्यमें सात पावे

(२) कालद्वार—

वेदनी समुद्घातका काल असख्याते समयके अन्तर मुहूर्त का एव कपाय समु मर्णातिक समु० वैक्रिय समु० आहारिक समु० इन प्रत्येक छेओं समुद्घातोंका काल अन्तर मुहूर्त अन्तर मुहूर्तका है और केवली समुद्घातका काल आठ समयका है

(३) चौवीस दडक एक वचनापेक्षा—

एक नारकीके नेरीयेने वेदनी समुद्घात भूतकालमें अनन्ती की है भविष्यमें कोई करेगा कोई नही करेगा जो करेगा वह १-२-३ यावत सख्याती असख्याती अनन्ती करेगा एव यावत् २४ दडकमें कहना। कोई जीव नारकीका भविष्यमें वेदनी समु द्घात नहीं करेगा कारण यह प्रश्न नारकीके चर्म समय वालोंकी अपेक्षाका है फिर मनुष्यमें आकर वहा वेदनी समुद्घात न करके मोक्ष जाने वाला है।

जैसे वेदनी समु० कहा है वैसे ही कपाय, मर्णान्तिक, वैक्रिय, तेजस समु० भी समझ लेना अर्थात् यह पाचों समु० २४ दडकमे भूतकालमें अनन्ती की है भविष्यमें जो करेगा वह १-२-३ यावत् सख्याती असख्याती अनन्ती करेगा।

एक नारकीके नेरियाने आहारिक समुद्घात भूतकालमें स्यात् की स्यात् नहीं की अगर करी है तो १-२-३ भविष्यमें करेगा तो १-२-३ ४ करेगा एव यावत् २४ दडक कहना परन्तु मनुष्यमें भूतकाल अपेक्षा १-२-३-४ करी है कहना।

एक नारकीका नेरियाने भूतकालमें केवली समुद्घात नहीं करी भविष्यमें करेगा तो एक एवं यावत् १४ दंडक कहना परन्तु मनुष्यमें भूतकालमें करी हो तो १ भविष्यमें करेगा तो भी एक ही करेगा। इति सामान्य सूत्र।

(४) घणा जीवोंकी अपेक्षा २४ दंडक।

घणा नारकी भूतकालमें वेदनी समु० अनन्ती करी और भविष्यमें भी अनन्ती करेगा एवं यावत् २४ दंडक कहना और इसी तरह कषाय, मर्णान्तिक, वैक्रिय, तेजस समु० भी समझ लेना।

घणा नारकी भूतकालमें आहारिक समुद्घात असंख्याती और भविष्यमें असंख्याती करेगा एवं वनस्पति, मनुष्य छोडके शेष २२ दंडक समझना। वनास्पतिमें भूत भविष्य अनन्ती तथा मनुष्यमें भूत भविष्यमें स्यात् संख्याति स्यात् असंख्याति। केवली समु० नारकादि २२ दंडक भूतकालमें करी नहीं भविष्यमें असंख्याति एवं वनास्पति भू० नहीं भवि० अनन्ती एवं मनुष्य भूतमें जो करी हो तो १-२-३ उ० प्रत्यक सौ भविष्यमें स्यात् संख्याती स्यात् असंख्याती।

(५) चौवीस दंडक परस्परकी अपेक्षा।

एक एक नारकी भूतकालमें नारकीपणे वेदनी समु० कितनी करी? अनन्ती, भविष्यमें कोई करेगा कोई न करेगा जो करेगा वह स्यात् १-२-३ यावत् संख्याती, असंख्याती स्यात् अनन्ती

---

१ नारकी नारकीपने भविष्यमें १-२-३ कहा है सो विचारने योग्य है टीकाकार संख्याती असंख्याती कहते हैं कारण १०००० वर्षसे कम स्थिति नहीं है और प्रचुर वेदना वेदते हैं।

(उ०) स्यात ३-४-५ क्रिया लगती है

(१) अपने खराब योगोंसे तीन क्रिया (काईया, अधिकरणीया, पावसीया)

(२) पर जीवको तकलीफ होनेसे चार क्रिया (परितापनीया)

(३) पर जीवकी घात होनेसे पाच क्रिया लगती है (पाणाईवाय) अधिक

इसके चार भागो ।

(१) एक जीवको एक जीवकी स्यात् ३-४-५ क्रिया

(२) एक जीवको घणा जीवोकी स्यात् ३-४-५ ,,

(३) घणा जीवोंको एक जीवकी स्यात ३-४-५ ,,

(४) घणा जीवोंको घणा जीवोकी घणी ३-४-५ ,,

इसी माफक समुचय जीवोंकी तरह २४ दंडक भी समझना

(प्र०) समुचय जीव मर्णान्तिक समु० करते हुए की पृच्छा ?

(उ०) क्षेत्र वि कम्भ और पहलतो शरीर प्रमाणे लम्बा एक दिशोमें जघन्य अंगुलके असंख्य भाग उत्कृष्ट असंख्याता जोजन इतना क्षेत्र स्पर्शे शेष क्षेत्र अस्पर्शी रहे कालकी अपेक्षा १-२-३ समय और विग्रह गती करे ते १-२-३-४ समयका काल स्पर्शे शेष काल अस्पर्शी हुवा रहे ।

मर्णान्तिक समु० के पुद्गल अन्तर मुहूर्त शरीर पने रहके पीछे ने पुद्गल छुटते हैं उनसे किसी भी प्राण, भूत, जीव, सत्वको तकलीफ हो तो समु० करनेवालेकी क्रिया स्यात् ३-४-५ लगे जिसके पूर्वोक्त ४ भांगे कर लेना ।

करेगा। एव नारकी असुरकुमारपणे यावत् वैमानिकपणे भी कहना।

एकेक असुरकुमार देवता भूतकालमें नारकीपणे वेदनी समु० अनती की है भविष्यमें करेगा तो स्यात् सख्याती स्यात् असख्याती अनन्ती करेगा।

असुरकुमार असुरकुमारपने वेदनी समु० भूतकालमें अनन्ती भविष्यमें करेगा तो १–२–३ यावत् संख्याती, असख्याती या अनन्ती भी करेगा एव यावत् वैमानक तक समझना।

नागादि नौ कुमार भी असुरकुमारकी माफक समझना भविष्यके लिये स्वस्थानमें और औदारिकके दश दंडकमें १–२–३ यावत् अन ती परस्थान और वैक्रियके १३ दंडकमें स्यात् सख्याती स्यात् असख्याती स्यात् अनती समझना।

एव यावत् वैमानिक तक २४ दंडक २४ दंडक पने लगा लेना भावना पूर्ववत्

एक १ नारकी नारकीपने भूतकालमें कषाय समु० अनती करी भविष्यमें करेगा तो १–२–३ यावत सख्याती, असख्याती यावत् अन ती करेगा।

एक १ नारकी असुर कुमार पने भूतकालमें कषाय समु० अन ती करी और भविष्यमें करेगा तो स्यात् सख्याती, असख्याती अनन्ती करेगा एव व्यन्तर, ज्योतिषी, तथा वैमानिक पने परन्तु भविष्यमें स्यात असख्याती अन ती करेगा (सख्यातीका स्थान नहीं है)

पृथ्व्यादि औदारकके १० दंडकमें भूतकालमें अनन्ती भविष्यमें स्यात करेगा स्यात् न करेगा करेगा वह स्यात् १ २ ३

एव नारकी परन्तु क्षेत्रसे ज० १००० जोमन साधिक उ० असस्याता जोजन (कारन पाताल कलेशोंमें उत्पन्न हो तो) कालसे १–२–३ समय शेष समुच्चयकी माफक।

इसी तरह शेष २३ दडक समुच्चय वत परन्तु पाच स्थावर में काल विग्रहापेसा १–२–३–४ समयका कहना। बाकीमें १–२–३ समय काही है।

(१०) समुच्चय जीव वैक्रिय समुद्घातकी पृच्छा

(३०) लम्बा ज० अगुलके स० भाग उ० स० जोजन प्रमाणे एक दिशा वा विदिशा। कालसे १–२–३ समयका स्पर्शेर शेष अस्पर्शा और क्रिया पूर्वोक्त कहनी। स्यात् ३–४–५ औ इनके भागा ४ पूर्ववत्।

इसी तरह नारकी परन्तु आयाम एक दिशामें।

एव वायु काय और तिर्यंच पचेन्द्रि भी समझना। बाकी देवता मनुष्य समुच्चय वत।

इसी तरह तेजस समु० वैक्रिय समु० वत् समझना। आयाम अगुलके अस०में भाग होता है। एव यावत् वैमानिक तक ४ दडकमें परतु तिर्यच पचेन्द्रियमें एक ही दिशा कहना। आहारिक समु० समुचजीव और मनुष्य करे तो विष्कभ और बाहुल्यपने तो शरीर प्रमाणे आयाम ज० अगुलके अस०में भाग उ० स० जोजन प्रमाण एक दिशीमें कालसे १–२–३ समय छोडनेका काल अन्तर मुहूर्त क्रिया पूर्वोक्त ३–४–५ और भागा चार भी पूर्ववत् समझ लेना।

सेव भते सेव भते तमेव सचम्।

यावत् अनन्ती करेगा एव १० भुवनपती भी कहना परन्तु स्व-स्थान और औदारिकके १० दडकमें भविष्यमें १-१-३ यावत् अनन्ती कहना परस्थान और वैक्रियके १३ दंडकमें नारकी वत् कहना।

एकेक पृथ्वीकाय नारकी पने कपाय समु० भूतकालमें अनन्ती करी और भविष्यमें जो करेगा वह स्यात संख्याती, असंख्याती, अनन्ती करेगा एव दश भुवनपती, व्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक परन्तु भविष्यमें स्यात् असंख्याती अनन्ती करेगा पृथ्व्यादि औदारिकके १० दडकमें भविष्यमें स्यात १-२-३ यावत् संख्याती, असंख्याती, अनन्ती करेगा। एव औदारिकके १० दडक तथा व्यतर, ज्योतिषी, वैमानिक असुर कुमारकी माफक समझना।

एकेक नारकी नारकी पने मर्णांतिक समु० भूतकालमें अनन्ती करी भविष्यमें स्यात करेगा स्यात न करेगा जो करेगा वह स्यात १-२-३ यावत् संख्याती, असंख्याती या अनन्ती करेगा एव यावत् वैमानिक तक २४ दडक कहना स्वस्थान पर स्थान सब जगह १-२-३ कहना कारण मर्णांतिक समु० एक भवमें एक ही वार होती है

एकेक नारकी नारकी पने वैक्रिय समु० भूतकालमें अनती करी भविष्यमें स्यात् करेगा स्यात् न करेगा जो करेगा वह स्यात् १-२-३ यावत् संख्याती असंख्याती अनती करेगा एव २४ दडक सतरा दडक पने जैसे कपाय समु० कही है जैसे ही वैक्रिय

थोकडा नम्बर १०

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३६

(केवली समुद्घात)

(प्र०) हे भगवान् ! अनगार भावित आत्माका धणी केवली समुद्घात करे जिसमें निर्जरा किये हुवे कर्म पुद्गल होते हैं वह सर्व लोक स्पर्श करे अर्थात सर्व लोकमें व्यापक हो जाते हैं ? उन सूक्ष्म पुद्गलोंको छद्मस्त जीव वर्ण, गंध, रस स्पर्श करके जाणे देखे?

(उ०) छद्मस्त नहीं जाणे नहीं देखे।

कारण जैसे (दृष्टांत) यह जम्बुद्वीप १ लक्ष योजनका है जिसकी परिधी ३१६२२७ योजन ३ गउ १२८ धनुष्य १३॥ अंगुल १ जव १ जूं १ लीख ६ बालाग्रह ५ व्यवहारीया परमाणु साधिक होती है जिसको कोई महान ऋद्धिवान्, शक्तीवान् देवता हस्तगत सुगन्ध पदार्थका डिब्बा लेकर तीन चिपटी बजाने इतनेमें उस सुगन्धी डिब्बेको हाथमें लिये हुवे २१ बार जम्बुद्वीपकी प्रद-क्षिणा दे और उस सुगन्धी डिब्बीमेंसे निकले हुवे पुद्गल जो जम्बुद्वीपमें व्याप्त है उन पुद्गलोंको छदमस्त नहीं देख सकता। वे अठ स्पर्शी होने पर भी इतने सुक्ष्म है तो कर्मोंके पुद्गल तो चौ स्पर्शी है उसको छद्मस्त कैसे देख सकता है अर्थात् चौ स्पर्शी बहुत ही सुक्ष्म होते है, उसको छद्मस्त नहीं देख सकता।

केवली समु० किस वास्ते करते है ? जिनके चार कर्म (वेदनी, आयुष्य, नाम, गोत्र) बाकी रहे है इसमेंसे आयुष्य कर्म अल्प हो और वेदनी कर्म ज्यादा हो उसको सम करनेके लिये केवली समुद्घात करते है।

समु० समझना परन्तु वैक्रिय १७ दडकमें ही कहना कारण ५ स्थावर ३ विकलेंद्रियमें वैक्रिय नहीं है।

एकेक नारकी नारकी पने तेजस समु० मुतकालमें एक भी नही करी और भविष्यमें एक भी नही करेगा कारण वहा है ही नही।

एकेक नारकी असुर कुमार पने मुतकालमें तेजस समु० अनन्ती करी और भविष्यमें जो करेगा तो १-२-३ यावत् सख्याती' असख्याती अनन्ती करेगा एव तेजस समु० १५ दडकमें मर्णान्तिक समु०की माफक कहना।

मनुष्य वर्जके एकेक २३ दडकके जीव २३ दडक पने आहारिक समु० नही करी और न करेगा।

एकेक तेवीस दडकके जीव मनुष्य पने आहारिक समु० करी हो तो १-२-३ भविष्यमें करेगा तो १-२-३-४

एकेक मनुष्य २३ दडकमें आहारिक समु० नकरी न करेगा। मनुष्य पने करी होतो १-२-३-४ और करेगा तो भी १-२-३-४ करेगा।

मनुष्य वर्जके एकेक २३ दडकके जीव २३ दडक पने केवली समु० न करी न करेगा मनुष्य पने नही करी परन्तु करेगा तो १ करेगा।

एकेक मनुष्य २३ दटक पने केवली समु० न करी न करेगा।

एकेक मनुष्य मनुष्य पने केवली समु० करी हो तो एक और करेगा तो भी एक ही करेगा।

(प्र०) सब केवली समु० करते हैं ?

(उ०) सब केवली समु० नहीं करते, अनन्ते केवली विना ही समु० किये जन्म, जरा मर्णके रोगको मिटा कर मोक्षमें गये है।

(प्र०) मोक्ष जाते समय कितने समयका आयुश करणा होता है ?

(उ०) असंख्याता समयका होता है

(प्र०) केवली समु० को कितना समय लगता है ?

(उ०) आठ समय लगता है

(प्र०) किस समय किस योग पर प्रयूनता है (प्रवर्ते) ?

पहिले समय–औदारिक काय योग (दंड १४ राजलोक प्रमाण),

दूसरे समय–औदारिक मिश्र काय योग (कपाट करे)

तीसरे समय–कार्मण काय योग (मथन प्रदेश)

चौथे समय– ,, ,, ,, (आतरा पूरे)

पांचवे समय– ,, ,, ,, (आतरा समहे)

छठे समय–औदारिक मिश्र काय योग (मथनसमहे)

सातवें समय– ,, ,, ,, (कपाट समहे)

आठवें समय औदारिक काय योग (दंड समहे)।

(प्र०) केवली समु० करता हुवा मोक्ष जावे ?

(उ०) नहीं जावे

जिनके आयुष्यका छे महीना शेष रहनेपर केवल ज्ञान प्रगट हुवा हो उनमेंसे कोई केवली समु० करे कोई न करे

(६) घणा जीव आपसमें।

घणा नारकी घणा नारकी पने वेदनी समु० भूतकालमें अनन्ती करी और भविष्यमें अनन्ती करेगा एव २४ दडक पने भी समझना शेप २३ दडक भी नारकीवत समझना।

जैसे वेदनी समु० २४ दडक पर कहा है इसी तरह कषाय, मर्णान्तिक, वैक्रिय, तेजस समु० भी समझ लेना परन्तु वैक्रिय समु०में १७ दडक और तेजस समु०में १५ दडक कहना।

घणा नारकी मनुष्य वर्जके शेप २३ दडक पने आहारिक समु० न करी और न करेगा। मनुष्य पने भूतकालमें असख्याती भविष्यमें भी असख्याती करेगा। एव वनस्पति वर्जके शेप २३ दडक समझना वनस्पतिमें अनन्ती कहना।

एकेक मनुष्य २३ दडक पने आहारिक समु० न करी न करेगा और मनुष्य पने भूतकालमें स्यात् सख्याती स्यात् असख्याती और भविष्यमें भी स्यात् सख्याती स्यात् असख्याती कहना।

घणा नरकादि २३ दडकके जीव नरकादि २३ दडकपने केवली समु० न करी न करेगा मनुष्यपने नहीं करी अगर करेगा तो स्यात सख्याती स्यात असख्याती।

घणा मनुष्य २३ दडकपने केवली समु० न करी न करेगा और मनुष्यपने करी हो तो स्यात सख्याती असख्याति और भविष्यमें भी करेगा तो स्यात सख्याती असख्याती करेगा।

(७) अल्पा बहुत्व-द्वार

(१) समुचय अल्पा०

(१) सबसे स्तोक आहारिक समु० का धणी

(प्र०) केवली समुदघातसे निवृत होने बाद कौनसे योग पर प्रयुजे ?

(उ०) मनयोग (सत्य व्यवहार), वचनयोग (सत्य व्यवहार) कायायोग (हलन चलन तथा पहिले लिये हुवे पाट पटल सघारादि ग्रहस्थको पीछा दे

(प्र०) सयोगी केवली मोक्ष जाने ?

(उ०) नहीं जावे कारण अयोगी होनेसे मोक्ष होती है।

(प्र०) मोक्ष जानेवाले पहिले योगोंका निरोध करते है ?

(उ०) (१) मनयोग—सज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्ताके जघन्य योगसे असख्यातमें भाग मनका योग रहा था उसका निरोध करे।

(२) वचनयोग—बेरिन्द्रिय पर्यप्ताके जघन्य योगसे असख्यात भाग बाकी रहा था उसका निरोध करे।

(३) कायघोग—सुक्ष्म पणग (निगोद) जीवके पर्याप्ताके जघन्य योगसे असख्यात भाग हीन काययोग था उसका निरोध करे।

अर्थात् पहिले मनयोग पीछे वचनयोग पीछे काययोग इस तरह निरोध करे। असज्ञी (सग रहित) अयोगी, अलेशी चौदवें गुणस्थान पर अ इ उ ऋ लृ यह पाच लघु अक्षर उच्चारण करे। इतनी स्थिति पूर्ण करके जन्म, जरा, रोग, सोग, भयको दुर करके केवली मोक्ष जाते है। इस लिये सयोगी केवली मोक्ष नहीं जाते है परन्तु अयोगी ही मोक्ष जाते है। श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु।

सेव भते सेवं भते तमेव सचम्।

(२) केवली समु० वाला स० गुणा
(३) तेजस ,, ,, अस० गुणा
(४) वैक्रिय ,, ,, अस०
(५) मर्णान्तिक,, ,, अन०
(६) कषाय ,, ,, अस०
(७) वेदनी ,, ,, वि०
(८) असमोईया,, ,, अस०

(२) नरककी अल्पाबहुत्व ।

(१) सबसे स्तोक मर्णान्तिक समु० वाला
(२) वैक्रिय समु० वाला अस० गुणा
(३) कषाय ,, ,, स०
(४) वेदनी ,, ,, स०
(५) असमोईया,, ,, स०

(३) देवतामें समु० ५ अल्पा०

(१) सबसे स्तोक तेजस समु० वाला
(२) मर्णान्तिक समु० वाला अस०
(३) वेदनी ,, ,, ,,
(४) कषाय ,, ,, स०
(५) वैक्रिय ,, ,, ,,
(६) असमोईया ,, ,, ,,

(४) पृथ्व्यादि ४ स्थावरकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक मर्णान्तिक समु० वाला
(२) कषाय समु० वाला स० गुणा

थोकडा नं० २१

(सम्यक्त्वके ११ द्वार)

(१) नामद्वार (२) लक्षणद्वार (३) आवणद्वार (४) पावण-द्वार (५) परिमाणद्वार (६) उच्छेदद्वार (७) स्थितिद्वार (८) अन्तरद्वार (९) निरन्तरद्वार (१०) आगरेसद्वार (११) क्षेत्र स्पर्शनाद्वार (१२) अल्पाबहुतद्वार इति

(१) **नामद्वार**—सम्यक्त्व च्यार प्रकारकी होती है यथा क्षायक सम्यक्त्व, उपशमसम्य०, वेदकसम्य०, क्षोपशमसम्य० ।

(२) **लक्षणद्वार**—क्षायक सम्यक्त्वके लक्षण जैसे अनन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभ और मिथ्यात्वमोहनिय, मिश्रमोहनिय, सम्यक्त्वमोहनिय एवं ७ प्रकृतियोंका मूलसे क्षय करनेसे क्षायक सम्यक्त्व की प्राप्ती होती है । पूर्वोक्त ७ प्रकृतियोंको उपशमानेसे उपशम सम्यक्त्वकि प्राप्ती होती है । पूर्वोक्त ७ प्रकृतियोंसे ६ प्रकृतियोंको उपशमावे और एक सम्यक्त्वमोहनियको वेद उदीर्णे वेदक सम्यक्त्व कहेते हैं । पूर्वोक्त ७ प्रकृतियोंसे [illegible] चौकको क्षय करे और तीनमोहनियोंको उपशमावे [illegible] क्षयोपशम सम्यक्त्व कहते है ।

(३) **आवणद्वार**—क्षायकसम्यक्त्व एक मनुष्यके भवमें आवे, शेष तीन सम्यक्त्व चारों गतिमें आवे ।

(४) **पावण द्वार**—च्यारों सम्यक्त्व च्यारों गतिमें पावे । कारण क्षायक सम्यक्त्व मनुष्यके भवमें ही आति है परन्तु सम्यक्त्व आनेके पेहला कीसी भी गतिका आयुष्य बन्ध गया हो

(३) वेदनी ,, ,, वि०
(४) असमोईया ,, अस०

(५) वायु कायकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक वैक्रिय समु० वाला
(२) मर्णात्मिक समु० वाला अस०
(३) कषाय ,, ,, स०
(४) वेदनी ,, ,, वि०
(५) असमोईया ,, अस०

(६) वैकलेन्द्रियकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक मर्णातिक समु० वाले
(२) वेदनी समु० वाले अस० गुणा
(३) कषाय समु० वाले स० ,,
(४) असमोईया अस० ,,

(७) तिर्यंच पचेन्द्रियकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक तेजस समु० वाले
(२) वैक्रिय समु० वाले अस०
(३) मर्णात्रिक ,, ,, अस०
(४) वेदनी ,, ,, ,,
(५) कषाय ,, ,, स०
(६) असमोईया स०

(८) मनुष्यकी अल्पा० बहुत्व

(१) सबसे स्तोक आहारिक समु० वाला
(२) केवली समु० वाला स० गुणा

फिर सम्यक्त्व आइ हो तो पूर्व बन्धे हूवे आयुष्यके माफिक उन्हीं गतिमें जाना ही पड़ता है।

(५) परिमाण द्वार-क्षायक सम्य०के धणी अनन्ते मीले (सिद्धोंकी अपेक्षा) शेष तीन सम्यक्त्ववाले असख्याते असख्याते जीव मीले।

(६) उच्छेद द्वार-क्षायक सम्य०का उच्छेद कबी भी नहीं होता है शेष तीनों सम्य०कि भजना है।

(७) स्थिति द्वार-क्षायक सम्य० सादि अन्त है अर्थात आदि है परन्तु अन्त नहीं है कारण क्षायक सम्य० आनेके बाद नहीं जाती है शेष दोय सम्य०कि स्थिति जघन्य अन्तरमहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम साधिक और उपशम सम्य०की जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरमहूर्त है।

(८) अन्तर द्वार-क्षायक सम्य०का अन्तर नहीं है शेष तीनों सम्य०का अन्तर पडे तो जघन्य अन्तर महूर्त और उत्कृष्ट अनन्तकाल यावत् देशोना आर्द्ध पुद्गल परावर्तन करते है अर्थात् सम्य० आनेके बाद पीच्छी चली जावे और मिथ्यात्वमें रहे तो देशोना अर्द्ध पुद्गलसे अवश्य सम्य०को प्राप्ती हो मोक्ष जावे।

(९) निरंतर द्वार-जो जीवोंको सम्य० आति है तो कहां तक आवे ? क्षायक सम्य० आठ समय तक निरंतर आवे। फिरतो अन्तर पडे ही। शेष तीन सम्य० आवलिकाके असंख्यातमें भाग समय हो इतनी देर तक निरंतर आवे।

(१०) आगरेस द्वार-क्षायक सम्य० एक जीवको एक भिव या घणा भवमें एक ही दफे आवे। आनेके बाद पीच्छी जावे

(३) तेजस ,, ,, स०
(४) वैक्रिय ,, ,, स०
(५) मर्णातिक ,, ,, अस०
(६) वेदनी ,, ,, अस०
(७) कषाय ,, ,, स०
(८) असमोईया ,, स०

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नंबर १८

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ३६

(कषाय समुद्घात)

कषाय समुद्घात चार प्रकारकी है यथा—

(१) क्रोध=अति क्रोधके उत्पन्न होनेसे
(२) मान=अति मानके ,, ,,
(३) माया=अति मायाके ,, ,,
(४) लोभ=अति लोभके ,, ,,

नरकादि २४ दंडकमें कषाय समु० चारोंपावे इसका काल अन्तर मुहूर्तका है ।

(१) एकैक जीवकी अपेक्षा २४ दंडकमें

एकेक नारकी क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी है भविष्य कालमें कोई करेगा कोई न करेगा जो करेगा वह १-२-३ यावत् सख्याती, असख्याती, अनन्ती करेगा एवं

नहीं, उपशम सम्यक्त्व एक जीवको एक भवमें जघन्य एक वार उत्कृष्ट दोय वार आवे और घणा भाव अपेक्षा जघन्य दोय वार उत्कृष्ट पाच वार आवे शेष दोय सम्य० एक भवापेक्षा जघन्य एक वार, घणा भवापेक्षा दोय वार और उत्कृष्ट असंख्यात वार आवे। कारण जीवोंके अध्यवशाय क्षोपशमयक भावमें हर समय बदलते रहते है।

(११) क्षेत्रस्पर्शना द्वार—क्षायक सम्य० सर्व लोक क्षेत्रको स्पर्श करे कारण केवली समुद्घात करते है उन्हीं समय सर्व लोकमें अपना आत्म प्रदेश फेला देते है इसापेक्षा। शेष तीनों सम्यक्त्व सात राज कुच्छ न्यून क्षेत्र स्पर्श करे।

(१२) अल्पा बहुत्व द्वार (१) स्तोक उपशम सम्यक्त्व वाले जीव है। (२) वेदक सम्य० वाले जीव संख्यात गुणे है (३) क्षोपशम सम्य० वाले जीव असंख्यात गुणे है (४) क्षायक सम्य० वाले अनन्त गुणे है (सिद्धापेक्षा) इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम्।

थोकडा नं० २२

(बलकि अल्पाबहुत)

पूर्वाचार्योंके हस्तलिखित प्राचीन पत्रसे

(१) स्तोक सुक्ष्म निगोदके अपर्याप्ताका बल
(२) बादर निगोदके अपर्याप्ताका बल असंख्यातगु०
(३) सूक्ष्म निगोदके पर्याप्ताका बल „
(४) बादर निगोदके „ „ „

यावत् वैमानिक तक २४ दडक भी समझना। इसी तरह मान माया लोभ भी समझना चाहिये।

(२) घणा जीवोंकी अपेक्षा २४ दंडकमें।

घणा नारकी क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी भविष्यमें अनन्ति करेगा एव वैमानिक तक २४ दडक समझना और शेष मान, माया, लोभको भी क्रोध समु० वत् समझना।

(३) एकेक जीव आपसमे २४ दंडकपर।

एक नारकी नारकी पने क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी। भविष्यमें स्यात् करे स्यात न करे जो करे वह १-२-३ यावत् स० अस० या अनन्ति करेगा।

एकेक नारकी असुर कुमार पने क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी भविष्यमें कोई करेगा कोई न करेगा जो करेगा वह १-२-३ यावत स० अस० अनन्ती करेगा एव यावत् वैमानिक तक १४ दडक पने भी समझ लेना।

शेष १२ दडकको वेदनी समु० की माफक २४ दडक पर लगा लेना एव मान, माया मर्णान्तिक समु० की माफक और लोभ कषाय समु० की माफक समझना परन्तु लोभमें नारकी असुर कुमार पने १-२-३ स० अस० अनन्ती कहना।

(४) घणा जीव परस्पर २४ दडक पर

घणा नारकी घणा नारकी पने क्रोध समु० भूतकालमें अन न्ती करी भविष्यमें अनन्ती करेगा इसी तरह यावत वैमानिक तक २४ दडकपने भी समझना एव मान, माया, लोभी भी क्रोध-वत् समझना।

(५) सूक्ष्म पृथ्वी कायके अपर्याप्ताका ,, ,,

(६) ,, ,, पर्याप्ताका ,, ,,

(७) बादर पृथ्वी कायके अपर्याप्ताका बल ,,

(८) ,, ,, पर्याप्ताका ,, ,,

(९) ,, वनस्पतिके अपर्याप्ताका ,, ,,

(१०) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,,

(११) तृण वायुका बल ,,

(१२) घणोदद्धिका ,, ,,

(१३) घणवायुका ,, ,,

(१४) कुंथवाका ,, ,,

(१५) लीखका बल पांचगुणो

(१६) जु (युक) का बल दशगुणो

(१७) कीडामकीडाका बल बीसगुणो

(१८) माखीका बल पांचगुणो

(१९) डस मसगका बल दशगुणो

(२०) भ्रमरका बल बीसगुणो

(२१) तीडीका बल पचासगुणो

(२२) चीडीका बल साठगुणो

(२३) पारेवाकों ,, पन्दरागुणो

(२४) कागकों बल सौगुणो

(२५) कुर्कटको ,, सौगुणो

(२६) सर्पको ,, हजारगुणो

(२७) मयूरको ,, पांचसोगुणो

(२८) बदरको ,, हजारगुणो

मर्णान्तिक (४) वैक्रिय (५) तेजस (६) आहारिक समुद्घात इति ।

नारकी और वायुकायमें समु० चार पावें, तेजस, आहारिक वर्जके देवता तिर्यचमें समु० पाच पावे, आहारिक वर्जके और चार स्थावार तीन विकलेन्द्रिमें तीन वेदनी, कषाय, मर्णांतिक मनुष्यमें ६ पावे ।

(प्र०) हे भगवान् ! समुच्चय जीव वेदनी समु० करके छोडे हुवे पुद्गल कितने क्षेत्रको स्पर्श और कितना क्षेत्र अण स्पर्शा रहे ?

(उ०) हे गोतम ! वेदनी समु० करतों विष्क्रम पने और पहूलपने अपने शरीर प्रमाणे होता हैं और उतने ही क्षेत्रको स्पर्श करता है शेष रहा हुवा क्षेत्र अस्पर्श है जो क्षेत्र स्पर्श क्रिया है वह नियमा छेदिशीका है ।

(प्र०) काल अपेक्षा पृच्छा ?

(उ०) वेदनी समु० करनेवाला १-२-३ समयके कालको शेष काल अस्पर्श अर्थात् वेदनी समु० का काल अन्तर मुहूर्तका है परन्तु कृत काल १-२-३ समयका है वेदनी समु० कियेके बाद मे पुद्गल शरीरमें अन्तर मुहूर्त रहते हैं बाद शरीरसे छूटते है याने अलग होते हैं ।

(प्र०) वेदनी समु० से छुटे हुवे पुद्गलोंसे किसी प्रण, भूत, जीव, सत्वको तकलीफ होती है जब० समु० करने वाले को कितनी क्रिया लगती है ।

(२९) गेटाको ,,	सौगुणो
(३०) मिडाको बल	हजारगुणो
(३१) पुरुष (मनुष्य,को बल	सौगुणो
(३२) वृषभको बल	बारहगुणो
(३३) अश्वको बल	दशगुणो
(३४) भेसाको बल	बारहगुणो
(३५) हस्तीको बल	पाचसोगुणो
(३६) सिंहको बल	पाचसोगुणो
(३७) अष्टापदको बल	दोयहजार गुणो
(३८) बलदेवको बल	दशलक्षगुणो
(३९) वासुदेवको बल	दोयगुणो
(४०) चक्रवर्तको बल	दोयगुणो
(४१) व्यंतरदेवोंका बल	क्रोड़गुणो
(४२) नागादि भुवनपति देवोंका बल	अस०गु०
(४३) असुरकुमारके देवोंका बल	अस गु०
(४४) तारादेवोंका बल	,,
(४५) नक्षत्रदेवोंका ,,	,,
(४६) गृहदेवोंका ,,	,,
(४७) व्यन्तर इन्द्रका बल	,,
(४८) नागादि देवोंके इन्द्रोंका बल	,,
(४९) असुरदेवोंके ,, ,,	,,
(५०) ज्योतिषी ,, ,,	,,
(५१) वैमानिक देवोंका बल	,,
(५२) ,, इन्द्रोंका ,,	,,

(५३) तीनकालके इन्द्रोंसे भी श्री नेमिनाथ प्रभुके कनिष्टा अगुलीका बल अन तगुणा है। तत्त्वकेवलीगम्यम्।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

मरूस्थलमें मुनि विहारका लाभ ।

मारवाड फलोधी नगरमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजका चतुर्मास होनेसे धर्म कृत्यमें वृद्धि ।

(१) सं० १९७७ का चतुर्मासा

१ तपस्या कि पचरंगी एक
१ तपस्याका शिरपेच एक
१०१ पर्युषणमें पौषद
६६५।) पेहले पर्युषणमें सुपनोंकि आवन्द
१२०१।) दुसरे पर्युषणमें सुपनोंकि आवन्द

(२) सं० १९७८ का चतुर्मासा

२ तपस्याकि पचरंगी दोय
२ पौषदका शिरपेच दोय
५०१ पर्युषणोंमें पौषद
१ स्वामिवत्सल पौषदके
२ स्वामिवत्सल लीचंदमें
२१००) पर्युषणोंमें सुपनोंकि आवन्द
४४१) श्री भगवती और नन्दीसूत्रकि पूजाका
३४००० पुस्तकों छपी

और भी पूजा प्रभावना वरघोडा तथा जिर्णोद्धारकि टीपों तथा ३४ आगमोंकि वांचनादि धर्मकृत्य अच्छा हूवा है

(७) पात्थडेद्वार (८) अन्तराद्वार (९) पात्थडेरअन्तरो०
(१०) घणोदद्धि० (११) घणवायु० (१२) तृणवायु०
(१३) आकाशद्वार (१४) नरकरअन्तरो० (१५) नरकावासा
(१६) अलोकान्तरो०(१७) वलीयाद्वार (१८) क्षेत्रवेदना०
(१९) देववेदना० (२०) वैक्रयद्वार (२१) अल्पबहुतद्वार

(१) नामद्वार—गमा वनशा शीला अञ्जना रीठा मघा माघवती

(२) गोत्रद्वार—रत्नप्रभा शार्कर० वालुकाप्रभा पंकप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा और तमतमाप्रभा।

(३) जाडपणो—प्रत्यक नरक एकेक राजाकी जाडी है।

(४) पाहुलपणो—पहेली नरक एक राजविस्तारवाली है, दुसरी २॥ राज, तीसरी च्यार राज, चोथी पांच राज, पाचमी छे राज, छठी साडाछे राज, सातमी नरक सात राज के विस्तारमें है परन्तु नारकिके वैरिया एक राजके विस्तारमें है उन्हीकों त्रसनाली कही जाती है।

(५) पृथ्वीपण्डद्वार–प्रत्यक नारकी असंख्यात असंख्यात जोजनकि है परन्तु पृथ्वीपण्ड पेहली नरकका १८०००० दुसरीका १३२००० तीसरीका १२८००० चोथीका १२०००० पांचमीका ११८००० छठीका ११६००० सातमीका १०८००० योजनका है

प्रकाशक—
मेघराज मुणोत
फलोधि (मारवाड)

॥ जलदि किजिये ॥

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला सस्थासे स्वल्प समयमें आज तक ९० पुष्प प्रसिद्ध होचुके है कार्य चालु है।

जैन सिद्धातके तत्त्वज्ञान मय शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४

हिन्दी मेझर नामो-२०२ आगमोका प्रबल प्रमाणसे २१ विषयका प्रतिपादन कियां गया है सायमें त्रणनिर्णामा लेखोंका उत्तर भी दिया गया है। किमत फक्त आठ आना।

द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका खास पाठशालाओंमें पढाने लायक है। पाठशालामें टीपल खरचासे ही भेजी जाती है।

लिखो—श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला
मु० फलोधी-मारवाड।

मुद्रक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
"जैन विजय" प्रिन्टींग प्रेस,
खपाटिया चकला, लक्ष्मीनारायणकी वाडी-सूरत।

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं. ४८-४९
शीघ्रबोध भाग १३-१४ वा
लेखक मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी

(६) पात्थडेपात्थडे अन्तरद्वार–पेहली नरकके पात्थडे पात्थडे ११५८३३ दुसीरा ६७०० तीसरी १२७५० चोथी १६१६६३ पांचमी २५२५० छठी ५२५०० सातमी नरकमें पात्थडा एक ही है

(१०) घणोदद्धिद्वार प्रत्यक नरकपण्डके निचे २०००० जो० कि घणोदद्धि पकानन्धा हूवा पाणी है

(११) घणवायु–प्रत्यक नरकके घणोदद्धिके निचे असख्यात २ जोजनकि घनवायु है पकाबन्धा हूवा वायु है.

(१२) तृणवायु–प्रत्यक नरकके घणवायुके निचे असख्यात २ जोजनके तृणवायु पातला वायु है

(१३) आकाश–प्रत्यक नरकके तृणवायुके निचे असख्यात २ जो० का आकाश है अर्थात् आकाशके आधार तृणवायु है तृणवायुके आधार घनवायु है घनवायुके आधार घनोदद्धि है घनोदद्धिके आधारसे पृथ्वीपण्ड है.

(१४) नरक नरकके अन्तरा–एकेक नरकके विचमें असख्यात असख्यात जोजनका अन्तरे है.

(१५) नरकावासाद्वार–नरकावासा दो प्रकारके है (१) असंख्यात जोजनके विस्तारवाला जिस्में असख्यात नेरीया है (२) संख्यात जो० जिस्में सख्यात नेरीया है सर्व नरकावा·

असख्याता जोजनका है और एक विभाग सख्यातें जोजन-वाले है नरकावास पेहली नरकमें ३० लक्ष, दुसरीमें २५ लक्ष तीसरीमें १५ लक्ष, चोथीमें १० लक्ष, पांचमीमें ३ लक्ष, छठीमें पांचकम लक्ष, सातमी नरकमें ५ महानरकावास है सख्याता जोजनका नरकावासाका परिमाण जेसे कोइ शीघ्र गतिका देवता तीन चीमटी वजाने इतनामें जम्बुद्वीपके २१ प्रदक्षिणा दे आवे इसी शीघ्रगतिसे चाले वह देवता जघन्य १-२-३ दिन उत्कृ० ६ मास तक चले तो कितनेक सख्यात जोजनके नरकावासोंका अन्त आवे और कितनेकके अन्तभी नहीं आवे

(१६) अलोक अन्तरा० (१७) वलीयाद्वार-अलोक और नारकीके अन्तर है जिस्में तीन तीन प्रकारका गोल चुडी माफीक वलीया है वह यत्रसे देखो

नरक	रत्न०	शा०	वा०	प०	धुम०	तम०	तम
लोकअन्तरो	१२जो.	१२$\frac{२}{३}$	१३$\frac{१}{३}$	१४	१४$\frac{२}{३}$	१५$\frac{१}{३}$	१६
घीयामख्या	३	३	३	३	३	३	३
घोंदद्धि	६	६$\frac{१}{३}$	६$\frac{२}{३}$	७	७$\frac{१}{३}$	७$\frac{२}{३}$	८
घनवायु	४।	४॥।	५	५।	५॥	५॥।	६
तनवायु	१॥	१॥$\frac{१}{१२}$	१॥$\frac{२}{१२}$	१॥।	१॥।$\frac{१}{१२}$	१॥।$\frac{२}{१२}$	२

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं ४८-४९

श्रीरत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः।

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध.

भाग १३-१४ वा.

संग्राहक,

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनिश्री

ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

प्रकाशक,

श्रीसंघफलोधी सुपनादिकी आवंदसे.

प्रबन्धकर्ता,

शाह मेघराजजी मोणोयत मु. फलोधी.

प्रमावृत्ति १००० — विक्रम संवत् १९७८

भावनगर—श्री आनंद प्रिन्टींग प्रेसमां शा गुलाबचंद लल्लुभाइए छाप्युं

(१८) क्षेत्रवेदनाद्वार—प्रत्येक नरकमें क्षेत्रवेदना दश दश प्रकारकी है अनन्त क्षुधा, पीपासा, शीत, उष्ण, रोग, शोक, ज्वर, कुडाशपणे, कर्कशपणे, अनन्त पराधिनपणे यह वेदना हंमेसो होती है पेहली नरकसे दुसरी नरकमें अनन्त गुणी वेदना है एव यावत् छठीसे सातमी नरकमें अनन्त गुणी वेदना है अथवा नरकोंके नामानुस्वारभी नरकमें वेदना है जेसे रत्नप्रभामें खरकरड रत्नोंका है तथा वह वेदना बहुत है और शार्करप्रभामें जमीनके स्पर्श तरवारकी धारासे अनन्त गुण तीक्ष्ण है वालुकाप्रभाकी रेती अग्निके माफीक जल रही है, पंकप्रभा रौद्रमेद चरबीका किचमचा हूवा है धूमप्रभामें शोमलक्षिरवाकसे अनन्त गुण खारो धूम है, तमप्रभामें अन्धार, तमतमाप्रभामें घोरोनघोर अन्धार है इत्यादि अनन्त वेदना नरकमें है

(१६) देवकृतवेदना—पेहली, दुसरी, तीसरी नरकमें परमाधामी देवता पूर्वभव कृत पापोंको उदेश २ के मरते है चोथी पांचमी नरकमें अगर वैमानि देवोंका वैर हो तो वैर लेनेको जाके वैदना करते है छठी सातमी नारकीमें नारकी आपसमे ही श्वान माफीक मरते कटते है देवकृत वेदनावाला नरकसे आपसमें वेदनावाला नारकी असख्यातगुणा है.

(२०) वैक्रयद्वार—नारकी जो वैक्रय बनता है वह

वस्तुनिर्देशमें नय कि अपेक्षा अवश्य होती है, वह नय मुख्य दो प्रकारकि है (१) निश्चयनय, (२) व्यवहारनय जिस्मे निश्चयनयसे लोकका मध्यभाग प्रथम रत्नप्रभा नरकके अवकाश अन्तराके असख्यातमे भागमें है वास्ते अधोलोक सभूमितलासे साधिक सात राज है, और उर्ध्वलोक कुच्छ न्यून सात राज है तथा तीरच्छालोक जाडा १८०० योजनका है, परन्तु व्यवहारनयसे सात राज अधोलोक और सात राज उर्ध्वलोक और तीरच्छालोक उर्ध्वलोकके सेमल माना जाता है, वह व्यवहारनयकि अपेक्षासे ही यहांपर बतलाये जावेगा

प्रथम च्यार प्रकारके राज होते है उन्हीकों ठीक (२) समझना.

(१) घनराज--एक राज लबा, एक राज चोडा, एक राज जाड हो

(२) परतरराज--एक घनराजका च्यार परतरराज होता है

(३) सुचिराज--एक परतरराजका च्यार सुचिराज होता है

(४) खण्डराज-एक सुचिराजका च्यार खण्डराज होता है

अधोलोक सात राजका जाडपणामें है और अधो लोकमें सात नरक है, वह प्रत्यक नरक एकेक राजकि जाडी है विस्तार यत्रसे देखो

राजधानी तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रमें है यथा चमरेद्रकी राजधानी इस जम्बुद्वीपके मेरुपर्वतसे दक्षिणकी तर्फ असख्यात द्वीप समुद्र चला जाने पर एक अरुणवर द्वीप आता उन्हीमें ४२००० जोजन जाने पर रूचक उत्पात पर्वत आवे वह पर्वत १७२१ जो० उचा है ४३० जो० १ गाउ० धरतीमें है १०२२ मूल विस्तार ७२३ मध्यमें ४२४ उपर विस्तारवालो है। वन खएड वेदीकासे सुशोभीत है उन्ही पर्वतके उपर एक मनोहर देवप्रासाद है उन्हीके अन्दर एक देव योग्य शय्या है देवता मृत्युलोकमें आने जानेके समय वहांपर ठेरते है। उन्ही पर्वतसे ६३५५५५०००० जोजन आगे चले जावे वहापर एक दादरा आता है उन्हीके अन्दर ४०००० जोजन जावे वहांपर चमरेन्द्रकि चमरचचा राजधानी आती है वह राजधानी १ लक्ष जोजन विस्तारवाली है ३१६२२७।३।१२८।१३ साधिक परद्धि वह कोट १५० जो० उचा है मूलमें ५० जो० मध्यमें २५ जो० उपरसे १२॥ जो० उन्ही कोट उपर कोशीषा है एक गाउ विषम आदा गाउका उचा है अच्छा शोभनिक है एकेक दिशीमें पांचसो पांचसो दरवाजा है वह २५० जो० उचा १२५ पहूला सर्व रत्नमय है राजधानीके मध्यभागमें १६०००० जो० विस्तारवाला एक गोल चौंतरा है उन्हीके उपर ३४१ प्रासाद है मध्य प्रासाद २५० जो० का उचा १२५ पहूला है अनेक स्थभ पुतलीं मौक्तफलकी मालासे

नाम	जाडी	पहूली.	घनराज.	परतर.	सूचि.	खण्ड.
रत्नप्रभा	१ राज	१ राज	१ राज	४ राज	१६ राज	६४ राज
शार्करप्रभा	१ ,,	२॥ ,,	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,	४०० ,,
वालुप्रभा	१ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,	२५६ ,,	१०२४ ,,
पंकप्रभा	१ ,,	५ ,,	२५ ,,	१०० ,,	४०० ,,	१६०० ,,
धूमप्रभा	१ ,,	६ ,,	३६ ,,	१४४ ,,	५७६ ,,	२३०४ ,,
तमप्रभा	१ ,,	६॥ ,,	४२। ,,	१६९ ,,	६७६ ,,	२७०४ ,,
तमतमा०	१ ,,	७ ,,	४९ ,,	१९६ ,,	७८४ ,,	३१३६ ,,

अधोलोकमें सर्व घनराज १७५ परतरराज ७०२ सूचिराज २८०८ खण्डराज ११२३२ होते है

सभूमितलासे १॥ राजउर्ध्व जावे तब पेहला दुसरा देवलोक आता है जिस्से आ दो राजउर्ध्व जावे तब एक राजविस्तार है वहांसे आदो राजउर्ध्व जाव तब १॥ राजविस्तार है वहांसे पाव राज जावे तब २ राजविस्तार वहांसे पाव राज जावे तब २॥ राजविस्तार है वहां पर सुधर्म इशान देवलोक है.

सौधर्म इशान देवलोकसे उर्ध्व एक राज जाते है वहांपर तीजा चोथा देवलोक आते है जिसमें आदा राज जावे तब तीन राजविस्तार है वहांसे आदा राज जावे

शोभनीक है इत्यादि ओर भी ६ निकायदेवोंकी राजधानी दक्षिणकी तर्फ है इसी माफीक उत्तरदिशामें भी समझना परन्तु उत्तरदिशामें तीगच्छउत्पात पर्वत है.

(४) सभाद्वार–एकेक इन्द्रके पांच पाच सभा है (१) उत्पात सभा (२) अभिशेष सभा (३) अलकार सभा (४) व्यवाय सभा (५) सौधर्मी सभा.

(१) उत्पात सभा–देवता उत्पन्न होनेका स्थान है.

(२) अभिशेष सभामें इन्द्रका राजअभिशेष कीया जाता है.

(३) अलकार सभा–देवतोंके श्रृंगार करते योग वस्त्र-भूषण रेहते है

(४) व्यवाय सभा–देवतोंके योग धर्मशास्त्रका पुस्तक रहेते है.

(५) सौधर्मी सभा–जहां जिनमन्दिर चैत्यस्थभ शास्त्रकोष आदि है ओर सुधर्म सभामें देवतोंके इन्साफ कीया जाता है इत्यादि.

(५) भुवनसख्याद्वार-भुवनपतियोंके भुवन७७२००००० है जिस्में ४०६००००० भुवन दक्षिणदिशामें है ३६६००००० उत्तरकी तर्फ है. देखो यत्रसे––

यहां च्यार राजविस्तार है यहां पर सनत्कुमार महेन्द्र देवलोक आता है.

सनत्कुमार महेन्द्र देवलोकमे पुण ०॥। राज उर्ध्व जावे तब पांचवा ब्रह्मदेवलोक आता है वह पाच राजका विस्तारवाला है।

पांचवा देवलोकसे पाव ०। राज उर्ध्व जावे तब छठा लतक देवलोक आता है वह भी पाच राजके विस्तावाला है।

छठा देवलोकसे पाव ०। राज उर्ध्व जावे तब सातवा महाशुक्र देवलोक आता है वह च्यार राजके विस्तारवाला है वहासे पाव राज उर्ध्व जावे तब आठवा सहस्र देवलोक च्यार राजके विस्तारवाला आता है।

आठवा देवलोकमे आदा ०॥ राजउर्ध्व जाता है तब नवमा दशवा देवलोक आता है वह तीन राजके विस्तारवाला है वहासे आदा ०॥ राज उर्ध्व जाता है तब इग्यारवा बारहवा देवलोक आता है वह अढाइ राजविस्तारवाला है।

इग्यारवा बारहवा देवलोकमे एक राज उर्ध्व जाता है नव ग्रीवैग आता है जीस्मे ०। राज तो आढाइ राजका और ०॥। राज दो राजके विस्तारवाला है।

नव ग्रीवेगसे एक राज उर्ध्व जाता है तब पाचाणुत्तर वैमान आता है जिस्में आदा ०॥ राज तो दोढ १॥ राज और आदा ०॥ राज एक राजविस्तारवाला है एव सात राज उर्ध्व लोक है जिस्के घनराजादि देखो यत्रमे

१० भुवनपति.	दक्षिणदिशा		उत्तरदिशा.		कुलभुवन.	
असुरकु॰	३४	लक्ष	३०	लक्ष	६४	लक्ष
नागकु॰	४४	,,	४०	,,	८४	,,
सुवर्णकु॰	३८	,,	३४	,,	७२	,,
विद्युत्कु॰	४०	,,	३६	,,	७६	,,
अग्निकु॰	४०	,,	३६	,,	७६	,,
द्विपकु॰	४०	,,	३६	,,	७६	,,
दिशाकु॰	४०	,,	३६	,,	७६	,,
उदद्धिकु॰	४०	,,	३६	,,	७६	,,
पवनकु॰	५०	,,	४६	,,	९६	,,
स्तनत्कु॰	४०	,,	३६	,,	७६	,,

देवलोक	जाडपण.	विस्तार.	घन०	परतर.	सूचि	खण्ड०
समभूमिसे	०॥ राज	१ राज	०॥ राज	२ राज	८ राज	३२ राज
वहासे	०॥ ,,	१॥ ,,	१ १/८ ,,	४॥ ,,	१८ ,,	७२ ,,
वहासे	०। ,,	२ ,,	७ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,
सुधर्म इशान	०। ,,	२॥ ,,	१॥ १/१६	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,
वहांसे	०॥ ,,	३ ,,	४॥ ,,	१८ ,,	७२ ,,	२८८ ,,
३-४ देवलो	०॥ ,,	४ ,,	८ ,,	३२ ,,	१२८ ,,	५१२ ,,
५ देवलो	०॥। ,,	५ ,,	१८॥। ,,	७५ ,,	३०० ,,	१२०० ,,
६ देव०	०। ,,	५ ,,	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,	४०० ,,
७ देव०	०। ,,	४ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,	२५६ ,,
८ दे०	०। ,,	४ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,	२५६ ,,
९-१० दे०	०॥ ,,	३ ,,	४॥ ,,	१८ ,,	७२ ,,	२८८ ,,
११-१२ दे०	०॥ ,,	२॥ ,,	३ १/८ ,,	१२॥ ,,	५० ,,	२०० ,,
वहांसे	०। ,,	२॥ ,,	१॥ १/६४	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,
९ ग्री० वै	०॥। ,,	२ ,,	३ ,,	१२ ,,	४८ ,,	१९२ ,,
वहासे	०॥ ,,	१॥ ,,	१ १/८ ,,	४॥ ,,	१८ ,,	७२ ,,
अणुत्तर ५०	०॥ ,,	१ ,,	०॥ ,,	२ ,,	८ ,,	३२ ,,

(६) वर्ण, (७) वस्त्र, (८) चन्ह, (९) इन्द्र

दश भु०	वर्ण द्वार	वस्त्र द्वार	चन्ह द्वार	दक्षणेन्द्र	उतरेन्द्र
(१) अ०	कालो	राता	चुडामणि	चमरेन्द्र	बलेन्द्र
(२) ना०	धोवला	निला	नागफण	धरणेन्द्र	भूताइन्द्र
(३) सु०	सुवर्ण	धोला	गुरुड	वेणुदेव ,,	वेणुदाली ,,
(४) नि०	राता	निला	वज्र	हरिकंत ,,	हरिसिंह ,,
(५) अ०	राता	निला	कलश	अग्निसिंह,,	अग्नि–मानव,,
(६) द्वि०	राता	निला	सिंह	पूर्ण ,,	विशेष्ट ,,
(७) दि०	पहर	निला	अश्व	जलकंत ,,	जलप्रभ ,,
(८) उ०	सुवर्ण	सुपेत	गज	अमृतगति,,	अमृतवहान,,
(९) प०	श्याम	पाच वर्ण	मगर	वेलंब ,,	प्रभंजन ,,
(१०) स्त०	सुवर्ण	सुपेत	वर्द्धमान	घोष ,,	महाघोष ,,

उर्ध्वलोकके सर्व घनराज ६३॥ परतर २५४ सुचि १०१६ खण्डराज ४०६४ तीरच्छो लोक एक राजविस्तार वाला है जिस्में असख्यातद्वीप समुद्र है परन्तु १८०० जोजनका जाडपणामें होनासे किमी राजकी सख्या नहीं है

सम्पुरण लोकके घनराजादि सख्या

(१) घनराज	३३६	(३) सुचिराज	३८२४
(२) परतरराज	६५६	(४) खण्डराज	१५२९६

सेव भते सेव भते तमेव सच्चम् ।

इति

थोकडा नम्बर २

वहूतसूत्र सग्रहकर

(नारकीके २१ द्वार)

(१) नामद्वार (२) गोत्रद्वार (३) जाडपणा
(४) पाहूलपणा० (५) पृथ्वीपण्ड (६) करडद्वार

(१०) सामानीकदेव- इन्द्रके उमराव माफीक देव होते है चमरेन्द्रके ६४००० देव, बलेन्द्रके ६०००० शेष १८ इन्द्रोंके छे छे हजार देव

(११) लोकपाल-इन्द्रके कोतवाल माफीक देव-सब इन्द्रोंके च्यार च्यार लोकपाल होते है

(१२) तावतेसीका-राजगुरु माफीक शान्तिकारक देव-सर्व इन्द्रोंके तेतीस तेतीस देव तावतिसका होते है

(१३) आत्मरक्षक देव-इन्द्रोंके आत्माकी रक्षा करनेवाले देव-चमरेन्द्रके २५६००० बलेन्द्रके २४०००० शेष इन्द्रोंके २४०००=२४००० देव

(१४) अनिका-हस्ति, अश्व, रथ, महेष, पेदल, गधर्व नृत्यकारक एव ७ अनिका सर्व इन्द्रोंके होती है प्रत्यक अनिकके देवसख्या चमरेन्द्रके ८१२८००० देव, बलेन्द्रके ७६२०००० शेष १८ इन्द्रोंके ३५५६००० देव होते है

(१५) देवीद्वार-चमरेन्द्रके पाच अग्रमहेषी एकेकके ८००० का परिवार एव ४०००० एकेक देवी आठ आठ हजार वैक्रय करे ३२००००००० एव बलेन्द्रके शेष ८ इन्द्रोंके छे छे देवी एकेक के छे छे हजारका परिवार एव ३६००० एकेक देवी छे छे हजाररूप वैक्रय २१६००००००

(१६) परिषदा–परिषदा तीन प्रकारकी है (१) अभितर–खास शला विचार करने योग वडेआदरसे बोलानेपर आवे भेजनसे जावे, (२) मध्यम–सामान्य विचार करने योग बोलानेपर आवे परन्तु विगर भेज जावे, (३) बाह्य–उन्होंको हूकम दिया जाय की अमूक कार्य करो विगर बुलायाँ आना जाना अर्थात् टैमपर आ के हाजर होना ही पडता है.

परिषदा	चमरेन्द्र	बलेन्द्र	दक्षण नवेन्द्र	उत्तर नवेन
देव अभिंतर	२४०००	२००००	६००००	५००००
,, स्थिति	२॥ पल्यों	३॥ पल्यों	१ पल्यों	०॥ साधि
,, मध्यम	२८०००	२४०००	७००००	६००००
,, स्थिति	२ पल्यों	३ पल्यों	०॥ साधि,	०॥ प०
,, बाह्य	३२०००	२८०००	८००००	७००००
,, स्थिति	१॥ पल्यों	२॥ पल्यों	०॥ प०	०॥ प० न
देवी अभिंतर	३५०	४५०	१७५	२२५
,, स्थिति	१॥ पल्यों	२॥ प०	०॥ प० न्यू	०॥ प०
,, मध्यम	३००	४००	१५०	२००
,, स्थिति	१ प०	२ प०	०। प० सा०	०॥ न्यून
,, बाह्य	२५०	३५०	१२५	१७५
,, स्थिति	०॥ प०	१॥ प०	०। प०	०। साधि

(२) वासाद्वार–जोतीपी देवों।१ तीरच्छालोकमें असख्याता वैमान है वह वैमान सभूमिसे ७६० जोजन उर्ध्व जावे तब तारोंका वैमान आवे उन्ही तारोंके वैमानसे १० जोजन उर्ध्व जावे तब सूर्यका वैमान आवे अर्थात् सभूमिसे ८०० जोजन उर्ध्व जावे तब सूर्यका वैमान आता है. सभूमिसे ८८० जोजन उर्ध्व जावे अर्थात् सूर्य वैमानसे ८० जोजन उर्ध्व जावे तब चन्द्र वैमान आवे चन्द्रवैमानसे ४ जोजन और सभूमिसे ८८४ जोजन उर्ध्व जावे तब नक्षत्रोंका वैमान आवे वहासे ४ जो० और सभूमिसे ८८८ जो० उर्ध्व जावे तब बुध नामा ग्रहका वैमान आवे वहासे ३ जो० सभूमिसे ८९१ जो शुक्र ग्रहका वैमान आवे, वहासे ३ जोजन और सभूमिसे ८९४ जो० वृहस्पतिग्रहका वैमान आवे, वहसे ३ जो० और मभूमिसे ८९७ मगलग्रहका वैमान आवे, वहासे ३ जोजन और मभूमिसे ९०० जोजन उर्ध्व जावे तब शनिश्वर ग्रहका वैमान आवे अर्थात् ७९० जोजनसे ९०० जोजन बिचमें ११० जोजनका जाडपणे और ४५ लक्ष जोजनका विस्तारमें चर जोतीपी है.

जोतीपी	तारा	सूर्य	चन्द्र	नक्षत्र	बुध	शुक्र	वृह	मग	शनि
सभूमिसे	७९०	८००	८८०	८८४	८८८	८९१	८९४	८९७	९००

जिस्मे तारोंके वैमान ११० जोजनमें सर्व स्थानपर है।

(१७) परिचारण—भुवनपति देवोंके परिचारणा (मैथुन) पांच प्रकारकी है यथा मनपरिचारणा रूप० शब्द स्पर्श० कायपचारण—मनुष्यकी माफीक देवागनाके साथ भोगविलाश करे इति देवो परिचारणापद

(१८) वैक्रयद्वार—चमरेन्द्र वैक्रयकर भुवनपति देव देवीमे सम्पुरण जम्बुद्वीप भरदे असख्यातेकी शक्ति है एव समानिक लोकपाल तावतीसका ओर देवी परन्तु लोकपाल देवीकी शक्ति सख्यातेद्विपकी है एव वलेन्द्र परन्तु एक जम्बुद्विप साधिक समझना शेष १८ इन्द्र एक जम्बुद्विप भरे ओग सबके सख्यातेद्विपकी शक्ति है देवतोंके वैक्रयका काल उ० १५ दिनका है

(१९) अवधिद्वार—असुरकुमारके देवता अवधिज्ञानसे ज० २५ जोजन उ० उर्ध्व सौधर्म देवलोक अधो० तीसरी नरक तीर्य० असख्याते द्वीप समुद्र शेष ९ देव उ० उर्ध्व जोतीषीयोंके उपरका तला अधो० पेहला नरक तीर्य० सख्यातद्विप समुद्र देखे.

(२०) सिद्धद्वार—भुवनपतियोंमे निकल मनुष्य हो के एक समयमे १० जीवमोक्ष जावे देवीसे निकलके एक समय ५ जीव मोक्ष जावे

(३) राजधानी—जोतीषी देवों कि राजधानीया तीरच्छलोकमें असग्याती है जेसे इस जम्बुद्विपके जोतीषी देव है उन्हों कि रानधानी असरयात द्विपसमुद्र जानेपर दुमरा जम्बु द्विप आता है उन्ही के अन्दर २५ हजार जोजनके विस्तार वाली है वडीही मनोहार सर्व रत्नमय है विस्तारभुवनपतियोंके माफीक है और जोतीषी देवोंके द्विपा भी असरुयाते है परन्तु वह द्विपा सर्व द्विपसमुद्राके जोतीषीयोंका द्विपासमुद्रमें है जेसे जम्बुद्विपके जोतीषीयोंके द्विपालवण समुद्रमें है और लवण समुद्रके जोतीषीयोंका द्विपा भी लवणसमुद्रमें है तथा धात कि खण्डद्विपके जोतीषीयोंका द्विपा कालोदद्धि समुद्रमें है इसी माफिक सर्व स्थानपर समजना

(४) सभाद्वार—जोतीषीदेवोंका इन्द्रोंके पाच पांच सभाओं है (१) उत्पातसभा (२) अभिशेषसभा (३) अलकारसभा (४) व्यवसायसभा (५) सौधर्मसभा यह सभा राजधानीओंके अन्दर है वर्णन देखो भुवनपतियोंको

(५) वर्णद्वार—ताराके शरीर पांचों वर्णका है शेष तपा हूवा सुवर्ण जेसा है.

(६) वस्त्रद्वार—अच्छा सुन्दर कोमल सर्व वर्णका वस्त्र जोतीषीयोंके है.

(७) चन्हद्वार—चन्द्रके मुकटपर चन्द्रमाडलका चन्ह

(२१) उत्पन्न—सर्व प्राण भूत जीव सत्व भुवनपति देवों देवी पणे पूर्व अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हूवे अर्थात् देव होनेपर भी जीवकी कुच्छ भी गरज सरे नही वास्ते ज्ञानो-द्यमकर आत्माको अमर बनानी चाहिये इति.

सेवंभते सेवंभंते—तमेवसच्चम्.

थोकडा नं. ४

बहूत सूत्रसे संग्रह

(व्यतर देवोंके द्वार २१)

(१) नामद्वार	(८) चन्द्रद्वार	(१५) वैक्रयद्वार
(२) वासाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) अवधिद्वार
(३) नगरद्वार	(१०) सामानीक देव	(१७) परिचारणा
(४) राजधानी	(११) आत्मरक्षक	(१८) सुखद्वार
(५) सभाद्वार	(१२) परिषदाद्वार	(१९) सिद्धद्वार

है सूर्यके मुकटपर सूर्यमांडलका चन्ह है एव नक्षत्र ग्रह तार उन्हीं चन्हद्वारा वह देवता पेच्छाना जाता है.

(८) वैमानका पहूलपणा (९) वैमानका जाडपणा — एक जोजनका ६१ भाग किजे उन्हीमें ५६ भाग चन्द्रका वैमान पहूला है और २८ भाग जाडा है सूर्यका वैमान ४८ भागका पहूला २४ भागका जाडा है। ग्रहका वैमान दो गाउका पहूला एक गाउका जाडा है। नक्षत्रका वैमान एक गाउका पहूला आदा गाउका जाडा है। ताराका वैमान आदा गाउका पहूला पाव गाउका जाडा है सर्व स्फटिक रत्नमय वैमान है.

(१०) वैमानवहान—यद्यपि जोतीषीयोंके वैमान आकाशके आधारमें रहेते है अर्थात् वैमानके पौद्गलोंके अगुरुलघु पर्याय है वह आकाशके आधारमें रहे शक्ते है। तद्यपि देव अपने मालकका बहूमानके लिये उन्ही वैमानोंको हमेशोंके लिये उठाये फीरते है कारन अढाइद्वीपके अन्दरके देवोंकि स्वभावप्रकृति गमन करनेकि है। चन्द्र सूर्यके वैमानकों सोला सोला हजार देव उठाते है जिस्मे च्यार हजार पूर्व दिशाकी तर्फ मुह कीये हूवे सिंहके रूप, च्यार हजार दक्षिण दिशा मुह कीये हूवे हस्तिके रूप, च्यार हजार पश्चिम दिशामें मुह कीये हूवे वृषभके रूप, च्यार हजार उत्तर दिशामें मुह कीये हूवे अश्वके रूप एव ग्रहवैमानकों ८००० देव उठाते है नक्षत्रके वैमानकों

(६) वर्णद्वार (१३) देवीद्वार (२०) भवद्वार
(७) वस्त्रद्वार (१४) आनिकाद्वार (२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किंनर, किंपुरुष, मोहग, गन्धर्व, आणपुन्य, पाणपुन्ये इशीवाइ, भुइवाइ, कडे, महाकडे, कोहड, पयगदेवा, इति

(२) वासाद्वार—व्यंतर देव काहापर रेहते हैं ? यह रत्नप्रभा नरक जो १८०००० जोजनकी जाडपणावाली है जिस्मे एकहजार उपर और एकहजार निच छोडनेमे मध्यमे १७८००० जोजन रहेती है इस्मे उपर जो एकहजार जोजनका पण्ड था उन्हीको एकसो जोजन उपर और एकसो जोजन निचे छेड देनासे मध्य ८०० जोजनका पण्ड है इन्हीके अन्दर वाणमित्र आठ जातका देवता निवास करते है यथा पिशाच यावत् गधर्व और जो उपर १०० जोजनका पण्ड था जिस्मे १० जोजन उपर और दश जोजन निचे छेडकर मध्यमे ८० जोजनका पण्ड है जिस्मे आठ जताका व्यतर देव निवास करते है

(३) नगरद्वार—दुसरेद्वारमे बताये हुने स्थानमे तीरच्छा लोकमे वांणमित्र और व्यतर देवतोंके असख्याते नगर है वह

४००० देव उठाते है ताराके वैमानकों २००० देव उठाते है पूर्वादि दिशा पूर्ववत् समझना

(११) माडलाद्वार-जोतीषीदेव दक्षिणायनमे उत्तरायन गमनागमन करते हैं उसे माडला केहते है अर्थात् चलनेकि सडकको मांडला केहते है यह माडलोंके चैत्र ५१० जोजन है जिस्में ३३० जोनन लवण समुद्रमें और १८० जोजन जबुद्वीपमें है कुल ५१० जोजन चैत्रमें जोतीषी देवोंका माडला है चन्द्रका १५ माडला है जिस्में १० माडला लवणसमुद्रमें और ५ माडला जबुद्विपमें है एव सूर्यके १८४ मांडला है जिस्में ११६ लवणसमुद्रमें और ६५ माडला जबुद्विपमें है ग्रहका ८ माडला है जिस्में ६ माडला लवणसमुद्रमें २ जबुद्विपमें है जो जोतीषीयोंका जबुद्विपमें माडला है यह निपेड और निलनेत पर्वतके उपर है । चन्द्रमाडल मांडल अन्तर ३५ जोजन उपर ३०/६१ । ४/७ ओर सूर्य माडल मांडल अन्तर दो जोजनका है इति.

(१२) गतिद्वार-सूर्य कर्के शक्रात अर्थात् आसाढ शुक्ल पूर्णमाके रोज एक महूर्तम ५२५१-२९/६० इतनों चैत्र चाले तथा मके शक्रात अर्थात् पोष शुक्ल पूर्णमाने एक महूर्तमें ५३०५ १५/६० इतने चैत्र चाल चले । चन्द्रमा कर्के शक्रातमें एक महूतमें ५०७३ ७७४४/१३७२५ मके शक्रातने ५१२५-६९९०/१३७२५

(१३) तापचेत्र-कर्के शक्रातमें तापचेत्र ९७५२६ । ३६/६०

नगर असख्याते और सख्याते जोजनके विस्तारवाले है सर्व रत्नमय है परिमाण भुवनपतियों माफीक.

(४) राजधानीद्वार—वाणमित्र और व्यतर देवोंकी राजधानीयों तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रोंमें है जेमे भुवनपतियोंके राजधानीका वर्णन कीया गया था उसी माफीक परन्तु विस्तारमे यह राजधानी कम है प्रायः १२ हजार जोजन के विस्तारवाली है सर्व रत्नमय है.

(५) सभाद्वार—एकेक इन्द्रके पाचपाच सभा है यथा (१) उत्पातसभा (२) अभिशेपसभा (३) अलकारसभा (४) व्यवायसभा (५) सौधर्मसभा विस्तारभुवनपतिसे देखों.

(६) वर्णद्वार—देवतोंका शरीरका वर्ण–'यक्ष पिशाच मोहरग गधर्व इन्ही च्यारोंका वर्ण श्याम है किंनरदेवोंको निलो वर्ण, राक्षस और किंपुरपको वर्ण धनलों भूतदेवोंको वर्ण कालो इसी माफीक व्यतरदेवोंके ममजना

(७) वस्त्रद्वार—पिशाच राक्षस भूतके निलावस्त्र यक्ष किंभर किंपुरपके पीलावस्त्र मोहरग गधर्वके श्यामवस्त्र

उगते सूर्य ४७२६३ २१/६० जोजन दुरोसें द्रष्टिगोचर होता है मके शंक्रात तापचेत्र ६३६६३ १५/६० । उगतो सूर्य ३१८३१ ३८/६१ द्रष्टिगोचर होते है इति.

(१४) अन्तराद्वार-अन्तरा दो प्रकारसे होता है व्याघात-किसी पदार्थकि निचमें ओट आवे निर्व्याघात कीसी प्रकारकी नाद न होय जिसमे व्याघातापेक्षा जघन्य २६६ जोजनका अन्तरा हे क्योंकी निषेड निलवन्तपर्वतके उपर कूटशिखरपर २५० जोजनका है उन्हीमे चौतर्फ आठ आठ जोजन जोतीषीदेव दुरा चाल चालते है वास्ते २६६ जो० उत्कृष्ट १२२४२ जो० क्योंकि १०००० जो० मेरूपर्वत है उन्हीसे चौतर्फ ११२१ जो० दुरा जोतीषी चाल चलते है १२२४२ जो० अन्तर है, अलोक ओर जोतीषीदेवोंके अन्तर ११११ जो०, मडलापेक्षा अन्तरा मेरूपर्वतसे ४४८८० जो० अन्दरका मडलका अन्तर है, ४५३३० जो० बाहारका मडलके अन्तर है । चन्द्र चन्द्रके मंडलके ३५ । ३०/६१ ४/७ अन्तर है सूर्य सूर्यके मडलके दो जोजनका अन्तर है। निर्व्याघातापेक्ष जघन्य ५०० धनुष्यका अन्तर उत्कृष्ट दो गाउका अन्तर है इति.

(१५) सख्याद्वार-जम्बुद्विपमें दो चन्द्र दो सूर्य, लवणसमुद्रम च्यार चन्द्र च्यार सूर्य, धातकिखण्डद्विपमें १२ चन्द्र १२ सूर्य, कालोदद्धि समुद्रमें ४२ चन्द्र ४२ सूर्य, पुष्का-

(८) चन्हद्वार, (९) इन्द्रद्वार.

देव.	दक्षिण इन्द्र	उत्तर इन्द्र	ध्वजपरचन्ह.
पिशाचके दो इन्द्र	कालेन्द्र	महाकालेन्द्र	कदंबवृक्ष
भूतके दो इन्द्र	सुरूपेन्द्र	प्रतिरूपेन्द्र	सुलक्षवृक्ष
यक्ष ,,	पूर्णेन्द्र	मणिभद्र ,,	वडवृक्ष
राक्षस ,,	भिम	महाभिम	खटगउपकर
किंनर ,,	किंनर	किंपुरुष	आशोकवृक्ष
किंपुरुष ,,	सापुरुष	महापुरुष	चम्पकवृक्ष
मोहरग ,,	अतिकाय	महाकाय	नागवृक्ष
गन्धर्व ,,	गतिरति	गतियश	तुंबरूवृक्ष
आणपुन्ये,,	सनिहिंइन्द्र	सामानीइन्द्र	कदंबवृक्ष
पाणपुन्ये ,,	धाइइन्द्र	विधाइइन्द्र	सुलसवृक्ष
इषिवादी,,	ऋषिइन्द्र	ऋषिपाल०	वडवृक्ष
भूतवादी ,,	इश्वरइन्द्र	महेश्वरेन्द्र	खटग
कंडे ,,	सुविच्छ	विशाल	आशोकवृक्ष
हाकड ,,	हास्येन्द्र	हास्यरति०	चम्पकवृक्ष
यग ,,	श्वेतेन्द्र	महाश्वेतेन्द्र	नागवृक्ष
होहडदेवा,,	पतगेन्द्र	पतगपतिइन्द्र	तुंबरूवृक्ष

द्वैद्विपमें ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, एव मनुष्यक्षेत्रमें १३२ चन्द्र १३२ सूर्य । आगे चन्द्र सूर्यकि सख्या अम्नाय-जिस द्विप या समुद्रका प्रश्न करे उन्हीके पीच्छेका द्विपमें जितना चन्द्र हो उन्हीकों तीनगुणा कर शेप पिच्छलेको मेमल करदेना, जेसे धातकीखण्डद्विपमें १२ चन्द्र है उन्हीकों तीनगुणा करनासे ३६ और पिच्छले जंबुद्विपका २ लवणसमुद्रका ४ एव ६ को ३६ के साथमें मीलादेनासे ४२ चन्द्र कालोदद्धिसमुद्रमें हुवे ४२ को तीन गुणकर १२६ पिच्छला २-४-१२ एव १८ मीलानेसे १४४ चन्द्र पुष्करद्विपमें हूवा जिसमें आदा मनुष्य लोकमें होनासे ७२ गीना गया है इसी माफीक सर्व स्थानपर भावना रखने इति

(१६) परिवारद्वार-एक चन्द्र या सूर्यके २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६९७५ क्रोडाक्रोड तारोंका परिवार है शंका-तारोंकी सख्याका क्षेत्रमान करनेमे इस लक्ष जोजनका क्षेत्रमें इतना तारा समावेस हो नहीं शक्ता है ? इसके लिये पूर्वाचार्योंने क्रोडाक्रोडीको एक सज्ञारूपमे मानी मालम होते है या कितनी आचार्योंने तारोंका वैमानको उत्सेदांगुलमे भी माना है तत्त्व केवलीगम्य। इसी माफीक सर्व चन्द्र सर्व सूर्योंके भि समझना। न क्षत्रेग्रहंदयाका नाम बडेजोतीषी चक्रसे देखों

(१७) इन्द्रद्वार-असंख्याता चद्र सूर्य है वह सर्व इन्द्र है परन्तु क्षेत्र कि अपेक्षा एक चन्द्र इन्द्र दुसरा सूर्य इन्द्र है.

(१०) सामानीक द्वार-सर्व इन्द्रोंके च्यार च्यार हजार देव मामानीक है.

(११) आत्मरक्षक-सर्व इन्द्रोंके सोले सोले हजार देव आत्मरक्षक है.

(१२) परिषदा द्वार-कार्य भुवनपतियोंके माफीक

परिषदा.	देव परिषदा.	देवी परि०
अभिंतर	८०००	१००
स्थिति	०॥ पल्यो०	०। साधिक
मध्यम	१००००	१००
स्थिति	०॥ प० न्यून	०। प०
बाह्य	१२०००	१००
स्थिति	०। साधिक	०। न्यून

(१३) देवी-प्रत्यक इन्द्रके च्यार च्यार देवी है एकेक देवीके हजार हजार देवीका परिवार है एकेक देवी हजार हजार रूप वैक्रय कर शक्ती है

(१४) अनिका द्वार-गजतुरगादि मात सात अनिका है प्रत्यक अनिकाके ५०८००० देवता है मर्व इन्द्रोंके समझना.

(१५) वैक्रयद्वार—इन्द्र मामानीक और देवी एक

(१८) सामानीकद्वार–एकेक इन्द्र के च्यार च्यार हजार मामानीक देव है.

(१६) आत्मरक्षक–एकेक इन्द्र के शोला शोला हजार आत्मरक्षक देव है.

(२०) परिपदा–एकेक इन्द्र के तीन तीन परिपदो है अभिंतर परिपदा के ८००० देव, मध्यम के १०००० बाह्य की १२००० देव है और देवी तीनों परिपदा मे १००–१००–१०० है.

(२१) अनिकाद्वार–एकेक इन्द्र के सात सात अनिका प्रत्यक अनिका के ५८०००० देवता है पूर्ववत्.

(२२) देवी–एकेक इन्द्र के च्यार च्यार अग्र महेपि देवीयों है एकेक के च्यार च्यार हजार देवीका परिवार है प्रत्यक देवी च्यार च्यार हजार रूप वैक्रयकर शक्ती है ४००० १६००० ६४०००००० कुल देवी है।

(२३) गति–सर्वसे मद गति चन्द्रकी, उन्होंसे। शीघ्र गति सूर्यकी, उन्हों से शीघ्र गति ग्रहकी, उन्होसे शीघ्र गति नक्षत्र कि, उन्होंसे शीघ्र गति तारोंकी है, अर्थात् सर्वसे मन्द गति चन्द्रकी ओर शीघ्रगति तारोंकी है।

(२४) ऋद्धि–सर्व से स्वल्पऋद्धि तारोंकी, उन्होसे महाऋद्धि नक्षत्र कि, उन्होंसे महाऋद्धि ग्रहकी, उन्हीसे महा

जम्बुद्विप व्यतर देव देवीका रूप वैक्रय बना शक्ते है सख्यातेकी शक्ति है

(१६) अवधिद्वार—वाणमित्र देव अवधिज्ञानसे ज० २५ जोजन उ० उर्ध्वे जोतीषीयोके उपरका तला अधो० पेहली नरक तीर्य० सख्यातेद्विप समुद्र

(१७) परिचारणाद्वार—सर्व देवोंके पाच प्रकारकि परिचारणा है यथा मन, रूप, शब्द, स्पर्श, और कायपरिचारणा अर्थात् मनुष्यकि माफीक भोगविलाश करते है

(१८) सुखद्वार—यहा मनुष्यलोकमे कोइ मनुष्य युवक अवस्थामे मनमोहन युवक सुन्दर जोबन रूप लावण्यवान्से मादि कर विदेशमें द्रव्यार्थी गया था वहसे मनोइच्छत द्रव्य लाया दोनोंकी परिपक जोवन अवस्थामें अनादित सुख भोगवे उन्होंसे व्यतर देवोंका सुख अनन्तगुण है.

(१९) सिद्धद्वार—वाणमित्रोंसे निकलके मनुष्यभवकर एक समयमें १० ओर देवीसें निकलके ५ जीव एक समय मोक्ष जाते है

(२०) भवद्वार—वाणमित्र देव अगर ससारमें भव करे तो १-२-३ उत्कष्ट अनन्त भव कर शक्ते है.

(२१) उत्पन्नद्वार—सर्व प्राण भूत जीव सत्व वाणमित्र देवतों पणे एकवार नही किन्तु अनन्ती अनन्तीवार उत्पन्न

ऋद्धि सूर्यकी, उन्होसे महाऋद्धि चन्द्रकी अर्थात् सर्वसे स्वल्प ऋद्धि तारोंकी और सर्वसे महाऋद्धि चन्द्र देवों की है।

(२५) वैक्रय-जोतीषी देव वैक्रयसे जोतीषी देनी देवता बनाके सम्पुरण जम्बुद्विप भर दे और सख्याता जम्बुद्विप भर देने कि शी है एव चन्द्र सर्य सामानीक और देवी भी समझना

(२६) अवधिद्वार-जोतीषी देव अवधिज्ञानसे ज० स ख्याते द्विप समुद्र देखे उ० भी सख्याते द्विप समुद्र देखे उर्ध्व अपने अपने ध्वजा। अधो पेहली नरक देखे तीरच्छा सख्याते द्विपसमुद्र देखे।

(२७) परिचारणा-जोतीषी देवोंके परिचारणा पांच प्रकारकी है मनकी शब्दकी रूपकि स्पर्शकी कायाकी अर्थात् जोतीषी देव मनुष्योंकी माफीक भोग विलाश करते है

(२८) सिद्ध-जोतीषीयोंसे निकल मनुष्यभव कर एक समय १० जीव मोक्ष जावे, देवी मे निकल एक समयमे २० जीव मोक्ष जावे

[२९] भवद्वार-जोतीषी देवोंसे निकल १-२-३ भव और उत्कृष्ट करे तो अनन्ताभव भी कर शक्ते है।

[३०] अल्पाबहुत्वद्वार स्तोक चन्द्र सूर्य उन्होसे नक्षत्र सख्यात गु० उन्होसे ग्रहसख्या० गु० उन्होसे तारादेव सख्यात गु०

हूने है इसीमें चैतन्यकि चैतनता प्रगट नही होती है यह तो पौद्गलीक सुख है खरा आत्मीक सुख श्री जिनेन्द्र देवोंके धर्मको अंगीकार करनेसे प्राप्त होता है. इति

सेवंभंते सेवभंते-तमेवसच्चम्

—००॥००—

थोकडा नं. ५

—००००—

बहूत सूत्रोंसे संग्रह करके

—००००—

(जोतीपीयोंके द्वार ३१)

जोतीषी देव दो प्रकारके है (१) स्थिर, (२) चर जिस्में स्थिर जोतीपी पाच प्रकारके है चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारा यह अढाइ द्वीपके बाहार अवस्थित है पकी इटके सस्थान है सूर्य सूर्यके लक्ष जोजन ओर चन्द्र चन्द्रके लक्ष जोजनका अन्तर है तथा सूर्य चन्द्रके पचास हजार जोजनका अन्तर है, अन्दर का जोतीपीयोंसे आदी कान्तीवाला है हमेसोंके लिये चन्द्रके साथ अभिच नक्षत्र ओर सूर्यके साथ पुष्य नक्षत्र योग जोडते है मनुष्य क्षेत्रकि मर्यादाका करनेवाला मानुसोतर पर्वतके बाहारकी तर्फसें लगाके अलोकमें ११११ जोजन उली तर्फ

[२१] उत्पन्न-हे भगवान् सर्व प्राणभूत जीव सत्व जोतीपी देवों पणे पूर्व उत्पन्न हूवा ? हे गौतम एकवार नहीं किन्तु अनन्ती अनन्ती वार जोतीपी देवो पण उत्पन्न हूवा है परन्तु देव होना पर भी जीवकों आत्मीक सुख नही मीला आत्मीक सुख के दाता एक वीतराग है वास्ते उन्होंकी आ-ज्ञाका आराद्धि बनना चाहिये इति.

सेवभंते सेवंभते तमेव सच्चम्.

थोकडा नम्बर ६.

बहूतसूत्रसे सग्रहकर.

(वैमानिकदेवोंका द्वार २७)

१ नामद्वार	१० इन्द्रनाम द्वार	१९ देवीद्वार
२ वासाद्वार	११ इन्द्रवैमान ,,	२० वैक्रयद्वार
३ सस्थानद्वार	१२ चन्हद्वार ,,	२१ अवधिद्वार
४ आधारद्वार	१३ सामानीक ,,	२२ परिचारणा
५ पृथ्वीपएड०	१४ लोकपाल ,,	२३ पुन्यद्वार
६ वैमान उचपणो	१५ तावत्रिसका ,,	२४ सिद्धद्वार
७ वैमान सख्या	१६ आत्मरक्षक ,,	२५ भवद्वार
८ वैमान विस्तार	१७ अनिकाद्वार	२६ उत्पन्नद्वार
९ वैमान वर्णद्वार	१८ परिषदाद्वार	२७ अल्पाबहूत्व

क सर्व जोतीपी स्थिर है इन्हीका परिवार निगरह भन्दरके जोतीपीयों माफीक समझना

अढाइद्वीपके अन्दर जो जोतीपी है वह चर-भ्रमण करनेवाले है और भ्रमण करनेमें ही खुशी मानते है उन्हीका विस्तारके लिये जोतीपी चक्रका थोकडा चन्द्रप्रज्ञाप्ती और सूर्य-प्रज्ञाप्तीसें लिखेंगे परन्तु सामान्यतासें यहांपर ३१ द्वारसें जोतीपीयोंका थोकडा लिखा जाता है कि साधारण मनुष्यभि इन्हीका लाभ उठा सके

(१) नामद्वार
(२) वासाद्वार
(३) राजधानी
(४) सभा
(५) वर्णद्वार
(६) वस्त्रद्वार
(७) चन्हद्वार
(८) वैमान पहूल
(९) वैमान जाडपणा
(१०) वैमान वहान
(११) मांडलाद्वार
(२) गतिद्वार
(१३) तापक्षेत्रद्वार
(१४) अन्तर ,,
(१५) सख्या ,,
(१६) परिवार ,,
(१७) इन्द्र ,,
(१८) सामानीकद्वार
(१९) आत्मरक्षक,,
(२०) परिपदा ,,
(२१) अनिका ,,
(२२) देवीद्वार
(२३) गतिद्वार
(२४) ऋद्धिद्वार
(२५) वैक्रय ,,
(२६) अवधि ,,
(२७) परिचारणाद्वार
(२८) सिद्ध ,,
(२९) भव ,,
(३) अल्पावहूत ,,
(३१) उत्पन्न ,,

(१) नामद्वार—चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, और तारा

(१) नामद्वार–वैमानिकदेवोंका नाम यथा सौधर्मदेवलोक, इशान देवलोक सनत्कुमार० महेन्द्र० ब्रह्म० लताक० महाशुक्र० सहस्र० अणत्० पाणत्० अरण० अचुतदेवलोक। । १२ । नौग्रीवेग भद्दे, सुभद्दे, सुजाये, सुमाणसे, सुदर्शने, प्रयदर्शने, आमोये, सुप्रतिबन्धे, यशोधरे, । ६ । पाचाणुत्तर वैमान–विजय, निजयन्त, जयन्त, अप्राजित, सर्वार्थसिद्ध, ।५। पाचमा देवलोकके तीसरा परतरमें नव लोकान्तीक तथा तीन कल्बिपीदेव मीलके सर्व ३८ जातका देवोंकों वैमानिकदेव कहा जाता है.

(२) वासाद्वार–सभूमिसे ७६० जोजन उर्ध्व जावे तब जोतीपीदेव आते है वह ११० जोजनके जाडपणामें अर्थात् ६०० जोजन सभूमिसे उर्ध्व जावे वहां तक जोतीपीदेव है वहांसे असख्यात कोडनकोड उर्ध्व जावे तब वैमानिकदेवोंका वैमान आते है वहां वैमानिकदेवोंका निवास है उन्होंकि राज धानी ओर प्रत्यक इन्द्रके पाच पाच सभा स्वस्वर्वैमानमें है शक्रेन्द्र, ईशानेन्द्रके प्रासाद या इन्द्रोंके लोकपाल तथा देवांगनाकि राजधानीयों तीरच्छालोकमें भी है।

[३] सस्थानद्वार–पेहला दुसरा तीसरा चोथा तथा नवमा दशमा इग्यारवा बारहवा यह आठ देवलोक आदा चक्रके सस्थान है अथवा कुमकारका लागलके आकार है

-६-७-८ देवलोक और नौग्रीवेग ६ ग्रह पूर्णचन्द्र के प्राकार एक दुसराके उपरा उपर है च्यार अणुत्तर वैमान तीखुणा च्यार दिशामे है सर्वार्थसिद्ध वैमान गोलचद्र. मस्थान है.

[४] आधारद्वार-वैमान् और पृथ्वीपड रत्नमय है परन्तु वह किसके आधार है ? पेहला दुसरा देवलोक घणोदद्धि के आधार है तीजा चोथा पांचवा घण वायु के आधार है छठा सातरा आठवा देवलोक घणोदद्धि घण वायु के आधार है शेष वैमान यावत् सर्वार्थसिद्ध वैमनतक केवल आकाश के ही आधार है.

(५) पृथ्वीपएड (६) वैमानकाउचा (७) वैमान और परतर (८) वर्ण

वैमान	पृथ्वीपएड	वै० उचा	वै० सख्या	वर्ण	परतर
१	२७०० जो	५०० जो	३२ लक्ष	५ वर्ण	१३
२	२७०० ,,	५०० ,,	२८ ,,	५ ,,	१३
३	२६०० ,,	६०० ,,	१२ ,,	४ ,,	१२
४	२६०० ,,	६०० ,,	८ ,,	४ ,,	१२
५	२५०० ,,	७०० ,,	४ ,,	३ ,,	६
६	२५०० ,,	७०० ,,	५०हजार	३ ,,	५

१३॥ अगुल एक यव एक युक एक लिख छे वालाग्र पाच व्यवहारीय परमाणु इतना विस्तारवाली परद्धि है। एक जगति (कोट) एक पद्मवर वेदिका एक वनखड च्यार दरवाजा कर अति शोभनिक है। इन्ही जम्बुद्विपका दक्षिण उत्तर भरतक्षेत्र परिमाण खड किया जाय तो १६० खट होता है यत्र।

न.	क्षेत्र नाम.	खड	जोजन परिमाण
१	भरतक्षेत्र	१	५२६+६
२	चुलहेमवन्तपर्वत	२	१०५२+१२
३	हेमवयक्षेत्र	४	२१०५+५
४	महाहेमवन्तपर्वत	८	४२१०+१०
५	हरिवासक्षेत्र	१६	८४२१+१
६	निषेडपर्वत	३२	१६८४२+२
७	महाविदेहक्षेत्र	६४	३३६८४+४
८	निलवन्तपर्वत	३२	१६८४२+२
९	रम्यक्नामक्षेत्र	१६	८४२१+१
१०	रूपीपर्वत	८	४२१०+१०
११	एरणवयक्षेत्र	४	२१०५+५
१२	सीखरीपर्वत	२	१०५२+१२
१३	एरभरतक्षेत्र	१	५२६+६
			९०+१००००० जोजन

	२४०० ,,	८०० ,,	४० ,,	२ ,,	४
	२४०० ,,	८०० ,,	६०००	२ ,,	४
	२३०० ,,	९०० ,,	४००	१ ,,	४
	२३०० ,,	९०० ,,		१ ,,	४
	२३०० ,,	९०० ,,	३००	१ ,,	४
	२३०० ,,	९०० ,,		१ ,,	४
ग्री०	२२० ,,	१००० ,,	३१८	१ ,,	६
अणु	२१०० ,,	११०० ,,	५	१ ,,	१

(९) वैमान निस्तार-वैमान का निस्तार कितनेक (च्यार भागके) असंख्यात जोजनके निस्तारवाले है कितनेक (एक भागके) सख्यात जोजनके निस्तारवाले हैं परन्तु सर्वार्थसिद्ध वैमान एकलच जोजन निस्तारवाले है।

(१०) इन्द्रद्वार-बारह देवलोंकोका दश इन्द्र है और नौ ग्रीवैग तथा पाचाणुत्तर वैमानका देवोंके इन्द्र नहीं हैं अर्थात् अहमेन्द्र-सर्व देवता इद्र है वहापर छोटे वडेका कायदा नही है दश इन्द्रोका नाम यत्रमें.

(११) वैमानद्वार-प्रत्यक इन्द्र तीर्थकरोंके जन्मादि कल्याणके लिये मृत्यु लोकमे आते है उन्ही समय वैमानमे बैठ के आते है उन्हीका नाम यथा-पालक वैमान, पुष्प वैमान,

प्रसगोपात पूर्व पश्चिम लच जोजनका मान.

न	चेत्रका नाम	जोजन परिमाण
१	मेरूपर्वत पहूला	१०००० जोजन.
२	पूर्व भद्रशाल वन	२२००० ,,
३	,, आठ विजय	१७७०२ ,,
४	,, च्यार वस्कारपर्वत	२००० ,,
५	,, तीन अन्तरनदी	३७५ ,,
६	,, सीतामूख वन	२९२३ ,,
७	पश्चिम भद्रशाल वन	२२००० ,,
८	,, आठ विजय	१७७०२ ,,
९	,, च्यार वस्कार	२००० ,,
१०	,, तीन नदी	३७५ ,,
११	,, सीतामुख वन	२९२३ ,,

एव १००००० जोजन—

(२) जोयणद्वार-एक लच योजनके विस्तारवाले जम्बुद्विपका योजन योनन परिमाणके गोल खड किया जाय तो १०००००००००० इतने खड होते है अगर योजन परिमाण समचौरस खड किये जाय तो ७९०५६९४१५० खड होनापर ३५१५ धनुष और ६० अगुल चेत्र वडजाता है इति द्वारम्

सुमायस, श्रीवत्स, नन्दीवर्तन, कामगमनामाविमान मणोगम प्रीयगम विमल सर्वतोभद्र.

(१२) चन्ह, (१३) सामानीक, (१४) लोकपाल, (५) ताव० (१६) आत्मरचकद्वार.

इन्द्र.	चन्ह	माम०	लो०	ता०	आत्म०
शक्रेन्द्र	मृग	८४०००	४	३३	३३६०००
इशानेन्द्र	महेष	८००००	४	३३	३२००००
सनत्कु०	सूयर	७२०००	४	३३	२८८०००
महेन्द्र	सिंह	७००००	४	३३	२८००००
ब्रह्मेन्द्र	बकरा	६००००	४	३३	२४००००
लतकेन्द्र	देडका	५००००	४	३३	२०००००
महाशुक्रेन्द्र	अश्व	४००००	४	३३	१६००००
सहस्रेन्द्र	हस्ती	३००००	४	३३	१२००००
पणतेन्द्र	सर्प	२००००	४	३३	८००००
अचुतेन्द्र	गरूड	१००००	४	३३	४००००

(१७) अनिकाद्वार-प्रत्यक इन्द्रके मात सात अनिका है, यथा-गज, तुरग, रथ, वृषभ, पैदल, गन्धर्व नाटिक-नृत्यकारक प्रत्यक अनिकाके देव अपने अपने मामानीकदेवोमें १२७ गुणे है जेसे शक्रेन्द्रके ८४००० मामानीकदेव है उन्होसें

(३) वासाद्वार—इन्ही लक्ष योजनके विस्तार वाला जम्बुद्विप मे मनुष्य रेहनेका वासक्षेत्र ७ तथा १० है यथा (१) भरतक्षेत्र (२) एरभरतक्षेत्र (३) महाविदहक्षेत्र इन्हीं तीनों क्षेत्रमे कर्मभूमि मनुष्य निवास करते है और (१) हमवय (२) हरणवय (३) हरिवास (४) रम्यक्वास इन्ही च्यार क्षेत्रोंमें अकर्मभूमि युगल मनुष्य निवास करते है एव ७ तथा दश गीना जावे तो पूर्वजों महाविदहक्षेत्र गीना गया है उन्हीका च्यार विभाग करना (१) पूर्व महाविदह (२) पश्चिम महाविदह (३) देवकूरु (४) उत्तर कूरु एवं १० क्षेत्र होता है। विवरण—

लक्ष योजनके विस्तार वाला जो जम्बुद्विप है जिन्होंके चौतर्फ एक जगति (कोट) है वह जगति आठ योजन की उची है मूलमें १२ मध्यमे ८ उपर ४ योजनके विस्तार वाली है सर्व वज्ररत्नमय है उन्ही जगति के कीनारेपर एक गौख जाल अर्थात्–झरोखाकी लेन आगइ है वह आदा योजनकी उची पाचसो धनुष कि चोडी कोपीसा और कागरा सर्व रत्नमय है।

जगति उपरसे च्यार योजनके विस्तारवाली है उन्ही के मध्यमागमे एक पद्मवरवेदिका आदा याजनकी उची ५०० धनुष कि चोडी दोनो तर्फ निला पनों का स्थाभा पर अच्छा सुन्दर आकारवाली मनमोहक पुतलायों है और भि अनेक

१२७ गुण करनेसे १०६६८००० देव प्रत्यक अनिकाका होते है इसी माफीक सर्व इन्द्रोंके समझना.

(१८) परिषदाद्वार-प्रत्यक इन्द्रके तीन तीन प्रकारकि परिषदा होती है अभिंतर, मध्यम, बाह्यदेव देखो यत्रसे.

इन्द्र.	अभिंतर.	मध्यम	बाह्य	देवी
१	१२०००	१४०००	१६०००	शक्रेन्द्र
२	१००००	१२०००	१४०००	७००
३	८०००	१००००	१२०००	६००
४	६०००	८०.०	१०० ०	५ ०
५	४०००	६०००	८०००	इशानेन्द्र
६	२०००	४०००	६०००	९००
७	१०.०	२०००	४०००	८००
८	५००	१०००	२०००	७००
९	२५०	५००	१०००	शेष इन्द्रके
१०	१२५	२५	५००	देवी नहीं.

(१९) देवीद्वार-शक्रेन्द्रके आठ अग्र महेषीदेवी है प्रत्यक देवीके शोला शोला हजार देवीका परिवार है १२८००० प्रत्यक देवी शोला शोला हजार रूप वैक्रय कर शक्ती है २०४८०००००० इतनि देवी एक इन्द्रके भोगमें

सुन्दर रूप तथा मौक्तिफल की मालावों से सुशोभित है मध्य-भागमे पद्मवर वेदिका आजानेसे दो विभाग हो गये है (१) अन्दर का विभाग (२) बाहार का विभाग जो अन्दर का विभाग है उन्ही के अन्दर अनेक जातिके वृक्ष आजानेसे अन्दरका वनखड कहा जाते हैं उन्ही के अन्दर पाच वर्ण के तृण रत्नमय है पूर्वादि दिशीका मन्द वायु चलनेसे छे राग ३६ रागणी मन और श्रवणोंको आनन्दकारी ध्वनी निकलती है उन्ही वनखड मे और भी छोटी छोटी वावी और पर्वत आगय है वह अनेक आसन पडे है वहाँ व्यतर देव और देवीयों आते है पूर्वकृत पुन्यकों सुखपूर्वक भोगवते हैं इसी माफीक बाहारका वन भी समझना परन्तु वहा तृण नही है ।

मेरू पर्वत के च्यारों दिशा पैतालीस पैतालीस हजार योजन जानेपर च्यारो दिशा उन्ही जगतिके अन्दर च्यार दरवाजा आते हैं वह दरवाजा आठ योजनके उचे च्यार योजन के चोड है दरवाजा उपर नवभूमि और सुपेतगुमट छत्रचमर ध्वजा और आठ आठ मगलीक है। दरवाजाके दोनों तर्फ दो दो चौतरा है उन्हीके उपर प्रासाद तोरण चन्दनके कलसे झारी थाल आदि यावत् धूपके कुडच्छ ओर मनोहर रुपवाली पुतलीयोंसे सुशोभीत है

(१) पूर्वदिशमें विजय नामको दरवाजो है
(२) दक्षिणदिशमें विजयन्त नामको दर०

आ शक्ती है एव इशानेन्द्रके भी समझना शेप देवलोकमें देवी उत्पन्न होनेका स्थान नहीं है उर्ध्व अचुत देवलोकके देवों तक्के देवी पेहला दुसरा देवलोकमें रहेती है वह देवोंके भागमें आती है देवीका उर्ध्व आठमा देवलोक तक गमन होता है

(२०) वैक्रयद्वार-शक्रेन्द्र वैमानीकदेवी देवतोंसे दो जम्बुद्विप भरदे असख्यातेकी शक्ती है एव सामानीक-लोकपाल-तावतिसका ओर देवी भी समझना इशानेन्द्र दो जम्बुद्विप साधिक सपरिवार तथा सनत्कुमार ४ जम्बु० महेन्द्र ४ साधिक ब्रह्मेन्द्र ८ जम्बु० लांतकेन्द्र आठ साधिक महाशुक्र १६ जम्बु० सहस्र १६ साधिक पाणत् ३२ अचुतेन्द्र ३२ साधिक जम्बुद्विप वैक्रयसे देवी देव बनाके भरदे सबकि शक्ती असख्या जम्बुद्विप भरदेनेकी है शेप वैक्रय नहीं करे

(२१) अवधिद्वार-अवधिज्ञान सर्व इन्द्र ज० अगुलके असख्यातमो भाग उ० उर्ध्व अपने अपने वैमानके ध्वज तीरच्छा असख्याते द्विप समुद्र अधो शक्रेन्द्र इशानेन्द्र पेहला नरक देखे, सनत्कु० महेन्द्र दुसरी नरक देखे, ब्रह्मेन्द्र लांतकेन्द्र तीसरी नरक देखे, महाशुक सहस्र चोथी नरक देखे, अणतपणात अरण अचुत पाचमी नरक देखे, नौग्रीवेगके देव छठी नरक च्यार अणुत्तर वैमान सातमी नरक तथा सर्वार्थसिद्ध वैमानका देवा तसनाली सम्पुर्ण जाने देखे

(३) पश्चिमदिशमें जयन्तनामा दर०

(४) उत्तरदिशमें अप्राजित नामा दर०

इन्ही चारों दरवाजोंके नामके न्यारों देवता एकेक पल्योपमकि स्थितिवाले हैं उन्हीकी राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें हैं। अधिक विस्तारवालोको जीवाभिगमसूत्र देखना चाहिये।

(१) भरतक्षेत्र—जहापर हम बैठे हैं इन्हीकों भरतक्षेत्र केहते हैं। वह चुलहेमवन्तपर्वतसे दक्षिणकि तर्फ विजयन्त दरवाजासे उत्तरकि तर्फ पूर्व और पश्चिम जगतिके बाहार लवणसमुद्र है अर्द्धचन्द्रके आकार है मध्यभागमें वैताडयपर्वत आनासे भरतक्षेत्रका दो विभाग कहाजाते हैं (१) दक्षिणभरत (२) उत्तरभरत।

चुलहेमवन्तपर्वतपर पद्मद्रहसे गगा और सिन्धुनदी उत्तर भरतका तीन विभाग करति हुइ तमस्रगुफा और खंड प्रभागुफाके निचे वैताढ्यपर्वतकों भेदके दक्षिणभरतका तीन विभाग करति हुइ लवणसमुद्रमें प्रवेश हुइ है इन्हींसे भरतक्षेत्रका छे खड भी कहाजाता है।

दक्षिणभरत २३८ जो० ३ कलाका है जिन्हीके अन्दर तीन खड हैं मध्यखडमें १४००० हजार देश हैं मौर्य मध्य भागमें कोशलदेश वनिता (अयोध्या) नगरि है वह परिमाण अगुलसे १२ जोजन लम्बी ६ जोजन पहूली है वनितानगरी उत्तरकि तर्फ ११४॥+ १॥ वैताडयपर्वत है और ११४॥+ १

(२२) परिचारणाद्वार–सौधर्मेशान देवलोकके देवोंको मन, शब्द, रूप, स्पर्श और कायपरिचारणा यह पांचो प्रकार कि परिचारणा है तीजा चोथा देवोंके स्पर्शपरिचारणा है पांचवा छठा दे० देवोंके रूपपरिचारणा है सातवा आठवा दे० देवोंके शब्दपरिचारणा है नव दश इग्यारा बारहवा देवलोकके देवोंके एक मनपरिचारणा है नौग्रीवैग और अनुत्तर वैमानके देवोंके परिचारणा नहि है विस्तार देखो परिचारणापदका थोकडामें

(२३) पुन्यद्वार–जितना पुन्य व्यतरदेव १०० वर्षमें चय करते है इतना पुन्य नागकुमारादि नव निकायके देव २०० वर्ष असुरकुमार ३०० वर्ष ग्रह नक्षत्र तारा ४०० चन्द्र सूर्य ५०० सौधर्मेशान १००० वर्ष सनत्कु० महेन्द्र २००० महेन्द्र लतक ३० ० महाशुक्र सहस्र ४००० अणतपणत अरण अचुत ५० ० वर्ष पेहली त्रिक १ लक्ष दुसरी त्रिक २ लक्ष तीसरी त्रिक ३ लक्ष च्यार अणुत्तर ४ लक्ष सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव ५ लक्ष वर्षमें इतना पुन्य चय करते है अर्थात् व्यतरदेव भोगविलास हास्य कीतूल्यादिमें १०० वर्षमें जीतना पुन्य चय करते है इतना पुन्य क्रमसर सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव पांच लक्ष वर्षोंमें पुन्य चय करते है

दक्षिणकी तर्फ विजयन्त नामका दरवाजा है। पूर्व पश्चिमके दोनों खडमें हजार हजार देश मीलाके दक्षिणभरतके तीनों खडमें १६००० देश हैं इसी माफीक उत्तरभरतमें भि १६००० देश हैं इन्ही भरतक्षेत्रमें कालकि हानि वृद्धिरुप सर्पिणी उत्सर्पिणी मीलके कालचक्र हैं वह देखो छे आरोका थोकडामें। एक सर्पिणीमें २४ तीर्थंकर १२ चक्रवरत ६ बलदेव ६ वासुदेव ६ प्रतिवासुदेव नियमत होते हैं। इति

(२) एरभरतक्षेत्र—भरतक्षेत्रकि माफिक है परन्तु भरत क्षेत्रकि मर्यादाकारक चुलहेमवन्तपर्वत है और एरभरतक्षेत्रकी मर्यादाकारक सीखरीपर्वत है शेष बरावर है इति

(३) महाविदह क्षेत्र—निषेड और निलवन्त दोनों पर्वतोंक विचमे महाविदहक्षेत्र है वह पलक के सस्थान है चक्र वरतकि ३२ विजयसे भलकत हैं। अगर महाविदेहक्षेत्रका च्यार विभागकर दिया जावेगें तो (१) पूर्व विदह (२) पश्चिम विदह (३) देवकूरु (४) उत्तर कुरू.

विदहक्षेत्रके मध्य भागमे मेरू पर्वत पृथ्वीपर १०००० यो० के विस्तारवाला है उन्ही के पूर्व पश्चिम दोनु तर्फ बावीस बावीस हजार योजनका भद्रशालवन है। उन्हीसे दोनों तर्फ (पूर्व पश्चिम) शोला शोला विजय है अर्थात् पूर्व विदहरूप १६ विजया और पश्चिम विदह रूप १६ विजय है।

मरू पर्वत १०००० जोजनका है उन्हीसे उत्तर दक्षिण

(२४) सिद्धद्वार–वैमानिक देवोंमे निकलके मनुष्यका भवमे आके एक समय १०८ सिद्ध होते है एवं देवीसे २० जीव सिद्ध होते हैं.

(२५) भवद्वार–वैमानिक देवोंमे जाने पर भी जीव संसारमे भव करे तो जघन्य १–२–३ उ० संख्याते असंख्याते अनन्ते भव भी कर शक्ता है।

(२६) उत्पन्नद्वार हे भगवान् सर्व प्राण भूत जीव सत्व वैमानिक देवता या देवीपणे पूर्व उत्पन्न हूवा ! हे गोतम एक वार नही किन्तु अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हूवा है कहांतक कि० नौग्रीवेमनक। और च्यार अणुत्तर वैमानमे जाने के बाद संख्याते (२४) भवमे और सर्वार्थसिद्ध वैमान से एक भवमे निश्चय मोक्ष होता है।

(२७) अल्पाबहुतद्वार

(१) स्तोक पाच अणुत्तर वैमनके .व

(२) उपरकी त्रिकके देव संख्यातगुणा.

(३) मध्यम त्रिकके देव ,,

(३) निचेकी त्रिकके देव ,,

(४) बारहवा देवलोकके देव ,,

अढाइसो अढाइसो जोजनका भद्रशालवन हैं वहांसे दक्षिणकि तर्फ निपेडपर्वत तक देवकूरू क्षेत्र और निलवन्त पर्वत तक उत्तर कूरूक्षेत्र है। एकेक क्षेत्र दोदो गजदन्तों कर आदा चन्द्राकार हैं इन्ही क्षेत्रोंमे युगल मनुष्य तीनगाउ कि अवगाहना और तीन पल्योपम कि स्थिति वाले है देवकूरूक्षेत्रमें कुड सामली वृक्ष चितविचित पर्वत १०० कचनगिरि पर्वत पाचद्रह इसी माफीक उत्तरकूरूमे परन्तु वह जम्बु सुदर्शनवृक्ष हैं इति विदहेका च्यार भेद ।

निपेडपर्वत और महा हेमवन्तपर्वत इन्ही दोनो पर्वतोंके विचमे हरिवास नामका क्षेत्र हैं तथा निलवन्त और रूपी इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे रम्यक्वास क्षेत्र है इन्ही दोनों क्षेत्रोंमे दो गाउकी अवगाहना और दो पल्योपम कि स्थिति वाले युगल मनुष्य रहे ते है।

महाहेमवन्त और चुलहेमवन्त इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे हेमवय नामका क्षेत्र हैं तथा रूपी और सीखरी इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे एरणवयक्षेत्र हैं इन्ही दोनों क्षेत्रोंमें एक गाउकी अवगाहाना और एक पल्योपम कि स्थिति वाला युगल मनुष्य रेहेते हैं। एव जम्बुद्विपमे मनुष्य रेहेने के दश क्षेत्र हैं इन्हीको शास्त्रकारोंने वासा काहा है अब इन्ही १० क्षेत्रोंका लम्बा चोडा बाहा जीवा धनुपपीठ आदिका परिमाण यन्त्रद्वारा लिखा जाता हैं ।

(५) इग्यारवे ,, ,, ,,

(६) दशवे ,, ,, ,,

(७) नवमे ,, ,, ,,

(८) आठवा असख्यातगुणा

(९) सातवा ,, ,, ,,

(१०) छटे ,, ,, ,,

(११) पाचवे ,, ,, ,,

(१२) चोथे ,, ,, ,,

(१३) तीजे ,, ,, ,,

(१४) दुजे ,, ,, ,,

(१५) दुजे देवलोककी देवी सख्यातगुणी.

(१६) पेहला देवलोकके देवा ,,

(१७) ,, ,, देवी ,,

सेवंभते सेवभते–तमेवसच्चम्

क्षेत्रनाम	दक्षिणोत्तर पद्लापणो	गाह	जीवा	धनुपपीठ
दक्षिणभरत	२३८ जो० ३	०	९७४८+१२	९७६६+१
उतरभरत	२३८+३	१८९२+७॥	१४४७१+६	१४५२८+११
हेमवयक्षेत्र	२१ ५+५	६७५५+३	३७६७४+१६	३८७४०+१०
हरिवासक्षेत्र	८४२१+१	१३३६१+६	७३९०१+१७	८४०१६+४
महानिदहक्षेत्र	३३६८४+४	३३७६७+७	१०००००	१५८११३+१६
देवकूरूक्षेत्र	११८४२+२	०	५३०००	६०४१८+१२
उत्तरकूरूक्षेत्र	११८४२+२	०	५३०००	६०४१८+१२
रम्यकवासक्षेत्र	८४२१+१	१३३६१+६	७३९०१+१७	८४०१६+४
एरणवयक्षेत्र	२१०५+५	६७५५+३	३७६७४+६	३८७४०+१०
दक्षिणएरभरत	२३८+३	१८९२+७॥	१४४७१+६	१४५२८+११
उत्तरएरभरत	२३८+३	०	९७४८+१२	९७६६+१

थोकडा नं. ७

सूत्रश्री जम्बुद्विपप्रज्ञाप्ती

(खण्डा जोयण)

गाथा—खंडा जोयण वासा,
पव्वय कूडा तित्थ सेढीओ ।
विजय द्रहे सलिलाओ,
पिंडए होइ संगहणी ॥ १ ॥

इस लक्ष जोजनके विस्तारवाले जम्बुद्विपको १० द्वारसे बतलाये जावेगे.

(१) खडा–जम्बुद्विपका भरतक्षेत्र परिमाण कितने खड होते हैं

(२) जोयण–जम्बुद्विपका जोजन परिमाणे कितना खड होता है.

(३) वासा–जम्बुद्विपमें मनुष्य रेहनेका कितना वासा है.

(४) पव्वयपर्वत–जम्बुद्विपमें २६६ पर्वत सास्वता है
(२००) कञ्चनगिरिपर्वत–देवकूरू युगलक्षेत्रमें पाच द्रह है उन्ही द्रहके दोनों तटपर दश दश कञ्चनगिरिपर्वत सर्व सुवर्णमय है दश तटपर १०० पर्वत है इसी माफीक उत्तरकूरू युगलक्षेत्रमें १०० कञ्चनगिरि है एव २००

(३४) दीर्घवैताडय–चक्रवरतकी ३४ विजय अर्थात महाविदेहकि ३२ विजय एक भरत एक एरभरत एव ३४ विजयके मध्यभागमें ३४ वैताडयपर्वत है।

(१६) वस्कारपर्वत–महाविदेहक्षेत्रके मध्यभागमें मेरूपर्वत आजानेसे महाविदहक्षेत्रके शोला शोला विजयरुप दो विभाग हूवे शोला शोला विजयके विचमें सीता सीतोदानदि आजानासे आठ आठ विजयरुप च्यार विभाग हूवे उन्हीसे आठ विजयरुप एक विभागके सात अन्तर है जिस्मे च्यार वस्कारपर्वत और तीन अन्तर नदी है एक विभागमें च्यार वस्कारपर्वत है इसी माफीक च्यार विभागमें १६ वस्कारपर्वत है

(६) वर्षधरपर्वत–मनुष्य रेहनेका जो ७ क्षेत्र बतलाये है जिन्होके ६ अन्तरोंमें छे पर्वत है अथवा सात क्षेत्रोंकि मर्यादा करनेवाले ६ वर्षधरपर्वत है यथा चुलहेमवन्त, महाहेमवन्त, निषेड, निलवन्त, रूपी, और सीखरीपर्वत इति।

(४) गजदन्तापर्वत–निषेड और निलवन्तपर्वतके पाससे

(४) पव्यय-जम्बुद्विपमें सास्वता पर्वत कितने है

(५) कूडा-जम्बुद्विपमें पर्वतों उपर कूट है वहा कितने है

(६) तित्थ-जम्बुद्विपमें माघद्धादि तीर्थ कितने है.

(७) सेढी-जम्बुद्विपमें विद्याधरोंकि श्रेणि कहां या कितनी है

(८) विजय-महाविदेहक्षेत्रमें मनुष्य रहेनेकि विजय कितनी है

(९) द्रह-जम्बुद्विपमें पद्मादि द्रह कितने है

(१०) सलिला-जम्बुद्विपमें गगादि नदीयों कितनी है

उपर बतलाये हूवे १० द्वारकों शास्त्रकार विस्तारपूर्वक विवरण करते है

(१) खडा-तीरच्छालोकमें जम्बुद्विप असख्याते है परन्तु यहापर जो हम निवास कर रहे है इसी जम्बुद्विपकि व्याख्या करेंगे

जम्बुद्विप गोल चुडि-चक्र-तेलका पुवा-कमलकि कर्णिका और पूर्ण चन्द्रके आकार है यह पूर्व पश्चम एक लक्ष जोजनका पहूला है इसी माफीक दक्षिणोत्तर भी एक लक्ष जोजनका लम्बा है ३१६२२७ जोजन तीनगाउ १२८ धनुष्य

निकलते हूवे देवकूरू उत्तरकूरू युगलक्षेत्र और विजयके विचमें मर्यादा करनेवाले हस्तिके दन्तके आकार मेरूपर्वतके पास जायलागे है

(४) वृतलवैताड्य पर्वत हेमवय, एरणवय, हरिवास, रम्यक्‌वास वह च्यार युगल मनुष्योंका क्षेत्र है इन्हीके मध्यभागमें च्यार वृतल वैताड्यपर्वत है

(४) चितविचितादि निषेडपर्वतके पासमें और सीतानदीके दोनो तटपर चित और विचित दो पर्वत है इसी माफिक निलवन्त पर्वतके पासमें सीतोदानदीके तटपर जमग समग दो पर्वत है.

(१) जम्बुद्विपके मध्यभागमें गिरिराज मेरूपर्वत है. इति

(विवरण)

(१) दो सो (२००) कञ्चनगिरिपर्वत पचवीस जोजन धरतिमें १०० जोजन धरतिसें उचा मूलमें १०० जो० लम्बा चोडा मध्यमें ७५ जो० उपरसे ५० जोजन विस्तारवाला है तीनगुणी जाझेरी पराद्धि सर्व कञ्चनमय है ।

(२) चौतीस दीर्घ वैताड्यपर्वत पचवीस गाउ धरतीमें है पचवीस जोजन धरतीसें उचा पचास जो० विस्तारवाला है। उन्होंकि दोनो तर्फ बाह ४८८ जो० १६ कला है जीवा १०७२० जो० १२ कला धनुपपीष्ट १०७४३ जो० १५ कला है प्रत्यक वैताड्यपर्वतके अन्दर दो दो गुफावों है (१) तमसगुफा (२) खडप्रभागुफा वह गुफा ५० जोजनकि लम्बी १२

जोजनकि चोडी ८ जो० उची है उन्ही गुफावोंके अन्दर दो दो नदीयों है (१) उमगजला (२) निगमजला–गुफावोंके दरवाजासें २१ जोजन गुफाके अन्दर जावे तब उगमजाल नदी आवे वह तीन जोजनका विस्तारमें पाणी वह रहा है उन्हीके अन्दर कीसी प्रकारका पदार्थ-कष्ट, कचरा, कलेवर पडजावे तो उन्हीकों तीन दफे इदर उदर भमाके वाहार फेंकदे इसी वास्ते उगमजला नाम है वहासे दो जोजन आगे जानेपर निगमजला नदी तीन जोजनके विस्तारवाली जिस्के अन्दर कोइ भी पदार्थ पडे तो उन्हीकों तीन उच्छाला देके नदीके अन्दर रखलेने वास्ते निगमजला नाम दीया है वहासें २१ जो० जानेपर तमस्गुफके उतरका दरवाजा आजाता है। परन्तु महानिदे चेत्रके ३२ वैताड्यके वाहार जीना धनुपपीष्ट नहीं है केहना वह पलकके सम्थान है। लना विजयवत्।

(३) शोलावस्कार पर्वत–चित्र, विचित्र, निलन, एक शेल, त्रिकुट, वैसमण, अञ्जन, मयाञ्जन, अकावाड, पत्रमावाड, आसीविप, सुहावह, चन्द्र, सूर्य, नाग, देव एव १६ पर्वत १६५९२ जो० २ कलाके लम्बा है पाचमो पाचसो जो० पहूला निस्तार है निषेड निलवन्तपर्वतोंके पासमें च्यारसो जोजनका उंचा और ४०० गाउका घरतीमें हे वहासें चढते चढते सीता सीतोंदा नदीयोंके पासमें उचा पाचमो पाचसो जोजनका और ५०० पाचसो गाउका घरतीमें है। १६ वस्कारपर्वत अश्वके स्कन्धके आकार है

(६) रूपेढारपर्वत यत्रसें देखो.

(१५) तीगच्छद्रह–निपेडपर्वत उपर मध्यभागमें तीगच्छनामा द्रह ४००० जो० लम्बो २००० जो० चोडो दश जोजनका उडा है कमल भुवन वहापर घृतिदेवीका है ई देवीसे दुगुण परिमाणवाला समझना इसी माफीक निलवन्तपर्वतपर केशरीद्रह भी समझना परन्तु वह कीर्तिदेवीका कमलभुवन समझना तथा युगलक्षेत्रका दश द्रहके नामवाले देवता मालिक है सव देवदेवीयोंकी एक पल्योपमकि स्थिति है औ राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें समझना शोला द्रहका सर्व कमल १६२८०१६२० कमल सर्व रत्नमय है इति.

द्रह नाम.	पर्वत उपर.	लम्बा.	चोडा.	उडा.	देवी.
पद्मद्रह	चुलहेम०	१०००	५००	१०	श्रीदेवी
महापद्म ,,	महाहेम०	२०००	१०००	१०	लच्मि
तीगच्छ ,,	निपेड	४०००	२०००	१०	घृति
केशरी ,,	निलवन्त	४०००	२०००	१०	बुद्धि
महापुंडरिक,,	रूपि	२०००	१०००	१०	ई
पुंडरिक ,,	सीखरी	१०००	५००	१०	कीर्ती
दशद्रह ,,	जमनीपर	१०००	५००	१०	देवता

(१०) नदीद्वार–जम्बुद्विपमें १४५६०६० नदी है जि चुलहेमवन्तपर्वत उपर पद्मद्रह है उन्ही द्रहसे तीन नदी नीच

पर्वत	उचा	धरतीमे	पहूलपणो	वाहा	जीवा	धनुप०
चूलहेमवन्त और सीखरी	१०० जोजन	२५ जो०	१०५२ जो १२ कला	५३५० जो १५ कला	२४९३२ जो ०॥ कला	२५२३० जो० ४ कला
महाहेमवन्त और रूपि	२०० जो०	५० जो०	४२१० जो १० कला	९२७६ जो ९ कला	५३९३१ जो ६ कला	५७२९३ जो० १० कला
निपेड और निलवन्त	४०० जो०	१०० जो०	१६८४२जो २ कला	२०१६५ जो २ कला	९४१५६ जो २ कला	१२४३४६ जो ९ कला

(४) गजदन्ता पर्वत च्यार—गधमदर्न, मालवन्त विद्युत्प्रभा और सुमानस एव ४ गजदन्ता निपड निलनन्त पर्नत के पास च्यारों पर्वत च्यार च्यारसो जोजनका उचा और सोसो जोजनका धरतीमे उडा तथा पाच पाचसो जोजनका पहूला वहासे क्रम.सर हस्तीके दन्त कि माफीक उचापणे वढते वढते और पहूलपणे कम होते हूवे मेरू पर्वतके पास आते हूवे पाचसो पाचसो जोजनके उचो और मगासे समासे जोजन के धरतीमें ३० और पहूलपणे अगलके असख्यातमेभाग रहा

जिस्में प्रथम गगानदी–पद्मद्रहके पूर्वदिशाका तोरणसे पूर्व-
शामें ५०० जोजन चुलहेमवन्तपर्वतके उपर गइ वह गगा
तनकुट है उन्हीसे टकर खानी हूइ ५२३ जो० ३ कला
क्षिणदिशा पर्वत उपर गइ वहासे जेसे घटके मुखसे जोरसे
ाणी न पडता हो या तुटे हूवे मोतीयोंका हारकी माफीक
गरमन्डके मुहके आकार जिह्वासे साधिक १०० जो० उपरसे
गगप्रभासानामा कुटमें पाणी पडरहा है वह जिह्वा आदा जोजन
ा लम्बी और सवाछे जोजनकी पहुली ह विकसा हूवे मगर
ठके मुहके सम्थान है सर्व वज्र रत्नमय अच्छी सुन्दर आका
ाली है जिह्वा–नालिकाको केहते है। चुलहेमवन्तपर्वतपर
द्रहसे गगानदी गगाप्रभामकुडके अन्दर पडती है वॉह गगा
ासकुड ६० जोजन लम्बो पहलो १० जो० उढो है जिस्की
मय उपकठा वज्र पाषाणमय तलो है, मुखसे अन्दर जाणके
ा निवढ प्रकारके रत्नकरा बन्धा हवा है सुवर्णका मध्यभाग,
की वेलुरेत पात्थरी हुइ है गभीर शीतल जलसे भरा हूवा
अनेक कमलोंके पत्रसे आच्छादित है बहुतसे कमल उत्पल
ल पद्म० नलिनकुमुद० शतपत्र० सहस्रपत्रादि कमल उन्ही
प्रभासकुडके तीन दरवाजा है पूर्वदिशा दक्षिणदिशा
मदिशा तीनों दरवाजाके आगे पगोतीया है उन्होंको
का भाग रिष्टरत्नमय वैडूर्यरत्नमय स्थाभा सुवर्ण रुपाका
या लोहीताक्ष रत्नोसें पाटीयोंकि सन्धी जोडी हूइ है

(५) थृतल वैताढ्य—मदावाइ वयडावाइ गन्धावाइ ालयन्ता यह च्यार पर्वत १००० जो० उचा २५० जो० रतीमें तीनगुणी साधिक परद्धि है धानकी पायलीके आकार क हजार जों० पहूला विस्तारवाले है ।

(६) चितविचित जमग समग गह च्यार पर्वत देव-रू उत्तरवरू युगल क्षेत्रमे निपंड निलवन्तसे ८३४ जो० और एक जोजनका सात भाग करना उन्होंसे च्यार भाग दुरे है। यह १००० जो० उचा और २५० जो० धरतीमें उंडे है मूलमे १००० जो० पहूला-विस्तारवाला है मध्य ७५० जो० उपरसे ५०० जोजन विस्तारवाला है.

(७) मेरूपर्वत—मेरूपर्वत जम्बुद्विपके मध्य भागमे है यह एक लक्ष जोजनका है जिस्मे १००० जोंजन धरतिमे और ६६००० जो० धरतीसे उपर है मूलमे पहूलो १००६० जो० एक जोजनका इग्यारी या दश भाग है। धरतिपर दश हजार जोजन विस्तारवाला है उपर इग्यारे जोजन के पीछे एक जोजन कम होते कम होते मेरू के सीखरपर एक हजार जोजन के विस्तावाला है सब जगा तीनगुणी जाझेरी परदि है मेरूपर्वतके चौतर्फ एक पद्मवर वेदीका और एक वनखंड है यह वर्णन करने योग्य है। मेरूपर्वत के च्यार वन है यथ (१) भद्रशालवन (२) नन्दनवन (३) सुमानसवन (४) पडकवन.

वज्ररत्नोंका खीला है मणिरत्नका आलम्बन (हाथ पकडनेका
पागोतीयेंके उपर प्रत्यक प्रत्यक तोरण है वह तोरण अने
मणि मौक्ताफलहार आदि अनेक भूषण तथा चित्र कर सुन्द
है उन्ही गगाप्रभासकुडके मध्यभागमें एक गंगाद्विपनामक
द्विपा है। वह आठ जोजन लम्बा पहूला है दो कोश पाणि
उचा है। सर्व वज्र रत्नमय अच्छो सुन्दर है। उन्ही द्विपक
मध्यभाग पाच प्रकारके मणिसे मृदु स्पर्शवाला है उन्ही
मध्यभागमें गगादेवीका एक भुवन है वह एक कोषका लम्
आदा कोशका पहूला देशोना एक कोशका उचा है अने
स्थाभापुतलीयों मौक्ताफलकी मालावों यावत् श्रीदेवीना भुव
माफीक मनोहर है वहा गगादेवी सपरिवार पूर्व किये
सुकृतके फल भोगवती हुइ विचरे है कुडका या द्विपका
देवीका नाम सास्वता है अगर वह देवी चवतो दुसरी दे
उत्पन्न हूवे परन्तु नाम तो वहा ही गगादेवी रहेता है।

गगाप्रभासकुडका दक्षिणके दरवाजेमें गगानदी निक
हूइ उत्तर भरतक्षेत्रसे अन्य (छोटी) ७००० नदीयोंको स
लेती हूइ वैताड्यपर्वतकी खडप्रभागुफाके निचेसे दक्षिणभर
आती हूइ वहासे ७००० नदीयो अर्थात् सर्व १४००० न
योंको साथमें लेके जम्बुद्विपकी जगतिको भेदती हूइ पू
लवणसमुद्रमें जा-मीली है इसी माफीक सिधुनामा नदी

(१) भद्रशालवन—मेरूपर्वतके चौतर्फ धरति उपर पूर्व पश्चिम २२००० बावीस हजार जोजन और उत्तर दक्षिण अढाइसो २५० जोजनका है एक वनखड एक वेदीका चौतर्फ है श्यामप्रभाकर अच्छा शोभनिक है। मेरूपर्वत के पूर्व दिशा तर्फ भद्रशालवनमे ५० जोजन जावे तब एक सिद्धायतन (जिनमन्दिर) आवे वह ५० जो० लम्बो २५ जो० चोडा ३६ जो० उचा अनेक स्थभा पुतलीयों आदिसे सुशोभीत हैं उन्ही सिद्धायतन के तीन दरवाजा है। वह आठ जोजनका उचा और च्यार जोजनका चोडा जीसपर सुपेत गुमटकर सोभायमान है उन्ही सिद्धायतन के मध्य भागमे एक मणि पीट चौतरो ८ जो० लम्बो चोड। च्यार जो० जाडो सर्व रत्नमय है। उन्ही चौतराके उपर एक देवच्छादो (जहा जिन प्रतिमा वीराजमान हे उन्ही को मूल गुभारा भी कहा जाते है) वह ८ जो० लम्बा चौडा—साधिक आठ जो० उचा उचपणे है वर्णन करने योग्य है उन्ही के अन्दर त्रिलोक्य पूजनीक तीर्थकर भगवान कि प्रतिमानों पद्मासन विराजमान है यावत् धूपके कुडचे आदि रहे हूवे है। एव दक्षिण एव पश्चिम एव उत्तर अर्थात् च्यारों दिशामें च्यार जिन मन्दिर पूर्ववत् समझना। मेरूपर्वत से इशान कोनमे भद्रशाल वनमे जावे तब च्यार नन्दा पुष्करणि वावी आति है पद्मा पद्मप्रभा, कुमुदा कुमुदप्रभा वह वावी ५० जो० लम्बी २५

चुलहेमवन्तपर्वतका पद्मद्रहके पश्चिम तर्फसे निकली सिंधुप्रभा-कुडमें होके पूर्ववत् १४००० नदीयोंका परिवारसे पश्चिमके लवणसमुद्रमें परन्तु यहां तमसप्रभागुफाके निचासे तथा कुडका नाम सिंधुकुड तथा सिंधुदेवीका भुवन समझना एव दोनों नदीयोंका परिवार २८००० नदीयों है। यह पर्वतपर निकलती थ्यादा जोजनकि उडी और ६। जोजनकी विस्तारवाली थी पीछे क्रमसर वढते वढते जहां लवणसमुद्रमें मीली है महापर पाच गाउकी उढी और ६२ । जो० विस्तारवाली हूइ थी

चुलहेमवन्तपर्वतके पद्मद्रहके उत्तरके तोरणसे रोहीता नामकी नदी नीकलके रोहीतप्रभासनामा कुडमें पडती है यह नदी हेमवय युगलचेत्रमें गइ है अधिकार गगानदीके माफीक परन्तु नीकलती एक गाउकी उढी १२॥ जोजनका निस्तार वाली है तथा रोहीतप्रभासकुडका निस्तार दुगुण १२० जोजनका समझना जहा लवणसमुद्र पासे १० गाउकी उढी १२५ जोजन निस्तारवाली है इसी माफीक महाहेमवन्तपर्वतपर यहा पद्मद्रहसे रोहीतमानदी हेमवय युगलचेत्रमें आइ है परिमाण पूर्वे रोहीता० माफीक इन्ही दोनों नदीयोंके २८००० नदीयोंका परिवार समझना । एव ५६०००

महाहेमवन्तपर्वतका महापद्मद्रहका उत्तरका तोरणसे हरिकन्तानदी हरिवास युगलचेत्रमें गइ है यह निकलतीं २

ो० चोडी १० जो० उठी वेदिका वनखंड तोरणादि करी
ायुक्त है उन्ही च्यार वावीयों के मध्य भागमे इशानेन्द्रका
ाधान प्रासाद (म्हल) है वह प्रासाद ५०० जो० उचा
१५० जो० विस्तारवाला है यावत् सपरिवार के आसन सहित
है। एव अग्निकोनमें भी च्यार वावी है उत्पला, गुम्मा निलना
उज्वला पूर्ववत् परन्तु इन्ही वावी के मध्य भागमे शकेन्द्रका
प्रासीद है एव वायुकोनमे च्यार वावी है लिंगा भिंगनाभा अञ्जना
अञ्जनप्रभा-मध्यमे शकेन्द्रका प्रासाद सिंहासन सपरिवार
समझना एव नैऋतकोनमे च्यार वावी श्रीकन्ता श्रीचन्दा
श्रीमहीता श्रीनलीता-मध्यभागमें प्रासाद इशानेन्द्रका समझना
वावी-वावी के अन्तरामे जो० खुली जमीन है उन्हीं के उपर
इन्द्रोंका प्रासाद है। भद्रशालवनमे आठ विदिशावोंमे आठ
हस्तिकुट है वह १२५ जो० धरतीमे ५०० जो० धरतीसे उचा
है मूलमे पाचसो जो० मध्यमे ३७५ जो० उपर २५० जो०
विस्तारवाला है तीनगुणी झाझेरी परद्धि है। पद्मुत्तर, निल-
वन्त, सुहस्ति, अञ्जन गिरि, कुमुद, पोलास, विढिस, रोयण-
गिरि, इन्ही आठ कुटोंपर कुटकेनाम देवता ओर देवतोंका
भुवन रत्नमय है, उन्ही देवोंकी राजधानी आपनी अपनि
दिशासे अन्य जम्बुद्विपमे जानापर आति है विजय देववत्
समझना भद्रशालवन वृक्ष गुच्छा गुमावेली तृण कर शोभाय-

गाउ उढी २५ जोजन निस्तारवाली हरिक्रन्तकुंड २४० जोज-
नकों परिवार ५६००० शेप अधिकार गंगानदी माफीक
समझना और निपेडपर्वतपर तीगन्छद्रहसे हरिसलीलानदी
हरिवाम युगलक्षेत्रमें आइ है परिमाणादि सर्व हरिकन्तवत्
परन्तु कुडका नाम हरिसलीला है.

निपेडपर्वतपर तीगन्छद्रहके उत्तरके तोरणसे सीताना-
मकी नदी एक जोजनकी उढी ५० विस्तारवाली सीताकुड
४८० जोजनका है उन्हीके अन्दर आती हूइ देवकूरू युगल
क्षेत्रका दो विभाग करती हूइ पाच द्रहको भेदती हूइ देवकूरसे
८४००० नदीयों साथ लेती हूइ मेरुपर्वतके पास होके भद्रशा-
लवनका दो विभाग करती हूइ पश्चिम महाविदहका मध्यभागमें
चलती हूइ चक्रवरतकी १६ विजयके प्रत्यक विजयकि गगा
और सिंधुनदीयों सपरिवार अर्थात् चौदा चौदा हजार नदी
योंका परिवारसे गंगासिंधु नदीयों सीतानदीमें मीलती हूइ सर्व
५३२००० नदीयोंका परिवारसे पश्चिममें मुडकर लवणसमुद्र
में जा-मीली है ।

एव निलवन्तपर्वतपर केशरीद्रहसें सीतोदानदी उत्तरकू
युगलक्षेत्रके पूर्ववत् ८४००० नदीयोंसे पूर्व महाविदहमें पूर्वव
कुल ५३२००० नदीयोंके साथमें पूर्व मुडकर लवणसमुद्र
जा-मीली है सीतावत् जेमे दक्षिणकी तर्फसे केहते आये
इसी माफीक उत्तरकी तर्फ भी समझना ।

मान है बहुतसे देवता देवी विद्याधरादि आते है पूर्व संचित सुभ फलकों भोगवते हूवे विचरे है।

(२) नन्दनवन-भद्रशालवनकी संभूमिसें ५०० जोजन उचा मेरुपर्वतपर जावे वहाँ गोल वलीयाकार नन्दनवन आवे वह पाचसो जो० विस्तारवाला है मेरुपर्वतको चौतर्फ वीटा हूवा है अर्थात् वहापर मेरुपर्वतकी एक मेखला निकली हूइ है उन्होके उपर नन्दनवन है। वेदिकावन खंड च्यार जिन-मन्दिर १६ वावी ४ प्रासाद शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका पूर्वभद्र शालवनवत् समझना और नन्दनवनमें ६ कुट है नन्दनवन-कुट, मेरुकुट, निषेढकुट, हेमवन्त० रजीतकु० रूचित० सागर-चित० वज्र० बलकुट जिस्में आठ कुट पाचसो पाचसो जो० उचा यावत् आठो कुटपर आठ देवीका भुवन है मेघकरा, मेघवती, सुमेघा, हेममालनिदेवी, सुवच्छादेवी, वच्छमित्रादेवी, बज्रसेनादेवी, वलहकादेवी, आठों देवीयोंकि स्थिति एक पल्योपमकी है राजधानी अपनी अपनी दिशा तर्फ अन्य जम्बुद्विपमें समझना। बलकुट १००० जो० उचा है मूलम १००० मध्यमें ७५० उपरसें ५०० जो० विस्तारवाला है तीनगुणी साधिक परद्धि है बलदेवता राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें है शेषभद्रशालवनवत् यावत् अच्छा सुन्दर है। देवदेवी आनन्द करते है

निलवन्तपर्वतके केशरीद्रहके उत्तरके तोरणसे नरकन्ता और रुपीपर्वतके महापुडरिकद्रहके दक्षिणका तोरणसें नारीकन्ता यह दोनों नदीयों रम्यक्नाम युगलक्षेत्रमें कुड और देवीका नाम नदी माफीक विस्तार परिवार देखो यन्त्रसें

रुपीपर्वतपर महापुडरिकद्रहके उत्तरके तोरणसे रुपकुल नदी और सिखरीपर्वतपर पुडरिकद्रहका दक्षिणका तोरणसे स्वर्णकुलानदी यह दोनों नदी एरणवय युगलक्षेत्रमें गइ है परिवारादि देखो यन्त्रसे

सिखरीपर्वतपर पुडरिकद्रहके पूर्व और पश्चिम तोरणमे रक्ता रक्तवति यह दो नदीयों एरवरतक्षेत्रमें गगा सिन्धुवद् चौदा चौदा हजार नदीयोंके परिवारसे लवणसमुद्रमें प्रवेश कीया है नदीके माफीक कुडका या देवीयोंका नाम समझना कुड या भुवनका अधिकार गगादेवी माफीक है

कोष्टक सकेत सूचिना —

नि० उ०—निकलतो उढी प्र० उ०—समुद्रमें प्रवेश होतो उढी.
नि० वि०—निकलतो विस्तार प्र० उ०—समुद्रमें प्रवेश होतो विस्तार.

(३) सुमानसवन–नन्दनवनके तलासे ६२५०० जोजन उर्ध्व जावे तब सुमानस नामका वन आवे। वह पाचसो जोजन के विस्तारवाला मेरूपर्वतको चौतर्फ वींट रखा है वेदीकावन खड च्यार जिनमन्दिर १६ वावी शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका ४ प्रासाद पूर्ववत् समझना यावत् देवतादेवी आते हैं.

(४) पडकवन–सुमानसवनमे ३६००० जोजन उर्ध्व जावे तब मेरूपर्वतके शिखर उपर पडकवन आता है ४६४ जो० चक्रवाल चुडी आकार मेरूपर्वतकी चुलका (१२ जोजन) कों चौतर्फ वींटरखा है। वेदीकावन खड च्यार जिनमन्दिर १६ वावी शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका च्यार प्रासाद पूर्ववत् समझना। पडकवनके मध्यभागमें मेरूचुलका है वह ४० जोजनकी उची है मूलमें १२ मध्यमें ८ उपरने ४ जोजन विस्तारवाली है साधिक तीनगुणी परद्धि। सर्व वैडूर्य रत्नमय है। एक वेदिका वनखडमे वींटी हुइ है। उसका दलों मणिजटित है मध्यभागमें एक सिद्धायतन एक गाउका लम्बा आदा गाउका चोडा देशोना गाउका उचा अनेक स्थमसे शोभनीक है मध्य मणिपीट देवच्छदा और १०८ जिनप्रतिमाओं यावत् धूपकुडछा आदि। देवतादेवी वहांपर आते है या लब्धिधरमुनि भी जाते हैं त्रिलोक्य पूजनीक तीर्थंकरोंकी सेवाभक्ति करते है.

पडकवनमे च्यार दिशावोंमें च्यार अभिशेष

नं	नदी	पर्वतसे	द्रहसे	नि० उ०	नि० वि०	प्र० उ०	प्र. वि.	परिवार
१	गगनदी	चुलहेम	पद्म	०॥ गाउ	६। जो०	१।जो०	६२॥	१४०००
२	सिन्धु ,,	,,	,,	,,	,,	,,	जोजन	१४०००
३	रोहिता ,,	,,	,,	१ गाउ	१२॥ जो	२॥जो.	१२५	२८०००
४	रोहितसा ,,	महाहेम०	महापद्म	,,	,,	,,	जोजन	२८०००
५	हरिकन्ता ,,	,,	,,	२ याउ	२५ जो	५ जो०	२५०	५६००७
६	हरिशलीला	निषेड	तीगन्छ	,,	,,	,,	जोजन	५६०००
७	सीता ,,	,,	,,	४ गाउ	५ जो.	१०जो.	५००	५३२०००
८	सीतोदा ,,	निलवन्त	केशरी	,,	,,	,,	जोजन	५३२०००
९	नरकन्ता ,,	,,	,,	२ गाउ	२५ जो.	५ जो०	२५०	५६०००
१०	नारिकन्ता	रुपि०	महापुड०	,,	,,	,,	जोजन	५६०००
११	रुपकुला	,,	,,	१ गाउ	१२॥ जो	२॥जो.	१२५	२८ा००
१२	सुवर्णकुला	सिखरी	पुडरिक	,,	,,	,,	जोजन	२८०००
१३	रक्ता ,,	,,	,,	०॥ गाउ	६। जो	१।जो०	६२॥	१४०००
१४	रक्तवन्ती	,,	,,	,,	,,	,,	जोजन	१४०००
७८	विदेहकी ६४ ,,	कुडोंसे	धरतिपर	,,	,,	,,	,,	१४०००

है जिन्होंकों उपर तीर्थंकर भगवान्का जन्माभिशेप इन्द्रमहाराज करते है। उन्होंके नाम-पडूशीला, पडूकनलशीला, रत्नशीला, रत्नकंबलशीला वह शीलाओं पाचसो जोजन लम्बी अढाइसो जो० चोडी च्यार जो० जाडी है अर्धचन्द्रके आकार मर्ने कनकमय अच्छी सुन्दर है। वेदिकावन खडादिसे सुशोभित है। उन्ही शीलाओंके च्यारो तर्फ अच्छा पागोतीया उन्होंके उपर तोर णादिसे और शीलावोंके उपरका तला अच्छा साफ है निम्में पूर्वपश्चम शीलावोंके उपर दो दो सींहासन ५०० धनुषका लम्बा २५० धनु० चोडा जिसपर विदेहक्षेत्रके तीर्थंकरोंका जन्माभिशेप जो भुवनपति व्यंतर जोतीपी और वैमानीकदेवता करते है और उत्तरदक्षिणकी शीलापर एकेक सींहासन है उन्हीं उपर तीर्थंकरोंका जन्माभिशेप पूर्ववत् च्यार निकायके देवता करते है

मेरूपर्वतके तीन करड है (१) हेठेका (२) मध्यमका (३) उपरका जिस्में हेठला करड १००० जो० धरतीमें है जिस्में २५० जो० पृथ्वीमय २५० जो० पाषाणमय २५० जो० वज्रमय २५० जो० शार्करा पृथ्वीमय है। मध्यमका करड धरतीसे उपर ६३००० जोजनका है जिस्में १५७५० जो० रजतमय १५७५० जो० रूपामय १५७५० जो० स्फटक रत्नमय १५७५० जो० अंकरत्नमय है उपरका करड ३६०००

एव सर्व मीली १४५६००० नदीयों परिवारकी हूइ तथा यत्रमें १४-६४ मीलके ७८ मूल नदीयों हूइ

महाविदेहक्षेत्रके च्यार विभागमें ३२ चक्रवरतकि विजय है जिस्का २८ अन्तरोंमें १६ तो वस्कारपर्वत पेहले लिख आये है और १२ अन्तरमें बारह अन्तर नदी है यथा-गृहवन्ति, द्रहवन्ति, पकवन्ति, ततजला, मतजला, उगमजला, चीरोदा, सिंहसोता, अन्तोवहनि, उपिमालनि, फेनमालनि, गभीरमालनि ए १२ नदीयों प्रत्यक नदी १२५ जोजनकी चोडी है अढाइ जो० उढी है १६५६२ जोजन और दो कलाकि लम्बी है एव सर्व मीलके १४५६०६० नदीयों जम्बुद्विपमें है यह थोकडा सामान्य बुद्धिवाला सुखपूर्वक समझ शके वास्ते सचेपसें ही लिखा गया है विशेष विस्तारकि इच्छावालोंके लिये गुरुमहाराजकी विनयभक्ति कर जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीसूत्र श्रवण करना चाहिये इत्यलम् ।

॥ सेवभते सेवभते तमेव सच्चम् ॥

नो० जम्बुद्वीपा सुवर्णमय है एव तीन करड मीलाके १ लक्ष जो-
जन परिमाण मेरूपर्वत है मेरूपर्वतके १६ नाम है। मन्दिरमेरू,
मनोरम, सुदर्शन, सयप्रभ, गिरिराज, रत्नोचय, शिलोचय,
लोकमध्य, लोकनाभि, अवच्छर सूर्योवृतन, सूर्यावर्णे, उत्तम
दिशादि जिंमे इन्ही मेरूपर्वतका मन्दिर नामका देव एक
पल्योपमकि स्थितिवाला है वास्ते इन्हीका मन्दिर नाम दीया
है और देवादिकों आनन्दका घर है तथा सास्वता नाम है इति.

(५) कुटद्वार—जम्बुद्विपमे ५२५ कुंट हैं जिस्मे ४६७ कुंट पर्वतोपर है यथा—

१ चुलहेमवन्तपर्वतपर कुट ११
२ महाहेमवन्तपर्वतपर ,, ८
३ निषेडपर्वत पर ,, ९
४ निलवन्तपर्वत पर ,, ९
५ रूपिपर्वत पर ,. ८
६ सीखरीपर्वत पर ,, ११
७ चौंतीस वैताड्यपर्वत है प्रत्यक पर्वतपर नव नव कुट ३०६

८ शौलावस्कारपर्वत प्रत्यक पर्वत पर च्यार च्यार कुट ६४
९ विद्युत्प्रभा गजदन्ता पर ,, ९
१० मालवन्ता ,, ,, ,, ९
११ सुमानस ,, ,, ,, ७
१२ गन्धमाल ,, ,, ,, ७
१३ मेरुपर्वतका नन्दनवनमे आये हूवे कुट ९

एवं ४६७ तथा भद्रशालवनमे ८ हस्तिकुट है देवकुरूमे ८ उत्तरकुरूमें ८ एव २४ और ३४ चक्रवरत कि विजय में

शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध

भाग १४ वा.

थोकडा नं. १

सूत्र श्री जीवाभिगमसे

(लवणसमुद्राधिकार)

लवणसमुद्र—जम्बुद्विप एक लक्ष जोजनका है उन्हीके चौतर्फ वलीयाकार दो लक्ष जोजन विस्तारवाला लवणसमुद्र है जिनहोके अन्दर कि परद्वि जम्बुद्विपके परद्वि माफीक है और बाहार कि परद्वि १५८११३६ जोजन साधिक है लवणसमुद्रका पाणीका उढास जम्बुद्विप कि जगति (कोट) से ६५ जोजन लवणसमुद्रमें जावे तब एक जोजन उढा है पचाणवेमो ६५०० जोजन जगतिसे लवणसमुद्रमे जावे तब १०० जो० उढा तथा ६५००० जोजन जावे तब १००० जो० उढो आवे इसीमाफीक धातकि खण्डसे भि ६५००० जो० लवणसमुद्रमें आवे तो १००० जो० उढो आवे दोनों तर्फ से ६५०००-६५००० जो० आनासे मध्यमे १०००० जोजन लवणसमुद्र

तोरण ध्वज आदि चिन्होंमें सुन्दर है उन्ही भुवनके मध्यभागमें एक मणिपीट चौतरा है ५०० धनुप लम्बा २५० धनुप चोडा उन्ही चौतरा उपर एक देवशय्या है वह वर्णन करनेयोग है यावत् वहांपर श्रीदेवी अपने देवदेवीके साथ पूर्वउपार्जित शुभ फलोंका भोगवती हूइ आनन्दमें रेहती है। यह पद्मद्रहके वाहार एक पद्मवेदिका और एक वनखंड कर वीटा हूवा है शेषाधिकार नदीद्वारमें लिखेंगे इसी माफीक सीखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रह भी समझना परन्तु उन्हीके देवी लक्ष्मिदेवीका भुवन या कमल है इसी माफीक देवकूरु उत्तरकूरु युगल क्षेत्रोंमें १० द्रहका भी वर्णन समझना परन्तु उन्ही द्रहोंके वाहार वेदिका दो दो है कारण उन्ही द्रहोंमें सीता और सीतोदानदी वेदिकाकों भेदके द्रहमें आति है और वेदिकाकों भेदके द्रहसें निकलती है वास्ते वेदिका दो दो है शेप अधिकार पद्मद्रह माफीक समझना । १२ ।

(१३) महापद्मद्रह–महाहेमवन्तपर्वतके उपर मध्यभागमें २००० जो० लम्बा और १००० जो० चोडा दश जो० उंढा महापद्म नामका द्रह है उन्हींपर ह्रीं नामा देवीका कमल तथा भुवन है परन्तु कमलका मान दुगुणा समझना इसी माफीक रूपिपर्वतपर महापुंडरिकनामा द्रह है परन्तु उन्हीपर बुद्धिदेवीका कमल और भुवन ह्रीं देवी माफीक समझना । १४ ।

एव सर्व मीली १४५६००० नदीयों परिवारकी हुइ तथा यत्रमें १४-६४ मीलके ७८ मूल नदीयों हुइ

महाविदेहक्षेत्रके च्यार विभागमें ३२ चक्रवरतकि विजय है जिस्का २८ अन्तरोंमें १६ तो वस्कारपर्वत पेहले लिख आये है और १२ अन्तरमें बारह अन्तर नदी है यथा-गृहवन्ति, द्रहवन्ति, पकवन्ति, ततजला, मतजला, उगमजला, क्षीरोदा, सिंहसोता, अन्तोवहनि, उपिमालनि, फेनमालनि, गभीरमालनि यह १२ नदीयों प्रत्यक नदी १२५ जोजनकी चोडी है अढाइ जो० उढी है १६५६२ जोजन और दो कलाकि लम्बी है एव सर्व मीलके १४५६०६० नदीयों जम्बुद्विपमें है यह थोकडा सामान्य बुद्धिवाला सुखपूर्वक समझ शके वास्ते सक्षेपसें ही लिखा गया है विशेष विस्तारकि इच्छावालोंके लिये गुरुमहाराजकी विनयभक्ति कर जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीसूत्र श्रवण करना चाहिये इत्यलम् ।

॥ सेवभते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥

शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध

भाग १४ वा.

थोकडा नं. १

सूत्र श्री जीवाभिगमसे

(लवणसमुद्राधिकार)

लवणसमुद्र—जम्बुद्विप एक लक्ष जोजनका है उन्हीके चोतर्फ वलीयाकार दो लक्ष जोजन विस्तारवाला लवणसमुद्र है जिनहीके अन्दर कि परद्धि जम्बुद्विपके परद्धि माफीक है और बाहार कि परद्धि १५८११३६ जोजन साधिक है लवणसमुद्रका पाणीका उढास जम्बुद्विप कि जगति (कोट) से ६५ जोजन लवणसमुद्रमें जावे तब एक जोजन उढा है पचाणेसो ६५०० जोजन जगतिसे लवणसमुद्रमे जावे तब १०० जो० उंढा तथा ६५००० जोजन जावे तब १००० जो० उंढो आवे इसीमाफीक घातकि खंडसे भि ६५००० जो० लवणसमुद्रमें आवे तो १००० जो० उंढो आवे दोनों तर्फ से ६५०००-६५००० जो० आनासे मध्यमे १०००० जोजन

परिवारनदी	१४५६०००	२९१२०००	२९१२०००
द्रह	१६	३२	३२
वैताडपर्वत	३४	६८	६८
वटवैताड	४	८	८
वासा–चेत्र	७–१०	१४–२०	१४–२०
चन्द्रसपरिवार	२	१२	७२
सूर्यमपरिवार	२	१२	७२
तीर्थ	१०२	२०४	२०४
श्रेणी	६८	१३६	१३६
गुफा	६८	१३६	१३६
कुलपर्वत	२६९	५४०	५४०
कुलकुट	५२५	१०५०	१०५०
कुलसिद्धायतन	९१	१८२	१८२

मानोपोत्र पर्वतके बाहार जो आठलच परिमाण पुष्कर्द्ध चेत्र है वह मनुष्य सुन्य है अन्दरका पुष्कर्द्ध चेत्र कि नदीयोंका पाणी मानोपोत्र पर्वतकों भेदके बाहारका पुष्कर्द्धमे जाता है।

आगेके द्विपसमुद्रका नाम मात्र लिखा जाते हैं सर्व द्विपसमुद्रोंके च्यार च्यार दरवाजा है जम्बुद्रिपके जगति है

१००० जोजन उंढा है अर्थात् जम्बुद्विप कि जगतिसे चौतर्फ पचणवे पचाणवे हजार जोजन जानेपर चौतर्फ दश दश हजार जोजन लवणसमुद्र एक हजार जोजनका उंढा है वहासे पचणवे पचणवे हजार जोजन जानेपर घातकि खंड द्विप आता है। लवणसमुद्रके च्यारों दिशामे च्यार दरवाजा है वह जम्बुद्विप माफीक समझना।

लवणसमुद्रके मध्यभाग जो १०००० जोजनका गोल चक्राकार १००० जोजनके उंढस पाणी है उन्ही लवण समुद्रके मध्यभागमे च्यार पाताल कलशा है (१) पूर्वदिशामे वडवा मुख पातालकलशो (२) दक्षिणदिशामे केतुनामा पाताल कलशो (३) पश्चिमदिशामे जेपु (४) उत्तरदिशामें इश्वर पाताल कलशो। यह च्यारो कलसा लक्ष लक्ष जोजन परिमाण लम्बा है मध्यभागमे लक्ष जोजन विस्तारवाला है कलशोका अधोभाग तथा उपरका मुख दश दश हजार जोजनका है उपर कि ठीकरी एक हजार जोजन कि जाडी है कलशोंका मुखपर हजार हजार जोजन लवण समुद्रका पाणी है। एकेक कलशाके बिचमे अन्तर २१६२६५ जोजनका है उन्ही प्रत्येक अन्तरामे १९२१ छोटे कलशा है च्यारो अन्तरोंमे ७८८४ छोटे कलशा है कारण एकेक अन्तरामे कलशोंकी नव नव श्रेणि है उन्ही श्रेणिमे कलशा २१५-२१६-२१७-२१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३ एवं नव श्रेणिका १९७१ कलसा है च्यारो

शेप द्विपसमुद्रोंके वेदिका ओर नखड है परिमाण तथा चन्द्र सूर्य यत्रमे लिखते है जीतना चन्द्र है इतना ही सूर्य है एकेक चन्द्र सूर्यका परिवारमे २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६६७५ कोडा कोड तारोंका परिवार समझ लेना।

अढाइद्विपके बाहार जोतीषीयों की चाल नही है मनुष्यका जन्म मृत्यु नही गाज निज नर्पाद बादर अग्नि भी नहीं है।

नाम	विस्तारपणो	चन्द्रसूर्य
जम्बुद्विप	१ लक्ष जोजन	२
लवणसमुद्र	२ ,, ,,	४
धातकिखंड	४ ,, ,,	१२
कालोदद्धिसमुद्र	८ ,, ,,	४२
पुष्करद्विप	१६ ,, ,,	१४४
पुष्करसमुद्र	३२ ,, ,,	४६२
वारुणि द्विप	६४ ,, ,,	१६८०
,, समुद्र	१२८ ,, ,,	५७३६
क्षीर द्विप	२५६ ,, ,,	१९५८४
,, समुद्र	५१२ ,, ,,	६६८६४

अन्तराके ७८८४ कलशा होता है यह सर्व छोटा कलशा एक हजार जोजनका लम्बा और मध्यभागमे १००० विस्तार तथा थोघो भाग या मुख सो सो जोजनका और दश जोजनकी उपर ठीकरी है एवं सर्व ७८८८ कलशा है । उन्ही कलशोके तीन तीन भाग करना जिस्मे निचेके ती भागमे वायु ह मध्यके ती भागमे वायु और पाणी है उपरके ती भागमे पाणी है । जो निचेका भागमे वायु है वह वैक्रय शरीर करे उन्ही समय उपरका पाणी उन्छलने लग जात है यह प्रत्य- दिनमे दो वरत पाणी उन्छा ला देता है.

तब लवणसमुद्रकि वेल (दगमाला) का पाणी उच्छलता है परन्तु तीर्थंकर चक्रवरतादि पुन्यवानोंका प्रभावसे एक बुद भी निचि नहीं गिरती है अथवा यह लोकस्थिति है साम्वता भाव वर्तते है और च्यार पातालकलशोंका अधिपति च्यार देवता है कालदेव, महाकालदेव वेलवदेव, प्रभजनदेव एक पल्योपमकि स्थिति तथा ७८८४ कलशोंका देवतोंकी आधा पल्योपमकि स्थिति है । इति पातालकलशा ।

लवणसमुद्रमें पाणिका दगमाला १०००० जो० चोडा विस्तारवाला १००० जो० उंडा है १६००० जो० का उचा है सर्व १७००० जो० का है । जब पाणि उन्छलता है तब दो कोश उची सीखा आ-जाती है ।

लवणसमुद्रके मध्यभाग अर्थात् दोनां तर्फ ९५००० ।

घृत द्विप	१०२४ ,,	,,	२८८२८८
,, समुद्र	२०४८ ,,	,,	७७६४२४
इक्षु द्विप	४०६६ ,,	,,	२६६११२०
,, समुद्र	८१६२ ,,	,,	६०८५६३२

इति सात द्विप सात समुद्र ।

सेवंभते सेवंभते तमेव सचम् ॥

थोकडा नम्बर ३

(सूत्र श्री जीवाभिगम प्र० ३)

(नन्दीश्वर द्विप)

इक्षुसमुद्रके चौतर्फ गोल वलीयाके आकारे नन्दीश्वर द्विप है वह १६३८४०००००० जोजनके विस्तारवाला है साधिक तीनगुण पराद्धि है । नन्दीश्वर द्विपका भूमिविभाग अच्छा सुन्दर देवोंका मनकों हरनेवाला है द्विपके मध्यभागमें च्यार पर्वत श्यामवर्णका अञ्जनगिरि पर्वत है पूर्वदिगामें पूर्वाञ्जगिरि। दक्षिणदिशामें दक्षिणाञ्जनगिरि । पश्चिमदिशामें पश्चिमाञ्जन

९५ ०० जोजन छोडदेनेपर मध्यभागमें १०००० जोजन लवणसमुद्रका पाणी उर्ध्व भीतकि माफीक ६००० जोजन उचा चला गया है और १००० जो० निचा उडा है उन्हीं पाणीका जम्बुद्विपकि तर्फसे हाथमें चाटु लिये हूवे ४२००० देवता और दगमालके उपर ६०००० देवता तथा धातकि खण्डकि तर्फसे ७२००० देवता पाणीकों धरा रहा है। एवं १७४००० देवता पाणीकों धरा रहा है। इन्ही देवतोंकों वेलन्धर देव भी कहा जाता है कारण यह देव पाणीकी वेलकों धरनेवाला है तथा इन्ही दगमालाकों गोतीत्थ भी कहेते है।

उक्त वेलन्धर देवतोंका आवासपर्वत-जम्बुद्विपकी जगतिसे ४२००० जोजन च्यारो दिश लवणसमुद्रमें जावें तब पूर्व दिशमें गोथुभ-दक्षिणमें दगाभास-पश्चिममें सख-उत्तरमें दगसीमा एव च्यार पर्वत च्यारों दिशोमें है इशानकोनमे कर्केटिक-अग्निकोनमे विद्युत्प्रभा-नैऋतकोनमे कलाश-वायुकोनमे अरूणप्रभ एव च्यार पर्वत च्यारों कोनोंमे है एवं ८ पर्वत उचा १७२१ जोजन मूल पहुला १०२२ जोजन मध्यमे ७२३ जो और सीखरपर ४२४ जोजन विस्तारवाला है एकेक पर्वत के अन्तरो ७२११४$_{\frac{}{१३}}$ है रत्न और कनकमय सर्व पर्वत है च्यार दिशाका च्यारों पर्वत वेलन्धर देवोंका है गोथभदेव, शिवदेव, सखदेव, मणोशीलदेव, इन्होंकी एक पल्योपमकि स्थिति है और विदिशाके पर्वतके नामका देव पल्योपम कि

१२४ जिनप्रतिमावों है जेसे यह एक अञ्जन गिरिपर एक मन्दिर कहा है इसी माफीक च्यारो अञ्जनगिरिपर च्यार मन्दिर समझना सर्व पदार्थ रत्नमय वडा ही मनोहर है ।

प्रत्यक अजनगिरिपर्वत के च्यारों दिशामे च्यार च्यार वावी है वह वावी एक लक्ष जोजन लम्बी पचास हजार जो॰ चोडी ओर हजार जोजन कि उडी है पागोतीया तोरणादिसे सुशोभनिक है उन्ही वावी के अन्दर एकेक दद्धिमुख पर्वत है वह पर्वत १००० जो० उडा है ६४००० उचा है दश हजार जोजन मूलसे ले के सीखरतक पहूला विस्तारवाला है पलक सस्थान है । एव च्यार अञ्जनगिरिके चौतर्फ १६ वावीयों है उन्ही के अन्दर १६ दाधिमुखापर्वत ओर १६ पर्वतोंके उपर १६ जिनमदिर है उन्होका वर्णन अञ्जनगिरि पर्वतोंके उपरका मन्दिर माफीक समझना

स्थानायांग वृतिमें प्रत्यक वावी के अन्तरे में दोदो कनकगिरि है एव १६ वावीयों के अतरामे ३२ कनकगिरि अर्थात् सुवर्णमय १०० जोजनका उचा पलक सस्थान पर्वत है प्रत्य कनकगिरि के उपर एकेक जिनमन्दिर अञ्जनगिरि माफिक है एव च्यार अञ्जनगिरि १६ दद्धिमुखा ३२ कनक गिरि मीलके ५२ पर्वतोंके उपर बावन जिनमन्दिर है ।

स्थितिवाले अनुवेलन्धर देवोंका पर्वत है इन्ही आठों पर्वतोंपर वेलन्धरानुवेलन्धर नागराजा देवोंका आवास प्रासाद है सर्व रत्नमय देवतोंके योग्य वह प्रासाद ६२॥ जो उचा ३१। जो. का चोडा अनेक स्थम कर अच्छा सुन्दर है। इति।

लवनसमुद्रमे छपनान्तरद्विप है उन्हों के अन्दर पल्योपम के असख्यात भागके आयुष्यवाला ओर ८०० धनुष्यकि आवगहानावाले युगल मनुष्य रहेते है जम्बुद्विपके चुलहेमवन्त ओर सीखरी पर्वत के निश्राय (सामिपमे) लवणसमुद्रमें दोडोके आकार टापुवों कि लेन गइ है जेसे जम्बुद्विप कि जगतिसे ३०० जोजन लवणसमुद्रमें जावे तब पेहला द्विपा ३०० जोजनका विस्तारवाला आता है उन्ही द्विपामे ४०० जोजन तथा जगतिसे भि ४०० जो० जानेपरे दुसरा द्विपा ४०० जोजनके विस्तारवाला आता है। उन्ही द्विपासे ५०० जोजन तथा जगतिसे भी ५०० जोजन जानेपर तीसरा द्विपा ५०० जो० के विस्तारवाला आता है उन्ही द्विपासे या जगतिसे ६०० जोजन जानेपर चोथो ६०० जो० विस्तारवाला द्विप आता है। उन्ही द्विपसे या जगतिसे ७०० जो० जानेपर ७०० जो० विस्तारवाला पाचवा द्विप आता है उन्ही द्विपसे या जगतिसे ८०० जो० जानेपर ८०० जो० विस्तारवाला छठा द्विप आते है उन्ही द्विपसे या जगतिसे ९०० जो० जानेपर ९०० जो० विस्तारवाला सातवा द्विप आता है सर्व लवणस-

च्यार अञ्जनगिरि के अन्तरामे च्यार रतिगीरापर्वत है वह अढाइसो जोजन धरतिमे १००० जों० उचा सर्व स्थान हजार जोजन पहूला पलीक संस्थान है प्रत्यक रतीगीरापर्वत के च्यारों दिशामें च्यार च्यार राजधानीयों एव १६, राजधानी है वह प्रत्यक राजधानी १००००० जो० के विस्तारवाली है ३१६२२७।३।१२८।१३॥–१–१–१–६ भाझेरी परद्धि है यावत् राजधानीका वर्णन माफीक समझना जिस्मे इशान और नैऋत्यकोन रतीगीराके ८ राजधानीयों तो शक्रेन्द्र के अग्रमहेषियोंकि है ओर अग्नि ओर वायुकोन रतीगीराके ८ राजधानीयों इशानेन्द्र के अग्रमेहषियोंकी है नन्दीश्वर द्विप आती है तब वह पर ठेरती है अब नदीश्वर द्विपका सर्व पदार्थ कहते हैं।

४ अञ्जनगिरिपर्वत अञ्जनरत्नमय
१६ दधिमुखापर्वत अकरत्नमय.
३२ कनकगिरिपर्वत कनकमय.
५२ जिनमन्दिर सर्व रत्नोंमय.
६६५६ बावन मन्दिरोंमें जिनप्रतिमावें
२०८ मुखमडप ५२ मन्दिरके दरवाजेपर.
२०८ प्रेक्षप घरमडप ,, ,,
२०८ स्थुम.

मुद्रके ८४०० जोजन चेत्रमे युगल मनुष्योंका द्विपा है यह एक लेन (दाड) पर ७ द्विप है इसी माफीक पूर्व लवणसमुद्रकी ४ दाडो ओर पश्चिम लवणसमुद्रकी ४ दाडो एव आठ दाडो पर ५६ द्विपा है उन्हो मे रहेनेवाला युगल मनुष्योंका मनोव च्छीत सुख दश प्रकारका कल्पवृक्ष पूर्ण करते है इति ।

लवणसमुद्रके अधिष्टायक लवणस्वस्थिक देव का गोतम द्विप नामका द्विपा–जम्बुद्विपकि जगतिसे पश्चिमदिशा १२००० जोजन लवणसमुद्रमे जावे तब १२००० जोजनके विस्तारवालों गोतमद्विपा आता है वेदिका वनखड कर शोभनिक है उन्ही गोतमद्विपापर स्वस्थिकदेवका प्रासाद है वर्णन करने योग्य है वहापर देव निवास करते है इति ।

सूर्यका द्विपा—जम्बुद्विपका दो सुर्य ओर अन्दरका लवणसमुद्रका दो सूर्य एव च्यार सूर्यका च्यार द्विपा गोतम द्विपा के च्यारो तर्फ है अर्थात् सूर्यके च्यारो द्विपोंसे वीटा हूवा मध्य भागमे गोतमद्विपा है ।

चद्राद्विप–जम्बुद्विपकि जगतिमे पर्वकि तर्फ लवणसमुद्रमे १२००० जोजन जानेपर दो जम्बुद्विपका चन्द्र दो अन्दरके लवणसमुद्रका चन्द्र एव च्यारों चन्द्रका च्यारों द्विप है सूर्य ओर चन्द्रका द्विपा १२००० बाराह २ हजार जोजन विस्तारवाला है उन्ही द्विपोपर अपना अपना प्रासाद है वहाँ पर देवता आते जाते निवास करते है ।

८१६ जिनप्रतिमार्वो स्थुमके चौतर्फ
२०८ चैत्यवृक्ष
२०८ महेन्द्रध्वज.
२०८ पुष्करणि वावीयों
१६ वावीयों अञ्जनगिरीके चौतर्फ.
४ रतीगीरापर्वत.
१६ राजधानीयों

नन्दीश्वरद्विपके अन्दर बहुतसे भुवनपति वाणमित्रा जोतीपी और वैमानिकदेव पाखी, चौमासी, समत्सेरी या जिनकल्याणक दिनें वहापर एकत्र होतेहैं जिनमहिमा भगवन् की मूर्तियोंकी भावभक्ति अर्चनपूजन करते है तथा जघाचारण विद्या चारणमुनिभी वहाकि यात्रा करनेको पधारते हैं सूत्रोंमें बहुतसे विस्तारसे नन्दीश्वरद्विपका व्याख्यान किया है परन्तु भव्यात्माओंके कठस्थ करनेके लिये सचेपसे मुदामर वार्तो थोकडा रूपमें लिखदि है वास्ते इन्हीकों पेस्तर कठस्थ कर फीर बहु श्रुतियोंके पास शास्त्रश्रवण करो तोंके वडा ही आनन्द आवेगा इति

॥ सेवभते सेवभते तमेव सच्चम् ॥

घात कि खट कि तर्फसे लवणसमुद्रमे १२००० जोजन आनेपर लवणसमुद्रके वेलके वाहारका पर्वमे दो चन्द्र द्विपा और पश्चिममे दो सूर्य द्विपा वारह वारह हजार जोजनके विस्तारवाला है इन्ही १२ द्विपा उपर देवतोंका भुवन-प्रासाद है वह प्रत्यक प्रासाद ६२॥ जोजनका उचा ३१। जोजानके विस्तारवाला अनेक स्थामादिसे अन्छा शोभनिक है लवण-समुद्रके चौतर्फ पदम्वर वेदिका है विजयादि च्यार दरवाजा है दरवाजे दरवाजे ३६५२८०।¾ का अन्तर है लवणसमुद्रमे ५०० जो० का मच्छ भी है।

इति लवणसमुद्राधिकार।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर २.

सूत्र श्री जीवाभिगम प्र ४

(घातकिखंड द्विपादि)

लवणसमुद्रके चौतर्फ वलीयाके आकार च्यार लच जोजन विस्तारवाला घातकिखंड नामका द्विप है वह च्यार लच

जोजनका पहूला है ४११०६६१ जोनन साधिक पराद्धि है उन्ही धातकिखड द्विपमे उत्तर दक्षिण लम्वा च्यार लच जोजन। पूर्व पश्चिम एक हजार जोजनका पहूला मूलमें एक हजार जोजन चोडा यावत् शीखरपर पाचसो जोजन परिमाणवाले दो इक्षुकार पर्वत आजानेमे धातकिखडके दो विभाग हो गये है (१) पूर्व धातकिखड (२) पश्चिम धातकिखड इन्ही दोनों विभागके अन्दर दो मेरुपर्वत है वह मेरुपर्वत एक हजार जोजन धरतीमें उढा और ८४००० जोजन धरतीसे उचा एव ८१००० जोजनका प्रत्यक मेरु है। वह मेरुपर्वत च्यार वन करके अलकृत है दुसरे पर्वत था वासा आदि सर्व जम्बुद्विपसे दुगुणा समझना परन्तु चेत्रका लम्वा चोडा अधिक है और धातकिखड द्विपमें १२ चन्द्र और १२ सूर्य सपरिवार है शेषाधिकार अढाइ द्विपका यत्रमें लिखा जावेगा इति।

धातकिखड द्विपके चौतर्फ गोल वलीयाकार ८००००० जोजनके विस्तारवाला कालोदद्धि नामका समुद्र है वह चौतर्फ आठ लच जोजनका पहूला है ६१७०६०५ जोजन साधिक पराद्धि है एक पद्मवर वेदिका एक वनखड च्यार दरवाजा और दरवाजे दरवाजे अन्तर २२९२६४६ जो० है वह समुद्र हजार जोजनका उढा है अच्छा जलसे परिपूर्ण भरा हूवा।

कालोदद्धि समुद्रके चौतर्फ गोल वलीयाकार पुष्कर नामका द्विप है वह १६००००० जोजनका चौतर्फ विस्तार

प्रत्येक शरीरमें अनन्ते अनन्ते जीव है । वह असख्याते शरीर है वह द्रव्यापेचा है परन्तु प्रदेशापेचा तो प्रत्यक शरीर के अनन्ता अनन्ता प्रदेश है क्युकि अनन्ता परमाणु वा एकत्र होनासे एक औदारीक शरीर बनता है । द्रव्यापेचा जो औदारीक शरीर है उन्हीका भि दो दो भेद है (१) पर्याप्ता (२) अपर्याप्ता एव प्रदेशापेचा भि

सूक्ष्मनिगोदका जीव है वह द्रव्यापेचा अनन्ता है और प्रत्यक जीन के असख्याते असख्याते आत्म प्रदेश है उन्हीका भी दो दो भेद है (१) पर्याप्ता (२) अपर्याप्ता एव प्रदेशापेचा भि समझना

बादर निगोद—जेसे सूक्ष्म निगोदका शरीर-जीव, द्रव्य, प्रदेश, पर्याप्ता अपर्याप्त के भेद उपर किया गया है इसी माफिक बादर निगोदका भि समझना

भव्यात्मार्योको विशेषः बोध के लिये शास्त्रकार सूक्ष्म बादर निगोद कि अल्पाबहूत्व कर वतलाते है ।

निगोदके शरीरकि अल्पाबहूवद

(१) द्रव्यापेचा.

(१) बादर निगोद के पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०

ला है १६२६३८६४ जोजन साधिक परद्धि है एक वेदिका
क वनखड न्यार दरवाजा है वर्णन पूर्ववत् इन्ही पुष्कर
ापके मध्यभागमें मानुषोत्र नामका पर्वत बेठा हुवा सिंहके
ाकारमे है वह १७२१ जोजनका धरतीमे उचा ४३० धरतीमें
१०२२ मूल पहूला ४२४ मध्य पहूला ७२३ उपरसे पहूला
ार्न तपाये हुवा सुवर्णमे है वह पर्वत पुष्करद्विपका दो विभाग
रदिया है (१) अभिंतर पुष्कर्द्ध (२) बाह्य पुष्कर्द्ध जिसमें
अभिंतरका पुष्कर्द्ध द्विपमें मनुष्य निवास करते है अर्थात्
मानुषोत्रपर्वतके अन्दर जो पुष्कर्द्धक्षेत्र है उन्हीके अन्दर
मनुष्य निवास करते है । बाहार केवलतीर्यंच है ।

पुष्कर्द्धक्षेत्रके मध्यभाग दक्षिणोत्तर दिशा आठ आठ
लक्ष जोजनका दो इक्षुकारपर्वत आठ आठ लक्ष जो० लम्बा
एक हजार जोजनका उचा ५०० जो० धरतीमें मूल हजार
जो० का विस्तार सीखरपर पाचसो जोजनका विस्तारवाला
दोनों पर्वत पुष्कार्द्ध द्विपका दो विभाग करदिया है [१] पूर्व
पुष्कार्द्ध [२] पश्चिम पुष्कार्द्ध । दोनों विभागमें दो मेरु यावत्
घातकिखंड द्विपके माफीक सर्व पदार्थ समझना परन्तु क्षेत्रका
परिमाणादि विस्तार क्षेत्र माफीक अधिक है ।

जम्बुद्विप एक घातकिखंड द्विप एक पुष्कार्द्ध आदा द्विप
एव अढाइद्विप और लवणसमुद्र एक कालोदद्धि एक यह दो

(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,, ,,
(४) सूक्षम ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

(२) प्रदेशापचा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्य० गु०

(३) द्रव्य और प्रदेशापेचा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०
(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०
(५) बादर ,, ,, ,, प्रदेश अनतगु०
(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०
(७) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्य० गु०

समुद्र अर्थात् अढाइद्विप दोय समुद्रको समय चेत्र भी कहाजाते है कारन सिद्ध होता है सो इन्ही समय चेत्रसे ही होता है इन्ही अढाइद्विपके चेत्रका परिमाण —

१ जम्बुद्विप पूर्व पश्चिम मीलके १ लच जो०
२ लवणसमुद्र ,, ,, ,, ४ लच जो०
३ धातकिखंड ,, ,, ,, ८ लच जो०
४ कालोदद्धिसमु०,, ,, ,, १६ लच जो०
५ पुष्कर्द्धद्विप ,, ,, ,, १६ लच जो०

एव मनुष्यलोक–समयचेत्र–अढाइद्विप ४५ लच जोजनका है जिन्होकि परद्धि १४२३०२४६ जोजन साधिक है अढाइद्विपमें जो मॉख्य पदार्थ है सो यत्रद्वार बतलादिया जाता है।

पदार्थ	(१) जम्बुद्विपमे	(१) धातकिखंड	०॥ पुष्कर्द्ध
मेरूपर्वत	१	२	२
वर्षधरपर्वत	६	१२	१२
वस्कारपर्वत	१६	३२	३२
गजदन्ता	४	८	८
विजया	३२	६४	६४
मोटीनदी	६०	१८०	१८०

निगोदके जीवोंकि अल्पावहूत्व ।

(४) द्रव्यापेक्षा

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव द्रव्य स्तोक.

(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०

(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,

(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०

(५) प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव प्रदेश स्तोक.

(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०

(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,

(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्य० गु०

(६) द्रव्य ओर प्रदेश.

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव द्रव्य स्तोक

(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०

(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,

(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०

(५) बादर ,, ,, ,, प्रदेश अस० गु०

(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, ,,

(७) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,

(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०

निगोद्के शरीर और जीवोंकि अल्प० ।

(७) द्रव्यापेक्षा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०
(३) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्य० गु०
(५) बादर निगोदके पर्याप्ता जीव द्रव्य अनन्त गु०
(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(७) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०

(८) प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता जीव प्रदेश स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०
(३) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०
(५) बादर ,, ,, शरीर ,, अनन्तगुणा
(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, अस० गु०
(७) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०

वृक्ष योनियावृक्षमें दश बोल उत्पन्न होते है यथा-मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, साखा, प्रतिसाखा, पत्र, पुष्प, फल, बीज. यह १० बोल उत्पन्न होते पेहले अपने स्थानके स्निग्धका आहार लेके अपना शरीर बन्धता है बादमें छे कायाके जीवोंका मुकेलगा पुद्गलोंका आहार ले अपने शरीरका वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श नानाप्रकारके बनाते हैं। ४।

पृथ्वी योनिया वृक्षमें अज्झोरा (एक जातिका वृक्षमें दुसरी जातिका वृक्ष उत्पन्न होता है उन्हीको अज्झोरा केहते हैं) उत्पन्न होता है।१। वृक्ष योनियावृक्षमें अज्झोरा उत्पन्न होता है।२। अज्झोरा योनियावृक्षमें अज्झोरा उत्पन्न होता है।३। अज्झोरा योनिया अज्झोरामें मुलादि १० बोल उत्पन्न होता है।४। एवं च्यारों अलापकमें उत्पन्न होते हैं। पेहले अपने उत्पन्न स्थानके स्निग्धके पुद्गलोंका आहार ले अपना शरीर बन्धते हैं बादमें छे कायाके शरीरोंके मुकेलगा पुद्गलोंका आहार ले अपने शरीरका वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श नानाप्रकारके बनाते हैं।

एव च्यार अलापक तृण वनास्पतिका एव च्यार अलापक औषदी (२४ प्रकारका धन्य) का एव च्यार अलापक हरिकायका भावना पूर्ववत् समझना सर्व २० अलापक हुवे।

पृथ्वी योनियावृक्षमें भूइफोडा उत्पन्न होता है भावना पूर्ववत् एव २१।

(६) द्रव्य और प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०
(५) बादर ,, ,, जीव द्रव्य अनन्त गु०
(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(७) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०
(९) बादर ,, ,, जीव प्रदेश असं० गु०
(१०) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, ,,
(११) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(१२) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०
(१३) बादर ,, ,, शरीर ,, अनन्त० गु०
(१४) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(१५) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(१६) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, सख्या० गु०

॥ सेवंभते सेवभते तमेव सच्चम् ॥

जेसे पृथ्वी योनियावृत्तसे २१ अलापक हूने हैं इसी माफीक उदक (पाणी) योनियावृत्तसे* भी २१ अलापकके हेना परन्तु इकनीसमा अलापकमें भूइफोडाके स्थान उत्पलादि कमल समझना एव ४२ अलापक हूवे।

पृथ्वी योनियावृत्तमें त्रसकाय उत्पन्न होती है । १ । वृत्त योनियावृत्तमें त्रसकाय उत्पन्न होती हैं । २ । वृत्त योनियावृत्तमें मूलादिया दश बोल उत्पन्न होता है । ३ । एव अज्झोराका ३, तृणका ३, औषदीका ३, हरिकायका ३, भूइ फोडाका १ एव १६ इसी माफीक उदक योनियाका भी १६ अलापक मीलाके ३२ अलापक हूवे ।

वेद मोहनिय कर्मोदय मनुष्यकों मैथुन सज्ञा उत्पन्न होती है तब स्त्रि के साथ मैथुन कर्म सेवन करते है उन्ही समय माताका रौद्र पिताका शुक्र के साथम योग होते हैं उन्हीक अन्दर जीव उत्पन्न होते हैं वह स्त्रिवेद पुरुषवेद नपुसकवेद उत्पन्न होते ही पेहला माताका रौद्र पिताका शुक्रका आहार लेता है बादमे माता कि नाडी और पुत्र कि नाडी के साथ सबन्ध होनासे माता जो जो रसवती भोजन करती है उन्हीका एक विभाग पुत्र भी आहार करता है गर्भकाल पूर्ण हो तब

---

* पाणीमें कमलादि उत्पन्न होते है जिस्की योनि पाणीमें होती है ।

थोकडा नं. ४.
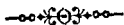
सूत्र श्री आचारांग अध्य० १ उ० १

(द्रव्यदिशा भावदिशा)

पाचमा गणधर सौधर्मस्वामि अपने शीष्य जम्बुस्वामि प्रत्ये कहेते हैं हे जम्बु इन्ही ससारके अन्दर कितनेक जीव एसे अज्ञानी है कि जिन्होंकों यह ज्ञान नहीं है कि पूर्वभवमें मैं कोन था और कोन दिशासे मैं यहांपर आया हू दिशा दो प्रकारकि होती है (१) द्रव्यदिशा (२) भावदिशा.

(१) द्रव्यदिशा अढारा (१८) प्रकारकि है यथा (१) इन्द्रादिशा (पूर्वदिशा), (२) अग्निदिशा (अग्निकोन), (३) जमादिशा (दक्षिणदिशा), (४) नैऋतदिशा (नैऋतकोन), (५) वारुदिशा (पश्चिमदिशा), (६) वायुणा (वायुकोन), (७) सोमादिशा (उत्तरदिशा), (८) इसाना (इशानकोन), (९) निमलादिशा (उर्ध्वदिशा), (१०) तमादिशा (अधोदिशा) एव दश दिशा है जिस्में च्यार दिशा च्यार विदिशा इन्ही आठोंका अन्तरा आठ दश दिशाके साथ मिलानेसे १८ द्रव्यदिशा होती है पूर्वोक्त जीवोंको यह ख्याल नहीं है कि इन्ही अढारा

उन्ही पुत्रका जन्म होता है बादमे माताके दुद्ध सर्पीका आहार करता है फीर नाना प्रकारके त्रसस्थावरोंके शरीरके पुद्गलोंका आहार कर के अपने शरीरका वर्णगन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका वनाता है । ७५ ।

इसी माफिक जलचार जीव परन्तु जन्मतों पाणीका आहार लेवे है । ७६ । एव खेचर परन्तु जन्मतों माताका पोयकों आहार लेवे । ७७ । एव स्थलचर मनुष्यकी माफीक । ७८ । एव उरपुरी सर्प परन्तु जन्मतों हवा (वायु) कों आहार लेवे । ७६ । एव भूजपुर भी समझना । ८० ।

वीर्ध्वंस चर्ममे क्रीडा करमीयादि जीव उत्पन्न होता है वह पेहला अपने उत्पन्न स्थानके स्नग्धका आहार लेवे यावत् पूर्ववत् सझना । ८१ । परसेवासे यू लीखादिका । ८२ । मल मूत्रमे समुत्सम जीवोंका । ८३ ।

त्रसस्थावर जीवोंके शरीरमे वायुकायाके योगसे अपकाय उत्पन्न हूवे पेहला उत्पन्न स्थानके स्नग्धका आहार लेवे शेष पूर्ववत् । ८४ ।

त्रसस्थावर योनिया उदकमे उदक उत्पन्न होता है । ८५ उदक योनियाउदकमे उदक उत्पन्न होता है । ८६ । उदक योनिया उदकमें त्रस प्राणी उत्पन्न होता है । ८७ ।

द्रव्यदिशासें में कौनसि दिशा या विदिशासें आया हू जब द्रव्यदिशा है तो भावदिशाभी आवश्य होना चाहिये वास्ते शास्त्रकार भावदिशा केहते है

(२) भावदिशा-पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, तथा वनस्पतिकायके च्यार भेद है (१) मूल बीया-जिन्होंके मूलमें बीज रहेता है मूलादि, (२) कन्दबीया-जिस्के कन्दमें बीज रहेते है नागरमोथादि, (३) पोरबीया-जिस्के गाठ गाठके अन्दर बीज रहेते है इक्षुवादि, (४) स्कन्धबीया-जिस्के स्कन्धमें बीज रहेते है शाली आदि एव ८ बेरिन्द्रिय, तेरिन्द्रिय, चौरिन्द्रिय और तीर्यच पचेन्द्रिय तथा मनुष्य च्यार प्रकारके-कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अन्तरद्विपे और समुत्सम मनुष्य एव १६ नारकि और देवता सर्व मीलके भावदिशा १८ होती है पूर्वोक्त जीवोंको यह ख्याल नहीं है कि में कौनसी दिशासें आया हू और कौनसी दिशामें जाउगा अगर में जीन्ही कुटम्बके साथ रक्त हो रहा हू वह कुटम्ब कौनसी दिशासें आया है और कौनसी दिशामें जावेगा अज्ञानवत् जीवोंको इतना ज्ञान नहीं होता है इसी अज्ञानके जरिये जीवअनादि कालसें इन्ही भवचक्रमें भ्रमण करते है.

कितनेक जीव एसेभि होते है कि स्वय जानलेते है कि में पूर्वभवमें अमुक गतिजतिमें था या अमुक दिशासें यहांपर

थोकडा नं. १०

(बहूश्रुति कृत)

नं.	मार्गणा	जी.	गु	यो.	उ.	ले.
१	समुचय जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
२	नारकीमें	३	४	११	६	३
३	ना० अपर्याप्ता	२	३	३	६	३
४	ना० अ० अनाहारीक	२	३	१	६	३
५	ना० अ० आहारीक	२	३	२	६	३
[illegible]	ना० पर्याप्ता	१	४	१०	६	३
[illegible]	ना० प० आहारीक	१	४	१०	६	३
[illegible]	तीर्यंचमे	१४	५	१३	६	६
[illegible]	ती० अपर्याप्ता	७	३	३	६	६
१०	ती० अ० अनाहारीक	७	३	१	५	६
११	ती० अ० आहारीक	७	३	२	६	६
१२	ती० पर्याप्तामे	७	५	१२	६	६
१३	ती० प० आहारीक	७	५	१२	६	६
१४	मनुष्यमे	३	१४	१५	१२	६

आया हूं कारण जातिस्मरणादि ज्ञानसें जेसे मृगापुत्रकुमार या महाबलकुमारादि और कितनेक ज्ञानवन्तोंके पाससे सुननेसे जानते है जेसे मेघकुमार भगवान के पास अपना भव सुननेसे जाना की में पूर्वभवमें हस्ती था इत्यादि ।

ज्ञानीपुरुषोंसे श्रवण करनेसे विशेष ज्ञान भी होसक्ते है तत्वदृष्टीसे बतलाये जाय तो सम्यक्त्व प्राप्तीके मौख्य च्यार वाद है ।

(१) आत्मवाद—आत्मा चैतन्य अरुपि अमूर्ति अखंड अमल शुद्धनिर्मल ज्ञानदर्शन चरित्रमय सद् चदानन्द असंख्यात प्रदेशमय सास्वत है निश्चय नयसे अकर्ता अभुक्त शुद्ध उपयोगमय है इन्हींसे शास्त्रकारोंने पाच भुत वादी-या नास्तिक वादीयोंका निराकार कीया है ।

(२) लोक वादी—जहा पाचास्तिकाय है उन्हीको लोक कहाजाता है वह लोक असंख्याते कोडोन क्रोड योजनका है जिस्का भि तीन भेद है (१) उर्ध्वलोक (बारह देवलोक नौग्रीवेग पाचानुत्तर वैमान) (२) अधोलोक सात नारकरूप (३) तीरच्छो लोक जिस्मे जम्बुद्विपादि असंख्याते द्विप लवणसमुद्रादि असंख्याते समुद्र यावत् स्वयंभु रमण समुद्र तक तथा अधोलोक विशेष विस्तारवाला है तीरछा

म० अपर्याप्ता	२	३	३	६
म० अ० अनाहारीक	२	३	१	८
मनुष्य अ० आहारी	२	३	२	६
म० पर्याप्तामें	१	१४	१४	१२
म० प० अनाहारीक	१	२	१	२
म० प० आहारीक	१	१३	१४	१२
देवतावोंमें	३	४	११	६
देवतावों अपर्याप्ता	२	३	३	६
देव० अ० अनाहारीक	२	३	१	८
दे० अ० आहारीक	२	३	२	६
देव० पर्याप्ता	१	४	१०	६
देव० प० आहारीक	१	४	१०	६
सिद्धभगवानमें	०	०	०	२

॥ सेवभंते सेवंभते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ११

(वहू श्रुतिकृत)

अलद्धिया उसे केहते है कि जिसमे वह वस्तु न मीले जैसे मतिज्ञानका अलद्धिया केहनेसे जिन्ही जीवोंमे मतिज्ञान न मीलता हो ऐसे पेहले तीजे तेरवे चौदवे इन्ही च्यार गुणस्थानमे मतिज्ञानका अभाव है इसी माफीक सर्व स्थानपर सम

च्छोलोक क्रमःसर सकोंचीत और उर्ध्वलोक पुनः निस्तार वाला है अर्थात् कम्मरके हथ लगाके नाचता वोपाके आकार लोक है वह भी द्रव्यापेच सास्वत है और वर्णादि पर्यायापेच असास्वत है इन्हीमे इश्वर वादीयोंका नीरकार कीया है।

(३) कर्मवादी—कर्म अनादि से आत्माके गुणोंको रोक रखा है जेसे सूर्य तजस्वी है परन्तु वादलोंका अनरण आनासे तेजको रोक देता है नसे कर्म भी जीवके गुणोंको रोक देते हे जेसे—

कर्म	आवर्ण द्रीष्टान्त	कौनसा गुणोंको रोके
ज्ञानावर्णीय	घाणिका वहल	ज्ञानगुणको रोके
दर्शनावर्णीय	राजाका पोलीया	दर्शनगुणको रोके
वेदनिय	मधुलीपत छुरी	अवाद सुखको रोके
मोहनिय	मदरापान पुरुप	चायक गुणको रोके
आयुष्य	केद कीया हूवा	अठलावगाहन गुणको रोके
नामकर्म	चिनकार माफिक	अमुति गुणको रोके
गौत्रकर्म	कुंभकार ,,	अगुरू लघु गुणको रोके
अन्तरायकर्म	राजाका भडारी	वीर्य गुणको रोके

४०	कृष्णलेश्या	”	१	८	१५	९
४१	निललेश्या	”	१	८	१५	९
४२	कापोतलेश्या	”	१	८	१५	९
३४	तेजोलेश्या	”	१	७	११	९
४४	पद्मलेश्या	”	१	७	११	९
४५	शुक्ललेश्या	”	१	१	०	२
४६	अलेश्या	”	१४	१३	१५	१२
४७	सयोगिका	”	१	१	०	२
४८	मनयोगिका	”	१	१	०	२
४९	वचन०	”	१	१	०	२
५०	काययोगि	”	१	१	०	२
५१	अयोगि	”	१४	१३	१५	१२
५२	सम्यकद्रष्टी	”	१४	२	१३	६
५३	मिथ्याद्रीष्टी	”	६	१२	१५	९
५४	मिश्रद्रीष्टी	”	१४	१३	१५	१२
५५	सन्नीका	”	१३	४	१०	८
५६	असन्नीका	”	२	१४	१५	१२
५७	मंमारका	”	०	०	०	२

॥ सेवभते सेवभते तमेव सच्चम् ॥

इन्ही आठो कर्मोने आत्माके आठों गुणोको रोक रखा है व्यवहारनयसे जीवके शुभाशुभ अध्यवशासे कर्मोका दल एकत्र होते है वह अवधाकलपक जानेपर जीवके रसविपाक उदय होते हूवे जीव सुख और दुःख भोगवते है और काल लब्धि प्राप्त कर कर्मोसे मुक्त हो जीव मौक्षमे भी जाते है यह कर्मोका अस्तित्व वतलानेसे काल स्वभाव वादियोंका निराकार किया है.

(४) क्रिया वादी--जो जीव कर्म कर सहित है वह जीव सदेव क्रिया करताही रहेता है और वह शुभाशुभ क्रिया करनेसे शुभाशुभ कर्म रुप फल भी देती है अर्थात् सकर्मी जीवोंके क्रिया अस्तित्व भाव है और क्रिया का फल भी अस्तित्वभाव है यहांपर अक्रियावादीका निराकरण कीया है।

यह च्यार सम्यगवाद है इन्हीको यथायोग्य जाननेसे ही सम्यग्द्रष्टीकेहलाते है इन्हीके सिवाय जो मनःकल्पत मतको धारण करनेवाले जीवोंको मिथ्याद्रष्टी कहा जाते है। वह अनादि प्रवाहमें परिभ्रमण करते आये है और करते ही रहेगो इस लिये भगवान्ने दो प्रकारकि प्रज्ञा फरमाइ है (१) वस्तुका स्वरुपका ज्ञानकर समझना, (२) परवस्तुका त्याग करन अर्थात् जीस आश्रव कर कर्म आरहा है उन्हीकों रोकना चाहिये

थोकडा नं. १२

(वहूश्रुति कृत)

न.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.
१	ज्ञानावर्णीयकर्ममें	१४	१२	१५	१०
२	दर्शना० ,, ,,	१४	१२	१५	१०
३	वेदनिय ,, ,,	१४	१४	१५	१२
४	मोहनिय ,, ,,	१४	११	१५	१०
५	आयुष्य ,, ,,	१४	१४	१५	१२
६	नामकर्ममें	१४	१४	१५	१२
७	गौत्रकर्ममें	१४	१४	१५	१२
८	अन्तरायकर्ममें	१४	१२	१५	१०
९	वज्रऋषभनाराच सहनन	२	१४	१५	१२
१०	ऋषभनाराच० ,,	२	११	१५	१०
११	नाराचसहनन ,,	२	११	१५	१०
१२	अर्द्धनाराच० ,,	२	७	१५	१०
१३	कालकाम० ,,	२	७	१५	१०
१४	छेवट स० ,,	१४	७	१५	१०

कारण ससारके अन्दर एकेक जीव अन्य जीवोंकी घात करते हैं उन्होंका शास्त्रकारोंने छे कारण बतलाया है.

(१) जीतव्य-आजीविकाके लिये आरंभादि करे ।

(२) प्रशसा-जगत्में अपनि तारीफी करानेके लिये ।

(३) मान-दुसरेसे अधिक होनेका अभिमानके लिये ।

(४) पूजा-जनलोकोंके पाससे पूजा करानेके लिये ।

(५) जन्ममरण मिटानेके लिये या यज्ञहोमादि करणा।

(६) दु'ख मीटानेके लिये शरीरमें रूइ वेदना मींटानेके लिये।

यह छे कारणास हिंसा करते है वह अनार्य कर्मके करनेवाले है उन्हीको भवन्तरे अहितका कारण-अबोधका कारण होगा कारण वह करनेवाले अनानी मिथ्यात्व अनार्य हैं और सम्यग्द्रष्टी तो पूर्वोक्त आरंभको कर्मबन्धका हेतु जाने मोहकर्मकी गाठ जाने मरणका हेतु या नारकका हेतु जानते हैं इसी वास्ते समकितसार अध्ययनमें कहा हैं कि " समत्त दर्सी न करोति पाव " इसी वास्ते आरभ परिग्रहसे मुक्त हो वीतरागाज्ञाका आराद्धन करो इत्यादि ।

॥ सेवभते सेवभते तमेव सच्चम् ॥

—•ई(◎)३•—

थोकडा नम्बर. १३

—※(◎)※—

(बहूश्रुत कृत)

नं	मार्गणा	जी.	गु	यो	उ.	ले
१	वासुदेवकी आगति	?	४	१०	६	
२	हास्यादि सम्यक् द्रीष्टी	६	६	१५	७	
३	अव्रती मनयोगमें	१	३	१२	६	
४	एकान्तमत्री सम्य० अव्रती	२	२	१३	६	
५	अप्रमत्त हास्यादिमें	१	२	११	७	
६	तेजोलेशी एकेन्द्रिमें	१	१	३	३	
७	अमर गुणस्थानमें	१	३	१२	१२	
८	अमर गु० छद्मस्थ	१	२	१०	१०	
९	अमर गु० चरमान्त	१	२	१२	८	
१०	यथाख्यात–सयोगि	१	३	११	६	
११	गुण० चमरान्त	१४	२	१३	८	
१२	सयोग गु० चमरान्त	१४	२	१३	८	
१३	छद्मस्थ गु० च०	१४	२	१३	१०	

थोकडा नं. ५

(सूत्रश्री सूयगडायांगजी श्रु० २ अ०३)

(आहार)

जीवात्मा सचदानन्द निजगुणयुक्ता सदा अनाहारीक है यह निश्चय नयका वचन है। और जीवके अनादि कालसे कर्मोका सयोग होनासे भिन्न भिन्न योनिमें नया नया जन्म धारण करते हूवे पुद्गलोंका आहार करता है यह व्यवहार नयका वचन है। व्यवहार नयमे जीव रागद्वेष की प्रवृति करते हुवे के कर्मबन्ध भी होता है उन्ही कर्मोका फल भवन्तरमे शुभा शुभ आवश्य भोगवना भी पडता है जाति अपेक्षा जीव पाच प्रकार के होते है यथा-एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पाचेन्द्रिय, जिसमे एकेन्द्रियका पाच भेद है यथा-पृथ्वीकाय अपकाय तेउकाय वायुकाय वनास्पतिकाय सर्व जीवोंमे वनास्पतिकायके जीवाधिक होनासे शास्त्रकाराने प्रथम वनास्पतिकायका ही व्यारव्यान करते है.

वनास्पतिकाय च्यार प्रकारकी होती है यथा—

(१) अग्गवीया—वृक्षके अग्रभागमे बीज होता है

सकषाय गुणस्थान चरमान्त	१४	२	१३	१०	६
सवेद गु० च०	१४	२	१३	१०	६
व्रतीछद्मस्थ गु०	१	७	१४	७	६
अप्रमत्त छद०	१	६	११	७	३
हास्यादि सयती	१	३	१४	७	६
हास्यादि अप्रमत्त	१	२	११	७	३
व्रती सकषाय	१	५	१४	७	६
व्रती सवेद	१	४	१४	७	६
व्रती छद्मस्थ	१	७	१४	७	६
सम्य० सवेद	६	७	१५	७	६
सम्य० सकषाय	६	८	१५	७	६
परभव जाता जीवमें	७	३	१	१०	६

॥ सेवंभते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥

—※◎※—

(२) मूलबीया—मूलमे बीज जेसे कन्दा मूलाके
(३) पोरबीया—गाठ गाठमे बीज इक्षुआदिमे
(४) स्कन्धबीया—गहू चीणादिमे

इन्ही वनास्पतिकायके उत्पन्न होनेका स्थान दोय है (१) स्थलमे (२) जलमे जिस्मेपेस्तर स्थलमे उत्पन्न होते है उन्हीका अधिकार लिखा जाते है

पृथ्वीयोनिया वृक्ष पृथ्वीमे उत्पन्न होता है तब पेहला पृथ्वीकायके स्नग्धपुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीर बन्धता है बादमे छे काया के जीवोंके मुकेलगे पुद्गलोंका आहार लेते है वह आहार अपने शरीरपणे परिणमाते हूवे शरीरका वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होते है यह प्रथम अलापक हूवे । १ ।

पृथ्वीयोनिया वृक्ष मे वृक्ष उत्पन्न होता है तब पेहले उत्पन्न स्थानके स्नग्धका आहार ले के अपना शरीर बन्धते है बादमे छे कायाके शरीराके पुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीरके वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारके बनाते है । २ ।

वृक्ष योनिया वृक्षमे वृक्ष उत्पन्न होता है तब पेहले अपने उत्पन्न स्थानके स्नग्धका आहार लेके शरीर बन्धता ह बादमे छे कायाके शरीरोंका पुद्गलोंमे अपने शरीरके नानाप्रकारके वर्णगन्ध रसस्पर्श बनाते है । ३ ।

थोकडा नं १५

(पुद्गलपरावर्तन)

असख्याते वर्षका एक पल्योपम होता है दश कोडाकोड पल्योपमका एक सागरोपम होता है दश कोडाकोड सागरोपमका एक उत्सर्पिणी काल तथा दश कोडाकोड सागरोपमका एक अवसर्पिणी काल होता है इन्ही उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकों मीलाके वीस कोडाकोड सागरोपमकों शास्त्रकारोंने एक कालचक्र कहा है एसे अनन्ते कालचक्रका एक पुद्गलपरावर्तन होता है वह प्रत्यक जीवों भूतकालमें अनन्ते अनन्ते पुद्गलपरावर्तन कीये है विशेष बोधके लिये पुद्गलपरावर्तनकों च्यार प्रकारसे बतलाते है यथा-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव। प्रत्यकके दो दो भेद है (१) सूक्ष्म, (२) बादर वह इस थोकडा द्वारा बतलाया जावेगा

(१) द्रव्यापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—लोकमें रहे हुवे द्रव्य जिन्हींकों जीव ग्रहन करते है वह आठ वर्गणा द्वारे ग्रहन करते है यथा-औदारीकशरीर द्वारे, वैक्रयशरीर द्वारे, आहारीकशरीर द्वारे तेजसशरीर द्वारे, कार्मणशरीर द्वारे, श्वासोश्वासद्वारे, भाषा द्वारे मन द्वारे, इन्ही आठ वर्गणामे एक

हारीक शरीर वर्गण छोडदेना कारण एक जीव अधिकसे धिक आहारीक शरीर करे तो च्यारसे ज्यादा न करे, वास्ते र्व लोकका द्रव्य ग्रहनका अभाव है। शेष ७ वर्गणासे नुक्रमे एकेक जीव सर्व लोकका द्रव्यको अनन्ती अनन्ती ार ग्रहण कर छोडा है अर्थात् औदारीक शरीर वर्गणासे सर्व लोकका द्रव्य अनन्तीवार ग्रहन कर छोडा एवं वैक्रय० तेजस० कार्मण० श्वासोश्वास० भाषा० ओर मनवर्गणासे सर्व लोकका द्रव्यको अनन्तीवार ग्रहन कर छोडा इन्हींको द्रव्यापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है।इसमें अनन्तों काल लगता है

(२) द्रव्यापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन—पूर्वोक्त बतलाइ हुइ सात वर्गणासे प्रथम जीव औदारीक वर्गणासे लोकका द्रव्य ग्रहन करना प्रारभ कीया है वह क्रम.सर सर्व लोकका द्रव्य केवल औदारीक वर्गणासे ही ग्रहन करे अगर वीचमें वैक्रयादि छे वर्गणासे द्रव्य ग्रहन करे वह गीनतीमें नहीं जेसे औदारीक शरीरका भाव कर तो वीचमें वैक्रय शरीरका भव ो यहांपर आचार्यो महाराजका दो मत्त है एक केहते है कि औदारीक वर्गणामे द्रव्य ले तो वीचमें वैक्रयादि वर्गणासे द्रव्य लेवे वह गीनतीमें नहीं किन्तु औदारीक गीनतीमें है दुसरोंका मत्त है कि औदारीक वर्गणासे द्रव्य ले तो वीचमें वैक्रयादि वर्गणामे द्रव्य लेवे तो औदारीकमे औ

प्रत्येक जघन्य असरव्यातेकि जो रासी है उन्हीकों रासी अभ्यास करे यथा–कोई आचार्योंका मत्त है कि जितना दाना रासीमें है उन्हीकों उतना गुणा करना जेसे कल्पनाकि रासीमें १०० दाना हो तो सोकों सोगुणा करनेसे १०००० होता है । दुसरा आचार्योंका मत्त है कि रासीमें जितने दाने है उन्हीकों उतनीवार गुणा करना जेसे रासीमें १० दानोंकि कल्पना कि जाय ।

१—१—१—१—१—१—१—१—१—१
१०–१०–१०–१०–१०–१०–१०–१०–१०–१०

(१) १०० प्रथम दशकों दशगुणा करतों.
(२) १००० सोकों दशगुणा.
(३) १०००० हजारकों दशगुणा
(४) १००००० दशहजारको दशगुणा
(५) १०००००० लक्षको दशगुणा
(६) १००००००० पूर्वकों दशगुणा
(७) १०००००००० ,, ,,
(८) १००००००००० ,, ,,
(९) १०००००००००० ,, ,,
(१०) १००००००००००० ,, ,,

यह तों कल्पनाकि रसी हुइ परन्तु जो जघन्य प्रत्येका

वैक्रयमे लिये हूवे सर्व द्रव्य गीनतीमे नही अर्थात् पीसे औदारीक वर्गणाद्वारे द्रव्यग्रहन करे ता पर्व यह है कि औदारीक वर्गणाद्वार द्रव्यग्रहन करतों जहँ तक सम्पुर्ण लोकके द्रव्य औदारीक वर्गणाद्वारे ग्रहन करे वहातक बीचमे दुसरी वर्गणा न आवे वह एक वर्गणा कही जावे। इसीमाफीक वैक्रय वर्गणासे द्रव्यग्रहन करतों बीचमे औदारीकादि वर्गणासे द्रव्य लेवेतों गीनतीमे नही परन्तु सर्व लोकका द्रव्य वैक्रयसेही लेवे बीचमे दुसरा भव नकरे तों गीनतीमे आवे इसी माफीक सातों वर्गणासे क्रम सर सम्पुरण लोक द्रव्यग्रहन करे उन्हींको द्रव्यापेक्षा सुक्षम पुद्गल परावर्तन केहते है

(३) क्षेत्रापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—असंख्याते कोडो न कोड योजनके विस्तारवाला यह लोक है जिन्ही के अन्दर रहे हूवे आकाश प्रदेश भी असंख्याते है उन्ही आकाश प्रदेशोंको एकेक समय एकेक प्रदेश निकाला जावे तों असंख्याते कालचक्र पुर्ण हो जाय इतने आकाश प्रदेश है

एक आकाशप्रदेश पर जीव जन्ममरण कीया है वह गीनतीमे और फीरसे उन्ही आकाशप्रदेशपर मेरे वह इहीं पुद्गलपरावर्तन कि गीनतीमे नही आवे इसी माफीक असपर्श किये हूवे आकाशप्रदेश पर जन्ममरण करते हूवे सम्पुरण लोकाकाशप्रदेशोंको स्पर्श करे। जीव जन्ममरण करता है व

सख्याते कि रामकों इसीमाफिक असख्याते चार गुणे करतों जो रासी आवे उन्हीकों जघन्य युक्ता असख्याते केहेते है अगर उन्ही रासीसे दो दाने निकाल के फीर रासीकी पृच्छा करे तो वह दो दाने कम कीये हुइ रासी मध्यम प्रत्येक असख्याते है अगर उन्ही रासीमे एक दाना डालके पृच्छा करे तों उत्कृष्ट प्रत्येक असख्याते है और दुसरा दाना डाल दे तो जघन्य युक्ता असख्याते होते है। (एक आविलका के समय परिमाण)

जघन्य युक्ता असख्याते कि जो रासी है उन्हीकों पूर्ववत् रासी अभ्यासकर रासीसे दो दाने निकालके पृच्छा करतों वह रासी मध्यम युक्ता असख्याते है अगर एक दाना डालके पृच्छा करते उत्कृष्ट युक्ता असख्याते है और रहा हूवा एक दाना डालके पृच्छा करे तों जघन्य असख्याते असख्याता होते है

जघन्यासख्याते असख्यात कि रासीको रासी अभ्यास पूर्ववत् करे उन्ही रासीसे दो दाना निकालके पृच्छा करे तों शेष रासी मध्यमासख्याते असख्यात है एक दाना रासीमे मीला दे तों उत्कृष्ट असख्याते असख्यात होता है और दुसरा दाना जो मीला दे तों जघन्य प्रत्येक अनन्ता होता है.

जघन्य प्रत्येक अनन्तों कि रासीकों पूर्ववत् रासी अभ्यास करे उन्ही रासीसे दो दाना निकालके शेष रासी कि

असंख्याते प्रदेशपर करता है तद्यपि यहांपर मोख्यता एकही प्रदेशकी गीनी गइ है। इसी माफीक प्रत्येक प्रदेशपर जन्म-मरण करते हूवे सम्पुरण लोक पुरण करदे उन्हीको क्षेत्रापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है तात्पर्य यह हूवे कि एकेक प्रदेशपर भूतकालमें जीव अनन्तीवार जन्ममरण कीया है बादर पुद्गलपरावर्तनमें काल अनन्ता लगता है।

(४) क्षेत्रापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन-पक्तीबन्ध आकाश प्रदेशको श्रेणि केहते है वह श्रेणियों लोकमें असंख्याती है जिस आकाशप्रदेशपर जीव जन्मा है उन्ही आकाशप्रदेशाकि पक्तीबन्ध श्रेणिपर जन्ममरण करता जावे इन्हीसे सम्पुरण श्रेणि पुरण करदे अगर बीचमें विषमश्रेणि अर्थात् श्रेणि बहार जन्म करे तो गीनतीमें नहीं एक आचार्य महाराजकी मान्यता है कि जीतना विषमश्रेणि भव करे वह गीनतीमें नहीं दुसरे आचार्योंकी मान्यता है कि वहातक जितने समश्रेणि विषमश्रेणि भव कीया है वह सर्वही गीनतीमें नहीं है। तत्त्वके वलीगम्य इसी माफीक श्रेणि पुरण करे पीछे उन्हीके पासकि श्रेणिपर जन्ममरण करे बीचम विषमश्रेणि न करे तो गीनतीमें अगर करे तो गीनतीम नहीं इसी माफीक सम्पुरण लोकाकि श्रेणियोंको क्रमःसर पुरण करे उन्हीकों क्षेत्रापेक्षा सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन केहते है बादरसे सून्मम काल अनन्तगुणो लागे है।

पृच्छा करे तो यह रासी मध्यम प्रत्येक अनन्त है अगर एक दाना रासीमे मीलाके पृच्छा करे तों उत्कृष्ट प्रत्येक अनन्ता होता है और दुसरा दाना मीलाके पृच्छा करे तों जघन्ययुक्ता अनन्ते होते है.

जघन्य युक्ता अनन्ते कि रासीकों रासी अभ्यास पूर्ववत् करे उन्ही रासीसे दो दाना निकालके पृच्छा करतां मध्यमयुक्ता अनन्ता होता है उन्ही रासीमें एक दाना डालके पृच्छा करतों उत्कृष्ट युक्ता अनन्ते होते है और दुसरा दाना डालके पृच्छा करतों जघन्य अनन्ते अनन्ता होता है यह विधि अनुयागद्वार सूत्रयुक्त कही है ।

मतान्तर एक आचार्यमहाराज केहते है कि जो उपर चोथो जघन्ययुक्ता असंख्याते है उन्हीका वर्ग करना जीतनेकों जीतने गुणा करना जेसे दशकों दशगुणा करनेसे १०० होता है इसी माफीक असंख्यातेकों असंख्यातगुणा करनेसे जो रासी हो उन्हीकों सातमा जघन्य असंख्याते असंख्यात केहते है अर्थात् रासीमे दो दाना निकालनेसे पाचमा मध्यम युक्ता असंख्याता होता है एक दाना मीलादेनेसे उत्कृष्ट युक्ता असंख्याते होते है दुसरा दाना मीलानेसे जघन्य असंख्याते असंख्यात होता है ।

जघन्य असंख्याते असंख्याताकि जो रासी है उन्हीं

(५) कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—वीस कोडा कोड सागरोपमका एक कालचक्र होता है उन्हीका समय असख्याते है एक कालचक्रके पेहला समयमें जीव जन्ममरण कीया फीर दुसरा कालचक्रके पेहला समयमें जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं परतु अन्य अस्पर्श समयके अन्दर जन्म मरण करे वह गीनतीमें आवे इसी माफीक जन्ममरण करते करते सम्पुरण कालचक्रके सर्व समयोंपर जन्ममरण कर उन्हीको कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है। उन्हीमें भी काल अनन्त पुरण होते है।

(६) कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन–पूर्वोक्त काल चक्रके प्रथम समय जन्ममरण कीया और दुसरे कालचक्रके दुसरे समय जन्ममरण करे तो गीनतीमें शेष समयमें जन्म मरण करे तो गीनतीमें नहीं इसी माफीक तीसरा कालचक्रका तीसरा समयम चोथा कालचक्रके चोथा समयमें एव क्रम'सर समयम जन्ममरण करे तो गीनतीमें आवे किन्तु निचमें अन्य समयमें जन्ममरण करे तो सब भव गीनतीमें नहीं इसी माफीक सम्पुरण कालचक्रको पुरण करदे उन्हीको कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन केहते है बादरसे सूक्ष्मको काल अनन्तगुणा लगता है।

(७) भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—कर्मोके अनु

रासीको तीन दफे वर्ग करना जेसे कि पाचकों पेहले वर्ग करनेसे २५ होता है दुसरी दफे २५ को वर्ग करनेसे ६२५ होता है तीसरी दफे ६२५ कों ६२६ गुणासे ३६०६२५ होता है इसी माफीक सातमा बोल जो असख्याते असंख्यात है उन्हींकों त्रीवर्ग करके उन्हीके साथ १० बोल मीलाना

(१) धर्मास्तिकायके सर्वप्रदेश.
(२) अधर्मास्तिकायके सर्वप्रदेश.
(३) लोकाकशास्तिकायके मर्वप्रदेश
(४) एक जीवके आत्मप्रदेश
(५) कर्मोकि स्थितिबन्ध अध्यवसाय स्थान
(६) अनुभाग-शुभाशुभ प्रकृतिके रसविभाग.
(७) मन वचन कायाके योगस्थान अर्थात् वीर्य अस
(८) कालचक्रके समय
(९) प्रत्येक जीवोंका शरीर
(१०) निगोद जीवोंका शरीर (असख्याते औदारीक शरीर है वह)

पूर्वोक्त रासीके अन्दर यह दश बोल मीलाके रासीकों तीनवार पूर्ववत् वर्ग करे वह रासीमे दो दाने निकालके पृच्छा करे तो आठमा मध्यम अस० असख्यात होता है एक दाना डालके पृच्छा करे तो उत्कृष्ट असख्याते असख्यात होता है

भाग तथा सर्व स्थितिका स्थान असंख्याते हैं उन्ही असंख्याते स्थानपर जन्ममरण करे जेसे एक स्थान जन्ममरण कर स्पर्श लिया है अब दुसरी दफे उन्ही स्थानपर अनेकवार जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं आवे परतु नहीं स्पर्श कीये हुवे स्थानकों स्पर्श कर मरे वह गीनतीमें आवे इसी माफीक अस्पर्श कीये हूवे सर्व स्थानोंकों जन्ममरण द्वारे स्पर्श करते करते सर्व अध्यवशय स्थानकों स्पर्श करे उन्हीकों भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते हैं। कालपूर्ववत्

(८) भावापेक्षा सूक्ष्मपुद्गल परावर्त्तन—पूर्वोक्त जो अध्यवशायेके असख्याते स्थान है उन्हीकों क्रम'सर स्पर्श करे जेसे प्रथम स्थानकों स्पर्श कीया बादमें कालान्तर दुसरेकों स्पर्श करे अगर विचमें अन्यस्थानकों जन्ममरण कर स्पर्श करे वह गीनतीमें नही परन्तु क्रमःसर करे वह गीनतीमें आवे एव तीजो चोथो पाचमो छटो यावत् क्रम.सर चरमस्थान स्पर्श करे इन्ही को भी अनन्तोकाल लागे ह उन्हीको भावारूपेक्षासूक्ष्मपुद्गल परावर्त्तन कहेते हैं और कितनेक आचार्योंकी यहभी मन्यता है कि जो नारकिकि जघ० १०००० वर्ष कि स्थितिसे लगाके ३३ सागरोपमकी स्थितिका असंख्याते स्थान है उन्ही सर्वको अस्पर्श कोंस्पर्श कर सव स्थानोंको जन्ममरणद्वारे पुरण कर देवे एव देवतोंमे ३१ सागरोपम तथा मनुष्य तीर्यंचमे ज० अन्तर

और दुसरा दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य प्रत्येक अनन्ते होता है उन्ही रासीकों और भी पूर्ववत् वीवर्ग करके दो दाना निकालनेमे मध्यम प्रत्येक अनन्ते होता है एक दाना मीला-देनासे उत्कृष्ट प्रत्येक अनन्ते होते है और दुसरा दाना मीला-देनेसे जघन्ययुक्ता अनन्ते होते है (इतने अभव्य जीव है)

जघन्य युक्ता अनन्ते को वीवर्ग-पूर्ववत् तीनवार वर्ग करके जो रासी आवे उन्ही रासीमे दो दाना निकालके शेष रासीकी पृच्छा करे तों वह रासी पांचमा मध्यम युक्ता अनन्ता होता है एक दाना डालके पृच्छा करे तों जघन्य अनन्ते अनन्ता होता है ।

जघन्य अनन्ते अनन्त को और भी तीनवार वर्ग करे तो भी उत्कृष्ट अनन्ते अनन्त न हुवे उन्ही रासीके अन्दर ६ बोल और भी मीलाने यथा--

(१) सिद्धोंके सर्व जीव (अनन्ते है)

(२) निगोदके जीव (सूक्ष्मबादर निगोद)

(३) वनास्पतिके जीव (प्रत्येक और साधारण)

(४) भूत भविष्य वर्तमान कालका समय

(५) परमाणु आदि सर्व पुद्गल स्कन्ध

(६) लोकालोक के आकाश प्रदेश

मुहूर्तसे तीनपल्योपम तक के स्थिति स्थानको पूर्ववत् जन्म-मरण कर पुरण कर दे उन्हीको भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्त्तन केहेते है और पुर्वोक्त स्थिति स्थानोंकों क्रम सर १-२-३ यावत् चरमान्त समयतक जन्ममरणसे स्पर्श कर सम्पुरण स्थिति स्थानपुरण करे उन्हीको भावापेक्षासूक्ष्मपुद्गलपरावर्त्तन केहते है ग्रन्थान्तर वर्ण गन्धरस स्पर्श अगुरुलघुपर्या इन्ही पुद्गलोंकों जन्ममरणद्वारे अस्पर्शको स्पर्श करे (पूर्ववत्) उन्हीकों भावापेक्षाबादर पुद्गलपरावर्त्तन और क्रम'सर पुद्गलोंकों स्पर्श करे उन्हीकों भावापेक्षा सूक्ष्मपुद्गलपरावर्त्तन केहेते है.

द्रव्य क्षेत्र काल भाव इन्ही च्यारों प्रकार पुद्गलपरावर्त्तन के बादरकों अनन्ताकाल लगता है और जो बादरकों काल लगता है उन्हीसे भी - सूक्ष्मको अनन्तगुणा काल लगता है (विस्तार देखो भगवतीजीके पुद्गलपरावर्तनका थोकडासे)

प्रत्येक संसारी जीव भूतकालमें द्रव्यक्षेत्रकालभावसे अनन्ते अनन्ते पुद्गलपरावर्तन कर आये है।

एक दफे सम्यक्त्व प्राप्ती हो जाते है तो फीर वह संसारमें रहे तो देशोना अर्द्ध पुद्गलमे ज्यादा नही रहेता है इस लिये भव्यात्माओंकों इस वैरागमय थोकडेपर अवश्य ध्यान देना चाहिये कारन वीतरागके धर्महीनो अपना जीव भी इसी आधारपर संसारमें अनन्ते पुद्गलपरावर्तन कर

पूर्वोक्त रासीके अन्दर यह ६ बोल मीलाके और भी तीनवार वर्ग करना और वह वर्ग रासी हो उन्हीके अन्दर केवलज्ञान केवलदर्शनके सर्व पर्याय मीलानेसे उत्कृष्ट अनन्ते अनन्त होता है परन्तु लोकालोकमे एसा कोइ भी पदार्थ नही है वास्ते शास्त्रकारोने यह सर्व को आठमा मध्यम अनन्ते अनन्तमे ही गीना है तत्त्वकेवलीगम्य ।

२१ बोलोकी सख्या

(३) सख्याते के तीन बोल जघन्य मध्यम उत्कृष्ट-

(६) असख्याते के नव बोल (१) जघन्य प्रत्येक असख्याते, (२) मध्यम प्रे० अ, (३) उ० प्र० अ०, (४) जघन्ययुक्ता असख्याते, (५) म० युक्ता असं०, (६) उ० यु० असं०, (७) जघन्य असख्याते असख्यात, (८) मध्यम असख्याते असं० (६) उत्कृष्टासख्याते असख्यात इति

(६) अनन्ते के नव बोल (१) जघन्य प्रत्येक अनन्ता (२) मध्यम प्र० अनन्ते (३) उ० प्र० अनन्ते (४) ज० युक्ता अनन्ते (५) मध्यम युक्ता अनन्ते (६) उत्कृष्ट युक्ता अनन्ते (७) जघन्य अनन्ते अनन्ता (८) मध्यमानन्ते अनन्ता (६) ० उत्कृष्टानन्ते अनन्ता इति

॥ सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥

—oo—

आया है उन्ही श्रमकों दुर करनेके लिये इस समय मनुष्य जन्मादि अच्छी सामग्री मीली है वास्ते श्रीसर्वज्ञ प्रणित् परमोत्तम धर्मका आराधन कर पुद्गलोकों जलाञ्जली देके अपना निज स्थानकों स्वीकार करना चाहिये ।

॥ सेवंभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. १६

(संख्यातादि २१ बोल)

शास्त्रकारोंने सख्याते असख्याते और अनन्तेका २१ भेद कर बतलाये है जिस्मे सख्यातेके तीन भेद है (१) जघन्य सख्याते (२) मध्यम सख्याते (३) उत्कृष्ट सख्याते । जघन्य सख्याते दोय रूपकों केहते है मध्यम सख्याते तीन च्यार पांच छे सात यावत् उत्कृष्ट सख्यातेमें एक रूप न्युन हो । उत्कृष्ट सख्यातेके लिये च्यार पालोंका द्रष्टान्त कर बतलाते है।

पाला च्यार प्रकारके है (१) शीलाक (२) प्रतिशीलाक (३) महाशीलाक (४) अनवस्थित । प्रत्येक पाला एक लक्ष जोजनका लम्बा चोडा तीन लक्ष शोला हजार दोय सो सतावीश जोजन तीन गाउ एकसो अठाविश धनुष्य साडातेर

चरमदाना रहे वह लेके शीलाक पालामें डालदे , तब शीलाक पालामें तीन दाने जमा हूवे । जिस द्विप वा समुद्रमें अनवस्थित पाला खाली हूवा था उन्ही द्विप या समुद्र जीतना विस्तारवाला पाला बनाके सरसवके दानासे भरके आगेका द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चला जावे शेष चरमका दाना शीलाक पालामें डाले तब शीलाकपालामें च्यार दाने जमा हूवे । इसीमाफीक अनवस्थित पाला कि नवीनवी अवस्था होते एकेक दाना शीलाकमें डालते डालते लच जोजनके विस्तारवाला शीलाकपाल भी समपुरण भरा जावे तब अनवस्थित पालाकों जहाँ खाली हूवा है वहाही छोड दे और शीलाकपालको हाथमे ले के एकदाना द्विपमे एकदाना समुद्रमे डालते डालते शेष एकदाना रहे वह प्रतिशीलाकमे डाल देना अबशीलाक खाली पडा है पीछा अनवस्थितका पाला जो कि शीलकका] चरमदाना जिस द्विप या समुद्रमे पडाथा उन्ही द्विप या समुद्र जीतना अनवस्थित पाला बनाके सरसवके दानेमें भरके द्विप समुद्रमे डालता जावे शेष एक दाना रहे वह फीरसे शीलाकपालामे डाले एकेक दाना डाल के पेहले कि माफीक शीलाकको भरदे फीर शीलाक को उठाके एकेक दाना द्विप वा समुद्रमें डालते डालते शेष एक दाना रहे वह प्रतिशीलाकमे डाले तब प्रतिशीलाकमे दो दाना जमा हूवे फीर अनवस्थित पालासे एकेक

हीसाब १६७७ का.

जमा.

६५५।	पहेला पर्युषणमें सुपनादिकी आवन्दका.
१२०५।	दुजा पर्युषणमें सुपनादिका आवन्दका.
४।=	आठवा भागकी बचत
१७५	भगवतीसूत्रकी पूजाका रु ३२५ के अन्दरसे
२०३९।।।=	

नावे

१७७।।	नन्दीसूत्र १००० का.
१०३।।।	अमे साधु शा माटे थया १०००
३५९।	सात पुष्पोंका गुच्छ १०००
९१।।।	शीघ्रबोध भाग १० वा १०००
२७३।।	शीघ्रबोध भाग ११ वा १०००
२७३।।	शीघ्रबोध भाग १२ वा १०००
५११	शीघ्रबोध भाग १३ वा १००० शीघ्रबोध भाग १४ वा १०००
२३६।	द्रव्यानुयोग प्र-प्र. १५००
१३।=	शीघ्रबोध भाग ९ का लागता
२०३९।।।=	

श्री संघके सेवक,

मेघराज मोणोयत

मु० फलोधीवाला.

दाना डालके शीलाक पालाको भरे ओर शीलकके एकेक दाना प्रतिशीलाकमे डालने जाने इसीमाफीक करते करते प्रतिशीलाक पाला लच जोजनके परिमाण वाला भी सीखा सहित भरा जावे तब अनवस्थित ओर शीलाक दोनोको छोडके प्रतिशीलाकको हाथमे लेके एक दाना द्विपमे एक दाना समुद्रमे डालते डालते शेष एक दाना रहे वह महा शीलाकमे डलदेना जीस द्विपमे प्रतिशीलाक पाला खाली हूवा है इतना विस्तारवाला ओर भी अनवस्थितपाला बनाके सरसवमे भरके आगेके द्विप समुद्रमे एकेक दाना डालता जाने पूर्ववत् अनवस्थितपालासे शीलाकपालाको एकेक दानासे भरदे ओर शीलाक भरा जावे तब शीलाकसे प्रतिशीलाक भरदे ओर प्रति शीलाक पालासे पूर्ववत् एकेक दना डालते डालते महाशीकको भरदे आगे पांचमो कोइ भी पाला नही है इसी वास्ते महाशीलाक पाला भरा हूवा ही रेहेना देवे ओर पीच्छले जो अनवस्थित पालासे शीलाक भरे ओर शीलाक पालासे प्रतिशीलाक भरदे प्रतिशीलाक खाली करनेको अब महाशीलाकपालामे दाना समावेस नही हो शक्ता है वास्ते प्रतिशीलाक भी भारा हूवा रहे ओर अनवस्थित पालासे शीलाक पाला भर देवे आगे प्रति शीलाकमें दाना समावेश हो नहीं शके इसी वास्ते शीलाक पाला भी भरा हूवा रहे ओर अनवस्थित पाला भरा हूवा है वह शीलाक पालामें दाना समावेश

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं० ५१

शीघ्रबोध भाग १९ वाँ

लेखक —
मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी

हो नहीं शके वास्ते अनवस्थित पाला भी भरा हूवा रहे इसी माफीक च्यारो पाला भरा हूवा है अन जो पीछे द्विप समुद्रमें सरसवके दाना डाला था उन्ही सर्व दोनोंको एकत्र कर एक रासी बनावे उन्ही रासीके अन्दर पूर्व भरे हूवे च्यारों पालोंके सरसव दाने मीला देवे उन्ही रासीके अन्दरसे एक दाना निकलकर शेष रासी है वह उत्कृष्ट सख्याते है अर्थात् दोय दानोंकों जघन्य सख्याते कहेते हैं और पूर्व जो बतलाये हूवे तीन पालोंसे द्विप समुद्रमें सरसवके दाने और च्यार पाले भरे हूवे दानोंकों मीलाके एक रासी करे तीन दानोंसे लगाके उन्ही रासीमें दो दाना कम हो वहातक मध्यम सख्याते होते है और रासीमें एक दाना कम होना उन्हीकों उत्कृष्ट सख्याते कहे जाते है और वह रहा हूवा एक दाना रासीमें मीलादे अर्थात् समपुरण रासीकों जघन्य प्रत्येक असख्याते केहते है अर्थात् पेहला डाले हूवे द्विप समुद्रके सर्व सरसव एकत्र करके भरे हूवे च्यारों पालोंके सरसव भी साथमें मीलाके सबकी एक रासी बनादे उन्ही रासीकों जघन्य प्रत्येक असख्याते कहेते है और उन्ही रासीसे सरसवका एक दाना निकाल लेवे तब शेष रासीकों उत्कृष्ट सख्याते केहते है अगर दो दाना रासीसे निकाल लेवे तब शेष रासीकों मध्यम सख्याते केहते है ।

विषयानुक्रमणका ।

विषय ।	पृष्ट

श्री रत्नप्रभासूरि सद्गुरुभ्यो:

अथश्री

शीघ्रबोध

अथवा

थोकडा प्रबन्ध

भाग १५ वां
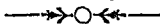
सम्पादक —
श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनि
श्रीज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

प्रकाशक —
शाहा हीरचन्दजी फूलचदजी कोचर
मु० फलोधी (मारवाड)

प्रथमा वृत्ति १००० वीर सवत् २४४८
विक्रम स० १९७८

'जैन विजय' प्रेस—सूरतमें मूलचद किसनदास कापडियाने
मुद्रित किया।

(४४) प्रश्न–ज्ञानादि सर्व गुण सपन्न होनेसे क्या फल होत है ?

(उ) ज्ञानादि सर्वगुण सपन्न होनसे फिर दुसरी दफे ससारमें जन्म मरण न करे अर्थात शरीरी मान्सी दुःखोंका अन्त कर मोक्षमें जावे ।

(४५) प्रश्न– राग द्वेष रहित (वीतराग) होनेसे क्या फल होता है ।

(उ०) राग द्वेष रहित होनेसे धन धान्य पुत्र कलत्र शरीर आदि पर मस्नेह दूर हो जाता है तब शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श इन्होंके अच्छे होन पर राग नहीं बुरे होने पर द्वेष नहीं उत्पन्न होते हैं अर्थात् अच्छा और बुरे निंदा और स्तुतिसर्व पर शमभाव हो जते है ।

(४६) प्रश्न–क्षमा करनेसे जीवोंको क्या फल होता है ।

(उ) क्षमा करनेसे जीवोंके परिसह रूप जो महान् शत्रु है उन्होंको क्षमा रूपी कवच (शस्त्र)से पराजय कर देता है पराजय करनेसे स्वपर आत्मावोंका शीघ्र कल्याण होता है । शान्ति करनेके लिये यह एक परम औषधी है ।

(४७) प्रश्न–निर्लोभता रखनेसे क्या फल होता है ।

(उ) निर्लोभता रखनेसे अकिंचन भाव होता है इन्होंसे जो जीवोंके आकाश प्रदेशकि माफीक अनती तृष्णा लग रही है उन्हों को शात कर देता है ।

(४८) प्रश्न मर्द्दव (कोमलता) गुण प्राप्त होनेसे क्या फल होता है ।–

प्रस्तावना।

प्यारे वाचक वृन्दों !

शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४ आप लोगोंकि सेवामें पहुच चुका है। आज यह १५ वा भाग आपके कर कमलोंमें ही उपस्थित है। इन्ही १५ वा भागके अन्दर पूर्व महाऋषियों स्वआत्म-परकाण और पर आत्मावोंपर उपकार करनेके लिये तथा आत्मसत्ता प्रगट करनेवाले महात्वके प्रश्न तथा प्रश्नोके उत्तर सिद्धान्तोद्धारे शकलित किये थे। उन्होंकों सुगमताके साथ हरेक मोक्षाभिलाषीयोंके सुख सुख पूर्वक समझमें आवाके इस हेतुसे मूलसुत्रोंसे भाषान्तर कर आप कि सेवामें यह लघु किताब भेजी जाती है आशा है कि आप लोग इस आत्म कल्याणमय प्रश्नोत्तर पढके पूर्व महाऋषियोंके उद्देशको सफल करोगे इस।
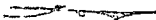
यादिके अन्दर स्थापन करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) वचन० मर्यादाको जनने वाला होता है मर्यादाको जाननेसे जीवदर्शनको विशुद्ध करता है । दर्शन विशुद्ध होनेसे दुर्लभपनेका नाश करता हुवा सुलभ बोधीपना उपार्जन करता है ।

(५८) प्रश्न–कायाके अयत्न आदि दोषोंको दुर कर व्रत-वचादिक्रमे स्थापन करनेसे क्या फल होता है ।

(उ०) काया० इन्होंसे चरित्र पर्यवको विशुद्ध करता है चरित्र पर्यव विशुद्ध होनेसे जीव यथाख्यात चरित्रकि आराधना करते है इन्होंसे वेदनियमे आयुष्यकर्म नामकर्म गोत्रकर्मको क्षय कर मोक्ष जाता है ।

(५९) प्रश्न–अज्ञानको नष्टकर ज्ञान सपन्न होनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) ज्ञानसपन्न होनेसे जीव जीवादि पदार्थको यथावत् समझे यथावत् समझनेसे जीव ससार भ्रमनका नाश करे जैसे सूवके डोरा सहित सूइ होनेसे फीरसे हस्तगत हो शक्ती है इसी माफीक ज्ञान सहित जीव कभी ससारमे रेहता होतो भी कभी मोक्ष जाशकता है । अर्थात् ज्ञानवन्त जीव ससारमे विनाश पामे नहीं और ज्ञानसे विनय व्ययावच्च तप सयम समाधी क्षमादि अनेक गुणोंकी प्राप्ती ज्ञानसे होती है ज्ञानी स्वसमय पर समयका ज्ञाता होनेसे अनेक भव्य जीवोंका उद्धार कर शक्ता है ।

(६०) प्रश्न–मिथ्यात्वका नाश करनेसे–दर्शन सपन्न होता इन्होंसे क्या फल होता है ।

ॐ

श्री रत्नप्रभसूरि सद्गुरुभ्योनमः

शीघ्रबोध भाग १५ वां।

प्रश्नोत्तर नं० १।

सूत्र श्री उत्तराध्ययनजी अध्य० २९

(७१ प्रश्नोत्तर)-

आत्म कल्याण करनेवाले भव्यात्मावोंकि लिये निम्नलिखत प्रश्नोत्तर बड़े ही उपयोगी है वास्ते मौक्ताफलके मालाकि माफिक हृदयकमलके अन्दर स्थापित कर प्रतिदिन सुधारस पान करना चाहिये।

(१) प्रश्न-सवेग (वैराग) संसारका अनित्यपना और मोक्षकि अभिलाषा रखनेवाले जीवोंको क्या फलकि प्राप्ती होती है।

(उत्तर) सवेग (वैराग) कि भावना रखनेसे उत्तम धर्म करनेकि श्रद्धा होगा। उत्तम धर्मकि श्रद्धा होनेपर संसारीके पौद्गलीक सुखोंको अनित्य समझेगा अर्थात परमवैराग्य भावको प्राप्त होगा। जब अन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभका क्षय करेगा, फिर नये कर्म न बन्धेगा इन्हीसे मिथ्यात्वकि बिलकुल विशुद्धि होगा। जब सम्यक् दर्शनकि आराधना करता हुवा उसी भवमें मोक्ष जावेगा, अगर पेस्तर किसी गतिका आयुष्य बन्ध भी गया हो तो भि तीन भवोंमें तो आवश्यहि मोक्ष जावेगा।

(२) प्रश्न-निर्वेद (विषय अनाभिलाषा) भाव होनेसे जीवोंको क्या फलकि प्राप्ती होती है ?

(उ०) दर्शन सपन्न होनेसे जीव जो ससार परि भ्रमनका मूल कारण अन्तानुबधी क्रोधमान माया लोभ और मिथ्यात्व मोहनिय है उन्होंका मूलसे ही उच्छेद कर देता है एसा करते हुये च्यार धन घाती कर्मोंका नाश करते हूवे केवल ज्ञानदर्शनको उपार्जन करते है तब लोकालोकके भावोंको हस्तामल्की माफिक देखता हुवा विचरता है।

(६१) प्रश्न—अव्रतका नाश करके चरित्र सपन्न होता है उन्होंका क्या फल होता है।

(उ०) चरित्र (यथाक्षात) सपन्न होनेसे जीव शलेसीकरण वाला चौदवा गुणस्थानको स्वीकार करता है चौदवा गुणस्थानको स्वीकार करते हुवे अत क्रिया करके जीव सिद्ध पदकी प्राप्ती कर लेते है।

(६२) प्रश्न—श्रोतेन्द्रियको अपने कबजेमें करलेनेसे क्या फल होता है।

(उ) श्रोतेन्द्रियको अपने कबजेमें करलेनेसे अच्छा और बुरा शब्द श्रवण करनेसे रागद्वेषजो कर्मोंका बीज है उन्होंकी उत्पती नही होती है इन्होंसे नये कर्मोंका बन्ध नही होता है पुराणे बन्धे हुवे कर्मोंकी निर्जरा होती है।

(६३) प्रश्न—चक्षु इन्द्रिय अपने कबजे करनेसे क्या फल होता है।

(उ) चक्षु इन्द्रिय अपने कबजे करनेसे अच्छे और बुरे रूप देखनेसे राग द्वेष न होगा। इन्हीसे नये कर्म न बन्धेगा और पुराणे बन्धे हुवे है उन्होंकि निर्जरा होगा।

(उ०) निर्वेद होनेसे जीव जो देवता मनुष्य और तीर्यंच सम्बंधी कामभोग है उन्होंसे अनाभिलाषी होता है फिर शब्दादि सर्व कामभोगोंसे निवृति होता है फिर सर्व प्रकारके आरम्भ सारम्भ और परिग्रहका त्याग कर देते है एसा त्याग करते हुवे ससारका मार्गको बीलकुल छेदकर मोक्षका मार्ग पर सीधा चलता हुवा सिद्धपुर पटनकों प्राप्त कर लेता है।

(३) प्रश्न धर्म करनेकि पूर्ण श्रद्धावाले जीवोंको क्या फल?

(उ०) धर्म करनेकि पूर्ण श्रद्धावाले जीवों। पूर्व भवमें साता वेदनिय कर्म किये जिन्होंसे इस भवमें अनेक पौदगलीक सुख मीला है उन्होंसे विरक्त भाव होते हुवे गृहस्थावासका त्याग कर श्रमण धर्मको स्वीकार कर तप सयमादिसे शरीरी मानसी दु:खोंका छेदन भेदन कर आव्याबाद सुखोंमें लोक अग्र भागपर विराजमान हो जाते है।

(४) प्रश्न--गुरु महाराज तथा स्वधर्मी भाइयोंकी शुश्रषा पूर्वक सेवा भक्ति करनेसे जीवोंको क्या फल होता है?

(उ) गुर महाराज तथा स्वधर्मी भाइयोंकि शुश्रषापूर्वक सेवा भक्ति करनेसे जीव विनयकि प्रवृतिकों स्वीकार करता है इन्हीसे जो बोध बीजका नाश करनेवाली आसातनाकों मूलसे उखेड देता है अर्थात आसातना नहीं करनेवाला होता है। इन्हींसे दुर्गतिका निरूद्ध होता है तथा गुर महाराजादिकी गुण कीर्ति करनेसे सद्गति होती है सदगति होनेसे मोक्षमार्ग (ज्ञान दर्शन चरित्र) कों विशुद्ध करता है और विनय करनेवाला लोकमें । करने लायक होता है सब कार्यकि सिद्धि विनयसे होती

(६४) प्रश्न–घ्रणेन्द्रिय अपने कबजेमें रखनेसे क्या फल होता है।

(उ) घ्रणेन्द्रिय अपने कबजेमें रखनेसे अच्छे और बुरे' गन्ध पर राग द्वेष उत्पन्न न होगा इन्होंसे नये कर्म न बन्धेगा और जो पुराणा बन्धा हुवा कर्म है उन्होंकि निर्ज्जरा होगा।

(६५) प्रश्न–रसेन्द्रिय अपने कबजे करनेसे क्या फल होगा।

(उ) रसेन्द्रिय अपने कबजे करनेसे अच्छे और बुरे स्वाद पर राग द्वेष न होगा–इन्होंसे नये कर्म न बन्धेगा पुराण बन्धे हुवे कर्मोंकी निर्ज्जरा करेगा।

(६६) प्रश्न–स्पर्शेंद्रिय अपने कबजे करनेसे क्या फल होगा।

(उ) स्पर्शेंद्रिय अपने कबजे रखनेसे अच्छे और बुरे स्पर्श पर राग द्वेष न होगा इ होंसे नये कर्म न बन्धेगा पुराणे बन्धे हुवे कर्म है उन्होंकी निर्ज्जरा होगा।

(६७) प्रश्न–क्रोध पर विजय करनेसे क्या फल होता है।

(उ) क्रोधपर विजय अर्थात क्रोधको जितलेनेसे जीवोंको क्षमा गुणकि प्राप्ती होती है इन्होंसे क्रोधावरणीय * कर्मका नया बन्ध नही होता है पुरणे बन्धे हुवे कर्मोकी निज्जीरा होती है।

(६८) मानपर विजय करनेस क्या फल होता है।

(उ) मानको जिन लेनेसे जीवोंको मर्द्दव (कोमलताविनय) गुणकि प्राप्ती होती है इन्होंसे मानावरणीय कर्मका नया बन्ध न होगा पुराण बन्धा हूवा है उन्होंकि निर्ज्जरा होगा।

---

*क्रोध मान माया और लोम यह मोहनीय कर्मकि प्रकृति है वास्ते केहनसे मोहनिय कम ही समझना एव मान माया लोम।

है एक भव्यात्मावोंको विनय करता हुवा देखके अन्य जीवोंको भी विनय करनेकि रुचि उत्पन्न होती है। अतिम विनय भक्तिका, फल है कि जन्मजरा मरणादि रोगोंको क्षय करके मोक्षकों प्राप्त कर लेता है।

(५) प्रश्न–लगे हूवे पापकि आलोचना करनेसे जीवोंको क्या फल होता है।

(उ०) लगे हूवे पापकि आलोचना करनेसे जो मोक्षमार्गमें विघ्नभूत और अनन्त ससारकि वृद्धि करनेवाले मायाशल्य, निदानशल्य मिथ्या दर्शनशल्यको मुलसे निष्ट कर देते है। इन्होंसे जीव सरल स्वभावी हो जाते हैं सरल स्वभावी होनेसे जीव स्त्रिवेद नपुसकवेद नही बन्धे अगर पेहले बन्धा हुवा हो तो निर्जरा (क्षय) कर देते है। वास्ते लगे हुवे पापकि आलोचना करनेमें प्रमाद बिलकुल न करना चाहिये।

(६) प्रश्न–अपने किये हूवे पापकि निंदा करनेसे क्या फल होता है?

(उ०) अपने किये हूवे पापकि निंदा करनेसे जीवोंको पश्चाताप होता है अहो मैंने यह कार्य बूरा किया है। एसा पश्चाताप करनेसे जीव वैराग्य भावकों स्वीकार करता है एसा करनेसे जीव अपूर्व गुणश्रेणिका अवलम्बन करते हुवे जीव दर्शन मोहनिय कर्मको नष्ट करता हूवा निज आवास (मोक्ष) में पहुच जाता है।

(७) प्रश्न–अपने किये हूवे पापोंकों गुरु महाराजके आगे घृणा करते हूवे जीवोंको क्या फल होता है?

(६९) प्रश्न–मायाकी विजय करनेसे क्या फल होता है ।

(उ) मायाकों जितलेनेसे जीवोंको सरलता निष्कपट भावोंकी प्राप्ती होती है इन्होंसे मायावरणीय नये कर्मोंकी बन्ध नही होता है और पुराणे बन्धे हूवे कर्मोका निर्ज्जरा होती है ।

(७०) प्रश्न–लोभका विजय करनेसे क्या फल होता है ।

(उ) लोभ जित लेनेसे जीवोंकों निर्लोभता गुणकि प्राप्ती होती है इन्होंसे लोभावरणीय कमका नये बन्ध न होगा पुराणे बन्धे हूवे कर्मकी निर्ज्जरा होगी ।

(७१) प्रश्न–रागद्वेष और मिथ्यात्वशल्यका परित्याग करनेसे क्या फल होता है ।

(उ०) रागद्वेष मिथ्यात्वशल्यका त्याग करनेसे जीव ज्ञानदर्शन चरित्रकि आराधना करनेको सावधान होता है ऐसा होनेसे जो अष्टकर्मोकि गठी है उन्होंको छेदन भेदन करनेको तैयार होता है जिस्मे भी प्रथम मोहनिय कर्मकि अठावीस प्रकृति है उन्होंकि घात करता है बादमें ज्ञानावर्णीय कर्मकी पाच प्रकृती और दर्शनवर्णिय कर्मका नव प्रकृति और अ तराय कर्मकि पाच प्रकृति इन्हीं च्यार घन घातीये कर्मोकी नास कर देता है इन्हीं च्यारों कर्मोका नास (क्षय) करनेसे अनुत्तर प्रधान जिस्के आवरण नहीं है वह भी आनेके बाद फिर जाता नहीं है वेसा उत्तम केवल ज्ञानको प्राप्त कर लेते है तब सयोग केवली होते है उन्होंको सपराय कर्मका बध नही होता है परन्तु इरिया वही कर्म प्रथम समय बध दुसरे समय वेदना तीसरे समय निर्ज्जर हो एस दो समय वाल कर्मोका बन्ध होता है फोर चौदवे गुणस्थान

(उ०) अपने किये हुवे पापोंको गुरु सन्मुख घृणा करनेसे प्रथम तो अपनि आत्माको विशूद्ध बनानेके लिये निज दोष प्रगट करनेका स्थान मीला है इन्हींसे अप्रसस्थ योगोंका निष्ट करता हुवा प्रशस्थ योगोंको स्वीकार करता है एसे करनेसे जीवोंके ज्ञानावर्णीय दर्शनावर्णीय कर्मोका दल आत्माके ज्ञानदर्शन गुणको रोक रखा है उन्ही कर्मदलको निष्ट करता है इन्हीसे अपूर्व ज्ञानदर्शन गुणकि प्राप्ती होती है।

(८) प्रश्न—सामायिक (षटावश्यकसे पेहलावश्यक) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) सा० शत्रु मित्रोंपर समभाव रूप जो सामायिक करते है उन्ही जीवोंको सावद्य—पापकारी योगोंका वैपार नहीं रहता है अर्थात नवा कर्मोंका बन्ध नहीं होता है।

(९) प्रश्न—चौवीस तीर्थकरोंकि स्तुतिरूप चोविस्थो (दुसरा वश्यक) करनेसे क्या फल होता है ?

(ऊ) चौवीस तीर्थकरोंकि स्तुति करनेसे दर्शन (सम्यक्त्व) विशुद्ध होता है अर्थात् गुणी जनोंका गुण करनेसे अ त करण स्वच्छ हो जाता है ।

(१०) प्रश्न—गुरुमहाराजको द्वादशावर्तन वन्दन (तीसराव-श्यक) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) गुरु वन्दन करनेसे जीवोंके निचगौत्रका ब धनही होता है अगर पेहला हूवा होतो क्षय हो जाता है और उच्च गोत्र यशोकीर्ति शुभ सौभाग्य सुस्वर आदि अच्छे प्रकृतीयोंकि ˆ होती है अर्थात गुरवादिको वन्दन करनेसे अपनि लघुता

जाने पर जीव कर्मोका अबन्धक हो जाते है ।

(७२) प्रश्न—अबन्धक होनेसे जीवोंका क्या फल होता है ?

(उ०) अबन्धक होनेसे अर्थात् अन्तर महूर्त आयुष्य रहनेसे योगोंका निरूद्ध करते हुवे सूक्षम क्रियासे निवृति और शुक्ल ध्यानके चौथे पायेका ध्यान करते हुवे प्रथम मनोयोगका निरूद्ध पीच्छे वचन योगका निरूद्ध पीच्छे काय योगका निरूद्ध करके पाच ह्रस्वाक्षर " अ इ उ ऋ ऌ " का उच्चारण कालमें समुत्सम क्रियाका निरूद्ध और शुक्ल ध्यानके अदर वर्तते आयुष्य कर्म वेदनिय कर्म नामकर्म गोत्रकर्म इन्हीं च्यारों कर्मोको सयुग क्षयकर देता है ।

(७३) प्रश्न—चारों अघातीये कर्मोका क्षय करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) च्यारों अघातीये कर्मोका क्षय करनेसे जीव जो अनादि कालका सयोग वाला तेजस कारमण और औदारीक यह तीनों शरीरको छोडके समश्रेणी प्राप्त अस्पश प्रदेश उर्द्ध एक समय अविग्रहगतिसे नानके साकार पयोग सयुक्त सिद्ध क्षेत्रमें अनते अव्याबाद सुखोमें विराजमान हो जाते है ।

यह ७३ प्रश्नोत्तर भव्यात्मावोंके कण्ठस्थ करनेके लिये विस्तार नही करते हुवे मूल सूत्रसे सक्षेपार्थ ही लिखा है अधिक अभिलाषा रखने वाले आत्म बन्धुओंको गुरुमुखसे यह अध्ययन अवश्य श्रवण करना चाहिये । इत्यलम् ।

सव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

और दुसरेका बहूमान होता है इन्होंसे जीव कर्मोसे लघुभूत होता है ।

(११) प्रश्न–प्रतिक्रमण (चोथावश्यक) करनेसे जीवोंको क्या फल होता है ?

(उ) प्रतिक्रमण करनेसे जो जीवोंके व्रतरूपी नावाके अति-चार रूप हूवा छेद्र उन्हींका निरूद्ध होता है एसा करनासे जीवोंको आश्रव और सबले दोषोंसे निवृतिपना होता है इन्होंसे अष्टप्रवचन कि माता रूपी सयम तपके अन्दर समाधिवान्त पणे विचारे ।

(१२) प्रश्न–कायोत्सर्ग (पाचमावश्यक) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) कायोत्सर्ग करनेसे जीव भूत वर्तमान कालके प्रायश्चितको विशुद्ध करता है जैसे भारके वहान करनेवालेका भार उतर जानेसे सुखी होता है वैसे ही प्रायश्चित उतर जानेपर जीव भी सुखी हो जाते है ।

(१३) प्रश्न–पच्चरखान (छटावश्यक) करनेसे क्या फल होता है।

(उ) पचरखान करनेसे जीवोंकि इच्छाका निरूद्ध होता है ऐसा होनेसे सर्व द्रव्यसे ममत्वभाव मीट जाता है ममत्व न रहनेसे जीव शीतलीभूत होके सयमके अन्दर समाधिपने विचरता है ।

(१४) प्रश्न –' थाइथुइ मगल" चैत्यवन्दन करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) चैत्यवन्दन करनेसे जीवोंको बोधबीज रूपि ज्ञान दर्शन चरित्र कि प्राप्ती होती है इन्होंसे अन्त' क्रिया करके मोक्ष

प्रश्नोत्तर नं० २

सूत्र श्री उत्तराध्ययनजी अध्य० ९

(श्री नमिराज ऋषि)

प्रत्येक बुद्धि नमिराजाकि कथा विस्तारसे है परन्तु हमारेको यहांपर प्रश्नोत्तर ही लिखना है वास्ते सक्षिप्त परिचय करा देना उचित समझा गया है यथा–मिथिलानगरीका नरेश नमिराजके शरीरमें दाह ज्वर होजानेसे पतिको भक्तिके लिये १००८ राणी-यों बावनाचन्दनको घसके अपने स्वामिके शरीरपर शीतल लेपन कर रही थी उन्ही समय सब राणयोंके हाथमें रत्नोंके कङ्कणोंकी झणकार (अवाज) राजाको नागवार गुजरने पर हुकुम दे दीया कि यह अवाज मुझे अधिक तकलीफ दे रही है तब सब राणीयोंने अपने स्वामिका हुकूम होनेपर मात्र एकेक चुडी रखके शेष सर्व खोलके रखदी इतनेमें खखका बन्ध होनेसे राजाने पुछा कि क्या अब वह झनकार नहीं है राणीयोंने कहा स्वामिनाथ हमने शोभा-ग्यके लिये एकेक चूडी ही रखी है इतनेमें तो नमिराजाको यह ज्ञान हुवा कि बहुत मीलने पर ही दुःख होता है अलम् अपनेको एकेला ही रेहना चाहिये यह एकत्व भावना करते हो जाति स्मरण ज्ञान होगया आप परमयोगीराजा होके मिथिला नगरीको छोड बगीचेमें जाके ध्यानारूढ होगये ।

उन्ही समय प्रथम स्वर्गके सौधर्मेन्द्रने अवधिज्ञानसे देखा कि एकदम बगेर किसीके उपदेश नमिराजने योग धारण किया है तो चलो इन्होंकि परिक्षा तो करे । तब इन्द्रने ब्राह्मणका रूप करके नमिराज ऋषिके पास आया और प्रश्न करता

होनेसे शीतोष्ण कालमें किसी चीज्मकि तृष्णा नहीं रहेती है इन्होंसे आनन्द मगलसे सयम यात्रा निर्वाहा करते है ।

(१९) प्रश्न–सदोष आहारपाणीका त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) सदोष आहारादिका त्याग करनेसे जिन्ही जीवोंकि शरीरसे आहार बनता था उन्ही जीवोंकी अनुकम्पाको स्वीकार करता हुवा अपने जीवनेकी आसाका परित्याग करते हूवे जो आहार सबन्धी क्लेश था उन्होंसे भी निवृति होके सुख समाधीके अन्दर रमणता होती है ।

(७६) प्रश्न–कषाय (क्रोधादि)का त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) कषायका त्याग करनेसे जीव निर्कषाय अर्थात् वीतराग भावी होजाता है वीतरागी होनासे सुख और दुःखको सम्यक् प्रकारे जानता हुवा अकषाय स्थानपर पहुच जाता है ।

(३७) प्रश्न–योगों (मन वचन कायके वैपार)का त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) योगोंका त्याग करनेसे जीव अयोगावस्थाको स्वीकार करता है अयोगी होनेपर नवा कर्म नहीं बन्धते है चवदमें गुण स्थान अयोगीगुणश्रेणीपर छडने हूवे पूर्व कर्मोकी निर्जरा कर शीघ्र ही मोक्षमें जाते है ।

(३८) प्रश्न–शरीर (तेजस कार्मणादि)का त्याग करनेसे फल होता है ।

(१) प्रश्न–हे नमिराज,यह प्रत्यक्ष देवलोक सादृश मिथिलानगरीके म्हेल (प्रासाद) और सामान्य घरोंके अन्दर बड़ा भारी कोलाहल शब्द हो रहा है अर्थात् आपके योग लेनेपर इन्ही लोकोंको कीतना दु ख हुवा है तो आपको इन्ही लोकोंका रक्षण करना चाहिये क्युकि यह सब लोक आपके ही आश्रत रहे हुवे हैं।

(उत्तर) हे ब्रह्मण–यह सब लोक अपने स्वार्थके लिये ही कोलाहाल शब्द कर रहे है न कि मेरे लिये। जैसे इस मिथिला नगरीके बाहर एक अच्छा सुन्दर पुष्प पत्र फल शाखा प्रति साखासे विस्तारवाला वृक्ष है उन्हों कि शीतल सुगन्धी छाया और मधुर फल होनेसे अनेक द्विपद चतुष्पद और आकाशमें उडनेवाले पक्षी आनन्दमें उन्हीं वृक्षकि निश्रायमें रहते थे। किसी समय अति वेगके वायु चलनेपर वह वृक्ष तूट पडा उन्ही तूटे हुवे वृक्षकों देखके वह आश्रत जीव एकदम रौद्र आक्रन्दसे कोलाह करने लग गये अब सोचिये वह जीव अपने सुखके लिये दु ख करते हैं या वृक्ष तुट पडा उन्हीको तकलीफ हुइ उन्होंके लिये दु ख करता है। कहेना ही होगा कि वह जीव अपने ही स्वार्थके लिये रूदन करते हैं इसी माफीक मथिला नगरीके जन समुह रून्दन करते हैं वह अपने स्वार्थके लिये ही करते हैं तों मुजे भी मेरा स्वार्थ साधना चाहियें उन्ही असास्वते परीवारकों अपना मानना ही बडी मूलकि बात है वास्ते मेरी नगरी आदि नहीं है म्हे एकेला ही हू।

(उ) तेजस कार्मण शरीर जीवोंकि अनादिकालसे साथ ही लगे हुवे हैं और मोक्ष जाते समये ही इन्होंका त्याग होते हैं वास्ते तेजस कार्मण शरीरका त्याग करनेसे सिद्ध अतिश्यको प्राप्त करते हुवे लोकके अग्र भाग पर जाके विराजमान होजाते है अर्थात् अशरीरी होजाते है ।

(३९) प्रश्न–शिष्यादिकि साहिताका त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) साहिता लेना (इच्छा) यह एक कमजोरी ही है वास्ते साहिताका त्याग करनेसे जीव एकत्व पणाको प्राप्त करते है एकत्व होनेसे जीवको काम क्रोध कलेश शब्दादि नही होता है स्वसत्ता प्रगट हो जाती है इन्होंसे तप सयम सवर ज्ञान ध्यान समाधि आदिमें विघ्न नही होता है निर्विघ्नता पूर्वक आत्म कार्यको साधन कर शक्ता है ।

(४०) प्रश्न–भात्त पाणी (सथारा) का त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) आलोचना करके समाधि सहित भात पाणीका त्याग करनेसे जीवोंके जो अनादि कालसे च्यारों गतिमें परिभ्रमण करानेवाले भव थे उन्होंकि स्थितिका छेदन करते हुवे ससारका अन्त कर देता है ।

(४१) प्रश्न–स्वभाव (अनादि कालसे अठारे पाप सेवनरूप प्रवृत्तिका त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) स्वभावका त्याग करनेसे अठारे पापसे निवृत्ति हो जाती है इन्होंसे जीवोंको सर्व अनीरूप स्वपणतिमें रमणता होती

(२) हे योगीन्द्र–आपकि मिथिला नगरीके अन्दर प्रचड दावानल (अग्नि) प्रज्वलित हो रही है उसमें गढ मढ म्हेल प्रासाद और सामान्य जनोंके घर जल रहे है तो आप सामने ययु नही जोते है अर्थात् आपके नेत्रोंमें बडी शीतलता रही हुई है कि आपके देखनेसे अग्नि शात हो जाती है (मोहनिय कर्मकि परिक्षका प्रश्न है)

(उ) हे भूऋषि–म्हे सुखसे सयमयात्रा कर रहा हू मेरा कुच्छ भी नही जलता है । कारण जिन्होंने राजपाट धन धान्य स्त्रियों आदिका परित्याग कर योग धारण किया हो उन्हीकों किसी प्रकारकि ससारसे ममत्व भाव नही है तो फिर जलनेकि चिंता ही क्यों हों और मेरा जो ज्ञानदर्शनादि धन है उन्होंके जलानेवाली अग्नि समान्य कषाय है उन्हीकों तो मैं प्रथम ही मेरे कब्जामें कर ली है वास्ते म्हे निर्भय होके सुख सयम यात्रा कर रहा हू ।

(१) प्रश्न–हे मुनीद्र आप दीक्षा लेना चाहते हो परन्तु पेस्तर नगरके गढ पोल भुगल दरवाजे बुरजो पर तोपो शस्त्रादिसे पका बन्धोबस्त करके फीर योग लो कि आपके राजका पूर्ण परिपालन आपके पुत्र ठीक तौरसे कर शकेगा ।

(उ) हे जगदेव–मेने मेरा नगरका खुब मजबुत जाबता कर लिया है यथातत्वश्रधन रूप मेरे नगर है तपश्चर्य बाह्य भित्तर रूप कीमाड है संवर रूप भोगल है क्षमा रूपीगढ शुभ मनोयोगका कोट, शुभ वचन योग रूपी बुरजो, शुभ काययोगका मोरचा बधा हुवा है, प्राक्रमकी धनुष्य, इर्या समतिकि जीवा

है इन्होंसे जीव शुक्लध्यान रूपी अपूर्व कारण गुणस्थानका आव- लम्बन करते हुए च्यार घनघाती (ज्ञानावर्णिय, दर्शनवर्णिय, मोह निय, अन्तराय कर्म) कर्मोंका क्षय कर प्रधान केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्षमें जाता है ।

(४२) प्रश्न–प्रतिरूप–श्रद्धायुक्त साधुके लिंग रजो हरण मुखवस्त्रादि धारण करनेसे क्या फल होता है।

(उ०) साधु लिंग धारण करनेसे द्रव्ये आरंभ सारंभ समारंभ तथा परिग्रह आदि अनेक क्लेशोंका खजाना जो संसारिक बन्ध नसे मुक्त होता है भावसे अप्रतिबन्ध विहार करते हुवे राग द्वेष कषाय विषयादिसे विमुक्त होता है अब लघुभूत (हलका) होके अप्रमतगजपर आरूढ होके माया शल्यादिको उन्मुल करते हुवे अनेकोगम जीवोंका उद्धार करते है कारण साधुका लिंग जग जीवोंको विसवासका भाजन है और कर्म कटकका नाश करनेमें मुनिपद साधक है समिती गुप्ती तपश्चर्य ब्रह्मचर्य आदि धर्म कार्य निर्विघ्नतासे साधन हो सक्ते है इन्होंसे स्वपर आत्मावोंका कल्याण कर परंपरा मोक्षमे जाते है ।

(४३) प्रश्न–व्ययावच्च–चतुर्विध संघकि व्यवावच करनेसे क्या फल होता है ।

(उ) चतुर्विध संघकि व्ययावच्च करनेसे–तीर्थंकर नाम गौत्र उपार्जन करते हैं कारण व्ययावच्च करनेसे दुसरे जीवोंको समाधि होती है शासनकि प्रभावना होति है भवान्तरमे यश कीर्ति शरीर सुन्दर मजबुत संहननकी प्राप्ती होती है यावत तीर्थ पद [illegible]गवके मोक्षमे जाते है ।

है वस सब वैरी भूमिया दुस्मनों मेरी आज्ञामे ही वर्तते है वास्ते मुजे सग्राम करने कि कोई भी जरूरत नहीं है ।

(७) प्रश्न हे राजन्–आपने उच्च कुलमे अवतार लिया है तो भवान्तरमे अच्छे मोक्ष सुखके देनवाला एक 'यज्ञ' करावो और श्रमणशाक्यादि तापसोंको और ब्रह्मणोंको भोजन करवाके दाक्षिणा देके फीर योग लेना ।

(उ०) हे भूऋषि–प्राणीयोंकि बद्धरूप जो 'यज्ञ' कराणा तो दुनीयोंमें प्रगट ही अकृत्य है कारण यज्ञमें तो गज अश्व माता पिता बकरादिका बलीदान किया जाता है इन्ही घोर हिंस्यासे तो जीवोंकि दुर्गति ही होती है अच्छे मनुष्योंको यह यज्ञ करने लायक ही नहीं है । और एसे यज्ञ कर्मके करनेवाले श्रमण शाक्यादिको भोजन कराना यह भी यज्ञ कर्मको उतेजित करना है और ससारीक भोग भोगवना यह विष समान फल देनेवाला है यह तुमारा केहना बीलकुल अयोग है हे ब्रह्मन तुही विचार यह सयम कितने उच्च कोटीका है अगर कोई मनुष्य प्रतिमास दश दश लक्ष गायोंका दान दे तथा सुवर्णमय पृथ्वीका भी दान देता है । उन्होंसे भी सयम अधिक फलवाला है । कारण सयम पालने वाला तो दश लक्ष क्या परन्तु सर्व जगत जन्तुवोंको अभयदान दिया है वास्ते सर्व प्रशसनीय सयम ही है उन्हीको अंगीकार करते हुवे सर्व जीवोंको अभय दान देता हुवा भाव यज्ञ करता हुवा मै हे आत्म सुखोंका ही अनुभव कर रहा हूं ।

(८) प्रश्न–हे धराधीश–गृहस्थाश्रम ब्रह्मचार्याश्रम भीक्षावृत्ताश्रम और वनवासाश्रम यह च्यारोश्रमके अन्दर गृहस्थाश्रम ही

उत्तम है कारण शेषाश्रमको आधारभूत है तों गृहस्थाश्रम ही है। परन्तु गृहस्थाश्रमका निर्वाह करना बड़ा ही दुष्कर है कायर पुरुषोंसे गृहस्थाश्रम चलना बड़ा ही मुशकल है गृहस्थाश्रमें तों सुरवीर धीर पुरषोंसे ही चल शक्ता है। हे नरनाथ दीक्षा तों प्रगट ही कायरता बतला रही है कि भिक्षावृतिसे आजीवका करना इतना ही नही बल्के स्वपाली लोकोंको भी निंद्या करनेयोग है वास्ते तुमारे जेसा वीर पुरषोंकों तों गृहस्थाश्रम हीमें रहेके पौषद आदि करना योग्य है ?

(उत्तर) हे भूऋषि गृहस्थाश्रम है वह सर्व सावद्य (पापं वेपार सहित) है और जिन्होंकि यह श्रद्धा है कि दीक्षासे भी गृहस्थाश्रम अच्छा है उन्होंको जो गृहस्याश्रममें रेहकर मासमासोपवास करके कुशाग्र भाग उतना भोजन करते हूवे भी 'सयम' के शीलमें भागमे नही आशक्ते हैं कारण सयम निर्वद्य है और गृहस्थाश्रम सावद्य है वास्ते धीर पुरषोंकों सयम ही स्वीकार करने योग्य है और मोक्षरूपी फलका दातार ही संयम है नकि गृहस्थाश्रम।

(९) प्रश्न-हे नराधिप--अगर आपकों दीक्षा ही लेना हो तो पेस्तर आपके खजानामे मणिमाणक मौक्ताफल चन्द्रकन्तामणि कासी ताबा पीतल वस्त्रभूषण और शैन्यके अन्दर गम अश्व सुभट आदि सर्व मजबुत भरके फीर दीक्षा लो।

(उत्तर) हे लोभानन्द-इन्ही मणिमौक्ता फलादिसे कीसी प्रकारकि तृप्ती नही होती है जेसे कीसी लोभी मनुष्यकों एक

(प्र) हे गौतम इस लोकमें कोनसा अच्छा और बुरा रस्ता है ?

(उ) हे महाभाग्य–इसी लोकमें अनेक मत मतांतर स्वच्छंद निज्मति कल्पना इन्द्रियपोषक स्वार्थवृत्तिसे तत्वके अज्ञात लोकोंने पथ चलाये है अर्थात ३६३ पाषाटोंकि चलाये हुवे रहस्तेकों कुपन्थ कहेते है और सर्वज्ञ भगवान निष्पक्षीतासे जगतोद्धारके लिये तत्वज्ञानमय रस्ता बतलाया है वह सुपथ है वास्ते मैं कुपन्थका त्याग करता हुवा सुदर सदबोध दाता सुपन्थ पर ही चलता हुवा आत्मरमणता कर रहा हु ।

हे गौतम यह उतर आपने ठीक युक्तिद्वार प्रकाश कीया परन्तु एक और भी प्रश्न मुझे पुच्छनेका है ।

हे क्षमा गुणालकृत भगवान फरमावों ?

(८) हे गौतम–इस घोर ससारके अन्दर महा पाणीका वेगके अदर बहुतसे पामर प्राणीयों मृत्युकों प्राप्त होते है तो इन्दीकों सरणाभुत एसा कोई द्विपकों आप जानते हो ?

(उ) हे भगवान–इन्ही पाणीके महा वेगसे बचानेके लिये एक बडा भारी वीस्तारवाला और शौम्य प्रकृति सुदराकर महा द्विपा है । तदा पर पाणीका वेग कभी नही आता है उन्ही द्विपाका आवलम्बन करते हुवे जीवोंको पाणीका वेग सबन्धी कीसी प्रकारका भय नही होता है ?

(प्र) हे गौतम वह कोनसा द्विपा ओर पाणी है ?

(उ) हे भगवान इस रौद्र ससारार्णवमे जन्म जरा मृत्यु रोग शोक आदि रूपी पाणीका महा वेग है इसमें अनेक प्राणीयों

करते हुवे मुनि बन्दन कर आकाश मार्ग गमन करते हुवा श्रीन मिराजऋषि प्रत्यक बुद्धि तप सयमादि आराधन कर जन्म जरा मरण रोग शोक मीगके अन्तिम श्वासोश्वासकों छोड़के लोकाग्रभागमे सास्वता सुखोंमें विराजमान हो गये। शम्

प्रश्नोत्तर नम्बर ३

सूत्र श्री उत्तराध्यायनजी अध्य० २३

(केशी गौतमके प्रश्नोत्तर)

तेवीसवा तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजीके सतानीक अनेकगुणा लंकृत अवधिज्ञान सयुक्त केशीश्रमण भगवान बहूतसे शिष्य मडलके परिवारसे भूमडलकों पवित्र करते हुवे सावत्थी नगरीके तदुकवन उद्यानमें समौसरन करता हुवा अर्थात् उद्यानमे पधारे।

चरम तीर्थंकर भगवान वीर प्रभुके जेष्ट शिष्य इन्द्रभूति "गौतमस्वामि" अनगार अनेक गुणोंलकृत च्यारज्ञान चौदा पुर्व धारक बहुतसे शिष्यमडलके परिवारसे पृथ्वीमडलकों पवित्र करते हुवे सावत्थी नगरीके कोष्टक नामके उद्यानमें समौसरण करते हुवे-ठेर है-

दोनों महापुरषोंके शिष्य समुदाय बड़े ही भद्रक् और विनय वान जैसे शालके वृक्षके परिवार भी शालका ही होते है। एक समय दोनों भगवतोंके शिष्य एकत्र होनेसे यह शका उत्पन्न हुई कि श्री पार्श्वनाथ प्रभु और श्री वीर भगवान दोनों परमेश्वरोंने एकही कारण (मोक्षका) यह धर्म फरमाया है तों फीर यह प्रत्यक्षमें इतना तफावत क्यु जो कि पार्श्वनाथ प्रभुके शिष्योंकि च्यार महाव्रत,

शरीरी मानसी दु खका अनुभव कर रहे है। जिन्में एक सुन्दर विशाल अनेक गुणागर धर्म नामका द्विप है अगर पाणीका वेगके दु ख देखते हुवे भी इन्ही धर्मद्विपका अवलम्बन कर ले तों इन्ही दु खोंसे बच शक्ता है। अर्थात् इस घौर ससारके अन्दर जन्म मृत्यु आदिके दु खी प्राणीयोंको सुखी बननेके लिये एक धर्महीका अवलम्बन है और धर्महीसे अक्षय सुखकि प्राप्ती होती है।

हे गौतम आपकि प्रज्ञा बहुत अच्छी है। यह उत्तर आपने ठीक दीया परन्तु एक प्रश्न मुझे और भी पुच्छनेका है।

हे कृपासिन्धु आप अवश्य कृपा करावे।

(१०) प्रश्न-हे गौतम-महा समुद्रके अन्दर पाणीका वेग (चक्र) चाडाही जोर शौरसे चलता है उन्हीके अन्दर बहुतसे प्राणीयों डुबके मृत्यु सरण हो जाते है और उन्ही समुद्रके अन्दर निवास करते हुये, आप नावापरारूढ हो केसे समुद्रों तीर रहे हो।

(उ०) हे भगवान् उन्ही समुद्रके अन्दर नवा दो प्रकारकि है (१) छेद्र सहित कि जिन्होके अन्दर वेठनेसे लोक समुद्रमें डुब मरते है (२) छेद्र रहीत कि जिन्होंके अन्दर वेठके आनन्दके साथ समुद्रकों तिर सकते है।

(प्र०) हे गौतम-कोनसा समुद्र और कोनसी आपके नावा है ?

(उ०) हे भगवान-ससार रूपी महा समुद्र है। जिस्मे औदारीक शरीर रूपी नावा है परन्तु नावामें आश्रवद्वाररूपी छेन्द्र है जो जाव आश्रवद्वार सहित शरीर धारण कीया है वहतों ससार समुद्रमें डुब जाता है और आश्रवद्वार रोक दीया है ऐसा

रूपी धर्म और पाचों वर्णके वस्त्र वह भी अपरिमित तथा स्वल्प या वहु मूल्यके भी रक्षदायते हैं और भगवान वीर प्रभुके सतानोंके पाच महाव्रतरूपी धर्म तथा मात्र श्वेतवर्णके वस्त्र वह भि परिमीत परिमाण और स्वल्प मूल्यके रखते हैं इस शंकाका समाधानके लिये अपने अपने गुरु महाराजके पास आके निवेदन किया--भगवान गौतमस्वामिने पार्श्वनाथजीके सतानकोजष्ट (वड़े) समझके आप अपने शिष्यमडलको साथ लेके आप तदुक वनमें आने लगे कि जहा पर केशीश्रमण भगवान विराजते थे।

उन्ही समय वहुतसे अन्यमति लोक भी एकत्र हो गये कि आज जैनोंके आपसमें क्या चर्चा होगा और इन्ही दोनोंकि अन्दर सच्चा कौन है। मनुष्य तो थेया परन्तु आकाशमें गमन करते हूये विद्याधर और देवता भी अदृष्टरूपसे आकाशमें चर्चा सुननेकों उपस्थित हो गये।

इदर भगवान गौतमस्वामिकों आते हुवे देखके केशीश्रमण भगवान अपने शिष्यमडलकों लेके सामने गये और बड़ेही आदर सत्कारसे अपने स्थानपर ले आये और पच प्रकारके तृणोंका आसन गौतमस्वामिकों वेठनेक लिये तैयार किया तत्पश्चित् केशीश्रमण और गौतमस्वामि दोनों महाऋषि एक ही तख्तपर विराजमान हूवे, जेसे आकाशके अन्दर सूर्य और चन्द्र शोभनिक होते हैं इसी माफीक केशीगौतम शोभने लगे।

सभा चतुर्विधसघ, देवता, विद्याधर, और अन्यमति लोकोंसे चकारबन्ध भराई गई थी और लोक राह देख रहे थे कि अब क्या चर्चा होगा। वह एक चित्तसे ही सुनना चाहिये।

शरीर रूपी नावापराऊढ हुवा है वह संसार समुद्रसे तीरके पार हो जाता है। हे भगवान् मैं छेद्र रहीत नावापराऊढ होता हुवा ही समुद्रतिर रहा हु।

हे गौतम यह उत्तर तो आपने ठीक युक्ति सर दीया परन्तु एक प्रश्न मुझे और भी करना है।

हे स्वामिन् आप कृपा कर फरमावे।

(११) प्रश्न हे–गौतम इस प्रकार ससारके अन्दर घोरोन–घोर अन्धकार फेल रहा है जिसके अन्दर बहुतसे प्राणीयों इदरके उदर धके खाते भ्रमण कर रहे हैं उन्होंको रस्ता तक भी नहीं मीलता हैं तो हे गौतम इन्ही अन्धकारमें उद्योत कोन करेगा क्या यह बात आप जानते हो ?

(उत्तर) हे भगवान–इन्ही घोर अन्धकारके अन्दर उद्योत करनेवाला एक सूर्य है उन्ही सूर्यके प्रकाश होनेसे अन्धकारका नाश हो जाता है तब उदर इधर भ्रमन करनेवालोको ठीक रस्ता मालम हो जायगा।

(प्र) हे गौतम–अन्धकार कोनसा और उद्योत करनेवाला सूर्य कोनसा ?

(उ०) हे भगवान इस आरापार लोकके अदर मिथ्यात्वरूपी घोर अधकार है जीस्से पामर प्राणीयों अन्धा होके इदर उधर भ्रमण करते है परन्तु जब तीर्थंकररूपी सूर्य केवलज्ञान रूपी प्रकाशमें भव्यात्मावोंको सम्यग्दर्शन रूप अच्छा सुदर रहस्ता दीखलावेगा उन्ही रहस्तेसे सीधा स्वस्थान पहुच जावेगा। यह उत्तर सुनके देवादि परिषदा प्रश्नचित हो रही थी।

केशीश्रमण भगवान मधुर स्वरसे बोले कि। हे महाभाग्य! अगर आपकी इच्छा हो तों मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहाता हू ?

गौतमस्वामि विनयपूर्वक बोले कि–हे भगवान। मेरे पर अनुग्रह करावे अर्थात् आपकि इच्छा हो वह प्रश्न पूछनेकी कृपा करे।

(१) केशीश्रमण भगवानने प्रश्न किया कि हे गौतम! पार्श्वप्रभु और वीरभगवान दोनोंने एक ही मोक्षके लिये यह धर्म रस्ता (दीक्षा) बतलाते हुवे पार्श्वप्रभु च्यार महाव्रत रूपी धर्म और वीरभगवान पाच महाव्रतरूपी धर्म बतलाया है तो क्या इसे आपको आश्चर्य नहीं होता हैं।

(उ०) गौतम स्वामि नम्रता पूर्वक बोलते हुवो कि हे भगवान! पहेला तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान्के मुनि सरल (माया रहीत) थे किन्तु पहेले न देखनेसे मुनियोंका आचार व्यवहारको समझना ही दुष्कर था परन्तु प्रज्ञावान् होनेसे समझनेके बाद आचारमें प्रवृति करना बहुत ही सहेज था और चरम तीर्थंकर वीरभगवान्के मुनि प्रथम तो जडवत् होनेसे समझना ही दुष्कर, और वक्र होनेसे समझे हुवेकों भी पालन करना अति दुष्कर है वास्ते इन्ही दोनों भगवान्के मुनियोंकि लिये पाच महाव्रतरूपी धर्म कहा है और शेष २२ तीर्थंकरोंके मुनि प्रज्ञावान होनेसे अच्छी तरहसे समझ भी सकते हैं और सरल होनेसे परिपूर्णाचारकों पालन भी कर सकते, थे वास्ते इन्ही २२ भगवान्के मुनियोंकि लिये च्यार महाव्रत रूपी धर्म कहा है। पाच महाव्रत केहनेसे स्त्रि चोथ व्रतमें और परिग्रह धन धान्यादि पाचमें व्रतमें गीना है परन्तु प्रज्ञावान्त समझ सकते है कि जब

हे गौतम यह आपने ठीक कहा परन्तु एक और भी प्रश्न मुझे करना है। गौतम–फरमावो भगवान।

(१२) प्रश्न–हे गौतम यह अनादि प्रवाह रूप संसारके अंदर बहुतसे प्राणीयों शरीरी और मानसी दुःखोंसे पिडीत हो रहे है उन्होंके लिये आप कोनसा स्थान मानते हो कि जहांपर पहुच जानेसे फीर जन्म मरण ज्वाररोग शोकादि वेदना बीलकुल ही न होने पावे।

(उ०) हे भगवान इस लोकमें एक एसा भी स्थान है कि जहांपर पहुच जानेके बाद किसी भी प्रकारका दुःख नहीं होता है।

(प्र०) हे गौतम ऐसा कोनसा स्थान है ?

(उ०) हे भगवान–जो लोकके अग्र भागपर जो निर्वृत्तिपुर (मोक्ष) नामका स्थान है वहां पर सिद्धावस्थामें पहुच जाने पर किसी प्रकारका जन्म जरा मृत्युवादि दुःख नहीं है अर्थात कर्म-रहित होकर वहा जाते है वास्ते अव्वाबाद सुखोंमें बीराजमान हो जाते है।

केशीस्वामि-हे गौतम आपकि प्रज्ञा बहुत अच्छी है और अच्छी युक्तियों द्वारा आपने यह १२ प्रश्नोंका उत्तर दीया है। परिषदा भी यह १२ प्रश्न सुनके शांत चित्त और वैरागरसका पान करते हुवे जिन शासनकी जयध्वनिके शब्द उच्चारण करते हुवे विसर्जन हुई।

शासनका एक यह भी कायदा है कि जब तीर्थंकरोंका शासन प्रचलित होता है तब पूर्व तीर्थंकरोंके साधु विचरते है वे अबतक

किसी पदार्थ पर ममत्व भाव नहीं रखना तो फिर स्त्रियों ममत्व भावका एक सीखर बन्ध प्रासाद ही है वास्ते स्त्रिको और परिग्रहको एक ही मतमें माना गया है। हे भगवान् इसमें किंचित् ही आश्चर्यकि वात नहीं है दोनों भगवानोंका धेय तो एक ही है। यह उत्तर श्रवण करके परिषदाकों बडा ही संतोष हुवा था।

यह उत्तर श्रवण करके भगवान् केशीश्रमण बोले कि हे गौतम इस शंकाका समाधान आपने अच्छा किया परन्तु एक प्रश्न मुझे और भी पुच्छना है।

गौतमस्वामिने कहा कि भगवान आप अवश्य कृपा करावे।

(२) हे गौतम श्रीपार्श्वप्रभुने साधुवोंकि लिये 'सचेल' वस्त्र सहित रहना यह भी पाचो वरणके स्वल्प वह बहु मूल्य अपरिमितमर्यादावाले वस्त्र रखना कहा है और भगवान वीरप्रभुने 'अचेल' वस्त्र रहित अर्थात् जीर्ण वस्त्र वह भी श्वेत वर्ण और स्वल्प मूल्यवाला रखना कहा है इसका क्या कारण है?

(उत्तर) हे भगवान् मुनियोंको वस्त्रादि धर्मोपकरण रखनेकी आज्ञा फरमाइ है इसमें प्रथम तो साधुलिंग है वह बहुतसे जीवोंको विसवासका भाजन है और लिंग होनासे भव्यात्मावों धर्मपर श्रद्धा रखते हुवे स्वात्म कल्याण कर सकते है दुसरा मुनियोंकी चितवृत्ति कभी अस्थिर भी हो जावे तो भी ख्याल रहेगा कि मै साधु हु दीक्षतहु यह अतिचारादि मुझे सेवन करने योग नहीं है अर्थात् अतिचारादि लगाते हुवे चिन्ह देखके रूक जावेगा। वास्ते यह धर्म उपकरण संयमके साधक है इसमें पार्श्वप्रभुके

वर्तमान तीर्थंकरोंकि शासनको स्वीकार न करे वहा तक केवलज्ञान होवे, वास्ते भगवान केशीश्रमण पार्श्वप्रभुके सतान थे और इस समय शासन भगवान वीर प्रभुका प्रचलित था वह भगवान केशीश्रमणको केवलज्ञान प्राप्तकि कोशीषसे वीर प्रभुका शासनको स्वीकार कीया अर्थात् पेहले च्यार महाव्रत रूपी जो धर्म था वहा भगवान गौतमस्वामिके पास पाच महाव्रतरूपी धर्मको स्वीकार करके तप सयममें अपनी आत्माको लग देनेसे शासन रूपी वृक्ष से केवलज्ञान रूपी फल्की प्राप्ती स्वल्पकालमें ही हो गई थी। भगवान केशीश्रमण केवल पर्याय पालते हुवे चरमश्वासोश्वासका त्याग कर अक्षय सुख रूपी सिद्धपुरपाटनमें अपना स्वराज करने लग गये अर्थात् मोक्ष पधार गये है। इतिशम्।

प्रश्नोत्तर नम्बर ४

सूत्र श्री रायपसेणीजी

(केशीश्रमण और प्रदेशी राजा)

चरम तीर्थंकर भगवान वीरप्रभु अपने शिष्य समुदायसे पृथ्वीमंडलको पवित्र करते हुवे अमलकप्पानगरीके अम्रशाल नामके उद्यानमें पधारे थे। उन्ही समय सुरियामदेव अपनि ऋद्धि सहित भगवानको वन्दन करनेको आया था; भगवानको वन्दन नमस्कार करके गौतमादि-मुनिवरोंकि आगे भक्ति पूर्वक ३२ प्रकारके नाटक कर स्वस्थान गमन करता हुवा। तत्पश्चात् भगवान् गौतमस्वामिने, प्रश्न किया कि हे करूणासिन्धु! यह सुरियामदेव पुर्व भवमें कोनथा कीसनगरमें रहता था और क्या

संतान सरल और प्रज्ञावन्त होनेसे उन्होंकों किसी भी पदार्थ पर ममत्व भाव नही है और वीरभगवान्के मुनि जड़ और वक्र होनेसे उन्होंके लिये उक्त कायदा रखा गया है परन्तु दोनोंका ध्येय, एक ही है कि धर्मोपकरण मोक्षमार्ग साधन करनेमें साहितामृत जानके ही रखा जाता है।

केशीश्रमण–हे गौतम आपने इस शंकाका अच्छा समाधान किया परन्तु और भी मुझे प्रश्न करना है। परिषदा भी श्रवण करके बड़े ही आनन्दकों प्राप्त हुई है।

गौतम–हे भगवान आप कृपा करके फरमाइये।

(९) हे गौतम ! इस संसार चक्रवालमें हजारों दुस्मनों है उन्ही दुस्मनों (वैरी) के अन्दर आप निवास किस प्रकारसे करते है और वह दुस्मन आपके सन्मुख युद्ध करनेकों बराबर आते हुवे और हुमला करते हुवे कि आप दरकार नही रखते हुवे भी दुस्मनोंकों केसे पराजय करते हुवे विचरते हो।

(उ०) हे भगवान–जो दुस्मन है वह सर्व मेरे जाने हुवे है इन्ही दुस्मनोंका एक नायक है उन्हीकों म्हे मेरे कब्जेमें प्रथमसे ही कर रखा है और उन्ही नायकके च्यार उमराव है वह वे हमेंशके लिये मेरे दास ही बन रहे है और उन्ही नायकके राजमें पांच पंच है वह मेरे आज्ञाकारी ही है इन्ही दुस्मनोंमें यह १–४–५=१० मुख्य योद्धा है इन्हीकों अपने कब्जेमें कर लेनेसे पीछे विचारे दुसरे दुस्मन तो उठके बोल्ने समर्थ भी काहासे हो वे इस वास्ते म्हे इन्ही दुस्मनोंका पराजय करता हुवा सुखपूर्वक आनन्दमें विचरता हु।

अधिक भव करे तो भी १६ भवोंसे ज्यादा नही करे इत्यादि देश नादी जिस्मे कीसने दीक्षा कीसीने श्रावक व्रत लेके अपने अपने स्थान गये ।

चित्त प्रधान व्याख्यान श्रवण करके बड़ा आनदीत हुवा और गुरू महाराजके पास श्रावकके १२ व्रत धारण किये। कितनेक रोज रेहनेपर प्रदेशी राजाका कार्य होजानेसे जयशत्रु राजा प्रेमदर्शक भेटणा तैयार कर चित्त प्रधानको कार्य हो जानेका समाचार कहेके वह भेटणा देके रजा देता हुवा। चित्त प्रधान रवानेकि तैयार करके भगवान केशीश्रमणके पासमे आया अपने रवाने होनेका अभिप्राय दर्शाते हुवे भगवानसे श्वेताम्बिका पधारनेकि विनती करी कि हे भगवान आप श्वेताम्बिका पधारों इसपर गुरु महाराजने पूर्ण ध्यान न दीया तब दूसरी तीसरीवार और भी विनती करी। तब केशी भगवान बोले कि हे चित्त प्रधान तु जानता है कि एक अच्छा सुन्दर बन हो और उन्हीमे मधुर फलादि पाणी भी हो परन्तु उन्ही बनके अन्दर एक पारधी रेहता हो तो वनचर या खेचर जानवर आशक्ता है ? नही आवे, इसी माफोक तुमारे श्वेताम्बिका नगरी अच्छी साध्वादिके आने योग्य है परन्तु वहा नास्तिक प्रदेशी राजा पारधि तुल्य है वास्ते साधुवोंका आना कैसे बन शक्ता है।

नम्रतापूर्वक चित्त प्रधान बोला कि हे भगवान आपकों प्रदेशी राजासे क्या मतलब है श्वेताम्बिका नगरीमें बहुतसे लौक धनाढ्य वसते है और बडेही श्रद्धावान है हे भगवान आप पधारो आपकों बहुतसा असनपान खादीम स्वादिम वस्त्र पात्र पाट पटला

(प्र०) हे गौतम–आपके दुस्मन=एक नायक च्यार उमराव पांच पच कोन है और कीसको पराजय कीया है ?

(उ०) हे भगवान्–दुस्मनोंका नायक एक 'मन' है यह आत्माका निज गुणको हरण करता है इन्हीको अपने कब्जे कर लेनेसे 'मन' के च्यार उमराव क्रोध मान माया और लोभ यह मेरे आज्ञाकारी बन गये हैं जब इन्ही पाचोंको आज्ञाकारी बना लिये तब हीसे पाच पच 'पाच इन्द्रिय' है उन्होंका सहजमें पराजय कर लिया, बस इन्ही १० योद्धोंको जीत लेनेसे सर्व दुस्मन अपने आदेशमें हो गये है वास्ते म्हे दुस्मनोंके अन्दर निर्भय विचरता हूं।

यह उत्तर श्रवण करने पर देवता विद्याधर और मनुष्योंको बड़ा ही आनन्द हुवा है और भगवान् केशीश्रमण बोलते हूवे–हे प्रज्ञावन्त आपने मेरा प्रश्नका अच्छा युक्तिपूर्वक उत्तर दीया परन्तु मुझे एक प्रश्न और भी करना है ?

गौतम–हे महाभाग्य आप अनुग्रह कर अवश्य फरमावे।

(४) प्रश्न–हे गौतम–इस आरापार ससारके अन्दर बहुतसे जीव निवड बन्धनरूपी पासमें बन्धे हुवे दृष्टीगोचर हो रहे है तो आप इस पाससे मुक्त होके वायुकि माफिक अप्रतिबन्ध केसे विहार करते हो ?

(उ०) हे भगवान्–यह पास बड़ी भारी है परन्तु म्हे एक तीक्षण धारावाला शस्त्रके उपायसे इन्ही पासको छेदभेद कर मुक्त हुवा अप्रतिबन्ध विहार करता हू।

(प्र०) हे गोतम आपके कोनसी पास और कोनसे शस्त्रसे दी है ?

शय्या सथाराकि आमत्रण करके वेहारावेंगे और आपकि बहुत सेवा भक्ति करेगे तो फिर आपको प्रदेशी राजासे क्या करना है हे भगवान आपके पधारनेपर बहुत ही उपकार होगा कारण यहाके लोग बडे ही भद्रीक प्रकृतिवाले है वास्ते आवश्य पधारों ऐसी आग्रेपूर्वक विनतिको श्रवण करते हूवे भगवान केशीश्रमणने फरमाया कि हे चित्त अवसर जाना आयगा। इतना केहेनेपर प्रधानजीको उमेद हो गइ कि गुरु महाराज आवश्य पधारेंगे।

चित्तप्रधान सावत्थीसे रवाना होके श्वेताम्बिका आते ही पेहला वनपालक्के पासे जाके केह दीया कि स्वल्पही कालमे यहा पर पार्श्वनाथ सतानीये केशीश्रमण पधारेगे उन्होंको मकान पाट पाटला आदिक सत्कार पूर्व देना और अच्छी तरहेसे सेवा भक्ति करना जब महात्मा यहा पर विराजमान होजावे तब तुम हमारे पास आके हमको खबर दे देना इत्यादि।

चित्त प्रधान अपने स्थानपर आके रस्तेका श्रम दुर कर राजा प्रदेशीके पास जाके नम्रतापूर्व भेटणा देके सर्व समाचारोंसे राजाको सतुष्ट कीया।

यहा केशीश्रमण भगवान अपने शिष्य मडलसे विहार करते २ श्वेताम्बिका नगरी पधार गये। वनपालकने महात्मावोंको देखतों ही बडा ही आदर सत्कारसे वन्दन नमस्कार करके उतर-नेका स्थान और पाटपाटलादिसे भक्ति करके फिर नगरमे जहा चित प्रधान रहेते थे वहा आके हर्ष वदनसे वधाइ देताहुवा की हे प्रधानजी जिन महा पुरुषोंकि आप राह देख रहे थे वेही भगवान

(उ०) हे महाभाग्य–इन्ही घौर ससारके अन्दर रागद्वेष पुत्र कलीत्र धनधान्यरूपी जबरजस्त पास है उन्हीको जैन शासनके न्याय और सदागम भावोंकि शुद्ध श्रद्धना अर्थात् सम्यग्दर्शनरूपी तीक्षण धारावाले शस्त्रसे उन्ही पासकों छेदन भेदन कर मुक्त हुवा आनन्दमे विचर रहा हु। अर्थात रागद्वेष मोहरूपी पासकों तोडनेके लिये सदागमका श्रवण और सम्यग् श्रद्धनारूप सम्यग्दर्शनरूपी शस्त्र हे इन्हीके जरियेपाससे मुक्त हो शका है।

हे गौतम–आप तों बड़े ही प्रज्ञावान हो और यह प्रश्नका उत्तर अच्छी युक्तिसे कहके मेरा सशयको ठीक समाधान किया परन्तु एक और भी प्रश्न पुच्छता हु।

गौतम–हे भगवान मेरे पर अनुग्रह करावे।

(५) प्रश्न–हे भाग्यशाली! जीवोंके हृदयमें एक विषवेलि होती है जिन्होंके फल विषमय होता है उन्ही फलोंका अस्वादन करते हुवे जगत् जीव भयकार दु खके भाजन हो जाते हैं, तो हे गौतम आपने उन्हीं विष वेलिकों मूलसे केसे उखेडके दूर कर, केसे अमृतपान करते हो?

(उ०) हे भगवान्! म्है उन्हीं विषवेलिकों एक तीक्षण कुंदा लेके मह्रा मूलसे उखेड दी, अब उन्ही विषमय फलका भय न रखता हूवा जैन शासनमें न्यायपुर्वक मार्गका अवलम्बन करता हुवा विचरता हु।

(प्र०) हे गौतम आपके कोनसी विषवेलि और कोनसा ... उखडके दुर करी है?

उद्यानमे पधार गये है उन्होंको मकान पाटपाटला शय्या सथारा देके मैं आपके पास आया हू ।

चित्त प्रधान आनदीत चित्तसे वनपालकको वधाइदेके नगर निवासीयोंको खबर कर दी उसी समय हजारों लोकोंके साथमें प्रधानजी केशीश्रमणजी महाराजको वन्दन करनेको आये भक्ति पूर्व वन्दन कर धर्मदेशना सुनी मुनियोंको गौचरी आदिसे खुब सुख साता उपजाई । श्वेतांबिका नगरीमें आनद मगल वर्त राहा था ।

एक समय चित्त प्रधान गुरू महाराजसे अर्ज करी कि हे भगवान आप हमारे प्रदेशी राजाको धर्म सुनावों । मुझे खातरी है कि आपका प्रभाव शाली व्याख्यान श्रवण करनेसे प्रदेशी राजा अवश्य आपका पवित्र धर्मको स्वीकार करेगा ?

हे चित्त प्रधान च्यार प्रकारके जीव धर्म सुनाने लायक नहीं होते है यथा (१) साधु मुनिराज आते है ऐसा सुनके सामने न जाता हो (२) मुनिराज उद्यानमें आ जाने पर भी वहा जाके वन्दन न करता हो (३) मुनिराज अपने घर पर आ जाने पर भी वन्दन भक्ति न करता हो (४) मुनिराज रस्तेमें सामने मील जाने पर भी वन्दन भक्ति न करता हो । हे चित्त तुमारे प्रदेशी राजामें च्यारों बोल पाते हे अर्थात् प्रदेशी राजा हमारे पास ही नही आते तो मैं धर्म कैसे सुना सक्ता हू ।

चित्त प्रधान बोला कि हे भगवान् हमारे वहा कम्बोज देशके च्यार अश्व आये हैं उन्हीकों फीरानेके हेतुसे मैं प्रदेशी राजाको पास ले आऊगा फीर आपके मनमाना धर्म प्रदेशी

(उ०) हे केशीश्रमण–इन्ही घोर ससारके अन्दर रहे हुवे अज्ञानी जीवोंके हृदयमें तृष्णारूपी विषवेछि है वह्वेछि भवभ्रमण-रूपी विषमय फल देनेवाली है परन्तु म्है संतोषरूपी तीक्षण धारावाला कुदालासे जड़ा मूलसे नष्ट करके जैन शासनके न्याय माफीक निर्भय होके विचरता हू।

(६) प्रश्न–हे गौतम–इस रौद्र ससारके अन्दर प्राणीयोंके हृदय और रामरोमके अन्दर भयकर जाज्वलामान अग्नि प्रज्वलीत होती हुई प्राणीयोंकों मूलसे जला देती है, तों हे गौतम आप इस ज्वलन्त अग्निकों शान्त करते हुवे कैसे विचरते हैं।

(उ०) हे भगवान्! यह कोपित अग्नि पर म्है महामेघ धाराके जरको छाटके बीलकुल शान्त करके उन्ही अग्निसे निर्भय विचरता हु।

(प्र०) हे गौतम आपके कोनसी अग्नि और कोनसा जल है?

(उ०) हे भगवान्–कषायरूपी अग्नि अज्ञानी प्राणीयोंको जला रही है परन्तु तीर्थकररूपी महामेघके अन्दरसे सदागम रूपी मूशलधारा जलसे सिंचन करके बीलकुल शान्त करते हुवे म्है निर्भय विचरता हु।

(७) प्रश्न–हे गौतम–एक महा भयकर रौद्र दुष्ट दिशावि-दशामें उन्मार्ग चलनेवाला अश्व जगतके प्राणीयोंकों स्वइच्छीत स्थानपर ले जाते हैं तो हे गौतम आप भी ऐसे अश्वपरारूढ होने पर भी आपकों उन्मार्ग नही ले जाते हुवा भी तुमारी मरजी माफीक अश्व चलता है इसका क्या कारण है?

(उ०) हे भगवान्! उन्ही अश्वका स्वभाव तो रौद्र भयकार और दुष्ट ही है और अज्ञान प्राणीयोंको उन्मार्गमें लेजाके बडा

राजाकों सुनाइये । इतना केहके वन्दन कर चित्त प्रधान अपने स्थान गया ।

एक समय वह च्यार अश्वोंसे रथ तैयार कर जगलमें घूमनेके नामसे राजा प्रदेशीकों चित्त जगलमें ले आया इधर उधर रथकों फीराते बहुत टैम हो जानेसे राजाका जीव घबराने लग गया, तब प्रधानसे राजाने कहा कि हे चित्त रथको पीछा फीरालों धूपसे मेरा जीव घबराता है अगर यहा नजीकमें शीतल छाया हो तो वहापर चलों इतनेमें चित्त प्रधान बोला महाराज यह नजिकमें अपना उद्यान है वहा पर अच्छी शीतल छाया है । प्रदेशी राजाने कहा कि एसा हो तों वहा ही चलो । इतनेमें प्रधानजीने रथकों सीधा ही जहा पर केशीश्रमण भग वान विराजते थे । उन्होंके पासमें प्रदेशी राजाकों ले आये एक मकानमें राजाको ठेरा दिया । श्रम दुर हो जानेपर राजाने दृष्टि पसार किया तो उदर केशीश्रमण भगवान विस्तारवाली परिषदा को धर्मदेशना दे रहे थे । उन्होंको देखके प्रदेशी राजा बोला हे चित्त यह जड मूढ कोन है और इन्हों कि सेवा करनेवाले इतने जडमूड काहासे एकत्र हुवे है ।

चित्त प्रधान बोला हे नराधिप यह जैन मुनि है । धर्म देशना दे रहे है । इन्होंकि मान्यता है कि जीव और काया भिन्न भिन्न है । इसपर प्रदेशी राजा बोला हे चित्त क्या यह साधु अच्छे लिखे पढे है अपनेकों वहा पर जाने योग्य है अर्थात् अपने प्रश्न करे तो वह उत्तर देवेगा ।

ही दु खी बना देते है परन्तु म्है उन्ही अधके मुहमें एक जबर जस्त लगाम और गलेमे एक बडा रसा डाल दिया है कि जिन्होंसे सिवाय मेरी इच्छाके कीसी भी उन्मार्ग बीलकुल ना भी नहीं शकता है अर्थात् मेरी इच्छानुसार ही चलता है ।

(प्र) हे गौतम आपके अश्व कोन और लगाम रसा कोनसा है ?

(उ) हे भगवान ? इस लोकमें बडा साहसीक रौद्र उन्मार्ग चलनेवाला 'मन' रूपी दुष्टाश्व है वह अज्ञानी जीवोंको स्वइच्छा घुमाये करता है परन्तु म्है धर्मशिक्षण रूपी लगाम और शुभ ध्यान रूपी रसासे खेचके अपने कब्जे कर लिया है कि अब किसी प्रकारके उन्मार्गादिका भय नही रखते हूवा म्है आनन्दमें विचरता हु । हे भगवान, आपने अच्छी युक्तिसे यह उत्तर दिया है परन्तु एक प्रश्न मुझे और भी पुच्छना है ? परिषदाकों बडा ही आनन्द होता है ।

गौतम–हे दयाल कृपाकर फरमावे ।

(८) हे गौतम इस लोकके अन्दर अनेक कुपन्थ (खराब मार्ग) और बहुतसे जीव अच्छे रहस्तेका त्याग कर कुपन्थकों स्वीकार करते है । उन्हीसे अनेक शरीरी मानसी तकलीफो उठाते है तो हे गौतम आप इन्ही कुपथसे बचके सन्मार्ग पर कीस तरहे चलते हो ।

(उ) हे भगवान–इस लोकके अन्दर जीतने सन्मार्ग और उन्मार्ग है वह सर्व मेरे जाने हूवे है अर्थात सुपथ कुपन्थको म्है ठीक ठीक जानता हु इसी वास्ते कुपन्थका त्यागकर सुपन्थ पर आनदसे चलता हु ।

चित्त प्रधन बोला हे नरेश्वर ये मुनि अच्छे ज्ञाता है वहा पर जाने योग्य है आपके प्रश्नोंका उत्तर ठीक तौर पर दे देवेगे वास्ते आप आवश्य पधारों इतना सुननेपर राजा प्रदेशी चित्त प्रधानको साथमें लेकर केशीश्रमण भगवानके पासमें आया परन्तु प्रदेशी वन्दन नहीं करता हुवा मुनिके आगे खडा रहा।

प्रदेशीराजा बोला हे स्वामिन् क्या आप जीव और शरीरको अलग अलग मानते हो ?

केशीश्रमण बोले हे राजन् जैसे हासलके चोरानेवाला उमार्ग जाता है और उमार्गका ही रस्ता पूछता है इसी माफीक हे राजन् तू भी हमारा हासल चौराते हुवे बेअदबीसे प्रश्न करते है। हे महीपति पेहला आपके दीलमें यह विचार हुवा था कि यह कोण झटमूड है और कौन झडमूड इन्होंकी सेवा करते है। इतनेमें राजा प्रदेशी विस्मत होते हुवे पुच्छा कि हे भगवान आपने मेरे मनकी बात कैसे जानी ? केशीश्रमण बोले कि हे राजन् जैन शासनके अन्दर पाच प्रकारके ज्ञान है यथा–

(१) **मतिज्ञान**–मगजसे शक्तियों द्वारा ज्ञान होना।

(२) **श्रुतिज्ञान**–श्रवण करनेसे ज्ञान होना।

(३) **अवधिज्ञान**–मर्यादायुक्त क्षेत्र पदार्थोका देखना।

(४) **मन.पर्यवज्ञान**–अढाई द्विपके सज्ञी जीवोंके मनका भाव जानना।

(५) **केवलज्ञान**–सर्व पदार्थोको हस्ताम्बलकि माफीक देखना और जानना।

इसमे मुझे केवल ज्ञान छोडके शेष च्यार ज्ञान है उसमे न पर्यव ज्ञानद्वार मैं तुमारे मनकि सर्व वातों जानी है।

राजा प्रदेशी बोला हे भगवान मैं यहा पर बेठु ?

केशीश्रमण बोले हे राजन् यह बगेचा तुमारा ही है।

राजा प्रदेशीके दीलमे यहतो निश्चय हो गया कि यह कोइ चमत्कारी महात्मा है अब ठीक स्थान पर बेठके राजा बोला कि हे भगवान आपकि यह श्रद्धा द्रीष्टी प्रज्ञा और मान्यता है कि जीव और शरीर अलग अलग है ?

हे राजन् हमारी श्रद्धा यावत् मान्यता है कि जीव और शरीर जुदे जुदे है और इस बातको हम ठीक तौर पर सिद्ध कर शक्ते है।

प्रदेशी राजा बोला कि अगर आपकी यह ही श्रद्धा मान्यता हो तो मैं आपसे कुच्छ प्रश्न करना चाहता हु ?

हे राजन् जेसी आपकी मरजी हो ऐसा ही करिये।

(१) प्रश्न—हे भगवान मेरी दादीजी हमेशोंके लिये धर्म पालन करती थी और उन्होंकी मान्यता भी थी कि जीव और शरीर जुदा जुदा है तो आपके मन्तासे धर्म करनेवाले देवलोकमें देवता होना चाहिये और मेरे दादजी भी देवतोंमें ही गये होगे— अगर मेरे दादजी देवलोकसे आके मुझे कहे कि हे वत्स मैं धर्म करके देवावतार लिया हुं वास्ते तु भी इस अधर्मको छोडके धर्मकर ताके दुःखसे बचके देवतावोंका सुख भोगेगा हे महाराज एसा मुझे आके केहदेवें तों मैं आपका कहना सच समझु कि हमारे दादीजीका शरीरतो यहा पर रहा और जीव देवतोंमें गया इस लिये जीव रीर अलग अलग है अगर मेरे दादीजी एसा न कहे तों मेरे

शैन्याकों बड़ ही आडम्बरके साथ केशी स्वामिकों वदन करनेको आया इसीसे बहुतसे अ य लोकोंको भी धर्मपर श्रद्धा हूई भगवानकों वन्दन नमस्कार कर भगवानकि सुधारस देशनाका पानकर पीच्छा जाने लगा, इतनेमें केशीस्वामि बोलाकि हे राजन रमणीकका अरमणीक न होना ?

प्रदेशी राजा बोला कि हे भगवान रमणीक और अरमणीक किसकों केहते है ? हे राजन जेसे कोई करसानिका क्षेत्र खलामें अनाज पकता है उन्ही समय बहुतसे पशु पक्षी और मनुष्य याचक आदिके आने जानेसे वह खेतखला अच्छा रमणीक होता है जब अनाजआदि करसानी लोक अपने घरपर ले जाते है फीर वहीं क्षेत्रखलामें कोई भी नही आता नही जाता उन्ही समय वह क्षेत्रखला अरमणीक हो जाता है। इसी माफीक इक्षुक्षेत्र इसी माफीक उद्यान भी समझना और नाटिकशाला भी समझना तात्पर्य यह है कि हे राजन मेहै यहापर हु वहा तक तुम धर्म पर अच्छी श्रद्धा और मेरी सेवा भक्ति करते है यह तुमारा रमणीकपणा है परन्तु मेरे चलेजानेपर यह धर्म भावना छोड दोगे तो अरमणीक हो जावोगे वास्ते में आपकों केहता हु कि मेरे चले जानेपर अरमणीक न होना अर्थात् धर्मभावनाको छोडना नहीं। बरावर धर्मकार्य शासनकार्य आत्मकार्य हमेशके लिये करते रेहना

प्रदेशी राजा बोला कि हे भगवान इस बातकि आप खातरी रखो में रमणीकका अरमणीक कबी नही होउगा हे भगवान् मेरे श्वेताम्बिका नगरीके आश्रित ७००० । ग्राम है जिन्होंकि आवादानी (पेदाश) मेरे राजअतेवर और शैन्यादिकके उपभोगमें लगनेके

उन्हीं लपटको छोड दोगे ? नहीं भगवान् एसे अकृत करनेवालोंको केसे छोडा जावे अर्थात् एक क्षण मात्र भी नहीं छोडु। इसी माफीक हे राजन् नारकिके नेरियोंकों भी क्षण मात्र यहा आनेको नहीं छोडा जाता है और भी सुनो नारकीके नेरिये यहा आना चाहते है तद्यपि च्यार कारणोंसे नहीं आ शक्ते है यथा—

(१) तत्काल उत्पन्न हुवा नारकीके महावेदनिय कर्मक्षय नहीं हुवे वास्ते आना चाहते हुवे भी आ नहीं शक्ते है अर्थात् वहा वेदना भोगवनी ही पडती है।

(२) तत्कालोत्पन्न हूवे नारकी परमाधामी देवतावोंके आधिन हो रहे है वह देवता एक क्षीण मात्र भी उन नारकीकों विसरामा नहीं लेने देते है वास्ते नहीं आ शक्ते है।

(३) तत्कालोत्पन्न हुवे नारकी किये हुवे नरक योग्य कर्म पूर्ण भोगव नहीं शक्या वास्ते नारकी आ नहीं शक्ते है।

(४) नारकीका आयुष्य बन्धा हुवा है वह पुरणक्षय नहीं कीया है वास्ते आना चाहते हुवे भी नारकीके नेरिया यहा पर आ नहीं शक्ते है।

इस वास्ते हे राजन् तु मानले कि जीव और काया भिन्न भिन्न है।

(३) प्रश्न हे भगवन् एक समय में सिंहासनपर बेठा था उन्ही समय कोतवाल एक चौरकों पकडके मेरे पास लाया मैंने उसी जीवने हुवे चौरको एक लोहा कि मजबुत कोठीमें प्रवेश कर उपरसे ढकणा बन्ध कर दिया और एसी मजबूत कोठीकों कर दी कि वायुकायकों भी उसी कोठीमे आने जानेका च्छेद्र नहीं

सिवाय बचत खजानेमें जमा होती थी परन्तु ग्है आपका उद्धार वृतिका धर्म श्रवण किया है वास्ते मेरी भावना है कि इ ही ७००० ग्रामोंकि आवन्दके च्यार भाग करूंगा जिस्मे एक भाग तो अंतेवर आदिकों, एक भाग सैन्याकों, एक भाग खजानामें जमा, और एक भागकि विशाल दानशाला करायाके प्रतिदिन असान पान खादिम स्वादिम वस्त्रादि दान देता रेहूगा और शाल, नव पचखान पौषध उपवासादि धर्मक्रिया करता रहुगा वास्ते हे भगवान आप पुरणतये खातरी रखिये ग्है रमणीकका अरमणीक कबी भी नही होऊंगा। यह बात केशीश्रमण ध्यान पूर्वक श्रवण करके राजाका दृढ धर्मी माना। प्रदेशी राजाने केशीश्रमण भगवानकों वदन नमस्कार कर अपने स्थानपर चला गया तत्पश्चात् राजा ससारकों असार समझता हुवा उन्ही अस्थिर राजपाटकि सार सभल न करता हुवा अपने आत्मकल्याणके कार्य करता रहा अर्थात् श्रावकके व्रतोंको ठीक तरहे पालन कर रहा था।

केशीश्रमण भगवान वहासे विहारकर अन्य जिनपद देशमें गमन करते हुवे। देखिये ससारकि स्वार्थवृति जब प्रदेशी राजा आत्मकार्यमें ध्यान लगा देनेसे राज अंतेवरकि सार समार करना छोड दीयाथा, तब सुरिकता राणीने दुष्ट विचार कियाकि यह राजा तो मेरी और राजकि कुछ भी सारसमार नही करता है अर्थात् मेरे साथ काम भोग नही भोगवता है तों मेरे क्या काम हा अगर एसाही हो तों ग्है इन्हीकों विष–शस्त्र तथा अग्निका प्रयोगसे जानसे मार डाउ और मेरा पुत्र सुरिकान्तकों राज देदु,

रहा फीर कितनेक समय होजानेसे उन्ही कोटीको इदर उदर ठीक तलास करनेपर काही भी छेद्र न पाये कोठीकों खोलके देखा तो वह चौर मृत्यु प्राप्त दृष्टीगोचर हुवा तब म्हैने निश्चय कर लिया कि जीव और शरीर एक ही है क्युकि अगर जीव जुदा होता तों कोटीसे निकलने पर छेद्र अवश्य होता परन्तु छेद्र तो कोइ भी देखा नहीं वास्ते हे भगवान् मेरा मानना ठीक है कि जीव काया एक ही है ?

(उत्तर) हे राजन् यह तेरी कल्पना ठीक नहीं है कारण जीव तो अरूपी हैं और जीव कि गति भी अप्रतिहत अर्थात् किसी पदार्थसे जीवकी गति रूक नहीं शक्ती है अगर कोठीके छेद्र न होनेसे ही आपकी मति भ्रम हो गई हो तो सुनो। एक कुडागशाला अर्थात् गुप्त घरके अन्दर एक ढोल डाके सहित मनुष्यकों बेठाके उन्होंका सर्व दरवाजा और छेद्रोंकों बीलकुल बन्ध कर दे (जेसे आपने कोटीका छेद्र बन्ध किया था) फिर वह मनुष्य गुप्त घरमें ढोल मादल बजावे तो हे राजन् उन्ही बाजाकी आवाज बाहारके मनुष्य श्रवण कर शक्ते है ? हा भगवन् अच्छी तरहेसे सुन शक्ते है। हे राजन् वह शब्द अन्दरसे बाहार आये उन्होंसे गुप्त घरके कोइ छीद्र होता है ? नहीं भगवन् तो हे राजन् यह अष्ट स्पर्शवाले रूपी पौदगल अन्दरसे बाहार निकलनेमें छेद्र नहीं होते है तों जीव तों अरूपी है उन्होंके निकलनेसे तो छेद्र होवे ही कहासे वास्ते हे प्रदेशी तु समझके मान ले के जीव और शरीर अलग अलग है।

(४) हे भगवन् एक समय कोतवाल एक चौरकों पकडके मेरे पास लाया म्हें उन्ही चौरको मारके एक लोहाकी कोटीमें डाल

एसा विचार करति हुइ कितनेक समय राजाका छेद्र देखती रही परन्तु एसा मोखा ही नमीला तब राणी अपने पुत्र सुरिकान्तको बोलवाके सब बात कही कि अगर मैं और तु दोनों मीलके राजाकों मार देवे तों तेरेको राज मैं देदुगी । यह बात कुमर सुनि तो लरी परन्तु इस बातका आदर न किया मनमे मली भी न समझी और वहासे उठके चला गया । पीच्छे राणीने विचार किया कि यह पुत्र न जाने अपना पिताकों केह देगा तों मेरी सब बात राजा मान लेगा वास्ते मुझे कोइ उपाय कर राजाकों विष देना ही उचित है।

इस समय राजा छट छट पारणा करता था जिस्मे बारह छट हो गया था और तेरवा छटका पारण था उन्ही समय सुरिकान्ता राणी पारणेकि आमत्रण करके विषयुक्त भोजन खीला दीया बस स्वल्प ही समयमें राजाके शरीरमें विषका विस्तार होने लगा राजाने जान लिया कि यह सब मेरे किया हुवा कर्मही उदय हुवा है भलो यह राणी तों विष प्रयोगसे एक मेराही प्राणोंका नाश करती है परतु मेने तों बहुतसे प्राणाका नाश किया है वास्ते सम परिणामोंसे ही सहन करना उचित है ऐसा विचारके आप तृणके सस्थारे पर बेठके श्री सिद्ध भगवानको नमस्कार किया और आपने धर्माचार्य श्री केशीश्रमण भगवानकों भी नमस्कार किया अर्थात् वदन नमस्कार कीया तत्पश्चात् आठारा पापस्थानकि आलोचन करके सर्व प्रकारसे १८ पापस्थान और च्यार प्रकारे आहारका त्याग करके समाधि पूर्वक चरम श्वासोश्वास और नाश मान शरीरकों त्यागन करता हूवा अन्तमें कालधर्मको प्राप्त हूवा ॥

दिया और सर्व छेद्रको बन्ध कर दिये फीर कितनेक समयके बाद कोटीकों देखा तो एक भी छेद्र नहीं हूवा कोटीको खोलके देखा तो अन्दर हजारों जीव नये पेदा हो गये। हे भगवन् जब कोटीके छेद्र नहीं हुवे तो जीव काहासे आये इसी वास्ते मेरा ही मानना ठीक है कि जीव और काया एक ही है ।

(३) हे राजन् आपने अग्निमें तपाया हुवो एक लोहाका गोलेकों देखा है ? हा प्रभो मैंने देखा है । हे राजन् उन्हीं लोहोका गोलेके अन्दर अग्नि प्रवेश होती है ? हा दयाल प्रवेश होती है। हे राजन् क्या अग्नि प्रवेश होनेसे लोहाका गोलेके छेद्र ही होता है ? नहीं भगवन् छेद्र नहीं होता है । हे राजन् जब यह बादर अग्नि लोह गोलाके अन्दर प्रवेश हो जानेपर भी छेद्र नहीं हुवे तों जीव तो अरूपी सुक्षम है उन्हींको लोहाकी कोटीमें प्रवेश होते छेद्र काहाशे होवे वास्ते समझके मान ले जीव काया जुदी जुदी है ।

(४) हे स्वामीन् आप यह बात मानते हो कि सर्व जीव अनन्त शक्तिवाले है ? हा राजन् सर्व जीव अनन्त शक्तिवान् है। तो हे भगवान एक युवक पुरुष जीतना वजन उठा शके इतनाही वजन वृद्ध वगु नही उठा शक्ता है । अगर युवक और वृद्ध दोनों बाबर वजन उठा शके तो मैं आपका केहना मानु, नही तो मेरा ही माना हुवा ठीक है ?

(उत्तर) हे महीपाल—जीवकों अनन्त शक्तिवान् है परन्तु कर्मरूपी ओपधीसे वह शक्तियों दब रही है जब ओपधी (कर्म) बील्कुल दुर हो जावेगे तब अनन्त शक्ति अर्थात् आत्म वीर्य

राजा प्रदेशीने अज्ञान दशामें बहुत ही पापकर्म किये थे परन्तु अब सम्यक्त्वरूपी गुण श्रेणीका आवलम्बन किया उसी समयसे अन्तिम क्षमारूपी वज्रसे सर्व अशुभ कर्मोंका नाश कर आप सौधर्म देवलोकके अदर साढा बारह लक्ष योजनके विस्तारवाले सुरियाभ नामका वैमानके अधिपति सुरियाभ नामके देवपणे उत्पन्न हुवा था सुरियाभ देवकि ऋद्धि और वैमानका विस्तार अन्य थोकड़ा द्वारा लिखा जावगा ।

भगवान–गौतम स्वामिसे केहते हुवे कि हे गौतम पूर्व भवमें अपरिमित्त क्षमा प्रदेशी राजाने कि थी उसी प्रदेशी राजाका जीव यह सुरियाभ देव है जो कि अबी नाटिक करके गया है यह महा ऋद्धि ज्योति कान्ति प्राप्त होनेका कारण सम्यक्त्व सहित क्षमा ही है ।

हे भगवन् यह सुरियाभ देव देवभवसे कहा जावेगा ?

हे गौतम महाविदह क्षेत्रमें उत्पन्न होके मोक्षमें जावेगा ।

॥ इतिशम् ॥

प्रश्नोत्तर नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशा ६

(रोहा मुनिके प्रश्न)

सर्वज्ञ भगवान वीर प्रभुके शिष्य जो कि प्रकृतिका भद्रीक और प्रकृतिका विनीत होनेसे स्वाभावसे ही क्रोध मान माया लोभ उपशान्त थे और भी अनेक गुण संयुक्त ऐसा " रोहा नामका मुनि था " अपने ज्ञान ध्यानमें सदैव रमनता करता था । एक

प्रगट हो जायगा और आपका जो केहना है कि युवक और वृद्ध बराबर वजन क्यों नही उठा शक्ते है ? हे राजन् आप मानते है कि अगर कोई दो मनुष्य युवक बलवान बराबरके है जिसमें एकके पास नवी कावड मजबुत वास और रसी आदी सामग्री है और दुसरे मनुष्यके पास पुराणी कावड सडे हुवे वास और रसी आदि सामग्री है। हे राजन् वह दोनों पुरुष बराबर वजन उठा शक्ते है नही भगवान् वह बराबर केसे उठा शक्तेहै कारण उन्होंके कावडमें तफावत है, हे राजन दोनों पुरुष बराबर होने पर कावडकि तफावत होनेसे बराबर वजन नही उठा शक्ते इसी माफक जीव तों बराबर शक्तीवाला है परंतु कावड रूप शरीर सामग्रीमें युवक और वृद्धका तफावत है वास्ते वह बराबर वजन नही उठा शके। इस हेतुसे समझ लो राजन् कि जीव और काया अलग अलग है।

(९) प्रश्न हे भगवान् जीव सर्व सरसे मानते होतो जेसे एक युवक पुरुष बाणफेके इसी माफोक वृद्ध पुरुष बाणफेके तो मैं मानु कि जीव और काया अलग अलग है नहीं तों मेरा माना हुवा ही ठीक है ?

(उत्तर) हे राजन् दो पुरुष बराबर शक्ती वाले है जिस्मे एकके पास बाण तीर धनुष्यादि नवी सामग्री है और दुसरे पुरुषके पास पुरणी सामग्री है तो दोनों पुरुष बराबर होनेपर क्या बाणकों बराबर फेक सक्ता है ? नहीं भगवान्। क्या कारण ? सामग्री नवी पुरणीका ही कारण है ? हे राजन्, इस हेतुसे समझे की युवक पुरुषके शरीर सहनन सामग्री नवी है वह बाण जोरसे चला शक्ता है। और वृद्ध पुरुषके शरीर सहनन

समय रोहा मुनिको प्रश्न उत्पन्न हूवा। तब भगवानके पास आके, नम्रता पूर्वक वन्दन नमस्कार कर प्रश्न करता हूवा कि—

(प्र०) हे भगवान! पेहला लोक और पीच्छे अलोक हूवा या कि पेहला अलोक और पीच्छे लोक हूवा था ?

(उ०) हे रोहा! जिस पदार्थकी आदि और अन्त नहीं तो उसको पहिले और पीच्छे कैसे कहा जाय। इसी माफीक लोका लोककी भी आदि अन्त नहीं है वास्ते पेहले या पीछे नहीं कह शक्ते। परन्तु दोनों सास्वते है। क्योंकि आकाश सास्वता हैं और आकाशके साथ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल यह पांचों द्रव्य है इन्हींको लोक कहने है और जहांपर केवल आकाश द्रव्य ही हैं वह अलोक कहा जाता है। जब आकाश सास्वता है तब आकाशके अन्दर रेहने वाले पांचों द्रव्य भी सास्वते है इसमें भी द्रव्यास्तिकनयकि अपेक्षा सास्वत है और पर्यायास्ति नयकि अपेक्षा जो अगुरु लघु पर्याय है वह असास्वत है और लोकमें जो अकृतम पदार्थ है वह द्रव्यापेक्षा सास्वत है क्योंकी इस लोकको किसीने बनाया नहीं और इसका विनास भी कबी होगा नहीं। और जो कृतम पदार्थ है उसकी आदि भी है और अन्त भी है। इस वास्ते यह लोकालोक सास्वत पदार्थ है।

(प्र०) हे भगवान्! पहेला जीव और पीछे अजीव हुवा है कि पेहला अजीव और पीछे जीव हुवा है ?

(उ०) हे रोहा! 'जीव और अजीव यह दोनों सास्वते पदार्थ हैं क्योंकि जीव और अजीव अनादि कालसे लोक व्यापक

होमानेसे इतना वेगसे बाण नहीं फेंक शक्ता है वास्ते समझके मानलोकि जीव और काया अलग अलग है ।

(७) हे भगवान् एक समय कोतवाल जीवता हुवा चौरकों मेरे पास लाया, मैं उन्हीं जीवता हुवा चौरके दोय तीन च्यार पच यावत् सख्याते खड करके खड खडमें जीवकों देखने लगा परन्तु मेरे देखनेमें तों जीव कहीं भी नहीं आया तों मैं जीव और शरीरकों अलग अलग केसे मानु अर्थात् मेरा माना हुवा ही ठीक है ?

(उत्तर) हे राजन् कठीयाडोंका समुह एक समय एकत्र मी लके एक वनमें काष्ट लेनेकों गये थे वह सर्व एक स्थान पर स्नान मज्जन देव पूजन कर भोजन करके एक कठीयाडाकों कहा कि हम सब लोक काष्ट लेने कों जाते है और तुम यहा पर रहो यहा जों अग्नि है इन्हीं कि सरक्षण करो और टैम पर रसोइ तैयार रखना अगर अग्नि बुज भी जवे तों यह जो आरणकि लकडी है इन्होंसे अग्नि निकाल लेना । हम सब लोक काष्ट लावेगें उन्होंके अदरसे कुच्छ (थोडा थोडा) तुमकों भी देदेकें बरावर बना लेवेगे एसा कहेके सर्व लोक वनमें काष्ट लेनेको चले गये । बाद मे पीछे रहा हुवा कठीयाडा प्रमादसे उन्ही अग्निका सरक्षण कर नहीं शका । अग्नि बुज जाने पर आरणकि लकडीयों लाके उसके दोय तीन च्यार पंच यावत् सख्याते खड करके देखा तो काही भी अग्नि नही मीली तब सर्व कठीयाडोंको असत्य समझता हुवा निरास होके बेठ गया । इतनेमें वह सब लोक काष्ट लेके आया और देखा तों अग्नि भी नही आरणकि लकडीयों भी सब तुटी हुइ पडी

है। अजीवके पाच भेद हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय और काल। अगर पहेले जीव मानते हैं तो आकाशविना जीव कहा ठेरा था, धर्मास्ति विना जीव गमन कैसे कर शके, अधर्मास्ति विना जीव स्थिर कैसे रहशके। अगर पहेले अजीव मानते हैं तो जीव विना धर्मास्ति० किसको साहिता देती थी, अधर्मास्ति किसको स्थिर करती थी इत्यादि अनेक दोषण उत्पन्न होते हैं। वास्ते केवल ज्ञानसे सम्यग् प्रकार देखनेवाले अनन्त तीर्थंकरोंने जीव अजीव दोनों अनादिकालके सास्वते पदार्थ कहे हैं। न किसीने उत्पन्न किया है न कभी विनास होगा। इसी माफीक सिद्ध और ससारी इसी माफीक मोक्ष और ससार भी सास्वते पदार्थ कहे है। इसीकी पुष्टीके लिये निम्न प्रश्न पर विचार करो।

(प्र०) हे भगवान ! पहेला कुकड़ी हुई या इंडा। तथा पहेला इंडा हुवा कि कुकड़ी ?

(उ०) हे रोहा। कुकड़ी भी सासती है और इंडा भी सास्वता है क्योंकि कुकडी विना इंडा हो नही सकता है और इंडा विना कुकड़ी हो नही सकती वास्ते ज्ञानी पुरुषोंने अनादि कालसे कुकड़ी और इंडाको सस्वता बतलाया है।

(प्र०) हे भगवान। पेहला लोकात पीछे अलोकांत है पेहला अलोकान्त और पीछे लोकान्त है ?

(उ०) हे रोहा। दोनों सास्वते है। भावना पूर्ववत्।

(१) एव लोकान्त और सातवीं नरकका आकाशान्त।

है और वह कठीयाडा भी निरास हुवा वेठा है उन्होसे पुच्छा तो सब वृतांत कहा तब सर्व कठीयाडे कोपित होके बोले हे मुढ ! हे तुच्छ ! यह तुमने क्या कीया इत्यादि तीरस्कार कीया बाद मे वह सर्व कठीयाडे लकडी तत्त्वके जानकार ठीक क्रिया कर अग्निको प्रगट कर भोजनादिसे सुखी हुवे। उन्ही प्रथम कठीयाटेके माफीके हे मुढ प्रदेशी, हे तुच्छ प्रदेशी, तत्त्वसे अज्ञात हे प्रदेशी तु भी कठीयाटेकी माफीक करता है।

हे भगवान् यह विस्तारवाली परिषदके अन्दर मेरा अपमान करना क्या आपके लिये योग्य है ?

हे प्रदेशी आप जानते है कि परिषद कितने प्रकारकी होती है ?

हा भगवन् मैं जानता हु कि परिषदा च्यार प्रकारकी होती है यथा (१) क्षत्रीयोंकी परिषदा (२) गाथापतियोंकी परिषदा (३) ब्राह्मणोंकी परिषदा (४) ऋषीयोंकी परिषदा।

हे प्रदेशी आप जानते हो कि इन्हीं च्यार प्रकारके परिषदाकी आसातना करनेवालोंको क्या दंड दीया जाता है ?

हा भगवन् मैं जानता हु कि आसातना करनेवालोंको दंड

(१) क्षत्रीयोंके परीषदाकी आसातना करनेवालोंको शुली फांसी केद आदिका दंड दीया जाता है।

(२) गाथापतियोंके परिषदाकी आसातना करनेसे लकडी लाठी हस्त चपेटादिका दंड दिया जाता है।

(३) ब्राह्मणोंके परिषदाकि आसातना करनेसे आक्रोष वचन आदिसे तिरस्कार किया जाता है।

(२) एव सातवीं नरकके आकाशान्त और सातवीं नरकके तृण वायु।

(३) एव सातवीं नरकका तृणवायु और सातवीं नरकका घनवायु।

(४) एव सातवीं नरकका घनवायु और सातवीं नरकका घनोदद्धि।

(५) एव सातवीं नरकका घनोदद्धि और सातवीं नरकका पृथ्वी पिंड।

(६) एव सातवीं नरकके पृथ्वीपिंड और छठी नरकका आकाशान्त।

(१०) एव तृणवायु, घनवायु, घनोदद्धि, पृथ्वीपिंड पाचों-बोल।

(१५) पांचवीं नरकका भी पाचों बोल इसी माफीक।

(२०) चोथी नरकके पाचों बोली भी इसी माफीक

(२५) तीजी " " "

(३०) दुजी " " "

(३५) पहेली " " "

एव लोकान्त और द्विपान्त जम्बुद्विपादि असख्याते और समुद्र ल्वणादि असख्याते एव भरतादि सर्व क्षेत्र सर्व अलावा लोकान्त साथे सयोग कर देना तथा नरकादि २४ दडक षट्द्रव्य छेलेश्या आठकर्म तीनद्रीष्टी च्यारदर्शन पाचज्ञान तीनअज्ञान च्यारसज्ञा, तीनयोग दोयउपयोग सर्वद्रव्य, सर्वप्रदेश, सर्व पर्याय। प्रश्नोत्तर सर्व पूर्वकि माफीक करना अव चर्म प्रश्नके लिते हैं।

(प्र) हे भगवान। लोकान्त पेहला और काल पीछे हैं

खानभ इ तो सब लोकोंने तांबाको छोटके चान्दी लेली और पेहलाकि माफीक लोहाणीयानेतों लोहा ही रखा आगे चलनेपर सुवर्ण लेलीया लोहावाणीयाने तों अपनी ही सत्यताकों कायम रखी, आगे चलते हुवे एक रत्नोंकि खान आइ सब जीणोंने सुवर्णको छोडके रत्न ग्रहन कर लिया और हित बुद्धिसे । लोहावाणीयाकों काहा हे भाइ अपना हठको छोड दों इस स्वल्प मूल्यवाला लोहाकों छोटके यह बहु मुल्य रत्नोंको ग्रहन करों अबीतो कुच्छ नहीं वीगडा है अपने सब बराबर हो जावेगे तुम रत्नोंको ग्रहन करलों उत्तरमे लोहावाणीयान कहा कि बड़ी हासी कि बात है कि तुमने कितने स्थान पर पलटा पलटी करी है तो क्या मुजे आप एसा ही समझ लिया नही ? नही ? कभी नही ? म्हे आप कि माफीक नही हु मैंने तो जो लेलीया वह ही लेलीया चाहे कम मूल्य हो चाहे ज्यादामूल्य हों म्हेतो अब लीया हुवा कभी छोड़नेवाला नहीं हु । बस सब लोक अपने अपन घर पर आये रत्नोंवालेतो एकाद रत्नकों वेचके बड़े भारी प्रसादके अन्दर अनेक प्रकारके सुखोंको विलसने लग गये और यह लोहा वाणीया दालीद्री ही रेह गये अब दुसरोंका सुख देखके बहुत पश्चाताप झुरापा करने लगा परन्तु अब क्या होता है । हे राजन् तु भी लोहावाणीयाका साथी हो रहा है परन्तु याद रखीये फीर लोहावाणीयाकी माफीक तेरेकों भी पश्चातापन करना पडे इसकों ठीक विचारलेना ?

प्रदेशी राजा बोला कि हे भगवान् आपके जेसे महा पुरुषोंका समागम होनेपर कीसी जीवोंकों पश्चाताप करनेका अवकाश ही नहीं रेहेता है तो मेरे पर तो आपने

(उ) हे रोहा । दोनों साश्वते पदार्थ है । जेसे द्विप समुद्रके केक क ल तकके प्रश्न लोकान्तके साथ किये है इसी माफीक अलोकान्तके साथ भी सयोग लगा देना । जैसे लोकान्त और अलोकान्तके साथ प्रश्नोत्तर बतलाये हैं इसी माफीक द्विपके साथ निचेके सर्व सयोग जोड देना फीर द्विपको छोड समुद्रके साथ सर्व सयोग कर देना फीर समुद्रको छोड भरतादि क्षेत्रके साथ सर्व निचेके बोलोंका सयोग कर देना यावत् सर्व पर्यायसे कालके साथ सयोग कर देना ।

इसी प्रश्नोंके उत्तर द्वारा इश्वरवादी जो लोक इश्वर बनाया कहते है अर्थात सर्व पदार्थ इश्वरने बनाया है इसका निराकार किया है । क्योंकि ईश्वर कीसी पदार्थका कर्ता नही है कारण ईश्वर कर्म रहित सदचिदानद अमूर्ति=अरूपी स्वगुण भोक्ता है उनकों तो किसी प्रकारका कार्य करना रहा ही नहीं है और ऐसा जो कुभकारकि माफीक जगत काय करता रहे तो उनमें ईश्वरत्व प्राप्ती मानना भी मिथ्यात्वका कारण है कारण जगतके घटपटादि पदार्थ सर्व सास्वत है और उत्तम वस्तु जो बनाते है वह कर्मोवाले जीव ही बनाते हैं और ईश्वर तो कर्म रहीत है वास्ते ईश्वर अकर्ता नहीं है । जीव स्वय कर्मों अनुस्वार शुभाशुभ फलका भोक्ता है और जब तप सयमसे शुभाशुभ कर्मोंको नास करेगा तब ईश्वर रूप हो जावेगा ।

रोहा मुनिने इ ही - प्रश्नोंका उत्तर सुनके आनदमय हो अपनी-आत्माको ज्ञान रमणतामें लगाके ध्यान करता हुवा ।

बडी ही कृपा करी है अब इस भवमें तो क्या परन्तु भवान्तरमें भी मेरे पश्चाताप करनेका काम नहीं रहा है। हे भगवान् मैं अच्छी तरहसे समझ गयाहु कि आपका फरमान सत्य है जेसे आपने फरमाया वेसे ही जीव और काया अलग अलग है यह बात मेरे ठीक ठीक समझमें आगइ है अब तो म्हे आपकि वाणीका प्यासा हो राहा हु वास्ते कृपा कर केवली परूपीत धर्म मुझे सुनावे।

केशीश्रमण भगवानने विचित्र प्रकारकी धर्मदेशना देना प्रारभ किया। हे राजन् तीर्थकरोंने मोक्षका दरवाजे च्यार बतलाये है यथा दान धर्म, शीलधर्म, तपश्चर्यधर्म, भावधर्म जिस्मे भी दान धर्मको प्रधान बतलानेके लिये स्वय तीर्थकरोंने प्रथम वर्षी दान देकेही योगारम धारण कीया है जब मनुष्योंक सुनतारूपी हृदयके कमड खुलके हृदयमे उदारताका प्रवेश होता है तब दुसरे अनेक गुण स्वयही आ जाते है इत्यादि केहके फीर केहेते है कि हे राजन् भगवन्तोंने साधुधर्म और श्रावक धर्म यह दो प्रकारके धर्म अक्षय सुखका दातार बतलाये है इसपर खुब ही विस्तार हो शक्ता है परन्तु यहापर हम प्रश्नोत्तरका ही विषयकों लिख रहे है वास्ते इतना ही केहना ठीक होगा कि केशीश्रमण भगवान्ने विचित्र देशना राजाको सुनाई।

प्रदेशी राजा धर्म देशना श्रवणकर हर्ष हृदयसे बोला कि हे भगवत् दीक्षा लेनेकों ता म्हे असमर्थ हु आप कृपाकर मुझे श्रावकके १२ व्रतोंकि कृपा करा दीजीये। तब केशीश्रमण भगवानने प्रदेशी राजाकों सम्यक्त्व मूल व्रतोंका उच्चारण कराया।

इतनेमें गौतमस्वामीको प्रश्न उत्पन्न हुवे । वे भी भगवानके पास आये और वंदन नमस्कार करके बोले ।

(प्र०) हे भगवान । लोक स्थिति कितने प्रकारकी है ?

(उ०) हे गौतम ! लोकस्थिति आठ प्रकारकी है। यथा

(१) आकाशके आधारसे वायु रहा हुवा है अर्थात आकाशके आधार तण वायु है और तृणवायुके आधार घनवायु है।

(२) वायुके आधारसे पाणी रहा है (घनोदधि)

(३) पाणीके आधार पृथ्वी रही हुई है अर्थात् जो नरकका पृथ्वीपिंड है वह बया घन माफीक पाणीके आधार रहा हुवा है।

(४) पृथ्वीके आधार त्रस स्थावर जीव रहे हुवे हैं।

(५) अजीव–जीवोंका सग्रह । यहा उपचरितनयापेक्षा शरीरादि अजीव जीवोंकों समह कीया है।

(६) जीव कर्मोंकों सग्रहकर रखा है।

(७) अजीवकों जीव सग्रह करता है अर्थात् जीव भाषान्द पणे पुद्गलोंको समह करता है।

(८) जीव कर्मोंकों सग्रह करता है।

(प्र) हे भगवान । यह लोक स्थिति कीस प्रकारसे है ?

(उ) हे गौतम । जेसे कोई चमडे की मसक वायुकाय भरके उपरका मुहपके डोरेसे बन्ध करदे । और उसी मसकके मध्य भागको पके डोरासे कसके बाध दे फीर उपरका डोरा खोलके आधे भागकि वायुको निकालके उसके बदले पाणी भरके उपरका मुख बिचमें जो डोरी बांधी थी उसको भी खोलदे तब

प्रदेशी राजाने सविनय सम्यक्त्व मूल व्रतोंकों धारण कर अपने स्थानपर जानेको तैयार हुवे ।

केशीस्वामि बोले कि हे प्रदेशी राजा आप जानते हों कि आचार्य कितने प्रकारके होते है ?

हा भगवन् मै जानता हु आचार्य तीन प्रकारके होते है (१) कलाचार्य (२) शिल्पाचार्य (३) धर्माचार्य ।

हे राजन् इन्ही तीनों आचार्योका बहु मान केसे किये जाते है वह भी आप जानते है ।

हा भगवन मै जानता हु कि कलाचार्य और शिल्पाचार्यकों द्रव्य वस्त्र भूषण माला भोजनादिसे सत्कार किया जाता है और धर्माचार्यकों वन्दन नमस्कार सेवा भक्तिसे सत्कार किया जाता है ।

हे राजन् आप इस बातकों जानते हुवे मेरे साथमे प्रतिकुल वरताव कराथा उन्होंकों वगर क्षमत्क्षामना और वन्दन किये ही जानेकि तैयार करली है ।

हे भगवान् मै इन्हीं बातकों ठीक ठीक जानता हू परन्तु यहा पर क्षमत्क्षमन और वन्दना आदि करनेसे मै ही जानुगा परन्तु मेरा इरादा है कि कल सुर्योदय मै मेरे अन्नेवर पुत्र उमराव और च्यार प्रकारकी सैन्य लेके बड़े ही उत्सवके साथ आपकों वन्दन करनेकों आउगा और वन्दन करूगा ।

यह सुनके केशीश्रमण भगवानने मौन व्रतको ही स्वीकार कीया था वयुकी इस कार्यमें साधुवोंको हा या ना नहीं केहना एसा आचार है ।

दुसरे दिन राजा प्रदेशी अपने सर्व कुटम्ब और च्यार प्रकार

पाणी रह शक्ता है। इसी माफीक वायुके आधार पाणी और पाणीके आधार पृथ्वी रही हुई है यावत् जीवकर्मोंको सग्रह कीया है।

(प्र) हे भगवान्। सूक्षम अपकाय हमेशा वर्षती है।

(उ) हे गौतम। सूक्षम अपकाय हमेशा वर्षती है वह उर्ध्व अधो तीरच्छी दिशामें हमेशा वर्षती है। परन्तु जैसे स्थूल अप काय दीर्घ काल ठेरती है इसी माफीक सूक्षम अपकाय दीर्घकाल नहीं ठेरती है। सूक्ष्म केहनेका कारण यह है कि वह स्थुल द्रष्टीवालोंके द्रष्टीगोचर हो न ही शक्ती है परन्तु है एक बादर अपकायकि जातीमे। रात्री समय अधिक ठेरती है दिनके अन्दर सूर्यका आताप होनेसे शीघ्र ही विध्वस हो जाती है वास्ते साधु. साध्वी तथा सामायिक पौषदमें श्रावक रात्री समय खुले आकाशमें नही ठेरते है अगर कारणात जाना होतो भी कम्बली आदिसे शरीर अच्छादन करते है। वे अहिंसात्मीक धर्मका पालन करते है।
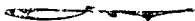
मरु स्थलमें मुनि विहारका लाभ ।

मारवाड फलोधी नगरमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजका चतुर्मास होनेसे धर्म कृत्यमें वृद्धि ।

(१)=स० १९७७ का चतुर्मासा ।

१ तपस्या कि पचरंगी एक
१ तपस्याका शिरपेच एक
२०१ पर्युषणमें पौषद
६१६५) पेहले पर्युषणमें सुपनोकि आवन्द
१२०५) दुसरे पर्युषणमें सुपनोकि आवन्द

(२)-स० १९७८ का चतुर्मासा ।

२ तपस्याकि पचरंगी दोय
२ पौषदका शिरपेच दोय
२०१ पयुषणमें पौषद
१ स्वामिवत्सल पौषदके
२ स्वामीवत्सल खीचदमें
२१००) पर्युषणोंमें सुपनोंकि आवन्द
४४१) श्री भगवती और नन्दीसुत्रकि पूजाका
१८००० पुस्तकों छापी

और भी पूजा प्रभावना वरघोडा तथा जिर्णोद्धारकि टीपों तथा ३६ आगमोंकि वाचनादि धर्मकृत्य अच्छा हुआ हैं और ज्ञान पंचमिके रोज १२४ श्रोता वर्गने सम्यक्त्व मूल व्रत धारण किया है । शम् ।

(उ०) उक्त तापस महान कष्टक्रिया कर, उत्कृष्ट ज्योतीषी देवतोंके अन्दर उत्पन्न होते है, वहा पर उत्कृष्टी एकपल्योपम और एकलक्ष वर्षकी स्थिति होती है परन्तु परभवके आराधी नही होते हैं अर्थात् अज्ञान कष्ट करनेसे अकाम निर्ज्जरा होती है इसीसे देवतोंका पौद्गलीक सुख मीलता है किन्तु धर्मपक्षमें निर्ज्जरा नही होती है ।

(११) हे भगवान ! ग्रामादि के अन्दर जो जैन दीक्षा लेने वाले प्रव्रजित साधु कंदर्प करनेवाले, कुचेष्टा करनेवाले असंबन्ध विषयकारी भाषा बोलनेवाले और जिन्होंको हमेशों गीत गाया प्रीय है, और आचार जिन्होंका निर्मल नहीं है इसी माफक बहुतसे काल तक ओलोचना न करते हुये कालकरके कहां जाते हैं ।

(उ) हे गौतम ! उक्त कदर्पादि करनेवाले मरके प्रथम सौधर्म देवलोकके अन्दर कदर्प जातिके देवतोंमे एक पल्योपम एक लक्ष वर्षोंकि स्थितिमे देवता पण उत्पन्न होते हैं, किन्तु परलोकमे आज्ञाका आराधी नही होता है ।

(१४) हे भगवान ! ग्रामदिके अन्दर अनेक परिव्राजक होते है यथा मति जो अहंकारादि पाच तत्वकर जगतोत्पत्ति माननेवाले, योगि अभ्यास निमित्त आसनकर कपीलमत्ति, भरत्रिकमत्त, हंस जो नग्न ग्रामादिमें रहे, परम हंस जो नग्न परन्तु वनवास करे, स्थानान्तर गमन करने वाले, घरमें रहेके योग वृत्ति पाले, कृष्ण परिव्राजक नारायणके उपासक, इन्होंमें आठ ब्राह्मणोंकि जातिके परिव्राजक है जेसे । कृष्ण, करकंट, अबड, पारासर,

प्रकाशक —
मेघराज मुणोत
फलोधि (मारवाड)

॥ जलदि किजिये ॥

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला संस्थासे स्वल्प समयमें, आज तक ११ पुष्प प्रसिद्ध होचुके है कार्य चालु है ।

जैन सिद्धांतके तत्त्वज्ञान मय शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५

हिन्दी मेझर नामो-२०६ आगमोका प्रबल प्रमाणसे ३१ विषयका प्रतिपादन किया गया है साथमें त्रण निर्नामा लेखोंका उत्तर भी दिया गया है । किंमत फक्त आठ आना ।

द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका खास पाठशालाओंमें पढने लायक है । पाठशालामें टोपल खरचासे ही भेजी जाती है ।

लिखो -श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला ।
मु० फलोधी-मारवाड ।

मुद्रक-
मूलचन्द किसनदास कापडिया,
" जैन विजय " प्रिन्टींग प्रेस,
खपाटिया चकला, लक्ष्मीनारायणकी वाडी-सुरत ।

करसन, दीपायन, देवगुप्त, नारद, और अष्ट क्षत्री जातिके आचार्य है वह ऋगुवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अर्थवणवेद इन्हीं च्यार वेद और इतिहास तथा पुरण वेद्यक ज्योतिष गीणत आदि अपने मत्तके सर्व शास्त्रोंकि परम रेहस्य जाननेमें आग्रेश्वर है।

वह परिव्रमक दानधर्म शौचधर्म तीर्थ अभिषेश प्र. परूपते हुवे केहते है कि जब हम किंचत् ही अशुच होते है तब मट्टी लेपनकर स्नान करनेसे हम शौच होते है और उन्हीं परिव्रमकोंको तलाव कुवा समुद्र नदी आदिमें प्रवश होन नहीं कल्पते है किन्तु रहस्तेमें आ जावे तो उत्तर शक्ते है और उन्होंकों कीसी प्रकारकी सवारी करना भी नहीं कल्पते है नाटक ख्याल तमासा देखना भी नहीं कल्पन है। हरीकायको पावोंसे चापनी भी नहीं कल्पती है। च्यार प्रकारकि विकथावों तो वह अनर्थके हेतु समझते है। वह धातु लोहा पीतल कांसी सुवर्ण चान्दी आदि के वरतन भी नहीं रखते है। मात्र एक तुबाका पात्र मटीका पात्र और काष्टके पत्र रखते है उन्होंके भी धातुका बधन देना भी नहीं कल्पते है। वस्त्र जो रखते है वह भी नाना प्रकारके रंगके नहीं किन्तु धातु रंग (भगवे वस्त्र) के भी स्वल्प मूल्यवाले रखते है, उन्हीं परिव्रमिकों कों कीसी प्रकारके भूषण हार कुंडलादि पेहरना रखना नहीं कल्पते है किन्तु एक तांबेकि पवित्री (वींटी) रखना कल्पता है। उन्ही परि० कीसी प्रकारकि पुष्पोंकि माला धारण करना नहीं कल्पता है किन्तु एक कानोंपर रखनेका पुष्प रखता है। और किसी प्रकारका लेपन चन्दनादिका नही करते है किंतु एक गंगाकी मट्टीका लेप करते है।

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पु० नं० ८२

कर्ता
मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी,

उन्ही परिवर्जिकोंको एक मागद देशका पाथा (मानन विशेष १६ सेरपाणीवाला) परिमाण पाणी वहमी वेहता हुवा, निर्मल स्वच्छ प्रभ्रता होतो वहमी वस्त्रसे छाणके दातारके दीया हूवा लेने वहभी अपने पीनेके काम लेवे किन्तु हाथ पग उपकरण धोनेके लिये नहीं। और आदा पाथ परिमाण पाणी पूर्ववत् हाथपग उपकरण धोनेको लेते है इन्होंसे ज्यादा पाणी नहीं लेते है। तथा आद्धापाथा परिमाण पाणी स्नान करनेको लेते है। इसी माफीक वरताव रखते हूवे बहुत कालतक परिवाजिकोंकि पर्याय पालने हूवे कालकर कहापर जाते है। ?

(८) हे गौतम, उक्त परिवर्जिक उत्कृष्ट पचमें ब्रह्मदेवलोकमें उत्पन्न होते हैं वहा पर उत्कृष्ट दश सागरोपमकि स्थिति होती है परतु परलोकके आराधी नहीं होते है। उचे जेते है वह मात्र कष्टक्रियाके बलसे जाते है अन्य मतियोंकी उर्ध्व जानेमें पचवा देवलोक तक गति है।

(नोट) उस समय अम्बड परिवर्जिकके ७०० शिष्य ग्रीष्म ऋतुके समय जेष्ट मासमें गगा नदीके तटपर कपीलपुर नगरसे पुरमताल नगरको जा रहे थे। रहस्तेमें पेहला सग्रह किया हूवा पाणी सब पीगये जब बहुत पीपासा लगी गगाका पाणी था परन्तु दातार न हूनेसे वह पाणीले नहीं शके। दातारकी गवेषणा करनेपर भी दातार मीला नहीं। जब सर्व एकत्र होके विचारा कि अपनि प्रतिज्ञा है कि विना दातारका दिये हुवे पाणी न लेना। वास्ते इस आपदामें अपना नियम मजबुत रखनेको अपने सबको पादुगमन सस्थारा करना ही उचित है। बस एसा ही कर एक

३ प्रत्याख्यान करके पाप कर्मोको रोका नहीं है।

४ पाप वेपार रूपक्रिया करके सहीत।

५ सवर करके आत्माको सवरी नहीं है।

६ एकान्त दडी=मन वचन कायाके योगोंसे दडा रहा है।

७ एकान्त मोह कर्मकि घौर निद्रामें सुता हुवा है।

ऐसा बाल अनानी जीव सदैव पाप कर्मोको बान्धते है ?

(उत्तर) हाँ गौतम उक्त जीव सदैव पाप कर्मोका बन्ध करता है। आत्माके साथ कर्म दल तीव्र रससे, कर्म स्थितिको चढाते हुवे भवान्तरमें दुःखोंका अनुभव करेगा।

(२) हे भगवान। इस घौर ससारके अदर जो जीव असयति, अव्रती, प्रत्याख्यान कर आने हुवे पाप कर्मोको रोका नहीं है, पाप कर्म सहित क्रिया, आतमा, सवर रहित असवरीत, एकान्त दडी (त्री दडसे आत्माको दडावे), एकान्त बाल अज्ञानी, एकान्त मोह निंद्रामें सुत्ता हुवा जीव मोहनिय कर्मका बन्ध करे ?

(उ) हाँ गौतम उक्त जीव मोहनिय कर्मका घन बन्ध करते है। क्योंकि प्रथम गुणस्थान पर जीव चिकण रस अर्थात् छेठा निया रसके साथ मोहनिय कर्मका बन्धन करता है।

(२) हे दयाल। समुचय जीव मोहनिय कर्म वेदता हुवा क्या मोहनिय कर्म बान्धे या वेदनिय कर्म बान्धे ?

(उ) हे इन्द्रभुति–मोहनिय कर्म वेदता हुवा जीव मोहनिय कर्म बान्धे और वेदनिय कर्मभी बान्धे। परन्तु चरम मोहनिय कर्म वेदता हुवा जीव वेदनीय कर्म बन्धे परन्तु मोहनिय

मट के बडे नातनमें प्रवेश कर तपश्चर्य करे इत्यादि अभिग्र काते हुवे बहुतसे काल तक विचरे अन्तमें काल कर काहा जावे।

(उ) हे गौतम । उक्त आजीवकामेंत्ति अन्तिम काल कर बारह वा देवलोकमे उत्कृष्ट बावीस सागरोपम कि स्थितिमें उत्पन्न होता है । परन्तु परभवका आराधीक नहीं हो शक्ता है क्रियाके बलसे पौद्गलीक सुख मीलता है परन्तु सकाम निर्जर नहोनासे ससारका अन्त नही कर शक्ता है ।

(१६) हे भगवान । ग्रामादिके अदर एकेक एसा भी साधु होता है कि जैन दीक्षा लेनेके बाद म उत्कृष्टा हू । इसीसे पारका अवगुण वाद बोले पर'क निंदा करनेवाले, भूतिक्म मिंत्र यत्र तत्र चुरणादि करनवाले, हासी ठठा मीसरी कोतुकादि करनेवाले बहुतसी क्रिया करने हूवे बहुतसे काल दीक्षा पाले परन्तु आलोचना नहीं करे वह कानसे स्थानमें जाते है ।

(उ) हे गौतम । उक्त साधु आलोचना नहीं करते हूवे काल करके बारहवा देवलोकमें अयोगीक-आशमें रहनेवाले कि तूहल करनेवाले देवतापणे उत्पन्न होते है उत्कृष्ट बावीस सागरोपमकि स्थिति होती है परन्तु परलोकके आराधीक नहीं होता है ।

(१७) हे भगवान । ग्रामादिकके अन्दर दीक्षा लेनेके बाद प्रवचनके न्हव होते है ।

(१) बहुरथा—बहुत समयमें कार्य होता है किंतु एक समयमें कार्य न होवे एसा मत्त जमाली अनगारका था ।

(२) जीव प्रदेशीक—जीवके एक प्रदेशमें जीव माननेवाला तीसगुप्तका मत्त ।

कर्म न बान्धे । कारण चरम मोहनियकर्म दशवे गुणस्थानतक वेदता है और मोहनिय कर्मका बन्ध नवमा गुणस्थान तक है अर्थात् दशवा गुणस्थानमें मोहनिय । कर्मका बन्ध नहीं है वास्ते चरम मोहनियकर्म वेदने वाला मोहनियकर्म नहीं बान्धता है ।

(४) प्रश्न–हे भगवान । इस संसारके अंदर असयति यावत् एकान्त मोहनिद्रामें सुत्ता हुवा जीव अज्ञानके प्रेरणासे बाहुल-तापेक्षा त्रस प्राणी जीवोंकि घात करनेवाले नारकीमे जाते है ?

(उत्तर) हाँ गौतम– जो पूर्वक्त जीव त्रसप्राणीयोंकि घात करनेवाला बाहुल्तापक्षे नरकमें ही जाते है । कारण त्रस प्राणी जीवोंकि घात करने वालोंकि परिणाम महान रौद्र रेहने है जिस्में भी असयती यावत् एकान्त मोह निद्रामें सुते वालोंका तो केहना ही क्या । वास्ते वह नरकमें ही जाता है ।

(५) प्रश्न–हे सर्वज्ञ इस ससारके अंदर जो जीव असयती अन्नती प्रत्याख्यान कर पापको नहीं रोका हो वह जीव यहासे मरके देवतावोंमें भी जा सक्ता है ।

(उ) हाँ गौतम एसे जीव कितनेक देवतावोंमें जा भी सक्के है । और कितनेक जीव देवतोंमें नहीं भी जाते है ।

तर्क हे भगवान इसका क्या कारण है ।

समाधान–हे गौतम । एसे भी जीव होते है कि

(१)ग्राम–जहापर स्वल्प वस्ती हो । हेमला पेमला मूला घुला एसी हलकी भाषा हो जब ज्वारादिका खाना हो । बुद्धिवान् लोकोंकि बुद्धि मलीन होजाती हो इत्यादि उन्होंको ग्राम

(३) अव्वत्तिया—साधुवोंमें चौरादिककि शका ऐसे साधु है कि नहीं ऐसा आषाढाचार्यके शिष्यवत्

(४) सामुच्छिया—नरकादिक जीव क्षीणक्षीणमें विच्छेद होता है एसा माननेवाला अश्वमित्रवत्

(५) दो किरिया—एक समयमें दो क्रिया लगति है एसा माननेवाला गर्गाचार्यवत्

(६) तेरासिया—जीवरासी, अजीवरासी, जीवाजीवरासी, यह तीनरासी माननेवाला गोष्टपालीकावत

(७) अव्वाठिया—जीवको कर्म सर्प कचुकवत लगते हैं एसा माननेवाला प्रत्याख्यानवत् समझना। विशेष यथार्थो देखो उववाई तथा स्थानायागसूत्रोंसे।

यह सात प्रवचनके निन्हव थे इन्होंके मात्र लिंग ही जैनका था परन्तु श्रद्धा विप्रीत थी वास्ते अभिनिवेस मिथ्यात्वके उदय स्वय अपनि आत्मा और अ य परात्मावोंको मद रहस्तेसे भ्रष्टकर उन्मार्गमे लेजाता हूवे वह बहुतसे काल तपश्चर्यादि काय क्लेस करता हुवा अनालोचनासे मृत्यु धर्मको प्राप्त हो कहा जाते है।

(उ) हे गौतम। उक्त सातो प्रकारके प्रवचन नन्हव क्रियाके पूर्ण बलसे उत्कृष्ट नवोमि ग्रीवैग तक जाते है वहापर एकतीस सागरोपमकि स्थितिवाले देवता होते है किन्तु परभवका आराधी नहीं हो शक्ते है ऐसे नौग्रीवैगमे जीव अनन्तीवार जा जाके आया है परन्तु भव भ्रमणसे नही छुटता है वास्ते आराधीकपणेकी कोशीष आवश्य करना चाहिये इसमें मौख्य वीतरागकि आज्ञा पालन करनासे ही आराधीपणा आसक्ता है।

(२) आगर–जहापर सुवर्ण चादी रत्नादिकि खाणो हो।

(३) नगर–किसी प्रकारका कर न हों सेहर पत्ता गोलाकार हों उसे नगर केहते है तथा लम्बीजादा चोडी कम हो उसे नगरी केहते है।

(४) निगाम–जहा वैश्यलोंकाधिकहो अन्यलोक कम हो
(५) राजधानी–जहापर राज तख्तहो राजानिवास करता हो।
(६) खेट–सेहार बाहीर धूलका प्रकोटा हो।
(७) करब–जहा कुश्चित लोक वसते हो।
(८) मडव=अढाई अढाई कोषपर ग्राम न हो।
(९) दोणीमुख–जल और स्थल दोनों रहरता हो।

(१०) पट्टण=तुलमा नपमा गीणमा और परखमा यह च्यार प्रकारका माल मीलता हो और बाहा से आनेपर विक्रय भी हो जाता हो उसे पट्टण कहते है।

(११) आश्रम=जहापर तापसोके निवास वाले आश्रम हो।
(१२) सम्रत=पर्वतोंके नजीक करसानोका सम्रत हो।
(१३) घोषस=गोपालकादिका निवास हो।
(१४) पन्थस=पन्थीलोक आते जाते निवास करते हो।
(१५) बहास=दुष्कालादिसे अन्यदेशोंके लोकनिवास कियाहो
(१६) सन्निवेस=सब जातीके लोकोंका स्वल्प निवास हो।

इन्होंके सिवाय जगलादिमें जो प्राणियों होते है वह

(१८) हे भगवान ! ग्रामादिकेके अन्दर कितनक मनुष्य अल्पारम्भीक अल्पपरिग्रहवाले जो धर्मी धर्मके पीछे चलनेवाले धर्मकेअर्थी, धर्मकेकेहनेवाले धर्मपालनेवाले धर्मकिसमाचारीके अन्दर चितवना करनेवाले अच्छे सुद्धाचार सुदरव्रत दुसरेक भला होनेमें आप आनन्द माननेवाले वह प्णातिपातादि जो पाप वैपार तथा गृहकार्य आरम्भ सारम्भ समारम्भादिकोसे कीतनेक अस निवृति हुवा है कीतनेक अस निवृत नही भी हुवा है अर्थात् स्थुलाथुल कार्योंसे निवृति हुवा है शेष गृहकार्य करते भी है। एसा जो श्रावक है वह जीवाजीव पुन्यपापाश्रवसवर, निर्जरा बन्ध मोक्ष यह नवतत्व और काइयादि पचवीस क्रिया वोंको गुरू महाराजसे हेतु सहित धारण करी है अर्थात ठीक तरहेसे जाणपाणा कीया है जिन्होंस श्रावकोंकि श्रद्धा दृढ मजबुत है वह श्रावक कीसी प्रकारके देवता दानवादिकसे कीसी कीसमकि साहिता नही इच्छते है और हजारों लाखो क्रोडोगम देवता एकत्र हो जानेपर भी उन्ही श्रावकोंको धर्मसे क्षोभीत नही कर शके। वीतरागोंके प्रवचनके अन्दर निशक है किसी भी परमतकि इच्छा नही करते है। करणीका फलकि किंचत् ही शका नही है। ओर भी वे श्रावक लोग आगमोंक अर्थको ठीक तरेहसे प्राप्त किये है, मनन किये है आगमोंके अर्थकी, शका होनेसे या समझमे नही आनेसे पुच्छाकर निर्णय किया है, जिन्होंसे विशेष ज्ञाता होने हुवे सर्व शसमको च्छेदन किया है इन्होंसे हाड और हाडकि मींजी धर्मके अन्दर पूर्ण शासन रगमे रग दीवी है। वह श्रावक जो अर्थ तथा परमार्थ समझते है तो

(१) विना मनसे क्षुधाको सेहन करता है अर्थात् क्षुधा लागनेपर भोजनादि करने कि पूर्ण अभिलाषा है परन्तु भोजन मील्ता नहीं हैं तथा कीसी भी कारणसे कर नही शके उन्होंको "अकम" कहते हैं ।

(२) विनामन पीपासा सहेन करे है ।

(३) विनोंमन ब्रह्मचार्य पलन करते हो । जैसे स्त्रि न मिले तथा मिलनेपर भी रोगादिके कारणसे ।

(४) मन होनेपर भी पाणी न मीलनेसे स्नान न करे ।

(५) वस्त्रादि न भी मीलनेसे शीत ताप दसमंसादिका सेहन करना ।

(६) मेल परिसेवा आदिको विना मन सेहन करे ।

इत्यादि विनोंमनसे स्वल्पकाल या दीर्घकाल अपनी आत्माको कष्टेस उत्पन्न करता हुवा कालके अवसरमें कालकर वाणमित्र देवतावोंके अन्दर दश हजार वर्षोंकि स्थितिवाले देवता होते है वहाँ देवतावोंकि मनुष्यकि अपेक्षा बड़ी भारी ऋद्धि ज्योती क्रान्ति बल प्राप्त होता है ।

(तर्क) वह देवता पर भवका आराधी हो शक्ता है ?

(सम०) परभवका आराधीक नहीं हो शक्ता है । अर्थात् अकाम कष्टेप सेहन करनेसे मजुरीवाले पौद्गलीक सुख मील जाते है परन्तु आत्मीक सुखोंका एक अंस तक भी नहीं मीलता है एसे पौद्गलीक सुख चैतन्यको अनन्तीवार मील चुका है परन्तु इन्हीसे आत्म कल्याण नहीं है ।

एक तीर्थंकरोंके धर्मकों ही समजते है शेष पाखंड तथा गृहस्त कार्य इन्ही सर्वको अनर्थका ही हेतु समजते है । इन्ही श्रावकोंके हृदय स्फटिक माफीक उज्वल मायाछन्य रहित निर्मल है । उदारता है कि घरके द्वार हमेशों खुले रहते है अर्थात् इन्होंके घरपर आनेसे कोई भी भिक्षु निरास होके नही जाते है । उदारता एक शासनका भूषण है । राजाके अन्तेवर तथा धनाढ्यके भंडारमे चले जानेपर भी इन्होंकि अप्रतित नही है अर्थात चोरी जारीके कुविशन इन्ही श्रावकोंसे हजार हाथ दुरे रेहते है । धर्मकरणीमें भी दृढ है जो चतुर्दशी अष्टमि पूर्णमावस्यके रोज पौषद करते है अर्थात् प्रतिमाम छे पौषद करते है । और साधु महात्मावोंको निर्दोष फासुक असन पान खादिम सादिम वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरन पाठफलग सय्या (मकान) सम्थारा (तृणादि) औषद भेसज्ज एवं १४ प्रकारका दान देते हुवे आपनि आतम भावना निर्मल रखते हुवे विचरते है । एसा श्रावक बहुत काल श्रावक व्रत पालते हुवे आलोचना कर समाधि मरण मरके कहा जाते है ।

(उ) हे गौतम ! उक्त श्रावक समाधि पूर्वक काल कर उत्कृष्ट बारहवा देवलोकमें उत्कृष्ट बावीस सागरोपमकि स्थिति वाला देवता होता है वह परलोकका आराधी होता है । भवान्तरके अन्दर आगम्य मोक्ष जावेगा ।

(१९) हे भगवान् ! ग्रामादिके अन्दर एकेक एसे भी मनुष्य होते है कि अनारंभी अपरिग्रह अर्थात् द्रव्य और भावसे आरंभ परिग्रहको त्यागन किया हो वह धर्मी यावत् धर्म कि चिंतवन करनेवाला । सर्वथे प्रकारे प्रणातिपातादि सर्व पापोंका-

(६) प्रश्न—हे भवतारक ! इस घोर संसारके अन्दर प्राणी, जो ग्राम नगर यावत् सनिवेस तक १६ नाम पूर्ववत् समझना वहांपर कितनेक लोक कारागृह—केदखानामें पडा हूवा काष्टके खोडामें जिन्होंका पावडारा हूवा है हाथोंमें चाखडीयों पेराइ है पगोंमें लोहा कि बेडी डाली है भाक्सीमें डाला हो हास्त पग नाक नयनादि अंगोपांग जिन्होंका छेदा हो अनेक प्रकारसे मरणन्त कष्ट देता हो, शरीरका खंड खंड करते है गाणीमें पील देते हो, हस्तीके पग और सिंहकी पुच्छके बादके मारे, शुली देके मारे, तथा सयम व्रतसे भ्रष्ट होके मरे, पांचों इन्द्रियके वस होके मरे। बाल तप तथा तपका निदान कर मरे। मायादि शल्य सहित मरे। पर्वतसे गिरके मरे। वृक्षके लटकके, अन्नपाणी न मिलनेसे मरे। विष खाके मरे, शस्त्रसे मरे, अग्नीदपीठमें प्रवेश होके मरे इत्यादि बाल मरण यावत् अर्तध्यान करता हुवा मरे हे भगवान एसा जीव अकाम मरण मरके कहांपर जावे।

(उ) हे गौतम वाणमित्र देवतावोंमें बारह हजार वर्षोंकी स्थितिवाला देवता होते है परन्तु परलोकका आराधी नहीं होता है।

(७) हे भगवान ! इस लोकमें केई मनुष्य प्रकृतिके भद्रीक प्रकृतिके विनयवान स्वभावसे ही क्रोधमानमायालोभ उपशम—पतला पडा हो स्वभावसे ही कोमलता मधुरता प्राप्ती हुई हो। स्वभावे विषयसे विरक्त, अपने माता पिताकी सुश्रुषा करनेवाला माता पिताकी आज्ञा पालन करनेवाला स्वभावसे अल्पारम्भी अल्प परिग्रहसे अपनी आजीवका चलानेवाला होता है वह अपना आयुष्य पूर्णकर कहा जाते है ?

ब्रह्मचार्य व्रतकि मजबुतिके लिये शास्त्रकारोंने नव वाड और दशवा कोट बतलाया है। यथा—

(१) पहेली वाट=जहापर पशु नपुसक और स्त्रीयों रेहती हो तथा और भी विषय विकारोत्पन्न करनेवाले चित्र या कोई भी पदार्थ हो एसा मकानमे ब्रह्मचारीयोंको न ठेरना चाहिये। कारण आत्मा निमित्तवासी है। उक्त पदार्थ देखनेसे चित्त वृती मलीन होती है अनेक सकल्प विकल्पोत्पन्न होते है। इहांसे ब्रह्मचार्यपालन करनेमें भी शका होती है विषय सेवनरूप कांक्षा होती है भवान्तरमें फल होगा या न होगा एसी वितगिच्छा होती है यावत् शरीरमें रोगोत्पन्न हो जाते है बेमान हो जाते है और केवली परूपित धर्मसे भ्रष्ट हो जाते है वास्ते उक्त स्थानोंमें ब्रह्मचारी पुरषोंको न ठेरना जेसे दृष्टान्त किसी मकानमें बीलाडी (मञ्जार) रेहती हो वहा अगर 'मूषा' निवास करे तो उन्हींके जीवकों आवश्य नुकशान पहुचती हैं।

उक्त च=जहा विराला व सहस्स मूले।
न मूसगाण वसही पसत्था॥
एमेव इत्थी निलयस्स मज्झे।
न बभयारिस्स सम्भे निवासो॥ १॥

(२) दुसरी वाट=ब्रह्मचर्य पालन करनेवाले महा पुरषोंको स्त्री सबधी अगोपाग हास्य विनोद शृगारादि कथा वार्ताओं न करना चाहिये कारण अनादि कालसे जीव विषय विकारसे परिचित है वास्ते हास्य विनोद श्रृगारके साथ स्त्रीयोंके रूपयोवन और अगोपागकि कथ'र्या करनेसे चित्तवृती मलीन हो

(३) हे गौतम उक्त मनुष्य माता पिताकी सेवा करने वाला काल करके वाणमित्र देवतोंमें चौदा हजार वर्षोंकी स्थितिवाला देवता होता है पुर्ववत परलोकका आराधी नहीं होता है।

(८) हे भगवान ! ग्राम नगर यावत सन्निवेसके अन्दर एकेक स्त्रियों होती है वह मोटे घर राजा महाराज सैठ सेनापति आदिके अन्ते वर महल प्रसाद तथा घरोंके अन्दर रेहने वाली जिन्होंके पति प्रदेश गया हो तथा परलोक (मृत्यु)गया हो वह बाल विधवा हो अथवा पति लग्न करके छोड दि हों इत्यादि कामाभि लाषो स्त्रिया अपने माता पिता भाई सुसरादिके रक्षण (बधोबस्त मे तथा जतिकुलको मर्यादासे वहा पर भी जा नहीं शक्ती हैं तथा अच्छे वस्त्र भूषण काजल टीकी पुष्पमालादिका उपभोग करन बंध कर दिया है और दूध दही घृत शकर गुल तेल माम मदि आदि काम वृद्धक पदार्थोंको छोड दिया है ओर स्नान मज तेल उघटणादि करना भी छोड दिया है इन्होंमें मेल पशेना अ दिको सहन करती है तथा अल्प इच्छावाली है अल्प आरंभ परि ग्रहवाली है अपने सजनके केहनेमें चलनेवाली है विनामन ब्रह्म चार्य पालनेवाली है वह स्त्रियों अपने आचार विचारका धार करती हुई आयुष्य पुर्णकर कहा जाती है।

(उ हे गौतम उक्त स्त्रियों विनामन ब्रह्मचार्य व्रतको पाल करती हुई अकाम निर्जरा करके वाणमित्र देवतोंके अ ६४००० वर्षोंकी स्थिति वाले देवभवमें उत्पन्न होते है पुर्व परन्तु परलोकमें आराधी नहीं होते हैं।

ाती है यह बात प्रसिद्ध है कि निंबुका नाम लेते ही मुहमें णी आ जाता है। वास्ते उक्त कथावों न करे अगर करेंगे तो र्वोक्त केवलीपरूपत धर्मसे भ्रष्ट हो जावेगा।

(३) तीसरी वाड=जहापर स्त्रीयों वेठी हो उन्ही स्थान पर कमसे कम दोय घडी तक ब्रह्मचारीयोंको नही वेठना चाहिये। इसी माफोक ही जहा पुरष वेठा हो उन्ही स्थान पर ब्रह्मचारणीयोंको न वेठना चाहिये। कारण कि उन्ही स्थानके परमाणुवें विषयमय होजाते है जैसे जिस स्थान पर अग्नि प्रज्वलत हुई है वह अग्नि हटा लेनेके बाद भी ठंडा हुवा कठन घृत रखा जावें तो वह घृत अपने कठनतासे पीगल जावेगा वास्ते उक्त स्थान पर न बेठे अगर कोई बेठेगा तो पूर्वोक्त धर्मसे भ्रष्ट होगा।

(४) चोथी वाड-ब्रह्मचारी पुरषोंको स्त्रीयोंके मनोहर सुदर शरीरके अवयव जैसे नेत्र मुख स्तनादि अंगोपांगकों राग दृष्टिसे न देखे। कारण उक्त स्त्रीयोंके अदर देखनेसे चित्तवृती मलीन होती है। अनादि कालका परिचत काम विकारोत्पन्न होता है जैसे किसी पुरुषने अपने नेत्रोंकि कारी कराई है वह सुर्यके सन्मुख देखनेसे नेत्रोंको आवश्य नुकशान होगा यावत् धर्मसे भ्रष्ट हो जायगा।

(५) पाचवी वाड=भीत टाटी कनातके अन्तरे स्त्रीयोंके हास्य शब्द, काम कीडाके शब्द, रूदन करते शब्द, विलास शब्द, और भी कीसी प्रकारके शब्द जो कि चित्तवृती मलीन और विषय विकारोत्पन्न करता हो एसा शब्द श्रवण नही करना चाहिये अर्थात् प्रथमसे ही जहापर स्त्रीका परिचय हो वहपर ठेरनाही नही चाहिये कारण उक्त शब्द सुनते ही जेसे गाज सुनते ही मयुर

(९) हे भगवान ! इस लोकके अन्दर ग्राम यावत सन्निवे सके अन्दर एकेक मनुष्य होते है जो कि फरत अन्न और पाणी यह दोयद्रव्यके, भोगवनेवाले एसे तीनद्रव्य, सातद्रव्य, इग्यारेद्रव्य, भोगवनेवाले, गायके पालनेवाले, गौके पीछे चलनेवाले धर्मपुण्य कार्यादिके शिक्षक, शास्त्रके पढनेवाले, गृहस्थ धर्म सन्यासधर्म अर्चनादि भक्ति करनेवाले, और उन्होंको दही घृत मक्खन तेल पणीत रस मधु मध मदिरा खाना नहीं कल्पते है किन्तु एक सरसवका तेल खाना कल्पते हैं अल्पइच्छा एसा मनुष्य अल्पारम्भ परिग्रहवाला पूर्ववत आयुष्य पुरण कर कहा जाता है ?

(उ०) हे गौतम वह मनुष्य वाणमित्र देवता के अन्दर ८४००० वर्षवाला देवता होता है ऋद्धि पूर्ववत् परन्तु परलो कका आराधी नही होता है ।

(१०) हे भगवान ! जो ग्रामयावत् सन्निवेसादिमें एकेक वनवास रेहनेवाले तापस होते है यथा–अग्निहोत्र करनेवाले, एक वस्त्र रखनेवाले, मटीके खाडामे रेहनेवाले, यज्ञ कर भोजन करने वाले, अपने धर्मके श्रद्धालु, तापस सम्ब धी पात्र रखनेवाले, केवल फलाहार, एक दफे पाणीमें, बहुत दफे पाणीमें तथा पाणीमें निवास करनेवाले, सर्व वस्तु पाणासे धो के खानेवाले, शरीरके मटी लगाके स्नान करनेवाले, गगाके दक्षिण तथा उत्तर कुल रेहनेवाले, सख वजाके, खडा रेहके भोजन करनेवाले मृगमसके हस्तीमसके भोजन करनेवाले, दड रखनेवाले, दिशपोषण करनेवाले इत्यादि कन्दमुलादिके भोजन करते हुवे–अनेक प्रकारसे कष्ट किया करनेवाले तापस लोक आयुष्य पूर्णकर कहा जाते है ? –

मग्न हो बोलने लग जाते है इसी माफीक उक्त शब्द श्रवण करने ही कामविकार सचेतन होजाता है वास्ते वह शब्द कानोद्वार श्रवण नही करना चाहिये। अगर सुनेगा तो पूर्ववत् धर्मसे भ्रष्ट होगा।

(६) छटी वाट-ब्रह्मचार्य व्रत धारण किया पेहला जो संसारमे विषयभोग विलासादि सेवन कियाथा उन्होंको फीरसे समरण न करना चाहिये। कारण अनाभोग विष सेवन किये हुवे को फीर स्मरण करनेसे मनुष्य मृत्यु धर्मको प्राप्त होजाते है जेसे एक भटियारके वहां दो मुसाफर आये थे रवाने होते हुवेको उन्ही भटीयारने छास पीलाइथी वह मुसाफर तो चलेगये पीछेसे देखे वो रात्रीमें छास भीगोइ थी जीस्मे सर्प था गेर। वह मुसाफर १२ वर्षोंसे पीछे उन्हीं भटीयारके वहां आके अपना नाम बत लाया तो उन्ही भटियारने कहा क्या पुत्रों तुम अबी तक जीवने हो? उन्ही मुसाफरोंने एसा केहनेका कारण पुच्छा, तब भट यारने कहा कि हे व धु मेरे जो तुमको छास पीलाइ थी उन्हीके अन्दर सर्पका विष था इतने सुनते ही वह मुसाफर एक दम 'है' करते परलोक पहुच गये। वास्ते गतकालके काम भोगोंको स्मर णमें नहीं लाना चाहिये। अगर करेगा तो पूर्व० भ्रष्ट होगा।

(७) सातवी वाट=ब्रह्मचारीयाको प्रतिदिन 'प्रणीत आहार'' सरसाहार अर्थात् दुद्ध दही घृत पक्वान मिष्टानादिका आहार नहीं करना चाहिये कारण उक्त आहार काम विकारको उत्तेजन देता है जेसे कि सन्निपातके रोगवालोंको दुद्ध मिश्री पीलानेसे रोगकि वृद्धि होती है वास्ते सरसाहार नही करते हुवे शरीरको भाडा तुल्य लुखा सुखा ही आहार करना चाहिये। अगर करेगा तो पूर्ववत भ्रष्ट होगा।

(८) आठवी वाड–लुखा सुखाहार करता हो वह भी परिमाणसे अधिक न करना, कारण अधिक आहार करनेसे शरीरमें उन्माद होता है आलस प्रमाद होता है यह सब विकार उत्पन्न करनेवाला है जैसे शेर धान्य पचाने योग्य मटोकि हाडीमे सवा शेर पचाया जावे तों हाडी फुट जाती है वास्ते ब्रह्मचारीयोंको निरसाहार भी अनोदरी करते हुवे भोजन करे ताके कीसी प्रकारकि व्याधि न होवे । अ० करगा० पूर्व० भ्रष्ट होगा ।

(९) नवमी वाड–ब्रह्मचारीयोंको अपने शरीरकि विभूषा–स्नान करना मालस करना अत्तर तैल चदनादिका लगाना सुन्दर वस्त्रभूषणके पेहरना इत्यादि शृंगार शोभा न करना कारण यह भी विषयविकार कामदेवका आदर करना है जैसे कि कजलकि कोटडोमें निवास करनेसे किसी प्रकारसे काला कलकसे बच नही सकता है वास्ते ब्रह्मचारीयोंको शरीर विभूषा न करनि चाहिये । पूर्ववत् ।

(१०) दशवा कोट–ब्रह्मचारीयोंको अच्छे शब्दों पर कुशी और बुरे शब्दों पर नाराजी न लानी चाहिये, एवं सुंदर रूप देखके कुशी खराब रूप देखके नाराजी न करना, एवं अच्छे सुवासीत पदार्थों पर कुशी और दुर्गंध पदार्थोंपर नाराजी न करना, एवं स्वादीष्ट मनोज्ञ भोजनों पर कुशी और अमनोज्ञ पर नाराजी न करना, एवं अच्छे कोमल मनोज्ञ स्पर्शपर कुशी और अमनोज्ञ पर नाराजी न करना चाहिये अर्थात् जो काम विकारोत्पन्न करने योग्य तथा इन्द्रियों पोषक पदार्थ हे उन्हो पर रागद्वेष न करना चाहिये क्युकि यह नासमान पौद्गलोंसे यह जीव अनादि कालसे नरक निगोदके दुखोंका राहा

धन धान्य है वह अन्यावादसे शोभनिय होता है ।

(१३) जेसे सर्व वृक्षोंके अन्दर अनहित देवका भुवन कर सुदर्शन नामका वृक्ष मनोहर सुदर आकृतिवाला देवोंको भी रमणीय है इसी माफीक अन्य मुनिमडलमें बहुश्रुतिजी महाराज अनेक नय विक्षेप स्वाद्वाद धर्मरूपी भुवनकर शोभनिय है ।

(१४) जेसे अन्य नदीयोंके अन्दर निलवन्त पर्वतके केसरी द्रहसे निकलके बडहीं विस्तारसे अन्य ५३२००० नदीयोंके परिवारसे सीतानदी लवण समुद्रके अन्दर प्रवेस होती शोभनिय है । इसी माफीक अन्य मुनिमडलमें जो राजादि उत्तम कुलसे निकले हुवे बहुत परिवारसे प्रवृत और श्रुत ज्ञानरूपी विसाल और निर्मल जलसे मोक्षरूपी महान् गभीर तथा अक्षय स्थानमें प्रवेस होते हुवे बहुश्रुतिजी महाराज शोभनीय होते है ।

(१५) जेसे अन्य पर्वतोंके अन्दर उर्ध्व गमनापेक्षा केलास-गिरि (मेरू) पर्वत जो कि सजीवनि आकाशगामनि चित्रावेली विषहरणी शस्त्रनिवारणी रोगनासक रससादक वसीकरण रोहणी आदि औषधियों संयुक्त तथा अनेक उदड वायुके चलनेपर भी क्षोम न पानेवाला और देवलोके आनन्दका सुन्दर मन्दिर च्यार प्रभावशाली वनोंकर सुमेरू गिरि शोभनिय है । इसी माफिक मुनिमडलमें । अमोसहो जलोसही विप्पोसही सव्वोसही आदि अनेक लब्धियोंरूपी औष-धियोंसे अलङ्कृत तथा हजारों वादीयोंका वेग चलनेपर तथा अनेक परिसहसे क्षोम नहीं पामता हुवा चतुर्विध सघको आनन्दका स्थान और द्रव्यानुयोग गीणतानुयोग चरणाणुयोग धर्मक-

(३) जेसे सर्व जातिकि रत्नोंकि अन्दर वैडूय जातिके रत्न महात्ववाले बहु मूल्य और शोभनिक= प्रधान है इसी माफीक सब व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत अमूल्य शोभनिक और प्रधान है।

(४) जेसे सर्व जातिके भूषणोंमें मस्तकका मुकुट महात्व वाला प्रधान है इसी माफीक सब व्रतोंमें मुगटमणि सामान शोभनिय हे तो एक ब्रह्मचार्य व्रत ही प्रधान है।

(५) जेसे सर्व वस्त्रकि जातिमें खेमयुगल (कपासका) वस्त्र प्रधान शोभनिय और महात्ववाला है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत महात्व शोभनिय और प्रधान है।

(६) जेसे सर्व जातिके चन्दनोंमे बावना (गोसीस) चन्दन सुगन्ध और शीतलता देनेमे महात्व और प्रधान है इसी माफीक सब व्रतोंमे कषायको शीतल करनेमें और तीन लोकमें यशोकीर्तिसे सुवासीत हे तो एक ब्रह्मचार्य व्रत ही महात्ववाला प्रधान है।

(७) जेसे सर्व जातिके पुष्पोंके अन्दर अरिविंद जातके पुष्प महात्ववाले सुन्दराकार सुवासीत और प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत महात्ववाला सुन्दराकार सर्व जगतके मनको आनन्द करनेवाला आतम रमणतामें सुगन्धसे सुवासीत शिव सुन्दरीको मोहित करनेवाला प्रधान है।

(८) जेसे सर्व पर्वतोंमें ओषधीश्वर चुलहेमवन्त पर्वत प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें कर्मरूपी रोग नासक औषधीश्वर चेतन्यको बलवान बनानेमें अग्रेश्वर ब्रह्मचार्य व्रत ही प्रधान है।

यानुयोग तथा दानशील तप भावना रूपी च्यार बनो करके शासनमे बहूश्रुतिजी महाराज शोभनिय होते है ।

(१६) जेसे सामान समुद्रोंके अन्दर महान् पदसे मुर्यीत अनेक रत्नोंका खजाना और अथाग जलसे भरा हुवा सयभूरमण समुद्र अनेक कमलोंसे शोभायमान है इसी माफीक अन्य साधुवोंके अन्दर महान् पद भोक्ता और ज्ञानादि अनेक रत्नोंका खजाना रूप तथा श्रुतज्ञानरूपी अथाग और निर्मल जलमे परिपूर्ण तथा चतुर्विध संघ और देवता विद्याधरा जो कि जिन वाणीरूपी सुवासीत कमलोंकि सुगन्ध ग्रहन करनेको भ्रमर सादश एसे समुद्रके परिवारसे बहुश्रुतिजी महाराज प्रतिदिन अधिकाधिक शोभते हुवे शासनमें सिंह गर्जनकि माफीक अपना मद्ज्ञानद्वारे वादीयोंका पराजय करते शासनकि प्रभावनाको प्रकाश करते है ।

यह १६ औपमा, नाम मात्रसे ही बतलाई है परन्तु दीर्घ दृष्टिसे विचार करनेमे ज्ञात होता है कि शासनका आधार ही बहुश्रुतियों पर रहा हुवा है वास्ते बहुश्रुतियोंकी सेवा उपासना कर स्याद्वाद नय निक्षेप उत्सर्गोपवाद सामान्य विशेषादिका ज्ञान हासिल कर बहुश्रुति बननेकि कोशीष आवश्य करना चाहिये । तांकि स्वपरात्माका कल्याण शीघ्र हो । शम् ।

नं० १०

सूत्र श्री सूयगडायांगजिसे ।

(च्यार समौसरणीयोंके ३६३ भेद)

श्री तीर्थंकर भगवानने स्याद्वादरूपी शासन फरमाया है

(९) जेसे सर्व नदीयोंमें (चौदा लक्ष छपन्न हजार नेउ नदी) सीतानदी (५३२००० नदीयोंका परिवार युक्त) और सीतोंदा नदी (५३२००० नदीयोंके परिवार युक्त) विसाळ परिवार कर महत्ववाली प्रधान है। इसी माफीक सर्व व्रतमें ब्रह्मचर्य व्रत अनेक गुण समूहके परिवारसे महत्ववाला प्रधान है।

(१०) जेसे सर्व समुद्रोंमें अनेक जातिके रत्नकर सयमूरमण समुद्र महात्ववाला प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत क्षान्त्यादि अनेक गुणोंसे महत्ववाला प्रधान है।

(११) जेसे सर्व उच ईवाला पर्वतोंमें मेरू पर्वत च्यार वनादि से महत्ववाला प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत स्वधय ध्यानदि गुणोंके परिवारकर महात्ववाला प्रधान है।

(१२) जेसे सर्व हस्तीयोंकि जातिमें एरावण जातका हस्ती दन्ताशुलोंकर प्रधान है। इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत स्याद्वादरूपी दन्ताशुलकर प्रधान है।

(१३) जेसे चतुष्पदोंमें केसरीसिंह दुर दन्ता महासत्ववाला प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत अध्यवशायरूपी दुरदन्ता मोहशत्रुकों जडामूलसे नष्ट करनेमें महसत्ववाला प्रधान है।

(१४) जेसे भुवनपतियोंमें नागकुमार कि जातिये धरेन्द्रि प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत अनेक समऋद्धि कर प्रधान है।

(१५) जेसे सुवर्णकुमार कि जातिमें वेणु देवेन्द्र प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत प्रधान है।

कारण एक पदार्थमें अनेक धर्म है उन्होंको स्याद्वाद द्वारा कथन करनेसे ही धर्मोंसे ज्ञात हो शक्ते है परन्तु जगतमे कितनेक अल्पज्ञ अपनि मान प्रतिष्टा न करानेके लिये अपने मनमें आई ऐसी ही परूपणाकर बिचारे मुग्धजीवोंको हठकदाग्रहमें डालके दीर्घ संसारके पात्र बना देते हैं वास्ते पेस्तर वस्तु धर्मको समझनेकि खास जरूरत है कि कोन्से मत्तवाले तत्वोंको कीस रीतीसे मानते है और एसा माननेमें क्या युक्ति या परिमाण है। यद्यपि इसी विषयमें बहुतसे ग्रन्थ बना हुवा है परन्तु साधारण मनुष्य स्वल्प परिश्रमद्वारा ही लाभ उठाशके इस वास्ते यहा पर संक्षेपसे ही ३६३ मतोंका हम परिचय करा देते है।

समोसरण च्यार प्रकारके है।

(१) क्रियावादी (२) अक्रियावादी (३) अज्ञानवादी (४) विनयवादी। अब इन्होंका विवरण करते है।

(१) क्रियावादीयोंका मत्त है कि जो जीवोंको सद्गति प्राप्ती होती है यह क्रियावोंसे ही होती है। किन्तु ज्ञानादिसे नही कारण पत्थरकि शीला चाहे कीतने ही चित्रोंसे चित्री हुई क्यों न हो परन्तु पाणीमें रखने पर तो वह शीघ्र ही रसतलको जाती ही रहेगी अर्थात् पाणीमे डुब जावेगी इसी माफीक कीतना ही ज्ञान पढा न पढा हो परन्तु मरने पर तो अधोगति ही होगा। वास्ते क्रिया ही प्रधान है एसी परूपणा क्रिया वादीयों कि है और उन्होंके भी सौ १८० मत अलग अलग है यथा (१) कालवादी (२) स्वभाववादी (३) नियतवादी (४) पूर्व कर्मवादी (५) पुरुषार्थवादी।

(१६) जेसे उर्ध्व लोकके देवलोकोंमें पांचमा देवलोक विस्तारमें महत्ववाला प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें विस्तारसे महत्ववाला ब्रह्मचर्य व्रत है।

(१७) जेसे सर्व सभाओंमें सौधर्मी सभा प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत प्रधान है।

(१८) जेसे सर्व स्थितिमें लवसतमादेवा (सर्वार्थसिद्ध वैमान वासी देव) प्रधान है इसी माफिक सर्व व्रतोंमें अक्षय स्थितिवाला ब्रह्मचाय व्रत महात्ववाला प्रधान है।

(१९) जेसे सर्व दानोंमें अभयदान महात्ववाला है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत प्रधान है।

(२०) जेसे सव रगमे क्रमची रग (जले पण जावे नही) प्रधान है इसी माफोक सर्व व्रतोंमें अप्रतृतन रगवाला ब्रह्मचार्य व्रत प्रधान है।

(२१) जेसे सर्व सस्थानोंमें समचतुरस्रसस्थान प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत प्रधान है।

(२२) जेसे सर्व सहननमें वज्रऋषभनाराच सहनन प्रधान है। इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत महात्ववाला प्रधान है।

(२३) जेसे सर्व लेश्याओंमें शुक्ल लेश्या प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्म० प्रधान है।

(२४) जेसे सर्व ध्यानोंमें शुक्ल ध्यान प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्म० प्रधान है।

(१) कालवादीयोंका मत्त=कालवादी कहते हैं कि सर्व पदार्थो कि उत्पति कालसे ही होती है जैसे कालसे ओरतों गर्भधारण करतीहै, कालसे ही पुत्रका जन्म होता है कालहीसे वह पुत्र चलता है, बोलता है युवक होता है वृद्ध होता है, कालहीसे दुद्धका दही बनता है, कालसे ही षट् ऋतुवोंका भिन्न भिन्न परिणाम होना फलका देना और इन्हीं जगतके अन्दर अवतारी पुरुष माना जाते हैं वह भी कालसे ही होते है ऐसेही चक्रवर्त वासुदेव बलदेवादि महान् पुरुष होते हैं वह सब कालसे ही होते हैं अगर कालके सिवाय होते ओरतों ऋतु धर्मके सिवाय गर्भ क्यु नही धारण करती है यावत कलीकालमें अवतारीक चक्रवर्त वासुदेवादि क्यु नही होते है वास्ते सब पदार्थ कालसे ही होते है यह हमारा मत्त सुन्दर है, सर्व जन समुहको मनन करने योग्य है।

(२) स्वभाववादी–स्वभाववादीयोंका मत्त है कि कालकि अपेक्षाकी क्या जरूरत है। जगतमें जितने पदार्थ है वह सब स्वभावसे उत्पन्न होते है और स्वभावसे ही विनास होते है। जैसे युवक स्त्रि अपने पतिके साथ भोग विलास करती है ऋतुधर्म भी होती है तथपी कीतनीक बंध्य अर्थात् गर्भ धारण नही करती है वास्ते कालकि आवश्यक्ता नही है परन्तु स्वभाव ही प्रधान है। देखिये स्त्रीयोंके दाडीमुच्छके केस न होना हतालीमें रोम न होना निंबके वृक्ष आम्रका फल न लगना, मयूरकि पांखोंके चित्र, सायकालमें बादलोंका पंच रंग होना धनुषका खचना बबुलके कंटे तीक्ष्ण होना मृगके नयन रमणीय होना अग्निकि ज्वालाका उर्ध्व गमन पर्वतोंका स्थिर रहेना वायुका चलना जलकि तरगो,

(२५) जैसे सर्व ज्ञानमें केवल ज्ञान प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्म० प्रधान है।

(२६) जैसे सर्व क्षेत्रोंमें महाविदह क्षेत्र प्रधान विसाल है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्म० प्रधान है।

(२७) जेसे सर्व साधुवोंमें तीर्थंकर भगवान प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्म० प्रधान है।

(२८) जेसे सर्व गोल जातिके पर्वतोंमें कुडलपर्वत विस्तार-वाला प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत महात्मा-वाला प्रधान है।

(२९) जेसे वृक्षोंके अन्दर सुदर्शन नामका वृक्ष प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्म० प्रधान है।

(३०) जेसे सर्व जातिके वनोंमें नन्दनवन रमणिय प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत रमणिय प्रधान है।

(३१) जेसे सब ऋद्धियोंमें चक्रवत कि ऋद्धि प्रधान है इसी माफीक सब व्रतोंमें ब्रह्मचार्य व्रत प्रधान है।

(३२) जेस सर्व जनिका सग्रामीक रथमें दुर्जनजय नामका वासुदेवका रथ प्रधान है इसी माफीक सर्व व्रतोंमें कर्मरूप दुर्ज्ज-नोंको पराजय करनेमें ब्रह्मचार्य व्रत प्रधान है।

यह ३२ औपमा अलकृत ब्रह्मचार्यव्रत मोह नरेन्द्रकी शैन्याको पराजय करनेमे महा समर्थ है वास्ते हे भव्य यथाशक्ति ब्रह्म व्रतका आराधन कर अपने मनुष्य जन्मको पवित्र बनावो।

आकाशमें पक्षीयोंका गमन होना, सूर्यकि आताप, चन्द्रके शीतलता, और कोकलका मधुर स्वर यह सर्व पदार्थ स्वभावसे ही होते है वास्ते कालकि अपेक्षा करना बड़ी भारी भुल है सिवाय स्वभावके कोई भी पदार्थ नहीं है वास्ते हमारा मत्त सबमें अच्छा है।

(३) नियत वादी–नियत वादीयोंका मत्त है कि काल स्वभावकि आवश्यक्ता नहीं है जो भवीतव्यता हो वह ही कार्य होता है। उसीको महान् समर्थ इन्द्रादिक भी मीटा नहीं सक्ते है और जो न होना योग्य कार्यको कोई अवतारादि भी करनेको समर्थ नहीं है जेसे करसान लोक भूमिमें बीज बोते है उन्हींमें कीतनेक तो मूलसे ही नष्ट हो जाते है कितनेक अकुरे उगते ही नष्ट हो जाते है और भवीतव्यता होते है वह फल द्वारा प्राप्त होते है। इसी माफीक वृक्ष और गर्भके जीव भी समझ लेना। तथा अभव्य जीवोंको काल और जातीभव्य जीवोंको स्वभाव प्राप्ती होनेपर भी मोक्ष न जाना यह भी तो एक भवितव्यता ही है। ऋषि मुनि ध्यान लगाके प्रयत्नोंके साथ मनकों अपने कब्जेमें करना हमेशों चाहते है। परन्तु भवीतव्यता हो जब ही साधा होता है रोग नष्टके लिये हजारों औषधियों लेते है परन्तु भवीतव्यता विनो रोग नष्ट नहीं होते है इत्यादि सर्व पदार्थ भवीतव्यताक ही अधिन है सिवाय भवीतव्यताके कुच्छ भी करने समर्थ कोई भी नहो है वास्ते हमारा मानना अच्छा है।

(४) कर्मवादी=कर्मवादीयोंका मत है कि–जो कु—

(३) माया कपटाइ रहित सरल सभावी हो।

(४) अकितूहल-इन्द्रमालादि कौतुहलरहीत हो।

(५) तीरकार वचन न बोले किंतु मधुर वचन बोले।

(६) अक्रोधी-क्रोधको अपने कब्जे कर रखा हो। दुसरोंके क्रोध होनापर आप शांति करनेवाला हो।

(७) कृतज्ञ-दुसरेका उपकार मानते हुवे समय पाके प्रति उपकार करे गुणीयोंका गुण ग्रहन करे।

(८) श्रुत ज्ञान प्राप्तीकर अभिमान न करे किन्तु जगत जीवोंका उद्धार करे दुसरोंको ज्ञान ध्यानमें साहिता करे।

(९) अपना दोष कीसी दुसरे पर न डाले।

(१०) अपने पर विश्वास रखनेवालोंसे द्रोहीपना न करे धोखामें न उतारे नेक सलाहा देवे।

(११) कभी मित्र सज्जनोंकि भूल भी हो जावे तों गंभीरतासे माफी देवे किन्तु अवगुन न बोले।

(१२) परदु खकारी असभ्य भाषा न बोले।

(१३) धीर्यवान नितीवान बुद्धिवानोंकि सत्संग कर आप भी इन्हीं गुणोंकि प्राप्ती करे।

(१४) लज्जावान-लौकिक लौकोत्तर लज्जा रूप वस्त्रोंको धारण करनेवाला हो।

(१५) नित्य गुरूकुलवास सेवन कर गुरु आज्ञा माफीक चलनेवाला हो। गुरुके पास संकुचित शरीरसे बेठनेवाला हो।

इन्ही पन्दरे गुणोवालोंको शास्त्रकारों बहुश्रुति और विनयवान काहा है।

है यह पूर्वकर्मोंकी प्रेरणासे ही होते है जेसे दो मनुष्य एक ही फीस्मका व्यैपार करते है जिस्में एकको लाभ दुसरेको नुकशान हो यह पूर्वकर्मोका ही फल है एसे ही एक पिताके दो पुत्र है एक राम करता हजारोंपर हुकम चलाते है दुसरेको उदर पोषणको अनाज ही कष्टसे मीलता है, दो कृसानि क्षेती करे जिस्में एकको मणीबद्ध धान होता है दुसरेको कुच्छ भी नही यह भी पूर्व कर्मो काही फल है। एसा भी नही मानना चाहिये कि इसमे उद्यम करना प्रधान है क्युकि एक मूषकने अपने उदर पोषणके लिये एक छाबको काटना सरू कीया उन्ही छाबके अन्दर एक सर्पथा छाबको काटके मूषक अन्दर गया तो सर्पने मूषकका भक्षण कर लिया अन्य उद्यम भी कुच्छ फल दाता नही है किन्तु फल दाता पूर्व कृत कर्म ही है तथा अवतारी पुरुष चक्रवर्त बलदेव वासुदेव सैठ इत्यादि जो दु खी सुखी रोगी निरोगी यश अयश आदय अनादय सुस्वर दु स्वर सुशील दुशील चातुर्य मूर्खता इत्यादि होता सब पूर्वकृतकर्म है सिवाय कर्मोके कुच्छ भी नही होता है वास्ते हमाराही मानना सुन्दर है।

(५) पुरुषार्थवादी—पुरुषार्थवादीका मत है कि न काल न स्वभाव, न नियत और न कर्म, जो कुच्छ होता है वह सब पुरुषार्थसे ही होता है जेसे दुद्धसे घृत निकलना हो उन्हीमें काल स्वभाव नियत और पूर्वकर्म कि जरूरत क्या है यह घृत पुरुषार्थसे ही प्राप्ती हो शक्ता है न कि पूर्वकर्म कर बेठ जानेपर दुद्धसे घृत निकल शकता है एसे तीलोसे तैल, पुष्पोंसे अत्तर, धुलसे धातु, पृथ्वीसे पाणी नीकालना, क्षेती कर धान्य पेदास करना यह सब

जैनशासनमें बहुश्रुतियोंका बडा भारी महात्व बतलाया है कारण शासनका आधार ही बहुश्रुतियोंपर है बहुश्रुति स्वपर आत्माका कल्याणमें एक असाधारण कारणमूत है वास्ते ही शास्त्रकारोंने बहुश्रुतियोंकों १६ औपमासे अलङ्कृत किये है वह यहाँपर लिखी जाती है।

बहुश्रुतिजी महाराजकों १६ औपमा।

(१) जेसे दुद्ध स्वय उज्वल और निर्मल होता है तथपि दक्षिणावृतन सख्खके अन्दर रहनेसे अधिक शोभायमान होता है और भी दुद्ध सख्खमें रहनेसे खाटा न पडे, मलीन न होवे, विनास भी न होवे इसी माफीक तीर्थंकरोंके फरमाये हुवे श्रुतज्ञान स्वय निर्मल है तथपि बहुश्रुति रूप सख्खमें रेहनेसे अधिक शोभनिय होता है कारण बहुश्रुति आगमोंकि रहस्यके ज्ञाता होनेसे स्याद्वाद उत्सर्गोपवाद अनेक नय प्रमाणसे उन्ही ज्ञानके सरक्षण करते हुवे जैन शासनकि प्रभावनाके साथ भव्य जीवोंका उद्धार करें, वास्ते ज्ञान बहुश्रुतियोंकि नेश्राय रहा हुवा ही शोमनिय होता है।

(२) जेसे सर्व जातिके अश्वोंके अन्दर कम्बोज देशके आकर्णी जातीके अश्व अच्छे सुन्दर होते है वह राना (असवार) कि मरजी माफीक वैगसे चलते हुवे अनेक उपसर्गोसे त्रास नही पामनेवाले शोभाको प्राप्ती करता है। इसी माफीक बहुश्रुतिजी महाराज अन्य मुनिवरोंमें अग्रेश्वर जिन प्रणीत आगमोंसे सुन्दर अतिशयवान जिनाज्ञानुसार वस्तु धर्मप्रकाश करनेमें और पाखण्डियोंके उपसर्गको सहन करने सत्वधारी शोभायमान होवे

कार्य पुरुषार्थसे ही प्राप्ती हो शक्ते है। और अनेक कला कौशल्य ज्ञान ध्यानादि सब पुरुपार्थसे ही होता है इतना ही नही बल्के क्षुधा लागनेपर भोजन बनाना भी पुरुषार्थसे ही बनता है न कि पुर्व कर्मोसे, वास्ते सर्वकार्यो कि सिद्धि पुरुषार्थसे ही होती है वास्ते हमारा ही मत्त अच्छा है। *

क्रियावादीयोंके १८० भेद है यथा।

कालवादीयोंका मुल च्यार भेद है यथा। (१) एक काल-

* यह काल, स्वभाव, नियत, पूर्वकर्म और पुरुषार्थ, पाचों वादियों एकेक समवयकों मानते हुवे दुसरे च्यारच्यार वादीयोंको असत्य ठेराते है परन्तु उन्होंको यह ख्याल नहीं है कि एकेक समवयसे कभी कार्यकि सिद्धि होती है अर्थात् नही होने वास्ते ही शास्त्रकारोंने एकान्त वादवालोंको मिथ्यात्वी केहते है। और उक्त पाचों समवय परस्पर अपेक्षा सहुक्त माननेसे कार्यकि सिद्धि होती है, उन्हींकों ही सम्यग्दृष्टी कहे जाते है जेसा कि एकले कालसे सिद्धि नहीं परन्तु साथमें स्वभाव भी होना आवश्य है काल स्वभाव दोनोंसे भी सिद्धि नहीं किन्तु साथमें नियत भी होना चाहिये। कालस्वभाव और नियत इन्ही तीनोंसे सिद्धि नहीं परन्तु साथमें पूर्वकर्म भी होना चाहिये। इन्ही च्यारोंसे भी सिद्धि नहीं किन्तु साथमें पुरुपार्थ भी होना चाहिये एव जैन दर्शनमें कालस्वभाव नियत पूर्वकर्म और पुरुषार्थ इन्हीं पाचोंको साथमें रखके ही कार्यकि सिद्धि मानी गई है। नकि एकेकसे। इसी वास्ते एकान्त एकेकको माननेवालोंको मिथ्यात्वी कहा है।

(३) जेसे दृढ प्राक्रमवान असवार आकर्णो जातके अश्वपरारूढ हो, शास्त्रसयुक्त और वाजित्रके नादसे शत्रुवोंका पराजय करते हूवे शोभे, इसी माफीक मुनिमंडलमें सिद्धान्तरूपी अश्वपरारूढ हो सूत्रोंका पठन पाठनरूपी वाजित्रके नादसे कर्मरूपी शत्रुवों तथा अन्यमतियों रूपी वादीयोंका पराजय करता शासन की प्रभावना करते हुवे शोभे।

(४) जेसे अनेक हस्तणियोंके वृन्दमें युवक हस्ती अपने अपरिमत प्राक्रमसे अन्य हस्तीयोंको पराजय करता हुवा शोभे। इसी माफीक बहुश्रुति महाराजरूपी गन्ध हस्ती च्यार प्रकारकि बुद्धि और तर्क वितर्क समाधानरूपी परिवारसे स्याद्वादरूपी प्राक्रमसे अन्यवादीयोंरूपी हस्तीयोंका पराजय करता हुवा शासनमें शोभनिक होता है।

(५) जेसे तीक्षण शृंग करके मरूस्थल देशका वृक्षभ अन्य देशोंका वृक्षभोंमें प्राक्रमी और शोभनिय होता है इसी माफक मुनिमंडलमें स्वमत्त परमत्तके ज्ञातारूप शृंग तथा उत्सर्गोपवाद रूपी तीक्षण शृंगोंकर अन्य नास्तिकादि वदीयोंका पराजय करते हूवे चतुर्विध संघका समुहक अन्दर शोभनिक होते हैं।

(६) जेसे तीक्षण दाढोंकरके सिंह महान वनके अदर अन्य पशुवोंमें स्वप्राक्रमसे सर्व वनमें गर्जना करता हुवा कीसीसे भी पराभव नही होते है। इसी माफाक मुनिमंडलमें बहुश्रुतिजी महाराज स्वज्ञान प्राक्रम और नेगमादि सातनयरूपी तीक्षण दाढोंसे सत्य तत्व परूपणारूपी गजना करते हुवे अन्य वादियोंरूपी पशुवोंको पराजय करते हुवे शासनमें अधिक शोभायमान होते हैं।

बादी जीवको अपनि अपेक्षामे नित्य मानते है (२) दुसरे काल बादी जीवकों अपनी आपेक्षा अनित्य मानते हैं (३) तीसरा कालवादी पर की अपेक्षा जीवकों नित्य मानते है (४) चौथा कालवादी परकी अपेक्षा जीवकों अनित्यमानते है इसी माफीक अजीव पुन्य पाप आश्रव संवर निर्जरा बन्ध मोक्ष इन्हो नव पदार्थोंको च्यार च्यार प्रकारसे माननेसे ३६ मत्त कालवादीयोंकि है इसी माफीक स्वभाववादीयोंके ३६ नियत बादीयोंके ३६ पूर्व कर्मवादीयोंके ३६ पुरषार्थ वादीयोंका ३६ सर्व मील्के १८० भेद क्रियवादीयोंके होते है ।

(२) अक्रियाबादी अक्रियावादीयोंके मत्त है कि साधन कार्योंमें क्रियाकि आवश्यक्ता नहीं है । क्रिया तो बालजीवोंको पापका भय और पुन्यकि लालचा देखाके केवल एक तरहका कष्ट ही देना है इन्हीं कष्टसे कोई भी प्रयोजन साधन नहीं होता है वास्ते हमारा मत्त ही श्रेष्ट है कि अक्रियसे ही सिद्धि होती है

इन्हीं अक्रिय वादियोंके भी अनेक मत्त है जैसे ।

मीमांसि मतवालोंकि मान्यता है कि सर्व लोक व्यापत आत्मा एक ही है और अलग २ शरीरमें जैसे हमार पात्रमें पाणी है और एक ही चन्द्रका प्रतिबिंब सब पात्रोंमें देखाई देते है इसी माफीक एक आत्मा अलग २ शरीरमें दीखाई देते है । जब आत्मा (ईश्वर) का एकेक अंस शरीरमें दीखाई देता है वह पुनः इश्वरके रूपमें समा जावेगा तब सुख दुःख रूपी जो पुण्य पाप करे जाते है उसका मुक्ता कोई भी नही रहेगा कारण पाप तथा पुन्य करनेवाला तो इश्वरके रूपमें मील जावेगा । वास्ते कष्ट

(७) जैसे सङ्ग गदा चक्र और सग्रामीक रथ करके अनेक राजा महाराजावोंका मानको मर्दन करता हूवा वासुदेव शोभता है। इसी माफीक मुनिमडलमें बहुश्रुतिजी महाराजा सिद्धांतरूपी रथ जान गदा दर्शनचक्र सयमरूप सङ्ग और निज मतिरूपी भुजावोंसे वादीयोंपर विजय करता हूवा शासनमें शोभनिय होता है।

(८) जैसे अश्व गज रथ चौरासी चौरासी लक्ष तथा छीनवक्रोड पैदल नवनिधान चौदारत्न करके, भुमण्डलके च्यारो दिशाके वादीयोंपर दिगविजय कर लेता है। इसी माफीक मुनिमडलमें बहुश्रुतिजी महाराज द्रव्यानुयोग गणतानुयोग चरणाणुयोग धर्मकथानुयोग रूपी शैन्य चवदा पूर्वरूपी चवदारत्न नव तत्त्व रूपी नवनिधान पच महाव्रतरूपी एगवण नामका गंध हस्तीके शुद्ध ध्यानरूपी दन्ताशुल, शुक्ललेश्या रूपी अवाडी, स्याद्वादरूपी दोनें तर्फ घटाके नाद तथा अठावीस लब्धि रूपी महान् ऋद्धिके परिवारसे जिने-द्राज्ञा रूपी सुदर्शन चक्र और नववाड विशुद्ध ब्रह्मचार्य रूपी स्नहा नक्तरसे सज्ज होके चार गतिके भव भ्रमन रूप जो शत्रु तथा दुनियोंको उलटे रहस्ते लेजाने वाले पाखडी रूपी वादीयोंका पराजयके साथ शासनकि प्रभावना करते हूवे बहुश्रुतिजी महाराज शोभनीय होते है।

(९) जैसे सहस्र चक्षुवाला सौधर्मेन्द्र सामानीकदेव, परषदा-

---

१ सौधर्मेन्द्र पुर्व कतीक सेठके भवमें १००८ गुमास्तोंके साथेम दीक्षा लीथी जिसमे ५०० मुनी इन्द्रके सामानीक देव पणे उत्पन्न हुवे थे वह समान अ दर साथ रहनेसे उन्होंके १००० चक्षु इन्द्र ही के माने जानेसे सहस्र नेत्रोंवाला कहा है।

क्रिया करना निष्फल है इसीसे हयार अक्रिय मत्त ही ठीक है ।

नैयायिक मत्त एक इश्वर ही कों जीव मानते हैं शेष म्रमवन है ।

पचभुत नादियोंका मत्त है कि पचभुतसे ही यह पण्ड (जीवात्मा) बनता है जैसे कि ।

(१) पृथ्वी तत्वसे—हाड हाडकिमीजी दान्तादि ।

(२) अपतत्वसे—लोही (रौद्र) मेदचरबी आदि ।

(३) तेजस तत्वसे—तेजस या जेष्टाराग्नि ।

(४) वायु तत्वसे—श्वासोश्वासादिका लेना ।

(५) आकाश तत्वसे सबकों स्थानका देना ।

इन्ही पाचों तत्वसे पुतला बनता है और यह तत्व अपने अपने रूपमें भी मीलमानेपर पुन्य पाप रूपी सुख दुःखका भुक्त कोई भी नही होगा वास्ते क्रिया, कष्ट सामन्य है और मेरा ही मानना ठीक है ।

क्षणकवादीयोंका मत्त है कि जीवादि सर्व पदार्थ क्षणक्षणमे उत्पन्न होते है और क्षणक्षणमें नष्ट होता है जब सर्व पदार्थ ही क्षणक्षणमें पलटते जाते हैं तो पुन्य पाप कोन करे और कौन भुक्ते वास्ते क्रिया करना कष्ट ही है । इत्यादि ।

अक्रियावादीयोंका ८४ मत्त है ।

(१) कालवादी (२) स्वभाववादी (३) नियतवादी (४) पूर्वकर्मवादी (५) पुरषार्थवादी इन्होंका विस्तार क्रियावादीयों कि माफीक समझना परन्तु यह लोक मौल्तामें क्षणक्षणमें पदार्थका उत्पन और विनास होना मानते है और छटा यद इच्छा (अक्

वेदेव, अनकाकेदेव, अग्रमहेषीदेवागनावों आदिके परिवारसे हाथमे वज्रधारण कीये हुवे दैत्य देवोंके पुरको भागता है। इसी माफीक मुनी मडलमें बहुश्रुतिजी महाराज श्रुतज्ञानरूपी सहस्रचक्षु और जिनाज्ञा रूपी वज्र और क्षात्यादि अनेक उमारावोंके साथ परमतिरूपा दैत्योंका पराजय करनेमें कटीबद्ध हूवे शोभते है।

(१०) जेसे सहस्र कीरणेंस प्रकाश करता हूवा सूर्य अन्ध कारका नाश करते है और जेसे जेसे सूर्य तापक्षेत्रके मध्यभागमें आते वैसे वैसे अपनि तेजका अधिकाधिक प्रकाश जाज्वलामान करते हूवे अपनि लेश्याकों छोडते है। इसी माफीक बहुश्रुतिजी महाराज आत्मशक्ति रूपी कर्णो सहित ज्ञान रूपी सूर्यसे मिथ्यात्व और अज्ञान रूपी अ धकारका नास करते है। जेसे २ ज्ञान पर्यव और सयम श्रेणी परिणाम बडते है वैसे वैसे शत्रु (कर्म) वों पर प्रज्वलन तेज पडते ही शत्रु भस्म समान हो जाते है और प्रसस्थ लेश्याद्वारे पाखडी अधर्म परूपकोंका पराजय करते हूवे शासन प्रभावीक बहुश्रुतिजी महाराज सुशोभायमान होते है।

(११) जेसे गृहगण नक्षत्र तारावोंकि समुहसे पूर्णमासीका चन्द्र शोभनिक होता है इसी माफीक बहुतसे पद्विधर मुनि तथा शिष्य प्रशिष्यके परिवारसे ज्ञान समऋद्धिसे बहुश्रुतिजी महाराज शोभनिय होते है।

(१२) जेसे चौरादिके भय रहित स्थान भडार कोठारादिमें गृहस्थाका धन धान्यादि वादा रहीत शोभनिय होता है इसी माफीक प्रमादादि चौरोंका भय रहीत बहुश्रुतिजी महाराज श्रुत धर्म चरित्र धर्म और क्षात्यादि नाना प्रकारका जो भावसे

स्मात्र) अर्थात् इच्छानुसार पदार्थ होते है एव ६ बादीयों स्वपक्ष जीवोंको अनित्य मानते है और छे बादीयो परपक्ष जीवोंको अनित्य मानते है एव १२ बादीयोंकि जीव मन्यता है इसी माफीक अजीव अश्रव, सवर, निर्जरा, बन्ध, और मौक्ष इस सात तत्वको १२ बादीयों अलग अलग मानते है वास्ते बारह्कों सात गुणा करनेसे ८४ मत होते है अक्रियावादी पुन्य और पापकों नही मानते है शेष ७ तत्वमानते है।

(३) अज्ञानवादी—अज्ञानवादीका मत्त है कि जगतमें अज्ञान है वह ही अच्छा है कारण अज्ञान बालोंको कभी रागद्वेषरूपी सकल्प विकल्प नही होते है ऐसा होनेसे अध्यवशायोंका मलीनपणा भी नहीं होता है वास्ते अज्ञान ही अच्छा है और ज्ञान तो प्रसिद्ध ही कर्मबन्धका हेतु है कारण दुनियोंके अन्दर जो ज्ञानी है उन्होंके सन्मुख कोइ भी अनुचित कार्य करता होगा तो ज्ञानीयोंको अवश्य सकल्प विकल्प होगा देखिये यह कैसा मूर्ख आदमि है कि अनुचित कार्य करता है और भी हिताहितका विचारमें ही आयुष्य पुरण कर देता है अर्थात ज्ञानीयोंका चित्त स्थिर रहेना असभव है और चित्त कि चपलता है वह ही कर्म बन्धका हेतु है यह बाततों नितिकारों भी स्वीकारकरी है कि अज्ञानसे किसी प्रकारका गुन्हा हुवा हो तों इतनी शक्त सज्जा नही होती है और जानके गुन्हा किया हो उन्होंको शक्त सजा होती हैं वास्ते अज्ञान ही अच्छा यह हमारा मनना सुन्दर है।

अज्ञानबादीयोंका ६७ मत्त है।

(१) जीवका सत्यपणा (२) जीवका असत्यपणा (३) जीवका

सत्यासत्यपणा (४) जीवका अवाच्यपणा (५ जीवका सत्यावाच्यपणा (६) जीवका असत्यावाच्यपणा (७) जीवका सत्यासत्यवाच्यपणा। इन्ही सात पदोंमें अज्ञान मौख्य है। जैसे जीवपर ७ बोल है इसी माफीक अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, मोक्ष एव नवतत्त्वको सात सात प्रकारसे माननेसे ६३ मत्त होते हैं और पदार्थको सत्यपणे, असत्यपणे, सत्यासत्यपणे और अवाच्यपणे एव ४ पूर्व ६३में मीला देनेसे ६७ मत्त अज्ञानवादीयोंका होता है।

(४) विनयवादी=विनयवादीयोका मत्त है कि क्रिया हो चाहे अक्रिय हो चाहे अज्ञान हो इन्होंसे कार्य कि सिद्ध नही है। जो कुच्छ कार्यकि सिद्धि होती है वह विनयसे हो होती है। विनयसे माता पिता गुरू देवता और राजादि सर्व विनयसे ही प्रश्न होते है वास्ते विनय ही कारणा शोभा यश कीर्ति मान पूजा भवान्तर मे ऋद्धि प्राप्तीका पूर्ण साधन है इन्ही विनयवादीयोंका ३२ मत्त है। यथा=(१) माताका विनय करना (२) पिताका विनय करना (३) गुरुका विनय करना (४) धर्मका विनय (५) देवका विनय (६) राजाका विनय (७) मूर्खका विनय (८) श्रमणादि वडोंका विनय। एव इन्ही आठोंका मनसे, वचनसे, कायासे, दान सन्मान देनेसे यह च्यारो प्रकारक विनय करनेसे ८×४=३२ प्रकारका विनयवादीयोंका मत्त है।

(१) क्रियावादीयोंका मत्त १८० (२) अज्ञानवादीयोंका मत्त ६७ (३) अक्रियावादीयोंका मत्त ८४ (४) विनयवादीयोंका मत्त ३२

एव छे का देश छेका प्रदेश कुल १८ बोल हुवा। और जो अजीव है वह रुपी अरुपी दो प्रकारसे हैं। जिसमें रुपीके चार भेद हैं। स्कंध, स्कन्धदेश, स्कधप्रदेश और परमाणु। और अरुपी है वह ९ प्रकार है। धर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय देश नहीं किंतु प्रदेश है। एव अधर्मास्तिकायके दो भेद और कालका एक समय एव १८-४-५ सर्व २७ बोल लोकाकाशमें पावे।

(प्र०) अलोककी पृच्छा?

(उ०) अलोकमें जीव नहीं यावत् अजीव प्रदेश नहीं है किन्तु एक अजीव द्रव्य अनत अगरु लघु पर्याय सयुक्त सर्व आकाशसे अनतमें भाग ऊणा (न्यून) अर्थात् अलोकमें केवल आकाश है वह भी सर्व आकाशसे लोकाकाश जितना न्यून है।

(प्र०) हे भगवान्! धर्मास्तिकाय कितना बडा है?

(उ०) लोक जितना अर्थात् जितना लोक हैउसके सर्व स्थानपर धर्मास्तिकाय है एव अधर्मास्तिकाय, लोकाकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय भो समझना।

(प्र०) अधोलोक धर्मास्तिकायको कितने भागमें स्पर्श कियाहै?

(उ०) आधी धर्मास्तिकायको कुछ अधिक।

(प्र०) तिरछा लोक धर्मास्तिकायको कितने भागमें स्पर्श किया है?

(उ०) धर्मास्तिकायका असख्यातमा भाग स्पर्श किया है।

(प्र०) उर्द्धलोक धर्मास्तिकायको कितने भागमें स्पर्श किया है?

(उ०) आधेसे कुछ न्यून स्पर्श किया है।

(प्र०) रत्न प्रभा नारकी धर्मास्तिकायको सख्यातमें भाग

पूर्वोक्त मतवादीयोंने जीवादि नव तत्व माना है इन्होंका खास कारण यह है कि कीसी समयमें जैनेकि अन्दरसे निकल्के अपने अपने मत कल्पना कर अपना अपना मतको स्थापन किया है।

" षट्दर्शन जिन अगभणिजे "

परमयोगीराज महात्मा आनन्दघनजी महाराजके महावाक्यसे सिद्ध होता है कि षट्दर्शन है वह एक अपेक्षासे जैनोंका एकेक अंग है पर तु इन्ही वादीयोंने एकान्त नयकि अपेक्षासे अपने आप सत्य और दुसरोंको असत्य ठेराते है वास्ते इन्ही एकान्त वादीयोंको मिथ्यात्वी केहते है।

श्री वीतराग तीर्थंकर भगवानोंने केवलज्ञान केवलदर्शन द्वारे सर्व लोकालोकके पदार्थोंको हस्तामलकि माफीक देखके भव्य जीवोंकि कल्याणार्थ पदार्थकि परूपणा करी है वह स्याद्वाद अने कान्तवाद सापेक्षपरूपणा करी है उन्होंको सम्यग् प्रकारे बहुश्रुति जी महाराजसे विनयपूर्व श्रवण कर सच श्रद्धना रखनेसे ही इस आरापार संसारका पार होगा। इति शम्।

थोकडा नम्बर ११

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशो ८ वा

(आयुष्य बन्ध)

(प्र०) हे भगवान्। जीव कितने प्रकारके है।

(उ०) जीव तीन प्रकारके है यथा=

(१) बालजीव, प्रथम, दुसरा, तीसरा, और चोथागुण स्थान वर्तता जीव इन्ही च्यार गुणस्थानोंके जीवोंको व्रत अपेक्ष

स्पर्शी है ? असख्यातमें भाग स्पर्शी है। घणा संख्यातमें भाग घणा अस०में भाग तथा सर्वधर्मास्तिको स्पर्शी हैं।

(उ०) केवल दूजे भागे धर्मास्तिकायके अस०में भाग स्पर्श किया है एव घनोदधि, घन वायु, तन वायु और अवकाशातर स० में भाग स्पर्शी है एव यावत् सातमी नरक समझना और इसी तरह जम्बू द्वीपादि द्वीप, लवण समुद्रादि समुद्र, सौधर्मादि कल्प वैमान यावत् इसत् पभारा पृथ्वी तक सर्व धर्मास्तिकायके अस०में भाग स्पर्श किया है। शेष नहीं।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्।

थोकडा नं० १४

श्री भगवती सूत्र श० ८ उ० २

(आसी विष)

हे भगवान्! आसी विष कितने प्रकारका है ? आसी विष दो प्रकारके हैं। एक जाति आसीविष दूसरा कर्म आसीविष जिसमें जाति आसीविष योनीमें स्वाभावसे ही होता है जिनके चार भेद हैं (१) विच्छू (२) मंडूक (३) सर्प (४) मनुष्य

विच्छू आसीविषका कितना जहर होता है ? यथा कोई पुरुष अर्द्धभरत प्रमाण (२३८ योजन ३ कला) शरीर बनाके सोता हो उसको वह विच्छू काटे तो सारे शरीरमें जहर व्याप्त होजाय इतना जहर विच्छूमें होता है परन्तु ऐसा न कभी हुवा न होता है न होगा मगर केवलीयोंने अपने केवलज्ञानसे देखा वैसा फरमाया है इसी माफक मेंडक भी समझना परन्तु विष

बाल काहा है कारणके च्यार गुणस्थाने मत नहीं होता है। वास्ते एकान्त बाल भी कहते है ।

(२) पंडित जीव छटेसे चौदहवा गुणस्थानक यह नव गुणस्थानके जीव सर्व व्रती है वास्ते इन्होंको एकान्त पडित कहते है ।

(३) बालपडित जीव-पाचवे गुणस्थान जो व्रतावती (श्रावक) है इन्होंको बालपडित, कहते है ।

(प्र०) हे भगवान्। एकान्त बालजीव आयुष्य कीस गतिका बधते है।

(उ०) एकान्त बालजीव, नरक, तीर्यच, मनुष्य देव इन्ह च्यारोंगतिका आयुष्य बन्धता है परन्तु इतना विशेष है कि चोथे गुणस्थान वृति नारकी देवता तों मनुष्यका आयुष्य और तीर्यच, मनुष्य, वैमानी देवका आयुष्य बान्धता है ।

(प्र०) एकान्त पडित जीव आयुष्य काहाका बधता है ।

(उ०) एकान्त पडित जीव स्यात् आयुष्य बान्धे स्यात् नहीं भि बान्धे क्योंकि एकान्त पडित जीव कर्म क्षयकर मोक्ष भि जाता है वास्ते अयुष्य नहीं भी बान्धे । अगर बधे तों केवल वैमानिक, देवोका ही आयुष्य बान्धे ।

(प्रश्न) बाल पडित जीव=आयुष्यकहाका बन्धे ?

(उ०) बालपडित (श्रावक) वैमानिक देवतावोंका ही आयुष्य बन्धता है और जो जीव जीस गतिका आयुष्य बाधता है वह जीव उसी गतिमें उत्पन्न होता है यह सर्वत्र समझना ।

(प्रश्न) हे भगवान् वीर्य कितने प्रकारका है ?

सम्पूर्ण भरत प्रमाणे कहना एव सर्प परन्तु विष जंबूद्वीप प्रमाणे और मनुष्यमें अढ़ाईद्वीप (मनुष्य लोक) प्रमाणे विष कहना।

कर्म आसीविष तपश्चर्यादिसे, जिसको आसीविष लब्धी उत्पन्न होती है उसकी एच्छा।

हे भगवान ! कर्म आसीविष क्या नारकीको होता है। तिर्यंच, मनुष्य देवताओंको भी होता है ? नारकीमें नहीं होता किंतु तिर्यंच, मनुष्य, देवताओंमें होता है जिसमें तिर्यंचमें केवल सज्ञी पचेंद्री पर्याप्ताको होता है और मनुष्यमें सज्ञी पचेंद्री सख्याते वर्ष आयुषवालोंको होता है। देवताओंमें लब्धी आसाविष नहीं है परन्तु मनुष्य, तिर्यचमें आसी विष लब्धी उत्पन्न होती है और वह तिर्यंच लब्धी सहित मृत्यु पाके देवतामें उत्पन्न होता है ,वहा पर अपर्याप्ती अवस्थामें पूर्व भवापेक्षा कर्म आसी विष कहा जाता है वे भुवनपती, व्यन्तर, ज्योतिषी यावत् आठवें देवलोक तक देवतापने होते है कारण तीर्यचकी गती आठवें देवलोक तक है। इति।

इस विषयको ज्ञानीयोंने जाना है परतु छदमस्त नहीं देखते। दश बोल छदमस्त नहीं जानते यथा धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीर रहित जीव, परमाणु, पुद्गल, शब्दके पुद्गल, गधके पुद्गल और वायु काय यह जीव जिन होगा या न होगा यह जीव मोक्ष जावेगा या न जावेगा। इति १० बोल केवली देखे।

सेव सेव भंते तमेव सचम्।

(उ०) वीर्य दोय प्रकारका है (१) सकरण वीर्य जो कि उस्थानादि कर्म कीया जाय, उनोसे योगोंका व्यापार कि प्रवृति होती है (२) अकरण वीर्य जो कि आत्माका निजगुण प्रगट हो उस्थानादि अपेक्षा रहीत होता है। यहांपर जो प्रश्न करते है वह सकरण वीर्यकि अपेक्षासे ही करते है।

(प्र०) हे भगवान् ! जीव सवीर्य है या अवीर्य है ?

(उ०) जीव सवीर्य तथा अवीर्य दोनों प्रकारके है ?

(प्र०) हे करुणासिंधु। इसका क्या कारण है।

(उ०) जीव दोय प्रकारक है (१) सिद्ध (२) संसारी जिसमे सिद्ध है सो तो कारण वीर्य अपेक्षा अवीर्य है क्युकि उन्होंको तो उस्थानादि योग व्यापार क्रिया है ही नही। और संसारी जीवोंके दोय भेद है। (१) सलेश प्रतिपन्न चौदह वा अयोग गुणस्थान व ले जीव अवी य है (२) असलेश प्रतिपन्न प्रथमसे तेरहवा गुणस्थानक जीव सवीर्य है इसमें भी प्रथम दुसरा और चौथा गुणस्थान परभव गमन समय होते है उसमें जो विग्रह गति करते है इतो समय लब्धिवीर्य अपेक्षा सवीर्य है और करण वीर्य अपेक्षा अवीर्य है।

(प्र) हे भगवान्। नारकी क्या सवीर्य है या अवीर्य है।

(उ) सवीर्य है पर तु परभव गमनापेक्षा लब्धिवीर्य अपेक्षा सवीर्य और करणवीर्य अपेक्षा अवीर्य है शेष समय सवीर्य है एवं मनुष्य वर्जके शेष २३ दंडक माफक ही समझना। मनुष्यका दंडक समुचय सूत्रकि माफिक समझना, भावना पूर्ववत् समझना।

इति। सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्।

थोकड़ा नं० १९
श्री भगवती सूत्र श० ३ उ० ३
(४९ चौभंगी)

(प्र०) हे भगवान अनगार, भवितात्मा, अवधिज्ञान, संयुक्त, अपने ध्यानमें खड़ा है वहांसे एक देवता, वैक्रय, समुदघात, कर वैमानमें बैठके जा रहा था उस वैमान सहित देवताको वह भावित आत्मा मुनि जानता है।

(उ) वह मुनि उस देवता और वैमानको चार प्रकारसे देख शक्ता है यथा—

(१) देवताको देखे किन्तु वैमानको न देखे
(२) देवताको न देखे किन्तु वैमानको देखे
(३) देवताको देखे और वैमानको भी देखे
(४) देवताको भी न देखे और वैमानको भी न देखे

कारन अवधिज्ञान विचित्र प्रकारका होता है एव देवी वैमानके साथ एव देवी देवता वैमानके साथ ३

(प्र) भवितात्माका धणी (अवधिज्ञानवान) एक वृक्ष है उसके अन्दरका सत्व जाने या बाहिरकी त्वचा जाने?

(१) अन्दरसे जाने बाहिरसे न जाने
(२) अन्दरसे न जाने बाहिरसे जाने
(३) अन्दरसे जाने बाहिरसे भी जाने
(४) अन्दरसे नहीं जाने बाहिरसे भी नहीं जाने

कारन अवधिज्ञानके असंख्याते भेद होते हैं इसके लिये टदी सूत्रमें

थोकडा नं० १२

श्री भगवती सूत्र श० १ उद्देशो ९.

(अगर लघु)

(प्र०) हे भगवान्। जीव भारी (कर्मकरके) किस कारनसे होता है ?

(उ०) प्राणातिपात (जीवहिंसा) मृषावाद (झुठ बोलना) अदत्ता दान (चोरी) मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान (झूठा कलंक) पैशुन (चुगली) रति, अरति, पर परिवाद, माया मृषावाद, और मिथ्यात्व शल्य इन अठारह पापस्थानसे जीव भारी होता है।

(प्र०) हे भगवान्। जीव हलका कीस कारनसे होता है ?

(उ०) पूर्वोक्त अठारह पापस्थानका निर्गमण (निवृत्ति) करनेसे जीव कर्मसे हलका होता है।

(प्र०) हे भगवान्! जीव ससारकी वृद्धि किससे करता है ?

(उ०) अठारह पापस्थानके सेवन करनेसे

(प्र०) हे भगवान! ससारका परत जीव किससे करता है ?

(उ०) अठारह पापस्थानसे निवृति होनेसे

(प्र०) दीर्घ ससार किससे करता है ?

(उ०) अठारह पापस्थानके सेवन करनेसे

(प्र०) अल्प ससार किससे करता है ?

(उ०) अठारह पापस्थानसे निवृत्त होनेसे

(प्र०) ससारमें परिभ्रमण किससे करता है ?

(उ०) अठारह पापस्थानके

कहा है कि सबन्धवाले पदार्थको भी जाने असबन्धवाले पदार्थको भी जानते हैं।

वृक्षके १० अग होते हैं मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, साखा परवाल, पत्र, पुष्प, फल, बीज इसके सयोगसे चौभगी लिखी जाती है।

(१) वृक्षका मूल जाने कन्द न जाने
(२) ,, मूल न जाने कन्दको जाने
(३) ,, मूल जाने कन्द भी जाने
(४) ,, मूल न जाने कन्द भी न जाने

इस माफक मूल और स्कन्ध ७ मूल–त्वचा (८) मूल साखा ९ मूल परवाल १० मूल पत्र ११ मूल पुष्प १२ मूल फल १३ मूल बीज १४ कन्दस्कन्द १५ कन्द त्वचा १६ कन्द साखा १७ कन्द परवाल १८ कन्द पत्र १९ कन्द पुष्प २० कन्द फल २१ कन्द बीज २२ स्कन्ध त्वचा २३ स्कन्ध साखा २४ स्कन्ध परवाल २५ स्कन्धपत्र २६ स्कन्ध पुष्प २७ स्कन्ध फल २८ स्कन्ध बीज २९ त्वचा साखा ३० त्वचा परवाल ३१ त्वाचा पत्र ३२ त्वचा पुष्प ३३ त्वचा फल ३४ त्वचा बीज ३५ साखा परवाल ३६ साखा पत्र ३७ साखा पुष्प ३८ साखा फल ३९ साखा बीज ४० परवाल पत्र ४१ परवाल पुष्प ४२ परवाल फल ४३ परवाल बीज ४४ पत्र पुष्प ४५ पत्र फल ४६ पत्र बीज ४७ पुष्प फल ४८ पुष्प बीज ४९ फल बीज एव ४९ चौभगी।

ऊपर बताई हुई चौभगीके माफक ४९ चौभगी उपयोगसे लगा लेना। **सेव भते सेव भते तमेव सच्चम्॥**

(प्र०) ससारसे कैसे तरता है ?

(उ०) अठारह पापस्थानसे निवृत्त होनेसे

अगरुलघुके ४ भांगे ।

(१) गरु=पत्थरादि
(२) लघु=धूमादि
(३) गुरुलघु=वायु आदि
(४) अगरु लघु=आकाशादि

निश्चय नयकी अपेक्षा सबसे हलका और सबसे भारी द्रव्य नहीं हो सकता कारन जो अरुपी और चार स्पर्शवाले द्रव्य हैं वे अगरुलघु, होते हैं और शेष आठ स्पर्शवाले रुपी द्रव्य, गुरुलघु, होते हैं। परतु व्यवहार नयकी अपेक्षा पूर्ववत् गुरु, लघु, गुरुलघु, अगरुलघु, ये चार भागे बन सकते हैं इस लिये यहा व्यवहार नयकी अपेक्षासे कहते हैं ।

(प्र०) हे भगवान् ! सातमी नरकका आकाशान्तरमें गुरु, लघु आदि चार भागोंमेंसे कौनसे भागेमें है ?

(उ)० केवल एक अगरुलघु भागा है शेष तीन भागे नहीं ।

(प्र)० सातमी नारकीके तन वायुकी पृच्छा ?

(उ)० गुरुलघु है शेष तीन भागे नहीं । एव घन वायु, घनोदधि, और पृथ्वी पिंड भी समझना । यह पाच बोल सातमि नारकीके कहे हैं । इसी तरह सातो नारकीके ५-५ बोल लगा नेसे ३५ बोल हुवे। जिसमें सात आकाशांतरमें चोथा भागा । शेष २८ बोलोंमें तीसरा भागा एव असख्यात द्वीप और अस-ख्याता समुद्रमें भी तीसा भागा समझना ।

नरकादि १४ दडकके जीव और कार्मण शरीरकी अपेक्षा चौथा भागा समझना। शेष अपने ३ शरीरापेक्षा तीसरा भागा पावे ।

थोकडानाबद १६

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशो ३

(कांक्षा मोहनिय)

(प्र०) हे भगवान् ! श्रमण निग्रंथ (साधु) भि कांक्षा मोहनिय कर्मको वेदते है अर्थात् जिन वचनोंमें शंका कांक्षा करते है ?

(उ०) हे गोतम। कभी कभी साधु भी कांक्षामोहनिवेदते है।

(प्र०) हे दयाल। क्या कारण है तो साधु भि कांक्षामोह निवेदे।

उ०) हे गौतम। सर्वज्ञ प्रणित शास्त्र अति गभिर स्याद्वाद उत्सर्गोपवाद सामान्य विशेष गौणमौख्य नय निक्षेप प्रमाणकर, अने न्त वाद है कीसी पदार्थका कीसी सबंधसे एक स्थ नपर सामान्य विवरण कीया है, उसी पदार्थका कीसी सबन्ध पर विशेष व्याख्यान किया हों जिसमे भि नयज्ञानकी गति बडी ही दुगम्य है कि साधारण मुनियोंको गुरुगम्य विनों समझमें आना मुशकिल होजाता है। जब एक ही पदार्थका भिन्न स्थलों पर भिन्न भिन्न अधिकार देखके साधुवोंको भी शंका उत्पन्न हो जाती है तब वह कांक्षा मोहनियको वेदने लग जाते है कि यह बात कीस तरह होगा। इत्यादि। इसीका संक्षपसे यहा पर, उलेख किया जाता है।

(१) ज्ञान विषय शंका। ज्ञान पांच प्रकारके है जिस्में, अवधिज्ञान तीसरे नम्बरमें है वह जघन्य अगुलके असंख्यात भाग और उत्कृष्ट सम्पुरण लोकके रूपी पदार्थोके जानते है और चोथा

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति और जीवास्ति-कायमें चौथो भागो, पुद्गलास्तिकायमें परमाणुसे सुक्ष्म अनंतप्रदेशी चौस्पर्शी स्कन्द और कालके समयमें चौथा भागा। शेषमें तीजा भागा।

आठ कर्म, छे भाव लेश्या, तीन दृष्टि चार दर्शन, पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, चार सज्ञा, कार्मण शरीर, मन वचनके योग, साकार, अनाकार उपयोग, भूत, भविष्य, वर्तमान काल इन ४१ बोलोंमें चौथा भागा पावे।

छे द्रव्य लेश्या, कार्मण शरीर वर्जके चार शरीर और कायके योग्य इन ११ बोलोंमें भागा तीजा पावे और सर्व द्रव्य, सर्व प्रदेश, सर्व पर्यायमें स्यात् तीजा स्यात् चौथा भागा पावे। भावार्थ—जहा अरूपी तथा रूपीमें च्यार स्पर्शवाले बोलोंमें 'अगुरुलघु' भागा है और रूपी अठ स्पर्शवाले बोलोंमें 'गुरु लघु' भागा समझना। इति।

(प्र०) आधा कर्मी आहारादि भोगवनेसे साधु क्या करे। क्या बाधे क्या चिणे इत्यादि ?

(उ०) आधा कर्मी भोगनेवाला सात कर्म स्थिल बाधा हो तो मजबूत जोरसे घन बान्धे। अल्प कालकी स्थितिको दीर्घकालकी स्थिति करे, अल्प प्रदेश हो तो बहुत प्रदेश करे। मद रसवाला हो तो तीव्र रसवाला करे। आयुष्य कर्म स्यात् बान्धे स्यात् न बाधे परतु असाता वेदनी वारवार बांधे। जिस ससारका आदि और अत नहीं उसमें वारवार परिभ्रमन करे।

नम्बरमें मन पयव है वह केवल अढाइद्विप दोय समुद्रमें रहे हुवे सज्ञी पाचेन्द्रियके मनोगत भावको ही जानता है। यहापर शका उत्पन्न होती है कि जब सम्पुर्ण लोकके रूपी पदार्थोको अविधि ज्ञान जानता है तो मनोद्रव्य भी रूपी है उसको भी अवधिज्ञान- वाला जानशक्ता है तो फीर मन पयव ज्ञानको अलग कहनेका क्या कारण है। अल्पज्ञ मुनि एसी शका वेदते है। इसी माफीक सर्व स्थानपर समझना।

समाधान-अवधिज्ञान और मन पर्यवज्ञान दोनोंका स्वभाव स्वामि और विषय भिन्न भिन्न है। मन पर्यवज्ञानका स्वभाव केवल मनपणे प्रणम्य पुद्गलोंको ही देखनेका है स्वामि अप्रमतमुनि है विषय अढाइ द्विपकि है और भि इसका महात्व है कि किसी दर्शन कि सहित्य नही है आप स्वतत्र अधिकारी है। अवधिज्ञान का स्वभाव रूपी द्रव्य देखनेका है। स्वामि च्यारों गतिके जीव है विषय जघन्य अगुलके असख्यते भाग उत्कृष्ट सम्पुर्ण लोकको देखे परन्तु अवधिज्ञानके साथ अवधिदर्शन कि पूर्ण साहित्य है। वास्ते मन पर्यवज्ञान अलग है और अवधिज्ञान अलग है।

(२) दर्शन विषय शका-क्षोपशमसमकित सामान्यतामे उदयप्रकृतिका क्षय और अनोदय प्रकृतीयोंका उपशमाना होता है और औपशम समकित जो सर्व प्रकृतियोंका उपशम करता है। एसा होनेपर भी क्षोपशम असख्याते वार आति है और उपशम पाचवारसे अधिक नही आति हैं। यह शका उत्पन्न होती है।

समाधान-क्षोपशम समकित, जो अनोदय उपशम है वह विपाकों उपशम है परतु प्रदेशो मिथ्यात्व रहता है और

(प्र०) आधा कर्मीमें आपने इतना जबरदस्त पाप बताया इसका क्या कारण है ?

(उ०) आधा कर्मी भोगता हुवा आत्मीक धर्मका उल्घन करता है। कारन पहिले प्रतज्ञा करी थी कि मैं आधा कर्मी आहार न करूगा। और जो आधा कर्मी आहारादि भोगनेवाला है वह पृथ्वी काय यावत त्रस कायकी दयाको छोड देता है। और जिस जीवोंके शरीरसे आहार बना है उन जीवोंका भी उसने जीवित नहीं इच्छा इस वास्ते वह ससारमें परिभ्रमन करता है।

(प्र०) जो साधु फासुक एसणीय (निर्वद्य) आहार करे उसको क्या फल होता है ?

(उ०) पूर्वसे विप्रीत अच्छा फल होता है। यावत् शीघ्र ससारको पार करता है। कारन वह अपनी प्रतिज्ञाका पालन करता है। जीवोंका जीवित चाहता है इस लिये ससारको शीघ्र पार करता है।

सेव भते सेव भते तमेव सचम् ।

थोकड़ा न० १२

श्री भगवती सुत्र श० ७ उ० १०

(अस्तिकाय)

(प्र०) हे भगवान्! अस्तिकाय कितने प्रकारकी है ?

(उ०) अस्तिकाय पाच प्रकारकी है। यथा धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय।

(६) प्रवचनिक विषय शका-प्रवचन भणे तथा जाने उसको प्रवचनीक कहते है । तथा बहुश्रुतियोंको प्रवचनिक कहते है, वह एक दुसरोंकि कल्प क्रिया प्रवृतिमें भिन्नता देखनेसे शका होती है कि दोनों गीतार्थ होनेपर यह तफावत क्यो होना चाहिये ।

समाधान-चारित्र मोहनियके यथा क्षोपेशम उत्सर्गोपवाद समयकारकि अपेक्षा तथा छदमस्तपणके कारण प्रवचनिकों कि प्रवृतिमें भिन्नता दीखाइ दे तों भी असद्र आचरण हो वह स्वीकार करने योग होती है ।

(७) कल्प विषय शका=जिनकल्पी मुनि नग्न रेहते है और बिल्कुल निवृति मार्गमें अनेक प्रकारके कष्ट सहन करते हुवे को भी मोक्ष (केवल्ज्ञान) नहीं होता है और स्थिवर कल्पी वस्त्रपात्रादि रखते हुवेकों तथा स्वल्प कष्टसे भि केवलज्ञान कि प्राप्ती बतलाई इसका क्या करण होगा ।

समाधान-कल्प है वह व्यवहारमें मोक्षसाधक निमत्त है परन्तु निश्चयमें कष्टक्रिया साधनभूत नहीं है मोक्ष मार्गमें आत्माध्यवसाय ही साधनभूत है अगर कष्टहीका साधन माना जावे तों बहुतसे मुनि कष्ट करने पर भी केवल्ज्ञान नहीं पाये और कितनेके बिनों कष्ट हीसे केवल्ज्ञान प्राप्त कर लिया है वास्ते कल्प है सो व्यवहार है तथा जिन कल्प उत्सर्ग मार्ग है और स्थिवर कल्प है वह अपवाद मार्ग है तथा मोक्ष होना वह परिणाम विशेष है ।

(८) मार्ग विषय शका=मार्ग-पुरुष परम्परासे चला आया हो मार्ग जिस्मे एकाचार्य कि समाचारिमें आवश्यकादि

धर्मास्तिकाय अवर्ण, अगन्ध, अरस, अस्पर्श, अरुपी, अजीव, सास्वत, अवस्थित, लोकद्रव्य=सम्पूर्ण लोक व्यापक है। जिसका संक्षेपसे पाच भेद है। यथा—(१) द्रव्यसे एक द्रव्य (२) क्षेत्रसे लोक प्रमाण (३) कालसे अनादि अनन्त (४) भवसे वर्णादि रहित (५) गुणसे चलण गुण पानीमें मच्छीका दृष्टान्त। एव अधर्मास्तिकाय परतु गुणसे स्थिर गुण वृक्षपन्थीका दृष्टान्त। एव आकाशास्तिकाय परतु क्षेत्रसे लोकालोक प्रमाण, गुणसे आकासमें विकाम गुण पानीमें पतासेका दृष्टान्त एव जीवास्तिकाय परतु द्रव्यसे अनन्ता द्रव्य, क्षेत्रसे लोक प्रमाण, गुणसे उपयोग गुण चद्रकी कलाका दृष्टान्त एव पुद्गलास्तिकाय परतु वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श सहित, द्रव्यसे अनन्ता द्रव्य भावसे वर्णादि सहित गुणसे गलण मिलन बादलका दृष्टान्त।

(प्र०) धर्मास्ति कायके एक प्रदेशको धर्मास्ति काय कहना?

(उ०) नहीं कहना

(प्र०) क्या कारन?

(उ०) जैसे खडित चक्रको सम्पूर्ण चक्र नहीं कह सक्ने ऐसे ही छत्र चामर, दड वस्त्रादि खण्डतको सम्पूर्ण नहीं कहते वैसे ही धर्मास्तिकायके दोय प्रदेश तीन च्यार यावत् असख्याते प्रदेश और एक प्रदेश न्युनको धर्मास्तिकाय नहीं कहते

(प्र०) हे भगवान् तो किसको धर्मास्तिकाय कहना

(उ०) धर्मास्तिकाय असख्यात प्रदेश वहुभी सर्व लोक व्यापक हो उसीको धर्मास्ति काय कहना एव ५

समाचारीमें दोय चैत्यवन्दन और अनेक काउत्सर्ग करते है। जब दुसरे आचार्य उन्होंसे कुच्छ न्यूनाधिक करत है इसीसे, शका होती है कि जब दोनों आचार्य पुरुष परम्परा कहते है तो क्या तीर्थंकरोंकि शासनमें भि एसी भिन्न भिन्न समाचारीयों थी।

समाधान–सब आचार्योंकि समाचारी जिनाज्ञा विरुद्ध नही है इसी माफीक सब समाचारी जिनाज्ञा सयुक्त भि नही है और तीर्थंकरोंके शासनमें एसे भिन्न भिन्न समाचारीयों भी नहीं थी। प्रश्न यह रहा कि कोनसी समाचारीको सत्य मानना ? जो समाचारी आगमप्रमाणसे अबाधित हे। तथा देशकालसे उत्पन्न हुई है। जिन्होंके उत्पादक नि स्पृही असट्ट हों वाही समाचारी आचरण करने योग है।

(९) मत्त विषयशका–एकहि तीर्थंकरोंके आगम माननेवालोंके अलग अलग अभिप्राय, जेसे सिद्धसेन दिवाकराचार्यका मत्त है कि केवलीकों केवल ज्ञान और केवल दर्शन युगपात् समय उत्पन्न होता है क्युकि बारहवें गुणस्थान ज्ञानावर्णिय और दर्शनावर्णिय कर्मोंका क्षययुगपात् समय होना शास्त्रकारोंने कहा है अगर एसा न माना जावे तों केवलीकों ज्ञानावर्णिय कर्मका क्षय होना ही निर्थक होगा। और जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण कहते है कि केवलीकों ज्ञान और दर्शन भिन्न समय होता है। क्याकि जीवका स्वभाव ही एसा है तथा केवल ज्ञान होता है वह साकार उपयोगमे होता है। जेसे मति ज्ञान श्रुतिज्ञान यह दोनों सहचारी है तथपि क्रम सर होता है। इसी माफीक केवल

यह दो मत्त देख शका होती है।

आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकायको प्रदेश पृच्छामें प्रदेश अनन्त तककी पृच्छा करना, यह निश्चयापेक्ष है वास्ते सम्पुर्ण वस्तुको ही वस्तु कहना चाहिये।

(प्र०) हे भगवान्! जीव उत्थान, कम्म, बल, वीर्य पुरुषाकार करके आत्मा भाव (उठना, बैठना, हरना, चलना, भोजन करना इत्यादि) जीवको दर्शावे अर्थात् उत्थानादि कर जीवको कृत क्रियामें प्रवृत्ति करावे।

(उ०) हा उत्थानादि सहित जीव आत्मा भाव जीवको प्रवृतावे।

(प्र०) क्या कारन है?

(उ०) जीव है वह अनन्ते मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, केवलज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतिअज्ञान, विभ ग ज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन और केवल दर्शन इन १२ उपयोगोंके प्रत्येक अनन्ता अनन्ता पर्यव है यह जीवका गुण है उसके जारिये जीव उत्थानादि कर जीव भाव दर्शाता हुवा क्रियामें प्रवृति करावे।

(प्र०) आकाश कितने प्रकारका है?

(उ०) आकाश दो प्रकारका है (१) लोकाकाश (२) अलो काकाश।

(प्र०) लोकाकाशमें क्या जीव है, जीवके देश है। जीवके प्रदेश हैं। अजीव है अजीवके देश है, अजीवके प्रदेश है?

(उ०) जीव है यावत् अजीवके प्रदेश हैं। एव ६ बोल है। जिसमें जीव है सो एकेन्द्रियसे यावत् पचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय है।

समाधान—सिद्धसेन दिवाकर वीरात पाचमि शताब्दीमें हुवे है और जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण वीरात् दशवी शताब्दीमें हुवे है वास्ते आचार्योंका क्षोपशम जुदा जुदा है परन्तु राग द्वेषको क्षय किये हुवे तीर्थंकरोंका मत एक ही होता है केवलज्ञान केवल दर्शन युगपात् समय होना यह भी शास्त्रकारोंका मत्त है परन्तु इसमें कोनसा नयकी अपेक्षा है तथा केवलज्ञान दर्शन भिन्न समय यह भी शास्त्रकारोंका मत्त है ? "यत् ज समय जाणइ नो त समय पासइ " इसमे कोनसी नयकी अपेक्षा है उसी अपेक्षाको समझाना गीतार्थ बहु श्रुतिमी महाराजका काम है इस विषयमें प्रज्ञापना सूत्र पासणिय पदमें खुलासा अच्छा है वहासे देखना चाहिये ।

(१०) भगा विषय शंका—हिंसा और अहिंसाका शास्त्रकारोंने च्यार भागा बतलाया है यथा—

(१) द्रव्यसे हिंसा और भावसे अहिंसा ।

(२) भावसे हिंसा और द्रव्यसे अहिंसा

(३) द्रव्यसे अहिंसा और भावसे भि अहिंसा

(४) द्रव्यसे हिंसा और भावसे भि हिंसा

प्रथम और दुसरे भागोंमें शंका उत्पन्न होती है ।

समाधान—(१) जो मुनि इर्या समितिसे यत्ना पूर्वक चलतों अगर कोई जीव मर भी जावे तों द्रव्यहिंसा है परन्तु परिणाम शुद्ध होनेसे भावसे हिंसा नहीं है । (२) जो मुनि अनोपयोगसे चलतों जीव नहीं मरे तो भि द्रव्यसे अहिंसा है । परन्तु जिना ज्ञाका अनादर और उपयोग सुन्य अयत्ना होनेसे भावसे हिंसा हीका भागी है शेषदोय भाग सुगम् है)

(११) नय विषय शका–द्रव्यास्तिक नयके मतसे सर्व वस्तु सास्वती है और पर्यायास्तिक नयके मतसे सर्व वस्तु असास्वती है। यह एक वस्तुमें विरुद्ध धर्म क्यो होना चाहिये । तथा सिद्धसेन दिवाकर तीन नयकों द्रव्यास्ति और च्यार नयकों पर्यायास्तिक मानते है और जिनभद्रगणी क्षमा-श्रमण, च्यार नय द्रव्यास्तिक और तीन नय पर्यायस्तिक माने है यह शका=

समाधान–नयका मानणा ठीक है क्युकि वस्तुमें अनेक धर्म है वह ज्ञान नय द्वारा हि होता है । नयका मुख्य दो भेद है (१) द्रव्यास्तिक (२) पर्यायास्तिक, द्रव्यास्तिक नय द्रव्यको ग्रहणकर वस्तुकों सास्वती मानते है कारण कि द्रव्यका तीन काल्में नाश नहीं होता है। और पर्यायास्तिक नय वस्तुकी पर्यायकों ग्रहन करते है और पयायिका धर्म ही पलटन है वास्ते असास्वता माना है । इसीमें कोई प्रकारका विरूद्ध नहीं है । तथा सिद्धसेन दिवाकर रूजो सुत्र नयकों पर्यायास्तिक मानते है क्यु कि चोथी नय वर्तमान परिणामग्रही हें और जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण चोथी नयकों द्रव्यास्तिक मानते हें वह शुद्धोपयोग रहित होनासे वास्ते इसमें कोई तेरेहका तफावत नहीं है ।

(१२) नियम विषय शका । नियम (अभिग्रह) जैसे सर्व व्रतरूप सामायिक अर्थात् सर्वथा सावद्य योगोंका प्रत्याख्यान कर लेनेपर भी पोरसी आदिके पच्चखाण क्यो कीया जाता है ।

समाधान–सर्व सावद्य योगोका प्रत्यख्यान करनेसे जीवोंकों सवर गुणकि प्राप्ती होती है परन्तु प्रत्यख्यान तो इच्छाका निरूद्ध करना प्रमाद नाशक और अप्रमाद

वष यह पाचवा गमा हुवा ।

(६) " जघन्यसे उत्कृष्ट " ज० दो भव० प्रत्यक्ष मास और एक सागरोपम उत्कृष्ट आठ भव करे तो च्यार प्रत्यक्ष मास और च्यार सागरोपम यह छठा गमा हुवा ।

(७) " उत्कृष्टसे ओघ " ज० दो भव० क्रोडपूर्व और दश हजार वर्ष उ० च्यार क्रोड पूर्व च्यार सागरोपम यह सातवा गमा हुवा ।

(८) " उत्कृष्टसे जघन्य " ज० दो भव० पूर्वक्रोड और दश हजार उ० च्यार क्रोड पूर्व और चालीस हजार वर्ष यह आठवा गमा हुवा ।

(९) " उत्कृष्टसे उत्कृष्ट " ज० दोभव० क्रोड पूर्व और एक सागरोपम० उ० च्यार पूर्वक्रोड और च्यार सागरोपम यह नौवा गमा हुवा ।

कमसे कम प्रत्यक्ष मासका और ज्यादः पूर्वक्रोडवाला मनुष्य रत्नप्रभा नरकमे जा सक्ता है वह नरकमे जघन्य दश हजार वर्ष उ० एक सागरोपम आयुष्य पाता है तथा मनुष्य और रत्नप्रभा नरकके लगेतार भव करे तो जघन्य दोय भव उत्कृष्ट आठ भव, जिस्मे च्यार मनुष्यका और च्यार नारकीका इसका नव गमा होता है। कालमान उपर नवगमामें लिखा है। इसी माफीक सर्व स्थानपर समझना ।

(२) ऋद्धिद्वार—जेसे यहासे मनुष्य मरके नरक जाता है जिसपर २० द्वार बतलाया जाता है यथा ।

जो कर्म दलक वेदके निरस कर आत्म प्रदेशोंसे छोडते है उसको शास्त्रकारोंने " निर्जरा " कहा है इसका भी पुर्ववत ७५ अलापक होता है । एव ३२५ और पूर्वके २०० मीलानेसे ५२५ अलापक हुवे ।

(प्र०) हे भगवान् । जीव काक्षामोहनिय कर्म वेदे ?

(उ०) हां गौतम । जीव काक्षामोहनिय कर्म वेदता है ।

(प्र०) हे करूणासिन्धु । कीस कारणसे वेदता है ।

(उ०) हे वत्स । एकेक कारण जेसे कुशास्त्रका श्रवण मिथ्यात्वी लोकोंका अधिक परिचय करनेसे अध्यवसायोंका मलीनता होना कारण आत्मा निमत्त वासी है जेसा जेसा निमत्त मील्ता है जेसी जेसी जीवाकि प्रवृति होती है खराब प्रवृति होनेसे जीवकों

(१) शाक्षा–स्वतीर्थीयोंकि वचनमे शाका का होना ।

(२) काक्षा–पर दर्शनीयोंके आडबर चमत्कार देख वच्छा ।

(३) वितृगीच्छा–धर्म करणीके फलमें शसय होना ।

(४) भेद समावना–वस्तु विचारमें मतिका भेद होना ।

(५) कुलस समावना–सत्य वस्तुमें विप्रीत दृष्टीका होना ।

इस वातोंसे जीव काक्षा मोहनिय कर्म वेदता है ।

(प्र०) हे प्रभो ! कीसी जीवोंकि ज्ञानवरणियोदय इतना ज्ञान नहीं है कि तत्व वस्तुका पूर्ण निर्णय कर सके । इतना पुरुषार्थ न हो, आजीवका निमित्तसे इतना समय न मीले । आयुष्य समय नजीक आगया हो इत्यादि परन्तु दर्शन मोहनियका क्षोपशम होनेपर वह जीव कहता है कि 'तमेव सच्च' जो सर्वज्ञ

तीन पल्योपम, वहापर ज० पल्योपमके आठमे भाग, उ० एक पल्योपम लक्षवर्ष साधिक, सौधर्म देवलोकमें जावे तो यहासे ज० एक पल्योपम और इशान देव लोकमें साधिक एक पल्योपम उ० तीन पल्योपमवाला जावे वहा पर भी ज० उ० इसी माफीक स्थिति पावे। भवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट दोय भव करे। भावार्थ युगलीया कि जीतनी स्थिति हो उससे अधिक स्थिति देवलोकमें नहीं मीलती है और देवतोंसे पीच्छा युगलीया नहीं होते हैं वास्ते दोय भव करते है।

(७) पाच स्थावर मरके पाच स्थावरमें जावे स्थिति यहासे तथा वहापर अपने अपने स्थान माफीक पावे। भव च्यार स्थावरमें जावे तो ज० दोय भव। उ० असख्याते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० असख्यात काल। पाच स्थावर वनास्पतिमें जावे तो ज० दोय भव।

उ० अनन्ते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० अनन्तो काल लागे। एव आने अपेक्षा भी समझना।

(८) पाच स्थावर मरके तीन वैकलेन्द्रियमें जावे तो भव ज० दोय भव उ० सख्याते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० सख्यातो काल लागे। स्थिति यहासे तथा वहापर स्व स्व स्थानकि समझना। एव आने अपेक्षा।

(९) पाच स्थावर मरके तीर्यंच पाचेन्द्रिय तथा मनुष्यमें जावे। स्थिति स्व स्व स्थान प्रमाणे। भव ज० दोय उ० आठ भव करे। एव आने अपेक्षा। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० दोनों स्थानकि उत्कृष्ट स्थितिसे भिन्न भिन्न उपयोगसे कहना।

फरमाते है या फरमाये है वह सत्य है एसा कहनेसे जिनाज्ञाका आराधीन हो सके है ?

(उ०) हाँ गौतम पूर्ववत् "तमेवसच' कहदेनेसे आराधी हो जाता है क्युकि उसीका अन्तकारण श्रद्धा जिनवचनोंपर मजबुत है और यह केहना भवान्तरमें भी आराधीपदकों साहिक होगा वास्ते जहाँतक बने वहाँतक तों वस्तुतत्त्व समझनेका प्रयत्न करना अगर न बने तों "तमेवसच" कहदेना चाहिये। एसेही हृदयमे धारना चाहिये एसही करना। एसाही मन स्थिरभूत रखनासे यावत् जिनाज्ञाका आराधी हो सक्ते है।

(प्र०) हे दयानिधि ! जीव कांक्षामोहनिय क्या बान्धता है।

(उ०) हे गौतम। कांक्षामोहनिय कर्मबान्धनमे मूल हेतु प्रमाद है और इन्ही के अन्दर योगोंका निमित्तकारण आवश्य मील्ता है। यहापर मौख्यतामें प्रमादको लिया है। क्युंकि मिथ्यात्व, अव्रत, कषाय, और योगके आगमनमें मौख्य कारण प्रमादही है वास्ते मिथ्यात्वादिको गोणतामें रख प्रमादकों मौख्यता बतलाया है।

(प्र) प्रमादकों उत्पन्न करनेवाला कौन है ?

(उ) योग है–मन वचन कायाके योगोंकि अशुभ प्रवृत्ति अर्थात् खाना पीना भोग विलास सुख शेलीयापना होना यह सब प्रमाद आनेका दरवाजा है।

(प्र) योगोंको कौन प्रेरणा कर वरताते है।

(उ) वीर्य–यहापर सकरण वीर्य समझना चाहिये। क्युकि वीर्यकी प्रेरणासें

(१०) तीन वैकलेन्द्रिय मरके पाच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पाचेन्द्रिय और मनुष्यमें जावे। स्थिति यहाकि तथा वहाकि स्व स्व स्थान माफीक। भव च्यार स्थावरमें। असख्याते तीन वैकलेन्द्रियमें सख्याते। वनास्पतिमें अनन्ते। तीर्यंच पाचेन्द्रिय तथा मनुष्यमें आठ भव और जघन्य सब स्थान पर दोय भव समझना। काल स्वस्व स्थानकि जघन्य उत्कृष्ट स्थिति प्रमाणे समझना।

(११) तीर्यंच पाचेन्द्रिय मरके दश स्थान—पाच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पाचेन्द्रिय और मनुष्यमें जावे स्थिति पूर्ववत् भव ज० दोय उत्कृष्ट आठ भव करे काल पूर्ववत् निजो पयोगसे समझना।

(१२) मनुष्य मरके, तीनस्थावर, तीनवैकलेन्द्रिय, तीर्यंच पाचेन्द्रिय, मनुष्य एव आठ स्थानमे जावे। स्थिति पूर्ववत् भव ज० दोय उ० आठ भव करे।

(१) मनुष्य मरके तेउकाय वायुकायमे जावे स्थिति पूर्ववत भव ज० उ० दोय भव करे। कारण तेउ वायु मरके मनुष्य न होवे।

नोट—ऊपर वैकलेन्द्रियमें उत्कृष्ट सख्यातेभव च्यार स्थावरमें असख्याते और वनस्पतिमें अनन्ते भव जो कहा है वह पहला दुसरा चोथा पाचवा यह च्यार गमाकि अपेक्षा है शेष ३–६–७–८–९ इस पाच गमामें जघन्य दोय भव उ० आठ भव करते है।

इसी माफीक कांक्षा मोहनिय वेदे परन्तु उदय आये हुवेको न वेदे। एव निर्ज्जरा परन्तु उदय आया पीछे वेदके निर्ज्जरा करते है सो भी पूर्ववत् उस्थानादिसे निर्ज्जरा करते है। यह समुचय जीवका अलापक कहा है इसी माफीक नरकादि २४ दंडकका भी केहना परन्तु एकेन्द्रिय बेकलेन्द्रियमें मनतना तथा इतनी प्रज्ञा नहीं है कि वह जीव कांक्षा मोहनियका कारण हेतुको जानके वेद, निर्मरा, करे परन्तु अव्यक्तपणे कांक्षा मोहनिय कर्म बन्ध उदय उदिरणा वेदे और निज्र्जरा होती है क्युकि बन्धके मिथ्यात्वादिका सम्भव हैं इति ॥ शम् ॥

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

अनुबध अतर महुर्तका (७) अध्यवसाय अप्रसस्थ । उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य स्वस्र स्थानका उत्स्टट [२) अनु बध आयुष्य माफीक । २६ नाण ता हुवा । सनी तीर्यंच पाचेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें आवे जिस्का नाणन्ता ११ ज० गमा तीन नाणन्ता नौ है ७ पूर्ववत् (८) लेश्यातीन (९) समुघ्यातत्तीन उ० गमामें दो नाण ता पूर्ववत् एव ११ । सनी मनुष्य मरके पृथ्वी कायमें आवे जिस्का नाण ता १२ ज० गमातीन नाणन्त नौ तीर्यंचवत् उ० गमातीन नेण ता तीन (१) अवगाहाना पाचसो धनुष्य (२) आयुष्य पूर्वकोट (३) अनुबध पूर्वकोटका एव १२ । एव सर्व ३०-२६-११-१२ कुल ८९ एव शेष च्यार स्थावर तीन वैकलेन्द्रियके ८९-८९ गीननेसे ७१२ नाणान्ता हुवा ।

(९) पाच स्थावर तीन वैक्लेन्द्रिय असज्ञी तीर्यंच सज्ञी तीर्यंच सज्ञी मनुष्य मरके तीर्यंच पाचेन्द्रियमें जावे जिसके ८९ नाण ता तो पृथ्वीवत् समझना और १७ स्थान वेकयका तीर्यंचमें आवे जिस्का नाण ता च्यार च्यार है ज० गमातीन नाण ता दो दो (१) स्व स्वस्थानकी ज० स्थिति (२) अनुबध आयुष्य माफीक उ० गमातीन नाण ता दो दो (१) स्व स्वस्थानका उत्कृष्ट आयुष्य (२) अनुबध आयुष्य माफीक एव १०८ तथा ८९ पूर्वक सव १९७ ।

(१०) तीन स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पाचेन्द्रिय मनुष्य मरके मनुष्यमें जावे जिस्का ८९ नाण तासे तेउ वायुका ११ बाद करतों ७८ नाण ता रहा और वैक्रयके ३२ स्थानके

मुद्रक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया
'जैनविजय' प्रि० प्रेस-खपाटिया चकला, सूरत।

(८) द्रष्टी तीन–सम्पुरण भवापेक्षा होनेसे तीन द्रष्टी है।

(९) योग तीन–तीनों योगवाला।

(१०) उपयोग–दोय–साकार आनाकार।

(११) सना–सनाच्यारवाला।

(१२) कषायच्यार–च्यारोंकषायवाला।

(१३) इन्द्रिय–पाच–पाचोइन्द्रियवाला।

(१४) समुत्घात–पाच समुत्घातवाला। क्रम सर

(१५) वेदना–साता असाता दोनो वेदनावाला।

(१६) वेदतीन–तीनों वेदवाला।

(१७) अध्यवसाय–असंख्याते यह अप्रशस्थ।

(१८) आयुष्य–ज० अन्तर महुर्त। उ० क्रोडपूर्ववाला।

(१९) अनुबन्ध आयुष्य माफीक (कायस्थिति)

(२०) सम्हो–कालादेशेण और भवादेशेण। भवापेक्षा ज० दोयभव उ० आठभव, कालापेक्षा नौ पहला लिख गया है।

इस गमानामाके चौवीशवां शतकका चौवीस उदेशा है यथा सातों नरकका प्रथम उदेशा, दश भुवनपतियोंके दश उदेशा, पाच स्थावरोंका पाच उदेशा, तीन वैकलेन्द्रिका तीन उदेशा, तीर्यंच पाचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तरदेव, ज्योतीषीदेव, वैमानिकदेव, इन्हीं पाचोका प्रत्यक पाच उदेशा एव सर्व मीलके २४ उदेशा है।

(१) नरकका पहला उदेशा है जिस नरकका सात भेद है

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं० ६७-६८-६९

श्री सयप्रभसूरीसद्गुरुभ्यो नम

अथश्री

शीघ्रबोध भाग २३-२४-२५

समाहक–

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनि
श्री ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

द्रव्य सहायक–

श्रीसंघ-फलोधी-सुपनोंकि आवादानीसे

प्रबन्धकर्ता–

शाहा मेघराजजी मोणोयत–मु० फलोधी।

प्रथमावृत्ति १०००] [वीर सं० २४४८

विक्रम सं १९७९

यथा=रत्नप्रभा शार्करप्रभा वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमाप्रभा इस सातों नरकमें उत्पन्न होनेवाला जीव भिन्न भिन्न स्थानोंसे आते है वास्ते पेस्तर सबके आगति स्थान लिख देना उचित होगा क्युकि आगे बहुत सुगम हो जायगा ।

(१) रत्नप्रभा नरककि आगति पाच सन्नी तीर्यंचे पाच असनी तीर्यंच, एक सख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य एव ११ स्थानसे आ–के रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न होता है ।

(२) शार्कर प्रभाकि आगति पाच सन्नी तीर्यंच और सख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य एव छे स्थानसे आवे ।

(३) वालुकाप्रभाकि आगति पाच स्थानकि भुजपुर वर्जके ।

(४) पङ्कप्रभाकि आगति खेचर वर्जके च्यार स्थानकि ।

(५) धूमप्रभाकि आगति थल्चर वर्जके तीनस्थानकि ।

(६) तमप्रभाकि आगति उरपुरी वर्जके दोय स्थानकि ।

(७) तमतमा प्रभाकि आगति दोयकि परन्तु स्त्रि नहीं आवे।

रत्न प्रभा नरककि ११ स्थानकि आगति है जिस्मे पाच असनी तीर्यंच आते है वह पूर्व २० द्वारसे कितनी कितनि ऋद्धि लेके आते है ।

(१) उत्पात=असनी तीर्यंचमें ।

(२) परिमाण–एक समयमें १–२–३ यावत् सख्याते ।

(३) सहनन=एक छेवटा सहननवाला तीर्यंच ।

---

१ जलचर स्थलचर खेचर उरपुरी भुजपुरी ।

प्रकाशक–
...राज मुणोत–फलोधी (मारवाड)

मुद्रक–
मूलचन्द किसनदास कापडिया
जैनविजय प्रि० प्रेस–खपाटिया चकला सूरत।

शेष सर्वद्वार सज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय माफीक समझना। भवापेक्षा ज० दोय उ० आठ भव, कालापेक्षा ज० प्रत्यकमास दश हजार वर्ष उ० च्यार कोडपूर्व, च्यार सागरोपम तक गमना गमन करे जिस्के गमा नौ।

ओघसे ओघ'	प्रत्यक मास	दशहजार वर्ष	उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सा०
ओघसे ज०'	,,	,,	उ० च्यार प्रत्य० ४००००वर्ष
ओघसे उ०	,,	,,	उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सा०
ज०से ओघ	,,	,,	उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सा०
ज०से ज०	,,	,,	उ० ,, प्र०मा० ४००००वर्ष
ज०से उ०	,,	,,	उ० ,, कोडपुर्व च्यार सा०
उ० ओघ	एक कोड पूर्व	एक सा०	उ० च्यार कोड पू० च्या० सा०
उ० ज०	,,	,,	उ० च्यार अन्तर ४०००० वर्ष
उ० उ०	,,	,,	उ० ,, कोड पूर्व च्यार सागरो

प्रत्यक गमा पर २० द्वार कि ऋद्धि पूर्ववत् लगा लेना तफावत है सो बतलाते हैं ओघ गमा तीन तो पूर्ववत ही है।

जघन्य गमातीन-४-५-६ नाणन्ता ५

(१) अवगाहाना ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० प्रत्यक अंगुलकि।

(२) ज्ञान-तिन ज्ञान तीन अज्ञान कि भजना।

(३) समुद्घात-पांच क्रम सर

(४) स्थिति ज० उ० प्रत्यक मास कि

(५) अनुबन्ध-ज० उ० प्रत्यक मासकों

विषयानुक्रमणिका ।

(१) शीघ्रबोध भाग २१ वां

(२) शीघ्रबोध भाग २४ वां

उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता पावे तीन तीन

(१) शरीर अवगाहाना ज० उ० ४०० धनुष्यकि

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वका

(३) अनुबन्ध ज० उ० कोड पूर्वका

सज्ञी मनुष्य मरके शार्करप्रभा नरकमें उत्पन्न होता है। स्थिति यहासे ज० प्रत्यक वर्ष और उत्कृष्ट कोड पूर्व वहां पर ज० एक सागरोपम उ० तीन सागरोपम ऋद्धिके २० द्वार रत्नप्रभाकि माफीक परन्तु यहापर स्थिति ज० प्रत्यक वर्ष उ० कोड पूर्व एव अनुबन्ध और शरीर अवगाहाना ज० प्रत्यक हाथ उ० पाचसो धनुष्य कि भव ज० दोय उ० आठ काल ज० प्रत्यक वर्ष और एक सागरोपम उ० च्यार कोड पूर्व और बारह सागरोपम इतना काल तक गमनागमन करे। नौगमा रत्नप्रभाकि माफीक परन्तु स्थिति शार्करप्रभासे केहना।

३ ओघ गमा तीन १–२–३ समुच्च वत्

३ जघन्य गमा तीन ४–५–६ नाणन्ता तीन तीन

(१) अवगाहाना ज० उ० प्रत्यक हाथकि

(२) स्थिति ज० उ० प्रत्यक वर्षकि

(३) अनुबन्ध आयुष्यकि माफीक प्रत्यक वर्षकों

३ उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन, तीन।

(१) शरीर अवगाहाना ज० उ० पांचसो धनुष्यकि

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वकों

(३) अनुबन्ध ज० उ० कोड पूर्वकों

आठद्वारोंका विवरण।

(१) गमाद्वारा=एक ही गति तथा जातिके अन्दर भवापेक्षा तथा कालापेक्ष गमनागमन करते है उसे गमा कहते है जिस्का नौ भेद है। जैसे मनुष्य, रत्नप्रभा, नरकके अंदर, गमनागमन करे तों भवापेक्षा जघन्य दोयभव उत्कष्ट आठ भव करे और कालापेक्षा नव गमा होता है यथा —

(१) " ओघसे ओघ " ओघ कहते है। समुच्चयको जिस्में जघन्य और उत्कष्ट दोनों समावेश हो शकते है, भवापेक्ष जघन्य दोयभव (एक मनुष्यका दुसरा नरकका) कालापेक्षा प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष और उत्कष्ट आठ भव करते है कालापेक्षा च्यार क्रोड पर्व और च्यार सागरोपम, यह प्रथम गमा हुवा।

(२) " ओघसे जघन्य " मनुष्यका जघन्य उत्कष्ट काल और नरकका जघन्य काल जेसे दो भव करे तो जघन्य प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष उत्कष्ट आठ भव करे तों च्यारक्रोड पूर्व वर्ष और चालीस हजार वर्ष यह दुसरा गमा।

(३) " ओघसे उत्कृष्ट " जघन्य दो भव करे तों प्रत्यक मास और एक सागरोपम उत्कष्ट च्यारक्रोड पूर्व और च्यार सागरोपम यह तीसरा गमा हुवा।

(४) " जघन्यसे ओघ " जघन्य दो भव करे तों प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष उत्कष्ट आठ भव करे तों च्यार प्रत्यक मास और च्यार सागरोपम यह चोथा गमा।

(५) " जघन्यसे जघन्य " ज० दो भव० प्रत्यकमास और दश हजार वर्ष उ० च्यार प्रत्यक मास और चालीस हजार

उ० तीन पल्योपमकि पाते हैं। नौगमा और ऋद्धिके २० द्वार असंख्यात वर्षवाला तीर्यचकी माफीक समझना इतना विशेष है कि प्रथमके गमा तीन जिम्में पहेला दुसरा गमामें अवगाहाना जघन्य साधिक पाचसो धनुष्य उ० तीन गाउ कि तथा तीसरे गमामें अवगाहाना जघन्य उत्कृष्ट तीन गाउकि है। अपने जघन्य कालके तीन गमा ४–५–६में अवगाहाना ज० उ० साधिक पाचसो धनुष्य हैं। और अपने उत्कृष्ट गमा तीन ७–८–९में अवगाहना ज० उ० तीन गाउकि है शेष पूर्ववत्।

संख्याते वर्षका सन्नी मनुष्य असुर कुमारमें उत्पन्न हुवे तो जेसे सनी संख्याते वषका मनुष्य, रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न हुवा था इसी माफीक नौगमा तथा २० द्वार ऋद्धिका समझना परन्तु गमामें उत्कृष्ट स्थिति असुरकुमारकि साधिक सागरोपमकी कहनी। शेषाधिकार रत्नप्रभावत्।

इति चौवीसवा शतकका दुसरा उद्देशा।

जेसे असुर कुमारका अधिकार कहा है इसी माफीक नाग कुमार सुवर्ण कुमार, विद्युतकुमार, अग्निकुमार, द्विपकुमार, दिशा कुमार, उदधीकुमार, वायुकुमार, स्तनत्कुमार, इस नौ जातिके देव जीनों नौ निकाय भि कहते है।

विशेष इतना है कि इन्होंकि स्थिति ज० दश हजार वर्ष उत्कृष्टी देशोन दोय पल्योपमकि है वास्ते गमा कालमें इस स्थितिसे बोलाना।

नोट–युगलीया मनुष्य तथा तीर्यंच आपनि उत्कृष्टी स्थितिसे अधिक स्थिति देवतोंमें नहीं पाते है। वास्ते देवतावोंके उत्कृष्ट

स्थितिमें जानेवाला अवगाहाना ज० देशोना दोयगाउ उ० तीन-गाउ और स्थिति ज० देशोना दोय पल्योपम उ० तीन पल्योपम समझना इति ।

। इति चौवीसवा शतकका इग्यारा उद्देशा समाप्त हुवे ।

(१२) पृथ्वीकायाका उद्देशा—पृथ्वीकायाके अन्तर पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय असज्ञी तीर्यंच असनी मनुष्य सज्ञी तीर्यंच, सनी मनुष्य, दश भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी सौधर्म देवलोक इशान देवलोक एवं २६ स्थानसे आये हुवे जीव पृथ्वी-कायमें उत्पन्न हो शक्ते हैं वहा (पृथ्वीकायमें) स्थिति ज० अन्तर महुर्त उत्कृष्टी २२००० वर्षकि होती है । ऋद्धिका २० द्वार । पृथ्वीकाय मरके पृथ्वीकायमें उत्पन्न होते हैं जिस्की ऋद्धिके २० द्वार ।

(१) उत्पात—पृथ्वीकायासे आके उत्पन्न होते हैं ।
(२) परिमाण—एक समयमें १—२—३ यावत् असख्याते ।
(३) सहनन—एक छेवट सहनन लेके आता है ।
(४) अवगाहाना—ज० उ० अगुलके अस० भाग ।
(५) सस्थान—एक हुन्टक (चन्द्राकार) वाला
(६) लेश्या—च्यार (मव सबन्धी) वाला
(७) दृष्टी—एक मिथ्यात्ववाला ।
(८) ज्ञान—अज्ञान दोयवाला । ज्ञान नहीं होते है ।
(९) योग—एक कायाका (१०) उपयोग दोनों सा० अ०
(११) सज्ञा च्यारों (१२) कषाय च्यारों

(७) उदयद्वार–ज्ञानावर्णिय उदयवाला एक ज्ञाना० उदयवाला बहुत एवपावन् अतराय कर्मका ।

(८) उदिरणाद्वार–आयुष्य और वेदेनिय कर्मोका आठ आठ भागा शेष छे कर्मोका दो दो भागा पूर्ववत ।

(९) लेस्याद्वार–शालीके मूलमें जीव उत्पन्न होते है उस्मे लेस्या स्यातकृष्ण स्यातनिल स्यातकापात लेश्या होती है बहुत जीवों अपेक्षा २६ भागा होते है देखो शीघ्र० भाग ८ उत्पेलोधिकार ।

(१०) दृष्टीद्वार दृष्टी एक मिथ्यात्वकि भागा दोय । एक जीवोत्पन्नापेक्षा एक, बहुत जीवोत्पन्नापेक्षा बहुत ।

(११) ज्ञानद्वार–अज्ञानी एक अज्ञानी बहुत ।

(१२) योगद्वार–काययोगि एक काययोगि बहुत ।

(१३) उपयोगद्वार–साकार अनाकारके भागा आठ ।

(१४) वर्णद्वार–जीवापेक्षा वर्णादि नही होते है और शरीरापेक्षा पाच वर्ण दोय गध पाच रस आठ स्पर्श पावे ।

(१५) उश्वासद्वार–उश्वास, नि श्वास नोउश्वसनोनिश्वास तीन पदके भागा २६ उत्पत्वत् ।

(१६) आहारद्वार–आहारीक एक–बहुता एक और बहुतके दो भागा ।

---

१ शीघ्रबोध भाग ८ वामें उत्पल कमलके ३२ द्वार सविस्तार छप गये है वास्त सादृश विषयकि भोलामन दी गइ है, देखो आठवा भाग ।

बेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें उत्पन्न हुवे, तो ज० अन्तर महुर्तमें उत्कृष्टी २२००० वर्षोंकि स्थितिमें (१) उत्पात बेन्द्रियसे (२) परिमाण १-२ ३ स० असंख्याते (३) संहनन एक छेवटावाला (४) अवगाहान ज० अंगु० असं० भाग उ० बारह योजनवाला (५) संस्थान एक हुन्डक (६) लेश्या तीन (७) दृष्टी दोय० (८) ज्ञान=दोयज्ञान दोय अज्ञानकि नियमा (९) योग दोय (१०) उपयोग दोय (११) संज्ञा च्यार (१२) कषाय च्यार (१३) इन्द्रिय दोय (१४) समुद्घात तीन क्रम सर (१५) स्थिति ज० अन्तर उ० बारहा वर्ष (१६) अध्यवसाय प्रसस्याप्रसस्थ (१७) वेदना दोनों (१८) वेद एक नपुसक (१९) अनुबन्ध स्थितिवत् (२०) सम हों भवापेक्षा ज० दोय उ० संख्याते भव कालापेमा ज० दोय अन्तर महुर्त उ० संख्यातों काल तक परिभ्रमन करे, जिस्का गमा नौ। जिस्मे मध्यमके तीन गमा ४ ५ ६ में शरीर अवगाहाना ज० उ० अगुलके असंख्यातमें भाग दृष्टी एक मिथ्यात्वकि ज्ञान नहीं किंतु दोय अज्ञान है। योग एक कायाका स्थिति ज० उ० अन्तर महुर्त अनुबन्ध ज० उ० अन्तर महुर्त अध्यवसाय अप्रसस्थ उत्कृष्ट गमातीन ७ ८ ९ परन्तु स्थिति तथा अनुबन्ध ज० उ० बारह वर्षका है तथा ३ ६ ७ ८ ९ इस पाच गमोंमें भव ज० दोय उ० आठ भव करे शेष १ २ ४-५ इस च्यार गमोंमें ज० दोयभव उ० संख्याते भव करे काल० ज० दोय अतर महुर्त उ० संख्यातों काल लागे गमा पृथ्वीकाल और बेन्द्रियकि स्थितिसे पूर्ववत् लगा देना।

बेइन्द्रियकि माफीक तेन्द्रिय भी समझना परन्तु यहा अव

सौधर्म देवलोक, और इशान देवलोक, एव पचवीस देवतावोंके पर्योसा चवके शालीके पुष्पोंमें आते है वास्ते ७४ स्थानोंकि आगति है। लेश्या च्यार भांगा ८० है अवगाहाना उत्कृष्ट प्रत्यक अगुलकि है एव नौवा, फलउदेशा तथा दशवा बीजउदेशा भी समझना। तात्पर्य यह है कि शाली गहु जव ज्वारादिके सात उदेशोंमें देवता उत्पन्न नहीं होते है। शेष तीन उदेशामें देवता मरके उत्पन्न होते है। कारण पुष्पादि अच्छे सुगन्धवाले होते है।

इति प्रथम वर्गके दश उदेशा प्रथम वर्ग समाप्तम्॥

(२) दुसरा कठ मुगादिका वर्ग, शाली माफीक दशों उदेशा समझना तीन उदेशोंमें देव अवतरे।

(३) तीसरा—अलसी कसुबादिका वर्गशाली माफीक दशो उदेशा समझना।

(४) बास वेतका चोथा वर्ग, शाली माफीक है परन्तु दशों उदेशामें देवता उत्पन्न नहीं होते है।

(५) इक्षु वर्गके तीसरा स्कधउदेशामें देवता उत्पन्न होते है शेषमें नहीं, स्कधमें मधुरता रहेती है।

(६) डाम तृणादि वर्गके दशोउपदेशोंमें देवता नहीं आव सर्व बास वर्गकि माफीक समझना।

(७) अझोहरा वर्ग, बासवर्गके माफीक समझना।

(८) तुलसीवर्ग, बासवर्गके माफीक समझना।

नोट—जीस उदेशामें देवता उत्पन्न होते हो वहा लेश्या च्यार पावे और भांगा ८० होते है शेषमें लेश्या तीन भांगा २६ होते है। इति भगवती सूत्र शतक २१। वर्ग आठ उदेशा ८० समाप्त।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

गाहाना उत्कृष्ट तीन गाउकि और स्थिति अनुबन्ध उ० गुणपचास दिन शेष वेन्द्रिय माफीक २० द्वार ऋद्धिका तथा नौगमा लगा लेना।

चौरिंद्रिय भी वेन्द्रिय माफीक परन्तु अवगाहाना च्यारगाउ और स्थिति तथा अनुबन्ध उ० छे मासका है शेष पूर्ववत्।

एव असनी तीर्यंच पाचेन्द्रिय भी समझना परन्तु शरीर अवगाहाना उत्कृष्ट १००० जोजनकि इन्द्रिय पाच स्थिति तथा अनुबन्ध उ० कोडपूर्वका भवापेक्षा ज० दोयभव उ० आठ भव० कालापेक्षा. ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और ८८००० वर्ष अधिक शेष ऋद्धि तथा नौ गमा वेन्द्रिय माफीक समझना परन्तु गमामें स्थिति पृथ्वीकाय और असनी तीर्यंच पाचेन्द्रिय कि केहना।

सनी तीर्यंच पाचेन्द्रिय सख्याते वर्ष वाला पृथ्वीकायमें उत्पन्न होवे तो० ज० अन्तरमहुर्त उ० कोडवर्षकि स्थितिवाला उत्पन्न होगा ऋद्धि

(१) उत्पात–सनी तीर्यंच पाचेन्द्रिय सख्याते वर्षवालासे।

(२) परिमाण–ज० १–२–३ उ० सख्याते असख्याते।

(३) सहनन–छे वों सहननवाला।

(४) अवगाहाना–ज० अगुलके असख्याते भाग उ० १००० जोजनवाला।

(५) सस्थान–छे वों (६) लेश्या छे (७) दृष्टि तीनों

थोकडा नम्बर ७
सूत्र श्री भागवतीजी शतक २२
(वर्ग छे)

इस बावीसवा शतकके छे वर्ग है प्रत्येक वर्गके दश दश उदेशा होनसे साठ उदेशा होते है । यथा—

(१) ताल तम्बालादि वृक्षका वर्ग
(२) एक फलमें एक बीज आम्र हरडे निंब आदिके वर्ग
(३) एक फलमें बहुत बीज अगत्थीया वृक्ष तडुक वृक्ष बद-रिक वृक्षादि ।
(४) गुच्छा वृन्ताकि आदिका वर्ग ।
(५) गुल्म—नवमालती आदिका वर्ग
(६) वेलि—पुफली, कालिंगी, तुम्बीदि वर्ग

इस छे वर्गसे प्रथम तालतम्बालादि वृक्षके मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, साखा, यह पाच उदेशा शाली वर्गवत् कारण इस पाचों उदेशोंमें देवता उत्पन्न नही होते है । लेश्या तीन भांगा २६ होत है । स्थिति ज० अन्तर महुर्त उ० दशहजार वर्षोकि है । शेष परिवाल, पत्र, पुष्प, फल, बीज इस पाच उदेशोमें देवता आके उत्पन्न होते है, लेश्या च्यार भागा ८० होते है । और स्थिति ज० अन्तर महुर्त उ० प्रत्यक वर्ष की है । अवगाहाना जघन्य अंगुलके असंख्यातमें भाग है उत्कृष्टी मूल कन्दकि प्रत्यक धनुष्यकि, स्कन्ध, त्वचा, साखा, कि प्रत्यक गाउ० परवाल, पत्र, कि प्रत्यक धनुष्यकि, पुष्पोंकि प्रत्यक हाथ, फल, बीज कि प्रत्यक अंगुलकि है शेष अधिकार शाली वर्ग माफीक समझना ।

इति प्रथम वर्ग दश उदेशा ।

(८) ज्ञान–तीन ज्ञान तीन अज्ञानकि भजनावाला ।
(९) योग तीन–(१०) उपयोग दोय (११) सज्ञा च्यार
(१२) कषाय च्यार वाला ।
(१३) इन्द्रिय पांचोंवाला (१४) समुद्घात पांच प्रथमसे ।
(१५) वेदना–साता असाता दोनों (१६) वेद तीनोंवाला।
(१७) स्थिति० ज० अन्तर महुर्त उ० कोडपूर्व वाला ।
(१८) अध्यवसाय–असख्याते प्रसस्थ अप्रसस्थ
(१९) अनुबन्ध ज० अन्तर महुर्त उ० कोडपूर्व

(२०) संभहो भवापेक्षा ज० दोय भव उ० आठ भव कालापेक्षा० ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और ८८००० वर्ष अधिक जिस्के नौगमा पूर्ववत लगा लेना जिस गमामें तफावत है सो इस माफीक है ।

मध्यम गमा तीन ४–५–६ प्रत्यक गमामें नाणता नौ नौ
(१) अवगाहाना ज० उ० अगुलके असख्यातमें भाग ।
(२) लेश्या तीन (३) दृष्टि एक मिथ्यात्वकि
(४) ज्ञान नही अज्ञान दोय (५) योग एक कायाको ।
(६) समुदघात तीन प्रथमकि
(७) स्थिति ज० उ० अन्तर महुर्त (८) एव अनुबन्ध
(९) अध्यवसाय असख्य अप्रसस्थ ।

उत्कृष्ट गमा तीन ७–८–९ नाणता दो दो । स्थिति० ज० उ० कोडपूर्वकि एव अनुबन्ध । नौगमाका काल पृथ्वीकाय और तीर्यंच पाचेन्द्रियके स्थितिसे लगा लेना । शमाय सब पूर्व वत समझना ।

(२) एगठिया–निंब, अम्बु, कोसब, पीलु, इत्यादि जीसके फलमें एक गुठली हो एस वृक्षोंकि वर्गका दश उदेशा निर्विशेष प्रथम वर्गवत् समझना इति एगठिय वर्गके दश उदेशा। समाप्त।

(३) बहुबीजा–आगत्थियाके वृक्ष, तदुकवृक्ष कविट आम्बाण इत्यादि वृक्षोंका वर्गके दश उदेशा ताल वर्गके सादश समझना इति तीसरा वर्ग० स०।

(४) गुच्छा–वैगण, खलाइ, गज, महलादि गुच्छा वर्गके दश उदेशा निर्विशेष वास वर्गकि म फीक समजना इति गुच्छा वर्ग समाप्त।

(५) गुल्म–नों मलति सरिका कणव नालिका आदिका वर्गके देश उदशा निर्विशेष शाली वर्गकि माफीक समझना इति गुल्म वर्ग समाप्तम्।

(६) वल्लि–पुसफली, कालिंगी तुंबी तउसी एला वालुकि अदि वल्लिवर्गके दश उदेशा तालवर्गकि माफीक परन्तु फल उदेने अवगाहाना उ० प्र धक धनुष्यकि है और स्थिति सब उदशो उ० प्रत्यक वर्षकि है इति वल्लिवर्ग समाप्त।

यहा छे वर्गके साठ उदेशा है प्रत्यक उदेश बत्तीस बत्तीस द्वार उतारणा चाहिये वह आमाय शालीवर्गमें लिखी गई है सिवाय खास तफावतकि वातों यहापर दर्शाई है शास्त्र स्व उपयोगसे विचा रणा चाहिये।

इति बावीसवा शतक छे वर्ग साठ उदेशा समाप्त।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्।

असज्ञी मनुष्य मरके पृथ्वीकायमें ज० अन्तर महुर्त उ० २२००० वर्षकि स्थितिमें उत्पन्न होता है ऋद्धि स्वय उपयोगसे केहना सुगम है। नौ गमोंके बदले यहापर ४-५-६ तीन गमा केहना कारण असज्ञी मनुष्य अपर्याप्ती अवस्थामें ही मृत्यु प्राप्त हो जाते है वास्ते अपना जघन्य कालसे तीन गमा होता है शेष ६ गमा सुन्य है।

सज्ञी मनुष्य सख्यात वर्षवाला पृथ्वीकायमें ज० अन्तरमहुर्त उत्कृष्ट २२००० वर्षोकि स्थितिमें उत्पन्न होता है ऋद्धिके २० द्वार जेसे रत्नप्रभा नरकमें मनुष्य उत्पन्न समय कही थी इसी माफीक केहना तफावत गमामें है सो कहते है।

(१) प्रथम दुसरा तीसरा गमाके नाणन्ता।

(१) अवगाहना ज० अगुलके असं० भाग उ० ५०० धनुष्य।

(२) आयुष्य ज० अन्तर० उ० पूर्वकोडका।

(३) अनुबन्ध आयुष्यकि माफीक।

(२) मध्यम गमा तीन ४-५-६ तीर्यंच पाचेन्द्रिय माफीक।

(३) उत्कृष्ट गमा तीन ७-८-९ नाणन्ता तीन तीन।

(१) अवगाहाना ज० उ० ५०० धनुष्यकि।

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वका।

(३) अनुबन्ध आयुष्यकि माफीक।

नौ गमाका काल मनुष्यकि ज० उ० स्थिति तथा पृथ्वी कायकि ज० उ० स्थितिमे लगालेना। रीति सब पूर्व लिखी हुई है।

थोकडा नम्बर ६

श्री भगवती सूत्र शतक २३

(वर्ग पाच)

इस तेवीसवा शतकके पाच वर्ग जिस्के पचास उदेशा है इस शतकमें अनन्त काय साधारण वनास्पतिका अधिकार है साधारण वनास्पतिकायमें जीव अनन्त कालतक छेदन, भेदन, महान् दु ख-सहन किया है वास्ते इस शतकके प्रारम्भमें " नमो सुयदेवयारा भगवईए " सुत्र देवता भगवतीको नमस्कार करके (१) आलुवर्ग (२) लोहणी वर्ग (३) आवकाय वर्ग (४) पाढमि आदि वर्ग (५) मासपन्नी आदि वर्ग कहा है। (१) आलु मूला आदी हलदी आदिके वर्गका दश उदेशा नाम उदेशाकि माफीक है पर तु परिमाण द्वारमें १-२-३ यावत सख्याते असख्य ते अनन्त उत्पन्न होते है समय समय एकेक जीव निकाले तों अनन्ती सर्पिणि, उत्सर्पिणि पूर्ण होजाय। स्थिति जघ य और उत्कृष्ट अतर महूर्तकि शेष शालवर्गवत् समझना इति प्रथम वर्ग दश उदेशा समाप्तम्।

(२) लोहनि असरन्नी, बज्रकन्दो, आदिका वर्गके दश उदेशा, आलुवर्गके माफीक परतु अवगाहाना तालवर्ग माफीक समझना इति समाप्तम्।

(३) आवकाय कहुणी आदि जमीन दर्कों एक जाति है इसके भी १० उदेशा आलुवर्ग माफीक है परतु अवगाहाना ताल वर्ग माफीक समझना इति तीसरा वर्ग समाप्तम्।

(४) पाढमि वल्ली के मधुरसा आदि० जमीकदकि एक

अधिक । एव शेप आठ गमा भी लगा लेना. यावत् बारहवा देवलोक तक परन्तु स्थिति स्व स्व स्थानसे कहना, गमा नौ, भव ज० तीन भव उ० सात भव । बारहवा दे० और मनुष्य ।

(१) गमें ज० प्रत्येक वर्ष २१ सागरो० उ० ६६ सा० ४कोड
(२) गमें ज० „ „ उ० ६३ सा० ४ प्रत्येवर्ष
(३) गमें ज० „ „ उ० ६६ सा० ४ कोड०
(४) गमें ज० „ „ उ० „ „
(५) गमें ज० „ „ उ० ६६ सा० ४ प्रत्ये०
(६) गमें ज० „ „ उ० ६६ सा० ४ कोड०
(७) गमें ज० कोडपूर्व २२ सा० उ० „ „
(८) गमें ज० „ „ उ० ६३ सा० ४ प्रत्ये०
(९) गमें ज० „ „ उ० ६६ सा० ४ कोड०

एव नौग्रीवेग परतु प्रथमके दो सहननवाला आवे । गमा नौग्र.वेगकि स्थितिसे लगा लेना ।

विमयवैमानमें सख्याते वर्षवाला सज्ञी मनुष्य उत्पन्न होते है वह ज० ३१ सागरोपम उ० ३३ सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है । ऋद्धि पूर्ववत् परन्तु सहनन एक प्रथमवाला, दृष्टी एक सम्यग्दृष्टी, ज्ञानी ज्ञानवाला शेष पूर्ववत । भव ज० ३ उ० ५ भव गमा नौ ।

(१) गमें प्रत्येवर्ष ३१ सा० उ० ६६ सा० ३ कोडपूर्व
(२) गमें „ „ उ० ६२ सा० ३ प्रत्ये०
(३) गमें „ „ उ० ६६ सा० ३ कोड०
(४) गमें „ „ उ० ६६ „ „

(उ) हे गौतम एक आविलकाके असंख्यात समये होते है किन्तु संख्याते, अनन्ते समय नहीं होते है।

(२) एवं एक श्वासोश्वासमें असंख्यात समय होते है।

(३) स्तोककालमें असंख्यात समय होते है।

(४) एवं एक लवकालमें असंख्याते समय होते है (५) एवं महुर्त (६) अहोरात्री (७) पक्ष (८) मास (९) ऋतु (१०) अयन (११) संवत्सर (१२) युग (१३) शतवर्ष (१४) सहस्रवर्ष (१५) लक्षवर्ष (१६) पूर्वांग (१७) पूर्वे (१८) तुटीतांग (१९) तुटीत (२०) अडडांग (२१) अडड (२२) अववांग (२३) अवव (२४) हुहांग (२५) हुहू (२६) उपलांग (२७) उपल (२८) पद्मांग (२९) पद्म (३०) निलनिआंग (३०) निलनि (३०) (३१) अत्थनिआंग (३२) अत्थनि (३३) आयुरांग (३४) आयु (३५) नायुरांग (३६) नायु (३७) पायुरांग (३८) पायु (३९) चुलीयांग (४०) चूलिया (४१) शीर्ष पलीयांग (४२) शीर्षपलीयां (४३) पल्योपमं (४४) सागरोपमं (४५) उत्सर्पिणि (४६) अवसर्पिणि (४७) कालचक्रं एवं ३७ बोल एक वचन अपेक्षा असंख्यात समय

१ समयको शास्त्रकारोंने बहुत ही सूक्षम बतलाया है देखो अनुयोग द्वारसूत्रको। २ लक्ष चौरासी वर्षका एक पूर्वांग होते है (३) चौरासी लक्षको चौरासी लक्ष गुन करनेसे ७०५६०००००००००० वर्षका एक पूर्व होता हैं आगे एकेक बोल्को चौरासी चौरासी लक्ष गुनाकर लेना। (४) यहांतक गणत विषय बतलाये है (५) कुवेके दृष्टान्तसे पल्योपमकाल (६) दश कोडाकोड पल्योपमका एक सागरोपम (७) बीस कोडाकोड सागरोपमका एक काल चक्र (८) अनन्ते कालचक्रका एक पुद्गल प्रवर्तन होते है।

(५) गमें	,,	,,	उ० ६२	सा० २	प्रत्ये०
(६) गमें	,,	,,	उ० ६६	सा० २	कोड०
(७) गमें कोउपूर्व	३२ सा०		उ० ६६	सा० २	कोड०
(८) गमें	,,	,,	उ० ६२	सा० २	प्रत्ये०
(९) गमें	,,	,,	उ० ६६	सा० २	कोडपूर्व

एव विजय न्त, जय न्त, अपराजित,

सर्वार्थ सिद्ध वैमानके अदर सख्याते वर्षवाला सज्ञी मनुष्यो त्पन्न होते है वह ज० उ० तेतीस सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होत है। ऋद्धि स्व उपयोगसे समझना। गमा ३ तीजा छटा नौवा।

(१) तीजे गमे भव तीन करे काल ज० ३३ सागरोपम दोय प्रत्यक वर्ष अधिक उ० ३३ सा० २ कोडपूर्व०।

(२) छठे गमें भव तीन–काल ३३ सा० दोय प्रत्येक वर्ष उ० ३३ सा० दोय प्रत्येक वर्ष अधिक।

(३) नौवा गमें भव तीन काल ज० उ० ३३ सागरोपम दोय कोडपूर्वाधिक।

अवगाहाना तीजे छठे गमें ज० प्रत्येक हाथकि नौवा गमें ज० उ० पाचसो धनुष्यकि। स्थिति ज० उ० कोडपूर्वकि इति २४–२४

इस गमा शतकमें बहुतसे स्थानपर पूर्वकि मोलामण देते हुव गमा नहीं लिखा है इसका कारण प्रथम तो हमारा इरादाही कण्ठस्थ करानेका है अगर सख्यातासे ... ओंके लिये सबके सब गमा कण्ठस्थ ही हो

है और (४८) एक पुद्गल प्रवर्तनमें सख्यात समय नही असख्यात समय नहीं किन्तु अनन्त समय होते है (४९) एव भूतकालमें (५०) एव भविष्य कालमें (५१) एव सर्व कालमें अन त समय है कारण इस च्यार बोलोंमें काल अनतो है ।

(प्र) बहुवचनापेक्षा घणि अविलकामें समय सख्याते है असख्याते है ? अन ते है ।

(उ) सख्याते नहीं स्यात् असख्याते स्यात् अनन्ते समय है एव ४७ वा बोल कालचक्र तक कहना शेष च्यार बोल (४८–४९–५०–५१) में सख्याते, असख्याते समय नहीं किन्तु अनन्ते समय है ।

(प्र) एक श्वासोश्वासमें आविलका कितनि है ।

(उ) सख्याती है शेष नहीं एव ४२ बोलतक स्यात सख्याती ४३–४४–४५–४६–४७ इस पाच बोलोंमें असख्याती है शेष ४८–४९–५०–५१ वा बोलमें अनन्ती है एव बहुवचनापेक्षा परन्तु ४२ बोलोंतक स्यात् सख्यती स्यात असख्याती स्यात अनन्ती पाच बोलोंमें स्यात असख्याती स्यात अन ती शेष च्यार बोलोंमें आविलका अनन्ती है ।

इसी माफीक एकेक बोल उत्तरोत्तर पृच्छा करनेमें एक वचनापेक्षा ४२ बोलों तक सख्याते ५ बोलोंमें असख्याते ४ बोलोंमें अनते और बहुतवचनापेक्षा ४२ बोलो तक स्यात सख्यात स्यात् असख्याते स्यात अनते, पाच बोलोमें, स्यत असख्याते स्यात अन ते और च्यार बोलोंमें अन ते कहना । चरम प्रश्न ।

(प्र) भूतकालमें पुद्गल प्रवर्तन कितने है ।

ऋद्धिके बाराम यह विषय बहुत सुगम है जोकि दउ दडकके जाननेवाला सहजमें ही समझ शक्ता है ।

गमा और ऋद्धिके लिये हमने प्रथम थोकडाही अलग बना दीया है अगर पेस्तर वह थोकडा पड लिया जायगा तो फीर बहुत सुगम हो जायगा ।

पाठक वर्गको इस बातको खास ध्यानमें रखनि चाहिये कि स्वल्प ही ज्ञान क्यों न हो, परन्तु कण्ठस्थ किया हुवा हो वह इतना तो उपयोगी होजाता है कि भिन्न भिन्न विषयमें पूर्ण मदद कार बनके विषयको पूर्ण तौर ध्यानमें जमा देते है ।

इस शीघ्र बोधके सब भागमें हमारा प्रथम हेतु ज्ञानाभ्यासी योंको कण्ठस्थ करानेका है और इसी हेतुसे हम विस्तार नहीं करते हुवे संक्षिप्तसे ही सार सार समझा देते है । आशा है कि इस हमारे इरादको पूर्ण कर पाठक अपनि आत्माका कल्याण आवश्य करेगा । किमधिकम् ।

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

इति शीघ्रबोध भाग २३ वा समाप्त ।

(१५) निकाशे-संयमके पर्यव एकेक संयमके पर्यव अनन्ते है। सामा० छेदो० परिहार० परस्पर तथा आपसमें षट्गुन हानिवृद्धि है तथा आपसमें तुल्य भी है। सूक्ष्म० यथाख्यातसे तीनों संयम अनन्तगुन न्यून है। सूक्ष्म० तीनोंसे अनन्तगुन अधिक है आपसमें षट्गुन हानि वृद्धि, यथाख्यातसे अनन्त गुन न्यून है। यथा० च्यारोंसे अनन्तगुन अधिक है। आपसमें तुल्य है। अल्पा बहुत्व।

(१) स्तोक सामा० छेदो० जघन्य संयम पर्यव आपसमें तुल्य
(२) परिहार० ज० सं० पर्यव अनंतगुना
(३) ,, उत्कृष्ट० ,, ,,
(४) सा० छे० ,, ,, ,,
(५) सूक्ष्म० ज० ,, ,,
(६) ,, उ० ,, ,,
(७) यथा ज०उ० आपसमें तुल्य ,, घाता

(१६) योग-प्रथमके च्यार संयम सयोगि होते है, यथाख्यात० सयोगि अयोगि भी होते है।

(१७) उपयोग-सूक्ष्म० साकारोपयोगवाले, शेष च्यार संयम साकार अनाकार दोनों उपयोगवाले होते है।

(१८) कषाय-प्रथमके तीनसंयम संज्वलनके चोकमें होता है।

सूक्ष्म० सम्बलनके लोभमें और यथाख्यात० उपशान्त कषाय और क्षिण कषायमें भी होता है ।

(१९) लेश्या-सामा० छदो० में छेओं लेश्या, परिहार० ओं पद्म शुद्ध तीनलेश्या, सुक्ष्म० एक शुक्ल, यथाख्यात० एक शुक्ल तथा अलेशी भी होते है ।

(२०) परिणाम-सामा० छेदो० परिहार० में हियमान० वृद्धमान और अवस्थित यह तीनों परिणाम होते है । जिस्में हियमान वृद्धमानकि स्थिति ज० एक समय उ० अन्तर महूर्त और अव-स्थितकि ज० एक समय उ० सात समय० । सुक्ष्म० परिणाम दोय हियमान वृद्धमान कारण श्रेणि चढते या पडते जीव वहा रहेते है वह होंकि स्थिति ज० उ० अन्तर महूर्तकि है । यथाख्यात० परिणाम वृद्धमान, अवस्थित जिस्में वृद्धमानकि स्थिति ज० उ० अन्तर महूर्त और अवस्थितकि ज० एक समय उ० देशोनाक्रोड पूर्व (केवलीकि अपेक्षा) द्वारम् ।

(२१) बन्ध-सामा० छदो० परि० सात तथा आठ कर्म बन्ध मात बान्धे तो आयुष्य नहीं बन्ध । सुक्ष्म० आयुष्य० मोह-निय कर्म वर्जके छे कर्म बन्धे । यथाख्यात० एक साता वेदनिय बान्धे तथा अबन्ध ।

(२२) वेदे-प्रथमके च्यार संयम आठों कर्म वेदे। यथाख्यात० सात (मोहनिय वर्जके) कर्म वेदे तथा च्यार अघातीया कर्म वेदे ।

(२३ उदिरणा-सामा० छदो० परि० ७-८-६ कर्म

मानेगये है जिस्मे बनास्पतिके ६ भेद माना है यहा पर सुक्षम बादरके पर्याप्ता अपर्याप्त एव च्यार माना है वास्ते ४६ स्थाना और मनुष्यके तीन भेद है कर्ममूमि मनुष्यका पर्याप्ता अपर्याप्त और समुत्सम एव ४९ स्थानका जीव मरके शाळीके मूलमे आसक्ते है।

(१) परिमाण द्वार–एक समयमें कितने जीव उत्पन्न होसक्ते है। एक दोय तीन यावत् सख्याते असख्याते।

(२) अपहरन द्वार–एक समय उत्कृष्ट असख्याते जीव उत्पन्न होते है उस जीवोंको प्रत्यक समय एकेक जीव निकाला जावेतो कितना काल लागे? उत्को असख्याती सर्पिणी उत्सर्पिणी जीतना काल लागे।

(४) अवगाहना द्वार–ज॰ अगुलके असख्यातमे माग॰ उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्यकि होती है।

(५) बन्धद्वार–ज्ञानावर्णिय कर्म ब धक (१) किसी समय एक जीव उत्पन्न कि अपेक्षा एक जीव मीलता है (२) कीसी समय बहुत जीव उत्पन्न समय बहुत जीव मीलता है एव शेष सात कर्मोंका दोय दोय भागा समझना परन्तु आयुष्य कर्मके आठ भागा होता है यथा (१) आयुष्य कर्मका बन्धक एक (२) अबन्धक एक (३) बन्धक बहुत (४) अबन्धक बहुत (५) बन्धक एक, अबन्धक एक (६) बन्धक एक अबन्धक बहुत (७) बन्धक बहुत अबन्धक एक (८) बन्धक बहुत अबन्धक भी बहुत।

(६) वेदेद्वार–ज्ञानावर्णिय कर्म वेदनावाळा एक तथा घणा और साता असाता वदनिय कर्मका भागा आठ शेष कर्मोका दो दो भागा पूर्ववत् समझना।

उदिरे० सातमें आयुष्य और छे में आयुष्य मोहनीय वर्मके। सुक्ष्म० ५-६ कर्म उदिरे पाचमें आयुष्य मोहनिय वेदनिय वर्मके। यथाख्या० ५-२ दोय नाम गौत्र कर्मकि उदिरणा करे तथा अनुदिरणा भी है।

(२४) उवसपज्जाण-सामा० सामायिक सयमको छोडे तो० छदोपस्थापनिय सूक्ष्म सपराय सयमासयमि (श्रावक) तथा असयममें जाव । छदो० छदोपस्थापनियको छोडे तो० सामा० परि० सूक्ष्म० असयम, सयमासयममें आवे । परि० परिहार विशुद्धको छोडे तो छदो० असयम दो स्थानमें जाव । सुक्ष्म० सुक्ष्मसरा-छोडे तो सामा० छदो० यथा० असयममें जावे । यथा० यथाख्या तको छोडके सुक्ष्म० असयम और मोक्षमें जावे सर्व स्थान असयम कहा है वह सयममें कालकर देवतावों मेंजाते है उस अपेक्षा सम झना इतिद्वारम् ।

(२५) सज्ञा-सामा० छदो० परि० च्यारों सज्ञावाले होते है तथा सज्ञा रहित भी होते है शेष दोनों नो सज्ञा है ।

(२६) आहार=तपमक च्यार सयम आहारीक है यथाख्यात स्यात आहारीक स्यात् अनाहारीक (चौदवागुण०)

(२७) भव=सामा० छदो० परि० जघन्य एक उत्कृष्ट ८ भव करे अर्थात सात देवके और आठ मनुष्यके एव १५ भव कर मोक्ष जावे सूक्ष्म ज० एक उ० तीन भव करे । यथा० ज० एक उ० तीन तथा उसी भवमें मोक्ष जावे ।

(२८) आगरेस=पयर्म कितनीवार आते है ।

सयम नाम	एकमत्रा पेक्षा		बहुतमत्रापेग्पा	
	ज०	उ०	ज०	उ०
सामायिक०	१	प्रत्येक सौवार	२	प्रत्येक हजारवार
छे०ो०	४	प्रत्येक सौवार	२	साधिक नौसोवार
परिहार०	१	३ तीनवार	२	साधिक नौसोवार
सुक्ष०	१	च्यारवार	२	नौ वार
यथाख्यात	१	दोयवर	२	९ वार

(२९) स्थिति–सयम कितने काल रहे ।

सयम नाम	एकजीवापेक्षा		बहुत जीवापक्षा	
	ज०	उ०	ज०	उ०
समा०	एक समय	दशोनकाड पूर्व	शाश्वत	शाश्वत
छे०ो०	,,		२५० वर्ष	५० क्रो० सा०
परिहार०	,,	२९वर्षोनाको	दोसोवर्ष	देशोना कोड पूर्व
सुक्ष०	,,	अन्तरमहुर्त	अन्तरमहुर्त	अन्तर महुर्त
यथा०	,,	देशोनाक्रोडपूर्व	शाश्वते	शाश्वते

(३०) अन्तर–एक जोवापेक्षा पाचों सयमका अन्तर ज० अन्तर महुर्त उ० देशोना आदा पुद्गलपरावर्तन बहुत जीवापेक्षा सा० यथा० के अन्तर नहीं है । छेदो० ज० ६३००० वर्ष परिहार० ज० ८४००० वर्ष उत्कृष्ट अठारा क्रोडाक्रोड सागरोपम देशोना । सुक्ष्म० ज० एक समय उ० छेमास ।

आठ कर्मोंकी, बन्ध सात कर्मोंका, कारण अनान्तर समयवालोंके आयुष्यका बंध नहीं होता है। चौद प्रकृति वेदते है, शेष सात उदेशावोंमें, आठ कर्मोंकी सत्ता। सात तथा आठ कर्मोका बन्ध और चौदा प्रकृति वेदते है भावना प्रथमोदेशाकि माफीक इति ३३वा शतकका प्रथम अन्तर शतक समाप्तम्।

(२) कृष्णलेशी शतकके भी ११ उदेशा जिस्में २–४–६–८वा उदेशामें दश दश भेद जीसके आठ कर्मोकी सत्ता सात कर्मोंका बंध चौदा प्रकृति वेद और शेष सात उदशोंके वीस वीस भेद जिस्में आठ कर्मोंकि सत्ता, ७ सात तथा आठ कर्मोका बंध, चौदा प्रकृति वेद इति ३३–२।

(३) एवं निललेशीका इग्यारा उदेशा सयुक्त ३३–३

(४) एवं कापोतलेशीका इग्यारा उदेशा सयुक्त ३३–४

यह लेश्या सयुक्त च्यार अन्तर शतक समुच्चय काहा है इसी माफीक लेश्या सयुक्त च्यार शतक भव्य जीवोंका और च्यार शतक अभव्य जीवोंका भी समझना परन्तु अभव्य शतकमें प्रत्येक शतक उदेशा नौ नौ कहना कारण चरम अचरम उदेशा अभव्यमें नहीं होता है सर्व बाराहा अंतर शतकके १२४ उदेशा है जिस्में ४८ उदेशा अनान्तर समयके है जिस्में एकेन्द्रिय के दश दश बोल अपर्याप्ता होनेसे ४८–१०=४८० बोलोंमें आठ कर्मोंकि सत्ता, सात कर्मोंका बंध और चौदा प्रकृति वदते है शेष ७६ उदेशमें एकेन्द्रियके वीस वीस भेद होनेसे १५२०, बोलोंमें आठ कर्मोंकि सत्ता सात आठ कर्मोंका बंध,

(२१) समुद्घात—पाया० पहिलो० में कवली समु० वर्जके छे समु० पाव० परिहार० तीन अप मा सुय० समु० नहीं० यथा० एक कवली समुद्घात।

(२२) क्षेत्र० च्यार मदम लौकके असंख्यातमें भागमें होय। यथा० लौकके असंख्यात भागमें होय तथा सर्व लोकमें (केवली समु० अपेक्षा)।

(२३) स्पर्शना—जैसे क्षत्र है वैसे स्पर्शना भी होती है परन्तु यथाख्यातापेक्षा कुच्छ स्पर्शना अधिक भी होती है।

(२४) भाव—प्रथक च्यार मदम क्षयोपशम भावमें होय है और यथाख्यात। उपशम तथा क्षायक भावमें भी होता है।

(२५) परिमाण द्वार—सामा० वर्तमानापेक्षा स्यात् मीले स्यात् न मील अगर मीलेतों ज० १—२—३ उ० प्रत्येक हजार मीले। पूर्व तमावयापेक्षा नियम प्रत्यक हजार कोड़ मीले (एवं छेदो० वर्तमाना पेक्षा मीले तों १ २ ३ प्रत्येक सौ मीले। पूर्व पर्यायापेक्षा अगर मीलेतों ज० उ० प्रत्यक सौ व ड म ल। परि हार० वर्तमान अगर मीलेतों १ २ ३ प्रत्येक सौ। पूर्व पर्याय चोलेतों १—२—३ प्रत्यक हजार मीले। सुक्ष्म० वर्तमानापेक्षा मीलेतों १—२—३ उ० १६२ मीले जिसमें १०८ क्षपक श्रेणि और ५४ उपशम श्रेणि चढ़ते हुवे पूर्व पर्यायापेक्षा मीलेतों १ २ ३ उ० प्रत्येक सौ मीले। यथा० वर्तमान अगर मीले तो १-२ ३ उ० १६२। पूर्व पर्यायापेक्षा नियमा प्रत्येक सौ कोड़ मीले (कायी कि अपेक्षा।)

(२६) अल्पा बहुत्व।

वेद इति ३३वा शतकके अंतर शतक १२ और उदेशा १२४ इति तेतीसवा शतक समाप्त ।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नं० ११

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३४वा

(श्रेणिशतक)

इस आरापार संसारके अन्दर जीव अनादि कालसे एक स्थानसे दुसरे स्थानपर गमनागमन करते है एक स्थानसे दुसरे स्थानपर जानामें कितन समय लगते है यह इस थोकडा द्वारा बतलाया जायगा ।

(प्र) हे भगवान् । एकेन्द्रिय कितना प्रकारकि है ।

(उ) पृथ्व्यादि पांच स्थावर सुक्ष्म पांच स्थावर बादर इह दशोंका पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं एकेन्द्रियका २० भेद है ।

(१) रत्नप्रभा नरकके पूर्वका चरमान्तसे सुक्ष्म पृथ्वीकायके अपर्याप्ता जीव मरके, रत्नप्रभा नरकके पश्चमके चरमान्तमें सुक्ष्म पृथ्वीकायके अपर्याप्तापणे उत्पन्न होता है उसको रहस्तेमें १ २ ३ समय लगता है, इसका कारण यह है कि शास्त्रकारोंने सात प्रकारकि श्रेणि बतलाइ है यथा—(१) ऋजुश्रेणि (समश्रेणि) (२) एको बङ्का (३) दोवङ्का (४) एक कोनावाली (५) दोयकोनावाली (६) चक्रवाल (७) अर्द्धचक्रवाल । जिस्में जीव ऋजुश्रेणि करते हुवेको एक समय लागे एको बङ्का श्रेणी करनेसे दोय समया दो

-(१) स्तोक सूक्ष्म संपराय संयमवाले ।
(२) परिहार विशुद्ध संयमवाले सख्याते गुने ।
(३) यथाख्यात संयमवाले सख्यातगुने ।
(४) छेदोपस्थापिय संयमवाले सख्यात गुने ।
(५) सामायिक संयमवाले सख्यात गुने ।

सेव भंते सेव भंते तमेवसचम् ।

-थोकडा नंबर ७

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २५ उद्देशा ८

(प्र) हे भगवान् मनुष्य तीर्यंचसे मरके नरकमें उत्पन्न होने वाला जीव नरकमें कीस तेरहसे उत्पन्न होता है ।

(उ) हे गौत्तम—जेसे कोइ मनुष्य संपवाडासे भ्रष्ट हुवा पुन उस संपवाडाको मीलनेकि अभिलाषा करता हुवा, एवा ही अध्य वसायका तीन निमत योगोके करणसे आतुरतासे चलता हुवा पीछले स्थानका त्याग कर आगेके स्थानकि अभिलाषा करता हुवा उस संपवाडासे मीलके उसे स्वीकार कर विचरता है। इसी माफाक जीव मनुष्य तथा तीर्यंचके आयुष्य दलको क्षयकर शरीर त्यागकर परगतिमें गमन करते है उस समय बडे ही वेगसे अध्यवसायोंका निमत्त कारमण योगकि आतुरतासे शीघ्रता पूर्व चलता हुवा नरकके उत्पती स्थानको स्वीकार कर विचरता है ।

(प्र) हे भगवान् जेसे कोइ युवक पुरुष विज्ञानवंत हाथकि बाहु पसारे संकोच करे हाथकि मुठी खोले, बंध करे, आखको मीचे खोले, इतनी देर नरकमें उत्पन्न होते जीवको लागे ।

ग्झा श्रेणि करनेसे तीन समय लगता है। जहापर तीन समय लागे वहां भावना सर्वत्र समझना।

(१) रत्नप्रभा नरकके पूर्वका चरमान्तसे सूक्ष्म पृथ्वीकायका अपर्याप्ता मरके, रत्नप्रभा नरकके पश्चमका चरमान्तमे सूक्ष्म पृथ्वी कायक पर्याप्तापणे उत्पन्न होनेमें १ २ ३ समय रहस्तेमें लागे भावना पूर्ववत।

एव रत्नप्रमा नरकका पूर्वके चरमान्तसे सुक्ष्म पृथ्वी कायको अपर्याप्त जीव मरके रत्नप्रमा के पश्चमक बादर तेउकायका पर्याप्ता अपर्याप्त वर्जके शेष १८ बोलपणे उत्पन्न होनेवालोंको १—२—३ समय रहस्तेमें लागे। रत्नप्रमा के पूर्वके चरमान्तके एक सुक्ष्म पृथ्वी कायका अपर्याप्ताका १८ स्थानोंमें उत्पात कही है इसी माफीक बादर तेउकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता छोडके शेष १८ बोलोंका जीव, रत्नप्रमा नरकके पश्चमक चरमान्तक १८ बोलोपणे उत्पन्न हुवे जिस्कों रहस्तेमें १—२—३ समया लागे एव बोल ३२४ हुवे।

रत्नप्रमा नरकका पूर्वके चरमान्तसे १८ बोलोंक जीव मनुष्य लोकके बादर तेउकायक पर्याप्ता अपर्याप्तपणे उत्पन्न हो उसके ३ बोल तथा मनुष्य लोकके बादर तेउकायके पर्याप्त पर्याप्त मरके रत्नप्रभाक पश्चमके चरमान्तमें १८ अठारा बोलपणे उत्पन्न हो जिसके ३६ बोल मनुष्य लोकके बादर तेउकायके पर्याप्ता अपर्याप्त मरक मनुष्य लोकके बादर तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता पणे उत्पन्न हुवे उसका च्यार बोल इस ७६ बोलमें रहस्ते चलते जीवोंको १—२—३ समय लागे एव ३२४—७६ मीलाके ४०० बोल हुवे

(उ) नहीं गौतमी नारकिकों नरकमें उत्पन्न होनेमें १-२-३ समय लगता है।

(प्र) परभवको आयुष्य कौस कारणसे बान्धता है।

(उ) अध्यवसायोंके निमित कारण हेतु और योगोंकि प्रेरणासे जीव परभवका आयुष्य बान्धता है।

(प्र) यह जीव गतिकी प्रवृति क्यों करता है।

(उ) पूर्व भवमें जीस जीवोंने—

(१) भवक्षय=मनुष्य तथा तीर्यचका भव

(२) स्थितिक्षय=जीवन पर्यंत स्थिति

(३) आयुष्यक्षय=परभवसे गति प्रारंभ समयसे अगर विग्रह गति भी करी हो तों उस आयुष्यमें गीनी जाती है इस तीनोंका क्षय होनेस जीव परभव सबंधी गतिके अन्दर प्रवृति करता है।

(प्र) जीव नरकमें उत्पन्न होता है। वह अपने आत्म ऋद्धि (अनुपुर्वादि) से या पर ऋद्धिसे नरकमें उत्पन्न होता है।

(उ) स्वाभाविक ऋद्धिसे उत्पन्न होता है। एवं अपने कर्मोंस अपने प्रयोगोंसे नरकमें उत्पन्न होता है।

जेसे नरकाधिकार कहा है ,सो माफीक २४ दंडक परन्तु एकेन्द्रियमें गतिके समय १-२-३-४ समझना। इति २५-८

(२) इसी माफीक भव सिद्धि जीवाका २५-९

(३) ,, ,, अभव्य ,, ,, २५-१०

(४) ,, ,, सम्यग्द्रष्टी ,, २५-११

(५) ,, ,, मिथ्यद्रीष्टी ,, २५-१२

सेव भंते सेव भंते तमेवसचम्।

रत्नप्रभा नरकके पूर्वके चरमान्तसे मरके पश्चमके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे जीवके ४०० भागा कहा है इसी माफिक पश्चमके चरमान्तसे मरके पूर्वके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे जीवके भी ४०० भागा। एवं दक्षिणके चरमान्तसे मरके उत्तरके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे जीवके ४०० भागा। उत्तरके चरमान्तसे मरके दक्षिणके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे जीवका भी ४०० भागा एवं च्यारों दिशावोंके १६०० भागे होते है। भावना पूर्ववत् समझना।

जेसे रत्नप्रभाके च्यारों दिशावोंका चरमान्तसे १६०० भाग किया है इसी माफीक शार्कर प्रभाका भी १६०० भागा करना परन्तु बादर तेउकायके जीव मनुष्य लोकसे मरके शार्कर प्रभाके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे तथा शार्कर प्रभाके चरमान्तसे मरके मनुष्य लोकमें उत्पन्न हुवे जीवके रहस्तेमें २--३ समय लागे कारण शार्करप्रभा नरक अढाई राजके विस्तारवाली है वास्ते पहले समय समश्रेणिकर त्रसनालीमें आवेगा। दुसरे समय समश्रेणिकर मनुष्य लोकमें आवे अगर विग्रह करे तो तीन समय भी लागे शेषाधिकार रत्नप्रभावत् समझना १६०० भागा शार्कर प्रभाका

एवं बालुका प्रभाका भी १६०० भागा
एवं पङ्क प्रभाका भी १६०० भागा
एवं धूमप्रभाका भी १६०० भागा
एवं तमप्रभाका भी १६०० भागा
एवं तमतमा प्रभाका भी १६०० भागा
नोट सातों नरकके चरमान्तमें बादर तेउकायके पर्याप्ता अप

थोकडा नम्बर ८

श्री भगवती सूत्र शतक ३१

(खुल्लक युम्मा)

आगेके शतकोंमें महायुम्मा बतलाये जावेंगा। उस महायुम्माकि अपेक्षा यह लघु युम्मा है।

(प्र) हे भगवान ! खुल्लक (लघु) युम्मा कितने प्रकारके है।।

(उ) है गौतम ! लघु युम्मा च्यार प्रकारके है—यथा—कडयुम्मा तेउगायुम्मा दावरयुम्मा कलयुगा युम्मा।

(१) कडयुम्मा—जीव रासीके अन्दरसे च्यार च्यार गीनने पर शेष च्यार रूप रहे जाते हो उसे कडयुम्मा कहते है (२) शेष तीन रह जाते हो उसे तेउगायुम्मा (३) शेष दोय रूप बढ जानसे दावर युम्मा (४) शेष एक रूप बढ जानेसे कलयुगा युम्मा कहते है।

(प्र०) खुल्लक कडयुम्मा नारकी कहासे आयके उत्पन्न होते है (उ) पाच सन्नी पाच असन्नी तीर्यच तथा सख्याते वर्षके सन्नी मनुष्य एवं ११ स्थानोंसे आक उत्पन्न होते है।

(प्र) एक समयमें कितने जीव उत्पन्न होते है।

(उ) ४–८–१२–१६ एवं च्यार च्यार अधिक गीनन यावत् सख्याते असख्याते जीव नारकिमें उत्पन्न होत है।

(प्र) वह जीव कीस रीतिसे उत्पन्न होते है ?

(उ) थोकडा न० ७ में लिखा माफिक यावत् अध्यवसायके निमत्त योगोंका कारणसे शीघ्रता पूर्वक अपनी रूचि

र्याप्त नहीं है वास्ते मनुष्य लोकके बादर तेउकायके पर्याप्ता अप र्याप्ताका गमनागमन ग्रहण किया है दुजी नारकसे सातवी नरक तकके चरमान्तसे मनुष्य लोकसे गमनागमनमें २–३–समय सम मना शेष मागमें १–२–३ समय समझना सातों नरकके ११२८० मागा होते है।

इस असंख्याते कोडोनकोड विस्तारवाला लोकके दोय विभाग है (१) त्रसनाली उचापणेमें चौदा राज गोल एकराज परि माण जीस्में त्रस जीव तथा स्थावर जीव है (२) स्थावरनाली जो त्रसनालीके बाहार जहातक अलोक नआवे वहातक उसके अन्दर केवल स्थावर जीव है।

अधोलोकके स्थावर नाळीसे सुक्ष्म पृथ्वी कायका अपर्याप्ता जीव मरके। उर्ध्व लोकके स्थावर नालीक सुक्ष्म पृथ्वी कायके अपर्याप्तापणे उत्पन्न हो उस्में रहस्ते चउर्तोको स्यात ३ समया स्यात् ४ समया लागे कारण प्रथम समय स्थावर नालीसे त्रसना लीमें आवे दुसरे समय उर्ध्व लोकमें जाव तीसर समय उर्ध्व लोकाक स्थावर नालीमें जाके उत्पन्न हुव अगर विग्रह करे तों च्यार समय भी लग जाते है। एव पहलेकि माफीक अधोलोकिक स्थावरनालीसे १८ बोलोका जीव मरके उर्ध्व लोकके स्थावर नालीमें अठारा बोलोमें उत्पन्न होतों ३–४ समय लगे एव ३२४ बोल हुवा। मनुष्य लोकके बादर तेउ उर्ध्व लोककि स्थावरनालीक १८ बोलो पणे उत्पन्न हुव तो २–३ समय लागे कारण स्थावर नालीमें एक दफे ही जाना पडे। एव १८ [illegible] मनुष्य लोकके तेउकाय पणे उत्पन्न होनमें [illegible] एव ७२ तथा

प्रयोगसे उत्पन्न होते है। इसी माफीक सातों नरकेसमझना परन्तु आगतिको स्थान इस माफ की है।

(१) रत्नप्रभाके आगतिके स्थान ११ है
(२) शार्कर प्रभाके ,, ,, ६ असज्ञी तीर्यंच वर्ज
(३) बालुका प्रभाके ,, ,, ५ भुजपर वर्ज
(४) पङ्कप्रभाके ,, ,, ४ खेचर वर्ज
(५) धूमप्रभाके ,, ,, ३ स्थलचर वर्ज
(६) तमप्रभाके ,, ,, २ उरपुर वर्ज
(७) तमतमाके ,, ,, २ पूर्ववत् स्त्रि वर्ज

एव तेयुगा युग्मा परन्तु परिमाण ३–७–११–१५ स० अ०
एव दावर युग्मा ,, ,, २–६–१०–१४ ,, ,,
एव कलुगा ,, ,, ,, १–५–९–१३ ,, ,,

यह ओघ (सामान्य) सूत्र हुवा अब विशेष कहते है कि कृष्णलेशी नारकी पाचवी, छठी, सातवी, पूर्वोक्त च्यार युग्म तीनों नरकपर लगा देना एव निललेशी परन्तु नरक, तीजी चोथी और पाचवी शेष ओघवत् एव कापोत लेशी परन्तु नरक पहली दुसरी तीसरी शेष ओघवत् एक समुच्चय और तीन लेश्याके तीन एव च्यार उदेशा हुव इसको ओघ उदेशा कहते है इति च्यार उदेशा।

४ एव भव्य सिद्धि जीवोंका भी लेश्या सयुक्त च्यार उदेशा। एव अभव्य जीवोंका भी लेश्या सयुक्त च्यार उदेशा। एव सम्यग्द्रष्टी जीवोंका भी लेश्या सयुक्त च्यार उदेशा, परन्तु कृष्णा लेश्या धिकारे सातवी नरकमें सम्यग्द्रष्टी जीवोंकि उत्पात निषेद है।

मनुष्य लोकका बादर तेउ कायके पर्याप्ता पर्याप्ता मनुष्य लोकमें होतो १–२–३ समय लागे कुल पूर्ववत् ४०० भाग इसी माफीक उत्पन्न उर्ध्व लोककि स्थावर नालीके जीव मरके अधोलोककि स्थावर नालीमें उत्पन्न हुव जीस्का भी पूर्ववत् ४०० भाग हुव यहा तक ११२००–४००–४००–१२००० भाग हुव।

लोकके चरमान्तमें पाच सुक्ष्म स्थावरके पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं १० तथा बादर वायुकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता मीलाके १२ बोल पावे।

लोकके पूर्वके चरमान्तरसे सुक्ष्म पृथ्वी कायका अपर्याप्त मरके लोकके पूर्वके चरमान्तमें सुक्ष्म पृथ्वी कायके अपर्याप्तपणे उत्पन्न होतो विग्रह गतिका १–२–३–४ समय लागे। कारण समश्रेणि एक समय, एक वक्र श्रेणि दो समय, दो वक्र श्रेणि तीन समय (पूर्ववत्) जो अलोकके पूर्वके चरमान्तसे प्रथम समय समश्रेणिकर त्रसनालीय आवे दूसरे समय उर्ध्वलोकमें जावे तीसरे समय उर्ध्वलोकके पूर्वके चरमान्तम आवे परन्तु वह अलोकके प्रदेशो कि विषमता हो तों चोथे समय उत्पन्न स्थानपर जा उत्पन्न होवे वास्ते च्यार समय तक भी लागे। एवं बारहा बोलों पणे उत्पन्न हो तों १–२–३–४ समय लागे बोल १४४ हुवा।

१४४ पूर्व चरमान्तसे पूर्वके चरमान्तका वि० १–२–३–४
" " " दक्षिण " "
" " " पश्चिम " "
" " " उत्तर " "
" दक्षिण चरमान्तसे पूर्व चरमान्तका "

एव मिथ्यादृष्टी जीवोंका लेश्या सयुक्त च्यार उदेशा एवं कृष्ण पक्षी जीवोंका लेश्या सयुक्त च्यार उदेशा। एव शुक्ल पक्षी जीवोंका लेश्या सयुक्त च्यार उदेशा। एव सर्व मीलानेसे २८ उदेशा होते है। इति

सेव भते सेवं भते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३२ वां

(उदेशा अठावीस)

खुल्लक युग्मा च्यार प्रकारके है। कडयुग्मा, तेउगायुग्मा दावर युग्मा, कलउगा युग्मा परिमाण सज्ञा पूर्ववत्।

(प्र) खुलक युग्मा नारकि अ तरे रहित निकलके कितने स्थानोंमें उत्पन्न होते है? (उ) पाच सज्ञी तीर्यच और एक सख्याते वर्षवाले कर्मभूमि मनुष्यमें उत्पन्न होते है। परिमाण एक समय ४-८-१२-१६ यावत सख्याते असख्याते निकलते है। अध्यव सायके निमत योगोंका कारण पूर्ववत्। स्वकर्म ऋद्धि और प्रयोगसे निकलते है। एव शार्करप्रभा वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा समझना इस छे ओ नरकके निकले हुवे जीव पूर्वो छे छे स्थानमें जाते है और सातवी नरकसे निकले हुवे मनुष्य नहीं होते है केवल पाच प्रकारके तीर्यचमें ही उत्पन्न होते है शेष अधिकार पूर्ववत् समझना।

एव तेउगा दावर युग्मा कलउगा परिमाण पूर्ववत् कहने शतक ३१ वा माफीक।

१४४ ,, ,, ,, दक्षिण ,, ,,
१४४ ,, ,, ,, पश्चिम ,, ,,
१४८ ,, ,, ,, उत्तर ,, ,,
१४४ पश्चिम ,, ,, पूर्व ,, ,,
१४४ ,, ,, ,, दक्षिण ,, ,,
१४४ ,, ,, ,, पश्चिम ,, ,,
१४८ ,, ,, ,, उत्तर ,, ,,
१४४ उत्तर ,, ,, पूर्व ,, ,,
१४४ ,, ,, ,, दक्षिण ,, ,,
१४४ ,, ,, ,, पश्चिम ,, ,,
१४४ ,, ,, ,, उत्तर ,, ,,

एव १८४ को १६ गुणा करनेसे २३०४ भागा होते है तथा १२००० पूर्वक मोक्षानसे यहातक १४३०८ भागा हुव ।

पांच स्थावरके २० भेदों कि समुद्घात उत्थान और स्थान देखो शीघ्रबोध भाग १२ वा स्थानपदका थोकडेसे देखो ।

एकेन्द्रियके २० भेद है जिनके आठ कर्मोंके सत्ता, बन्ध और आठ कर्मोंकी और चौदा प्रकृतियो वदते है । एकेन्द्रियकि आगति ७८ स्थानकि है ८६ तीर्यंच, तीन मनुष्य, पच्चीस देवता एकेन्द्रियके च्यार समुद्घात क्रम सर है ।

एकेन्द्रिय च्यार प्रकारके है ।

(१) समनिर्वर्ति सम कर्मवाले ।

(२) समनिर्वर्ति विषम कर्मवाले ।

...नि सम कर्मवाले ।

यह ओघ उदेशा हुवा इसी माफीक कृष्ण लेश्याका उदेशा एव निल लेश्याका उदेशा, एव कापोत लेश्याका उदेशा यह च्यार उदेशाको शास्त्रकारोंने ओघ उदेशा कहा है ।

एव च्यार उदेशा भव सिद्धि जीवोंका ।

„ „ „ अभव सिद्धि जीवोंका

„ „ „ सम्यग्द्रष्टी जीवोंका, परंतु कृष्ण लेश्याके उदेशे सातवीं नरकसे सम्यग्द्रष्टी जीव नहीं निकलते हैं ।

एव च्यार उदेशा मिथ्याद्रष्टी जीवोंका

„ „ „ कृष्ण पक्षी जीवोंका

„ „ „ शुक्ल पक्षी जीवोंका

एव सर्व मीलके २८ उदेशा

जेसे ३१ वा, शतकमें उत्पन्न होनेके २८ उद्देशा कहा था इसी माफीक इस ३२ वा शतकमें २८ उदेशा नरकसे निकलनेका कहा है ।

सर्वज्ञ भगवानने अपने केवल ज्ञानसे नारकिको कृतयुग्मा आदिसे उत्पन्न होते हुवे को देखा है एसी परूपना करी है एक कडयुग्मा आदि युग्मा पणे अपना जीव अनन्तीवार उत्पन्न हुवा है इस समय सम्यक् ज्ञान आराधन करलेनेसे फोरसे उस स्थानमें इस युग्मा द्वार उत्पन्न हो न होना पडे एसी प्रज्ञा इस थोकडाके अन्दर सदैव रखनी चाहिये इति ।

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

---

(४) विषम स्थिति और विषय कर्मवाले ।
ऐसा होनका क्या कारण है सो बतलाते है ।
(१) सम आयुष्य और साथमें उत्पन्न हुवा ।
(२) सम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुव ।
(३) विषम आयुष्य और साथमें उत्पन्न हुवा ।
(४) विषम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुवा ।

इति चोवीसवा शतकका प्रथम उद्देशा समाप्त ।

(२) अनन्तर उत्पन्न हुवा एकेन्द्रियके दश भेद है। पृथ्व्यादि पांच सूक्ष्मस्थावर पांच बादरस्थावर इन्ही दशोंके अपर्याप्ता है कारण प्रथम समयके उत्पन्न हुवे पर्याप्ता नही होते है । प्रथम समयके उत्पन्न हुवा मरके अन्य गतिमें भी नही जाते है ।

समुद्घात उत्पात और स्थानकों दाखे स्थानपद ।

दश भेदोंने आठों कर्मकि सत्ता है । बन्ध आयुष्यवर्जके सात कर्मोंका है चौदा प्रकृति वेदते है । उत्पात ७४ स्थानसे समुद्घात दोय वर्दानि वपाय । अनन्तरसमयके उत्पन्न हुवा एकेन्द्रि दोय प्रकारके होते है (१) समस्थिति समकर्मवाला (२) समस्थिति विषम कर्मवाला । इति ३४-२

एव अनन्तर अवगाह्या अनन्तर आहारिक और अनन्तर पर्याप्ता, यह च्यार उद्देशा सादृश है ।

१४३०४ परस्पर उत्पन्न होनेका उद्देशो	मनुष्यवत्	
१४३०४ परस्पर अवगाह्या	,,	,,
१४३०४ परस्पर आहारिक	,,	,,
१४३०४ परस्पर पर्याप्ता	,,	,,

थोकडा नम्बर १०
श्री भगवतीजी सूत्र शतक ३३वां
(एकेन्द्रिय शतक)

(प्र) हे भगवान् ! एकेन्द्रिय कितने प्रकारके है ।

(उ) हे गौतम ! एकेन्द्रिय वीस प्रकारके है यथा पृथ्वीकाय सुक्ष्म, बादर, एकेकके पर्याप्ता, अपर्याप्त, एवं अपकायके च्यार तउकायके च्यार, वायुकायके च्यार, वनास्पतिकायके च्यार सर्व २० भेद होते है ।

(प्र) वीस भेदसे प्रत्येक भेदके कर्म प्रकृति (सतास्प) कितनी है ।

(उ) प्रत्येक भेदवाले जीवोंक कर्म प्रकृति आठ आठ है यथा ज्ञानावर्णिय, दर्शनावर्णिय, वदनिय, मोहनिय, आयुष्य, नाम, गौत्र और अतराय कर्म ।

(प्र) प्रत्येक भेदवाले जीवोंके कितने कर्मोका बंध है ।

(उ) सात कर्म (आयुष्य वर्जके) तथा आठ कर्म बांधे ।

(प्र) कितनी कर्म प्रकृतिको वेदे ।

(उ) आठ कर्म तथा श्रोतेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, पुरुष वेद, स्त्री वद, इम १४ प्रकृतिको वेदते है । च्यार इन्द्रिय और दोय वद एकेन्द्रियके न होनेसे इस बातका दुःख वेदते है यह बात अध्यावसायापेक्षा है केवली केवल ज्ञानसे देखा है । इति ३३वा शतकका प्रथम उद्देशा समाप्त ।

(प्र) अनान्तर उत्पन्न हुवे एकेन्द्रिय कितने प्रकारके है ।

१४३०४ चरम उदेशो " "
१४३०४ अचरम उदेशो " "
इस ओर (समुचय) शतकके इग्यारा उदेशाके सर्व भागा
०१२८ होते है इसी माफीक—
१००१२८ कृष्णलेशी शतकके ११ उदेशा
१००१२८ निललेशी शतकके ११ उदेशा
१००१२८ कापोतलेशी शतकके ११ उदेशा
१००१२८ समुचय भ प सबंधी ११ उदेशा
१००१२८ भ प कृष्णलेशी शतक उदेशा ११
१००१२८ भ प निललेशी " " "
१००१२८ भ प कापोतलेशी " " "

अभ प जीवोंका भी लेश्या संयुक्त च्यार शतक है परन्तु अभ.पमें चरम अचरम उदेशोंको छोड शेष प्रत्येक शतकक नौ नौ शा कहना। जिस्मे च्यार उदशा तों अनान्तर समयके होनेसे भागा नही होते है शेष पाच उदेशावोंके प्रत्येक उदेशे १४३०४ भागोंके हीसाबसे ७१५२० भागे एक शतकके होते है एवं च्यार शतकके २८६०८० भागे होते हैं।

पहलेके आठ शतकके ८०१०२४ भागा मीलानेसे १०८७१०४ भागा श्रेणिशतकके होते है।

इति चौतीसवा मूल शतकके बारहा अ तर शतकका १२४ उदेशा।

सेवं भंते सेवं भंते तमेवसचम्।
समाप्तं चौतीसवा शतक।

(उ) पृथ्व्यादि पाच सुक्ष्म पाच बादर एव दशोंका अपर्याप्ता कारण अनान्तर अर्थात् प्रथम समयके उत्पन्न जीवोंमें पर्याप्ता नहीं होते है इस लिये यहा दश मेद गीना गया है ।

इस दश प्रकारके जीवोंके आठ कर्मोंकि सत्ता है बन्ध सात कर्मका है क्योंकि अनान्तर समयके जीव आयुष्य कर्म नहीं बाधते है और पूर्वोक्त चौदा प्रकृतिकों वेदते है । भावना पूर्ववत इति ३३ वा शतकका दुसरा उदेशा हुवा ।

(३) परम्पर उदशो– परम्पर उत्पन्न हुवा एकेन्द्रियका २० भेद है जिस्के आठों कर्मोंकि सता, सात आठ कर्मोंका बन्ध चौदा प्रकृति वेदे इति ३३–३ ।

(४) अनान्तर अवगाह्या एकेन्द्रिय पृथ्व्यादि पाच सुक्ष्म पाच बादरके अपर्येप्ता एव १० प्रकारके है सत्ता आठ कर्मोंकि बन्ध सात कर्मोंका चौदा प्रकृति वेदे इति ३३–४ ।

(५) परम्पर अवगाह्या एकेन्द्रियके वीस भेद है सत्ता आठ कर्मोंकि, बन्ध सात आठ कर्मोंका चौदा प्रकृति वेदते है । ३३ ५

(६) अनान्तर आहारिक उदेशा दुसरे उदेशाके माफक ३३ ६
(७) परम्पर आहारीक „ तीसरा „ „ ३३–७
(८) अनान्तर पर्याप्ता „ दुसरे „ „ ३३–८
(९) परम्पर पर्याप्ता „ तीसरे „ „ ३३–९
(१०) चरम उदेशा दुसरे „ „ ३३ १०
(११) अचरम उदेशा – दुसरे „ „ ३३ ११

इस ग्यारा उदेशावोंमें च्यार उदेशा २–४–६–८वामें सात

थोकडा नम्बर १२

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३५ वा

(महायुम्मा)

प्रथम ३१-३२ शतकमें खुल्लक=छुद्र युम्मा कहा था उसकि अपेक्षासे यहा महायुम्मा कहा है ।

(प्र०) हे भगवान् ! महायुम्मा कितने प्रकारके है ?

(उ०) हे गौतम ! महायुम्मा शोला प्रकारका है—यथा—

(१) कडयुम्मा कडयुम्मा जेसे १६-३२ स० अस० अन०
(२) ,, तेउगा ,, १९-३५ स० अस० अ०
(३) ,, दावरयुम्मा ,, १८-३४ ,, ,, ,,
(४) ,, कलयुगा ,, १७-३३ ,, ,, ,,
(५) तेउगा कडयुम्मा ,, १२-२८ ,, ,, ,,
(६) ,, तेउगा ,, १५-३१ ,, ,, ,,
(७) ,, दावर० ,, १४-३० ,, ,, ,,
(८) ,, कलयुगा ,, १३-२९ ,, ,, ,,
(९) दावर० कडयुम्मा ,, ८-२४ ,, ,, ,,
(१०) ,, तेउगा ,, ११-२७ ,, ,, ,,
(११) ,, दावर० ,, १०-२६ ,, ,, ,,
(१२) ,, कलयुगा ,, ९-२५ ,, ,, ,,
(१३) कलयुगा कडयुम्मा ,, ४-२० ,, ,, ,,
(१४) ,, तेउगा ७-२३ ,, ,, ,,
(१५) ,, दावर० ६-२२ ,, ,, ,,
(१६) ,, कलयुगा ५-२१ ,, ,, ,,

जेसे एकेन्द्रियके अन्दर कुडयुम्मा कडयुम्मे उत्पन्न होते है
हे एक समय १६-३२-४८-६४ एव शोला शोला वृद्धि
करों यावत् सख्याते असख्याते अनंते उत्पन्न होते है वह सब
शोला शोलाके हिसाबसे उत्पन्न होते है इसी माफीक ११ युम्माके
रख रखा है इस्मे उपर शोला शोलाकि वृद्धि करना।

इस शतकमें एकेन्द्रिय महायुम्मा शतकका अधिकर बतलाया
प्रत्येक युम्मोपर बत्तीस बत्तीस द्वार उतारे जावेगा।

हे भगवान् कडयुम्मा कडयुम्मा एकेन्द्रिय कहांसे आके
उत्पन्न होते है इसी माफीक अपने अपने द्वारके प्रथम कडयुम्मा
कडयुम्मा एकेन्द्रिय सब द्वारोंके साथ बोलना।

(१) उत्पात-७४ स्थानोंसे आके उत्पन्न होते है।

(२) परिमाण-१६-३२-४८ सख्या० अस० अनन्ते।

(३) अपहरण-प्रत्येक समय एकेक जीव निकाले तो अनन्ती
सर्पिणि उत्सर्पिणि पूर्ण होजाय इतना जीव है।

(४) अवगाहना-ज० अगु० अस० भाग० उ० साधिक
१००० जोजन।

(५) बन्ध सातों कर्मोके बन्धवाले जीव बहुत और आयुष्य
कर्मके बन्ध तथा अबन्धवाले भी बहुत है।

(६) वेदे-आठों कर्मोके वेदनेवाला बहुत असाता तथा असाता
वेदनेवाला भी बहुत है।

(७) उदय-आठों कर्मोके उदयवाला बहुत।

(८) उदिरणा-छे कर्मोके उदिरणावाला बहुत आयुष्य और

(४) बन्ध=वेदनिय कर्मके बन्धक बहुत० शेष सातों कर्मोंका बन्धक भी घणा अबन्धक भी घणा ।

(५) उदय-सात कर्मोंके उदयवाला घणा० मोहनिय कर्मके उदयवाले घणा तथा अनोदयवाला भी घणा ।

(६) उदिरणा,=नाम गौत्र कर्मोंके उदिरक घणा, शेष छे कर्मोंका उदिरक तथा अनुदिरक भी घणा ।

(७) वेदे-सात कर्मोंका वेदका घणा, मोहनिय कर्मका वेदका अनवेदका भी घणा ।

(८) अवगाहाना उ० १००० जोजनकि ।

(९) लेश्या-कृष्ण यावत् शुक्ल लेश्यावाले भी घणा

(१०) दृष्टी-सम्य० मिथ्य मिश्र० ,,

(११) ज्ञान-ज्ञानी अज्ञानी दोनों भी ,,

(१२) योग-मन वचन कायवाले ,,

(१३) उपयोग-साकार अनाकारवाले ,,

(१४) वर्णादि-एकेन्द्रिय माफीक

(१५) उश्वासगा ,, ,,

(१६) आहार ,, ,,

(१७) व्रति=व्रति अव्रति व्रताव्रति ,,

(१८) क्रिया-सक्रिय घणा ,,

(१९) बन्ध ७-८-६-१ कर्मोंके बन्धने वाले,,

(२०) सज्ञा, च्यारों सज्ञावाले तथानो सज्ञा ,,

(२१) कषाय, च्यारों कषायवाले तथा अकषाय,,

(२२) वेद=तीनोंवेद तथा अवेदी

(९) लेश्या–कृष्ण निल कापोत तेजोलेश्यावाले बहुत।

(१०) दृष्टी–मिथ्यादृष्टी जीव बहुत है।

(११) ज्ञान नहीं, अज्ञानी जीव बहुत है।

(१२) योग–कायाके योगवाले बहुत है।

(१३) उपयोग–साकार अनाकार उप०वाले बहुत।

(१४) वर्णादि–जीवापक्षा वर्णादि० नहीं है,शरीरापक्षा वर्णादि

(१५) उश्वासगा–उश्वास नि० नोउश्वा० नि० के बहुत है।

(१६) आहार–आहारीक अनाहारीक बहुत है।

(१७) व्रती–सर्व जीव अव्रती है।

(१८) क्रिया–सर्व जीव सक्रिया है।

(१९) बन्ध–सातकर्म बन्धनेवाले बहुत आठ० बहुत है।

(२०) सज्ञा–च्यारों सज्ञावाले बहुत बहुत है।

(२१) कषाय–च्यारों कषायवाले " "

(२२) वद–नपूसक वदवाले बहुत।

(२३) बन्धक–तीनों वदके बन्धक बहुत बहुत है।

(२४) सज्ञी–सर्व जीव असज्ञी है।

(२५) इन्द्रिय–सर्व जीव इन्द्रिय सहित है।

(२६) अनुबन्ध–ज० एक समयं उ० अनन्तेकाल

---

१ तीर्यचके ४६ मनुष्यके ३ देवतोंके २५ एवं ७४ देवे
हकेन्द्रियकि आगति–

१ एक समय जीवकि स्थिति अनुबन्ध नही किन्तु महायुम्म
कि रास रहने अपक्षा है कारण जीव समय समय उत्पन्न होते है
चवन भी है।

(२३) बन्धक,—तीनों वेदके बन्धक तथा अबन्धक भी
(२४) सज्ञी—असज्ञी नहीं, सज्ञी बहुत है ।
(२५ इन्द्रिय, अनेंद्रिय नही सेन्द्रिहृ बहुत ।
(२६) अनुबन्ध ज०एकसमय उ प्रत्यक सौसागरोपम साधिक
(२७) समहो—जेसे गमाजीक थोकड लिखा है ।
(२८) आहार नियमा छ दिशका २८८ बोलका
(२९) स्थिति ज० एक समय उ० तेतीस सागरो०
(३०) समुद्घात केवली वर्जके छे वाले घणा ।
(३१) म ण दोनों प्रकारसे मरे । स० अ०
(३२) चवन—चवक सर्व स्थानमें जावे ।

(प्र) हे वरूणा सिधु । सर्व प्राणभूतजी वसत्व कडयुम्मा कडयुम्मा सज्ञी पाचेन्द्रियपणे उत्पन्न हुवा है ।

(उ) हे गौतम सर्व प्राणभूत जीव सत्व कड० कड० सज्ञी पाचेन्द्रियपणे पूर्वे एकवार नहीं किन्तु अनन्ती अनन्ती वार उत्पन्न हुवा है । कारण जीव अनादि कालसे ससारमें परिभ्रमण कर रहा है ।

इसी माफीक शेष १५ महायुम्मा भी समझ लेना परन्तु परिमाण अपना अपना कहना । इति ४० शतक प्रथम उद्देशा ।

(२) प्रथम समयके सज्ञी पाचेन्द्रिय कडयुम्मा कहासे उत्पन्न होते है इत्यादि ३२ द्वार ।

(१) उत्पात—पूर्ववतवत (२) परिमाण पूर्ववत् (३) अप० हरण पूर्ववत् (४) अवगाहाना ज० उ० अगुलके असख्यातमें, भाग

(१७) समदृो–देखो गम्राका थोकडा पृथ्वी अधिकार ।

(२८) आहार–व्याघातापेक्षा स्यात ३–४–५ दिशा निर्व्या-घातापेक्षा नियमा छेवों दिशाका आहार लेवे ।

(२९) स्थिति–ज० एक समय (महा युम्मा रहेनेकि अपेक्षा) उत्कृष्ट २२००० वर्षकि

(३०) समुद्‌घात–प्रथमकि च्यारोंवाले बहुत २

(३१) मरण–समोहिय असमोहियके बहुत २

(३२) चवन–मरके ४९ स्थान ४६–१में जाते है ।

(प्र०) हे भगवान् । सर्व प्राणभूत जीव सत्व कडयुम्मा कड-युम्मा एकेन्द्रियपणे पूर्वे उत्पन्न हुवा है ।

(उ०) हे गौतम–एक वार नहीं किन्तु अनन्तीवार उत्पन्न हुवे है ।

यह ३२ द्वार कडयुम्मा कडयुम्मापर उत्तारे गये है इसी माफीक १६ महायुम्मा पर उत्तार देना परन्तु परिमाण द्वारमें पूर्व बतलाये हुवे परिमाण कहना च हिये इति ३५–१

(२) प्रथम समयके कडयुम्मा २ कि पृच्छा १

(उ०) प्रथम उद्देशा कि माफीक ३२ द्वार कहना परन्तु प्रथम समयके उत्पन्न हुआ जीवोंमें नाणता दश है यथा ।

(१) अवगाहना ज० उ० अगु० असं० भाग ।

(२) आयुष्य कर्मका अबन्धक है

(३) आयुष्य कर्मके अनुदिरक है

(४) उश्वास निश्वासगा नहीं है

(५) बन्ध आयुष्य कर्मका अबन्ध शेष पूर्ववत् (६) वेदे आठों-कर्मोका वेदका है (७) उदय आठों कर्मोका (८) उदिरणा आयुष्य कर्मका अनुदिरक वेदनिय कर्मकि भजना शेष छे कर्मोका उदिरक अनुदिरक। (९) लेश्या छेवों (१०) दृष्टी दोय सम्य० मिथ्या० (११) ज्ञानाज्ञान दोनों (१२) योग–कायाको (१३) उपयोग दोनों (१४) वर्णादि, एकेन्द्रियवत। (१५) उश्वासग, नो उश्व० नो निश्वा० (१६) आहारीक (१७) अव्रती है (१८) क्रिया सक्रिय है (१९) बन्ध–सात बन्धगा (२०) सज्ञा=च्यारों (२१) कषाय=च्यारों (२२) वेद=तीनों(२३) बन्धक=अबन्धक (२४) संज्ञी है।(२५) इन्द्रिय=वेन्द्रिय है (२६) अनुबंध ज० उ० एक समय (२७) सम्बन्ध नहीं गमावत (२८) आहार नियमा छे दिशाका (२९) स्थिति ज० उ० एक समय (३०) समुद्घात=शेष वेदनिय० कषाय० (३१) मरण नहीं (३२) चवन नहीं। एव १६ महायुग्मा परन्तु परिमाण अपना अपना रहना सर्व प्र णभूत जीव सत्व प्रथम समयके कड० कड० सज्ञा पांचेन्द्रियपणे अनन्ती वार उत्पन्न हुवा है भावना पूर्ववत् शत ४०–२ सम तम्।

(३) अप्रथम समयका उदेशा (४) चरम समयका उदेशा (५) अचरम समयका उदेशा (६) प्रथम प्रथम समयका उदशा(७) प्रथम अप्रथम समयका उ० (८) प्रथम चरम समयका उ० (९) प्रथम अचरम समयका उ० (१०) चरम चरम समयका० (११) चरम अचरम समयका उदेशा इस इग्यारा उदेशावोंमें पहला, तीसरा और पाचमा यह तीन उदेशा सादश है। शेष आठ उदेशा सादश है। इति कालीमय शतकके इग्यारा उदेशोंसे प्रथम अन्तर शतक समाप्त हुआ।

(५) सात कर्मोका बंधक है किन्तु आठका नही ।

(६) अनुबंध ज० उ० एक समयका है ।

(७) स्थिति ज० उम एक समय कि (रासी कि)

(८) सद्दुद्वार–वदनि और कषाय ।

(९) मरण–कोइ प्रकारका नही है

(१०) चवन–चवन हो अन्यस्थान नही जाते है ।

शेष द्वार पूर्ववत् एव १६ महा युम्मा समझना इति ३९ २

(३) अप्रथम समयका उदेशा प्रथमवत् ३९–३

(४) चरम समय उदेशामें देवता नहीं आते है लेश्या तीन शेष ३२ द्वारस शोला महायुम्मा प्रथम उ०वत् ३९ ४

(५) अचरम उदेशो प्रथम उ०वत । ३९ ५

(६) प्रथम प्रथम उदेशो दु रा उ०वत् ३९ ६

(७) प्रथम अप्रथम उदेशो दुसरा उ०वत ३९ ७

(८) प्रथम चरम उदेशो दुसरा उदेशावत ३९ ८

(९) प्रथम अचरम उ० दुसरा उ०वत् ३९ ९

(१०) चरम चरम उदेशो चोथा उदेशावत ३९ १०

(११) चरमा चरम उदेशो दुसरा उ०वत् ३९ ११

इस इग्यारा उदेशोंमें १ ३ ५ यह तीन उदेशा सादश है शेष आठ उदेशा सादश है । चोथा आठवा दशवा उदेशो देवता सर्वत्र नहीं उपजे वास्ते लेश्या भी तीन हुवे शेषाधिकार प्रथमो देशा माफीक समझना इति इग्यारा उदेशा संयुक्त पैतीसवा शतकका प्रथम अन्तर शतक समाप्तम् । ३९ १ ११

(२) कृष्ण लेश्याका दुसरा शतक महायुम्मा १६ प्रकारके है प्रथम कडयुम्मा कडयुम्मा परद्वार ।

(१) उत्पात मनुष्य तीर्यंचसे तथा नारकी देवता पर्याप्ता कृष्ण लेशीसे आके सज्ञी पाचेन्द्रिय कड० कड० कृष्णलेशीये उत्पन्न होते हैं ।

(२) बन्ध, उदय, उदिरणा, वेदे, एकेन्द्रिवत्

(३) लेश्या-एक कृष्ण लेश्या

(४) बन्धक-सात आठ कर्मोका बन्धक है

(५) सज्ञा, कषाय, वेद, बन्धक, एकेन्द्रियवत्

(६) अनुबन्ध ज० एक समय उ० ३३ सागरोपम अन्तर महुर्त अधिक

(७) स्थिति-ज० एक समय उ० ३३ सागरो०

शेष १९ द्वार ओघ उदेशा माफोक समझना एव शेष १५ महायुम्मा भी केहना एव प्रथम समयादि ११ उदेशा ओघ शतकके माफीक जाणन्ते सयुक्त और १-३-५ यह तीन उदेशा सादश शेष आठ उदेशा सादश इति ४०-२-२२

(३) एव निललेश्याका इग्यारा उर्देशा सयुक्त तीसरा अन्तर शतक है परन्तु अनुबन्ध ज० एक समय, उ० दश सागरोपम पल्योपमके असख्यात भाग अधिक एव स्थिति भी समझना इति ४०-३-३३

(४) एव कापोत लेश्याका इग्यारा उदेशा सयुक्त चोथा अन्तर शतक परन्तु अनुबन्ध ज० एक समय उ० तीन सागरोपम पल्योपमके असख्यातमा भाग अधिक एव स्थिति भी समझना ४०-४-४४

(२) दुसरा शतक कृष्ण लेशीका है वह प्रथम शतककि माफीक इग्यारा उदेशा कहना परन्तु नाणन्ता तीन है (१) लेश्या एक कृष्ण (२) अनुबन्ध ज० एक समय उ० अन्तर महुर्त (३) स्थिति ज० एक समय उ० अन्तर महुर्त शेष इग्यारा उदेशा प्रथम शतक माफीक परन्तु यहां देवता सर्वत्र नहीं उपजे। १-३-५ सादृश शेष काउ उदेशा सादृश है इति ३९-२

(१) एव निल लेश्याका शतकके उदेशा ११

(२) एव कापोत लेश्या शतकके उदेशा ११

इस्में लेश्या अपनि अपनि और स्थिति अनुबन्ध कृष्णकि माफीक इति पैतीसवा शतकका च्यार अन्तर शतक ४४ उदेशा हुवा।

जेसे ओघ शतक और तीन लेश्याका तीन शतक कहा है इसी माफीक भव्य सिद्धि जीवोंका भी च्यार शतक समझना परन्तु यहा सर्व जीवादि भव्य एकेन्द्रियपणे उत्पन्न नहीं हुवा है। कारण सर्व जीवोंमें अभव्य जीव भी सेमल है। शेषाधिकार पहलेके च्यार शतक सादृश है इति ३९-८

जेसे भव्य सिद्धि जीवोंका लेश्या सयुक्त च्यार शतक कहा है इसी माफीक च्यार शतक अभव्य सिद्धि जीवोंका भी समझना इति ३९-१२-१३२ पैतीसवा शतकके अन्तर शतक बारहा उदेशा एक सौ बत्तीस समाप्त।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

(५) एव तेनो लेश्याका इग्यारा उदेशा सयुक्त पाचवा अन्तर शतक परन्तु अनुबन्ध उ० दोय सागरोपम पल्योपमके असख्यातमे भाग अधिक एव स्थिति किन्तु १–२–४ उदेशामें नो सज्ञा भी कहना कारण तेजोलेशी सातवे गुनस्थान भी है वहापर मना नहीं है शेष पूर्ववत् इति ४०–५–५५।

(६) एव पद्मलेश्याके इग्यारा उदेशा सयुक्त छटा अन्तर शतक है परन्तु अनुवन्ध ज० एक समय उ० दश सागरोपम अतर महुर्त साधिक स्थिति दश सागरोपम शेष तेनो लेश्यावत् समझना इति ४०–६–६६

(७) शुक्लेश्याके इग्यारा उदेशा सयुक्त सातवा अन्तर शतक ओघ शतककि माफक समझना परन्तु अनुवन्ध ज० एक समय उ० तेतीस सागरोपम अन्तर महुर्त साधिक स्थिति उ० तेतीस सागरोपमकि है इति ४०७–७७ इति। लेश्या सयुक्त सात शतक समुच्चयके हुवे।

नोट–उत्पात तथा चवनद्वारमें सर्वस्थानोंके जीवोंकि उत्पात तथा चवन कहा है वह अपने अपने लेश्यावोंके स्थानवाले नारकि देवता जीस जीस लेश्यामे उत्पन्न होते है और चवनमें भी जीस जीस लेश्यासे चवते है उस उस लेश्याके स्थानमें उत्पन्न होने है तात्पर्य यह हुवा कि नारकि देवतावोंमे अपनि अपनि लेश्याका ही सर्व स्थान समझना।

इसी माफीक भव्य जीवोंका भी लेश्या सयुक्त सात शतक कहाना सर्व जीव उत्पन्नका उत्तरमें पूर्ववत् निषेद करना। इति ४०=१

थोकडा नम्बर १२

सूत्र श्री भगवती शतक ३९

(बेन्द्रिय महायुम्मा)

महायुम्मा १६ प्रकारके होते है परिमाण पैंतीसवे शतककि माफिक समझना कडयुम्मा कडयुम्मा बेन्द्रिय काहासे आके उत्पन्न होते है ? तीर्यचके ४६ और मनुष्यके ३ एवं ४९ स्थानोंसे आके बेंद्रियमें उत्पन्न होते है यहा भी एकेंद्रियकि माफीक ३२ द्वार कहना चाहिये जीस द्वारमें फरक है वह यहापर बता दिया जाता है।

(१) उत्पात—४९ स्थानकि है।
(२) परिमाण—१६—३२—४८ यावत् असंख्याते।
(३) अपहरनमें काल यावत् असंख्याते।
(४) अवगाहाना उ० बारहा योजनकि। +++
(९) लेश्या—कृष्ण निल कापोत।
(१०) दृष्टी दोय—सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी
(११) ज्ञान—दोयज्ञान दोयअज्ञान।
(१२) योग—दोय मनयोग वचनयोग +++
(१५) इन्द्रिय—दोय स्पर्शेन्द्रिय रसेंद्रिय।
(१६) अनुबंध—ज० एक समय उ० संख्याते काल।
(२८) आहार—नियमा छेवौ दिशा काले।
(२९) स्थिति ज० एक समय उ० बारहा वर्ष।
(३०) समुद्घात तीन वेदनिय, कषाय, मरणति।

अभव्य जीवोंका सात शतक भव्य जीवोंकि माफीक है परंतु जो तफावत है सो बतलाते है।

(१) उत्पात–पाचानुत्तर वैमान छोडके

(१०) दृष्टी एक मिथ्यात्वकी

(११) ज्ञान–ज्ञान नहीं अज्ञान है।

(१७) व्रति–व्रति नहीं, अव्रति है।

(२६) अनुन्ध उ० तेतीस सागरोपम (नरकापेक्षा) परन्तु शुक्ल लेश्या शतकमे उ०

(२९) स्थिति–उ० तेतीस सागरोपम शुक्ल लेश्याकि अनुबन्धवत्

(३०) समुद्घात–पाच क्रम सर

(३१) सागरोपम–अन्तर महुर्त समझना।

(९) लेश्या–कृष्णादि उवों

(३२) चवन पाचानुत्तर वैमान छोड सवत्र

शेष सर्व द्वार असन्नी तीर्यंच पाचेन्द्रियकि माफीक समझना. सर्व जीव अभव्यपणे उत्पन्न नही हुवा है। १–३–५ एक गमा शेष आठ उदेशा एक गमा। इसी माफीक शोला महायुम्मा समझना। इति।

(२) कृष्णलेशी शतकमें नाणता तीन।

(१) लेश्या एक कृष्ण लेश्या।

(२) अनु० उ० तेतीस सागो० अन्तर० अधिक

(३) स्थिति उ० तेतीस सागरोपम।

शेष १९ द्वार एकेंद्रिय महायुग्मावत् समझना शेष १५ महायुग्मा भी इसी माफीक परन्तु परिमाण अपना अपना कहना इति ३६-१

(२) दुसरा प्रथम समयके उदेशामें नाणन्ता ११ है यथा—

(१) अवगाहाना ज० अंगु० असं० भाग ।

(२) आयुष्य कर्मका अबन्धक है

(३) आयुष्यकर्म उदिरणा भी नही है

(४) उश्वास निश्वासगा भी नही है

(५) सात कर्मोका बन्धक है परन्तु आठका नही

(६) अनुबन्ध ज० उ० एक समयका

(७) स्थिति ज० उ० एक समयकि

(८) समुद्घात-शेष० वेदनिय कषाय

(९) योग-एक कायाक है

(१०) मरण नही (११) चवन नही है।

शेष २१ द्वार पुर्वोक्त ही समझना एव १६ महायुग्मा इति ३६-२ इसी माफीक प्रथमादि सर्व ११ उदेशा होते है १-३-५ यह तीन उदेशा सादश है शेष ८ उदेशा सादश है परन्तु ४-६-८-१० इस च्यार उदेशोंमें ज्ञान और समकित नही है। इति छतीसवा शतकका अन्तर शतकके इग्यारा उदेशा समाप्तम् ।

(२) इसीमाफीक कृष्णलेशी बेन्द्रियका इग्यारा उदेशा संयुक्त दुसरा अन्तर शतक है परन्तु लेश्या तीनके स्थान एक कृष्णा लेशा है अनुबन्ध ओरस्थिति ज० ऐकसमय उ० अन्त

(३) एव निल लेश्याका शतक नाणन्ता
(१) लेश्या एक निललेश्या (अधिक
(२) अनु० उ० दशसागरो० पल्या० असभाग
(३) स्थिति उ०दश सागरोपम ,, ,,
(४) एव कापोत लेश्याका शतक नाणन्ता
(१) लेश्या एक कापोत लेश्या [अधिक
(२) अनु० उ० दोय सागरो० पल्यो० अस० भाग
(३) स्थिति तीन सागरोपमकि ,, ,,
(५) एव तेजो लेश्याका शतक नाणन्ता
(१) लेश्या एक तेजस लेश्या
(२) अनु० उ० दोय सागरो० पल्य० अस० भाग
(३) स्थिति ,, ,, ,,
(६) एव पद्मलेश्याका शतक नाणन्ता
(१) लेश्या एक पद्म लेश्या
(२) अनु० दश सागरो० अन्तर महुर्त अ०
(३) स्थिति उ० दश सागरो०
(७) एव शुक्ल लेश्या शतक नाणन्ता
(१) लेश्या एक शुक्ल लेश्या
(२) अनु० उ० ३१ सागरो० अन्तर महुर्त
(३) स्थिति ३१ सागरोपम

शेष अधिकार पूर्ववत् समझना इति चालीसवा शतकके अन्दर शतक २१ उदेशा २३१ सयुत चालीसवा शतक समाप्तम्।

सेव भते सेव भते तमेव सचम् ।

महुर्त है । कारण औदारीक शरीर धारीके लेश्या अन्तर महुर्तसे अधिक नही रहती है इति ३६—२—२२

(३) एव निललेश्यावाले बेन्द्रियका शतक ।

(४) एव कापोतलेशी बे द्रियका अन्तर शतक ।

इसी माफीक भव्य सिद्धि जीवोंका भी लेश्या सयुक च्यार शतक कहाना ० सर्व जीवोंकि उत्पात एकेन्द्रिय महायुम्मा कि माफीक समझना—कारण सव जीव भव्यपणे उत्पन्न नही हुवा न होग—पर्व जीवोंमें अभव्य जीव भी समेल है । अभव्य भव्यपणे न उत्पन्न हुवा न होगा ।

इसी माफीक लेश्या सयुक्त च्यार शतक अभव्य सिद्धि जीवोंका भी समझना । इति छत्रीसवा मुल शतकके बारह अन्तर शतक प्रत्येक शतकक इग्यारा इग्यारा उदेशा होनेसे १३२ उदेशा हुवा इति ३६ वा शतक समाप्त ।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नम्बर १४

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३७ वा

(तेन्द्रिय महायुम्मा)

जेसे बेन्द्रिय महायुम्मा शतकके १३२ उदेशा कहा है इसी माफीक तेन्द्रिय महा शतकके बारहा अन्तर शतक और प्रत्येक शतकक इग्यारा इग्यारा उदेशा कर सर्वे १३२ कह देना परन्तु महापर ।

थोकडा नम्बर १८

श्री भगवतीजी सूत्र शतक ४१वां

(रासी युम्मा)

(प्र) हे भगवान । रासी युम्मा कितने प्रकारके है ।

(उ०) हे गौतम । रासी युम्मा च्यार प्रकारके हैं । यथा रासी कडयुम्मा, रासी तेउगायुम्मा, रासी दाबरयुम्मा, रासी कलयुगायुम्मा ।

(प्र०) हे भगवान् रासी कडयुम्मा यावत् रासी कलयुगा कीसको कहते है ।

(१) जीस रासीके अन्दरसे च्यार च्यार निकालने पर शेष च्यार रूप वढजावे उसे रासी कडयुम्मा कहते है (२) इसी माफीक शेष तीन वढ जानेसे रासी तेउगा (३) दोय वढ जानेसे रासी दावर युम्मा (४) और एक बढ जानेसे रासी दावर युम्मा कहा जाते है ।

(प्र) रासी युम्मा नारकी कहासे आके उत्पन्न होने है ?

(१) उत्पात-पाच सज्ञी तीर्यंच पाच असज्ञी तीर्यंच तथा एक सख्यात वर्षका कम भूमि मनुष्य एव ११ स्थानोंसे आके उत्पन्न होते है ।

(२) परिमाण ४ ८-१२ १६ यावत सख्या० असख्याते ।

(३) सान्तर-और निरान्तर ।

(१) सान्तर-उत्पन्न हो तो ज०एक समय उत्कृष्ट असख्यात समय तक हुवा ही कर ।

(१) अवगाहाना ज० अगुलके असख्यातमें भाग उत्कृष्ट तीन गाउकि कहना ।

(२) महायुम्मावोंकि स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट एकुण पचास अहोरात्रीकि कहना ।

(३) इन्द्रिय तीन घ्रणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय कहना ।

शेषाधिकार बेद्रियमहायुम्मा माफीक समझना इति ३७-१२-१३२ इति सेतीसवा शतक समाप्तम्

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नंबर १९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३८ वा

(चौरिंद्रिय महायुम्मा)

जीस रीतिसे तेन्द्रिय महायुम्मा शतक कहा है इसी माफीक यह चौरिंद्रिय महायुम्मा शतक समझना । विशेष इतना है ।

(१) अवगाहाना जघन्य अगुलके असख्यातमे भाग उत्कृष्ट च्यार गाउकि है ।

(२) स्थिति-जघन्य एक समय, उत्कृष्ट छेमास

(३) इन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्रणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय ।

शेषाधिकार तेन्द्रिय माफीक इति ३८-१२-१३२ इति अडतीसवा शतक समाप्तम् ।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

(*) निरान्तर उत्पन्न होतों ज० दोय समय उ० असख्यात समय उत्पन्न हुवा ही करे ।

(४) ज० समयद्वार-(१) जिस समय रासी कडयुम्मा है उस समय रासी तेउगा नहीं है । (२) जिस समय रासी तेउगा है उस समय रासी कडयुम्मा नहीं है (३) जिस समय रासी कडयुम्मा है उस समय रासी दावरयुम्मा नहीं है (४) जिस समय रासी दावरयुम्मा है उस समय कडयुम्मा नहीं है (५) जिस समय रासी कडयुम्मा है उस समय रासी कलयुग नहीं है (६) जिस समय रासी कलयुग है उस समय रासी कडयुम्मा नहीं है । अर्थात् च्यारो युम्मासे एक होगा उस समय शेषका निषेद है ।

(५) नारकिमें जीव कीस तरहसे उत्पन्न होता है (२१=८) सथवाडाका द्रष्टातकी माफीक उत्पन्न होने है ।

(प्र) नारकीमें जीव उत्पन्न होते है वह आत्माके सयमसे या असयमसे उत्पन्न होते है ।

(उ) आत्माका असंयमसे उत्पन्न होते है ।

(प्र) आत्माका सयमसे जीवे है या असयमसे ।

(उ) असयम-से जीवे है वह अलेशी नहीं परन्तु सलेशी है अक्रिया नहीं किंतु सक्रिया है ।

(प्र) सक्रिय नारकी उसी भवमें मोक्ष जावेगा ।

(उ) नहीं उसी भवमे मोक्ष नहीं जावे ।

इसी माफीक २४ दडकके पृच्छा और उत्तर है जिस्के अन्दर जो नाणत्ता है सो निचे बतलाते है ।

थोकडा न० १६

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३९ वा

(असज्ञी पाचेद्रिय महायुम्मा)

जीस रीतसे चौरिन्द्रिय महायुम्मा शतक कहा है इसी माफीक यह असनी पाचेद्रिय महायुम्मा शतक समझना परन्तु (१) अवगाहना ज० अगुलके असख्यातमें भाग उत्कृष्ट १००० योजनकि (२) इन्द्रिय पाचों है (३) अनुबन्ध जघ य एक समय उ० प्रत्येक कोडपूर्वका (४) स्थिति ज० एक समय उ० कोडपूर्वक वर्षो के (५) बाकी ४९ स्थान पूर्ववत समझना। प्रत्येक अन्तर शतकके इग्यारा इग्यार उद्देशा पूर्ववत् करनेसे बारहा अन्तर शतकके १३२ उदेशा हुवा। इति एकुनचालीसवा शतक समाप्तम्।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्।

थोकडा नम्बर १७

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ४० वा

(सज्ञी पाचेद्रिय महायुम्मा)

महायुम्मा १६ प्रकारके है परिमाण एकेंद्रिय महायुम्मा शतकमें लिखा आये है। यहापर कडयुम्मा कडयुम्मा सज्ञी पाचेन्द्रिय कहासे आके उत्पन्न होते है तथा ३३ द्वार बतलाते है।

(१) उत्पात—सर्व स्थानोंसे आके उत्पन्न होते है।

(२) परिमाण—१६—३२—४८ यावत असख्याते।

(३) अपहरण—यावत असख्याति उत्सर्पिणि *

(१) वनास्पतिके उत्पात अनन्ता है ।

(२) अगतिके स्थान अपने अपने अगाति स्थानोंसे कहना देखो गत्यागतिका थोकडाकों ।

(३) मनुष्य दडकमें उत्पन्न तो आत्माके असयमसे होते है परन्तु उपजीवकाधिकारमें कोई सयमसे कोई असयमसे करते है । जो आत्माके सयमसे मनुष्य जीवे है वह क्या सलेशी होते है या अलेशी होते है ? सलेशी अलेशी दोनों प्रकारसे होते है । जो अलेशी है वह नियमा अक्रिय है । जो अक्रिय है वह नियमा मोक्ष जावेगा ।

जो सलेशी है वह नियमा सक्रिय है । जो सक्रिय है वह कितनेक तो तद्भव मोक्ष जावेगा । और कितनेक तद्भव मोक्ष नहीं जावेगा ।

जो आत्माके असयमसे जीवे है वह नियमा सलेशी है । जो सलेशी है वह नियमा सक्रिय है । जो सक्रिय है वह उस भवमें मोक्ष नहीं जावेगा । इति रासीयुम्मा नामका इगतालीस वा शतकका प्रथम उदेशा समाप्त । ४१–१

(२) एव रासी तेउगा युम्माका उदेशा परन्तु परिमाण ३–७–११–१५ सख्याते असख्याते ।

(३) एव रासी दावर युम्माका उदेशा परन्तु परिमाण २–६–१०–१४ सख्याते असख्याते ।

(४) एव रासी कल्युगा उदेशा परन्तु परिमाण १–५–९–१३ सख्याते असख्याते ।

इस च्यार उदेशोंको ओघ (समुच्चय) उदेशा कहते है ।

इसी प्रकारसे च्यार उदेशा कृष्णलेस्याका है परन्तु यहा जोतीषी और वैमानिक वर्जके । बावीस दडक है । नारकी देव-तोंके सीतने स्थानमें कृष्ण लेश्या हो उन्हों कि आगति हो वह यथासभव कहेना । विशेष इतना है कि मनुष्यके दडकमे सयम, अलेशी, अकिया, उदभवमोक्ष यह च्यार बोल नही कहेना कारण इस बोलोंका कृष्ण लेश्यामें अभाव है यहापर भाव लेश्याकि अपेक्षा है । शेषाधिकारी 'ओघ' वत् इति ४१–८

(४) एव च्यार उदेशा निललेस्याका अपना स्थान और आगति यथा सभव कहेना शेष कृष्णलेस्यावत् इति ४१–१२

(४) एव कापोत लेश्याका भी च्यार उदेशा परन्तु आगति तथा लेश्याका स्थान यायासभव केहना इति ४१–१६ ।

(४) एव तेजो लेश्याका भी च्यार उदेशा परन्तु यहा दडक १८ है नारकीमें तेजो लेश्या नहीं है, देवतावोंमें सौधर्म-शान देवलोक तक कहाना आगति अपनि अपनि समझना ।

(४) एव पद्म लेश्याका भी च्यार उदेशा परन्तु दडक तीन है पाचवा देवलोक तक और आगति अपनि अपनि कहेना इति ।

जैन सिद्धात स्याद्वाद गभिर शैलीवाले है जेसे छटे गुणस्थान लेश्या छे मानी गइ है यहापर पद्म लेश्या तक सयम भी नहीं माना है । यह सभव होता है कि कृष्ण लेश्यामें सयम माना है वह व्यवहार नयकि अपेक्षा है और पद्म लेश्या तक सयम नहीं माना है वह निश्चय नयकि अपेक्षा है इस्में भि सामान्य विशेष पक्ष है । तत्त्व केवलीगम्य ।

च्यार संयोगि विकल्प १५

१ कर्यो करे करेंगा न कर्यो २ कर्यो करे करेगा न करे
३ ,, ,, ,, न करेंगा ४ ,, ,, न कर्यो न करे
५ ,, ,, न कर्यो न करेंगा ६ ,, ,, न करे न करेंगा
७ ,, करेंगा न कर्यो न करे ८ ,, करेंगा न कर्यो न करेंगा
९ ,, , न करे न करेंगा १० ,, न कर्यो न करे न करेंगा
११ करे करेंगा न कर्यो न करे १२ करे करेंगा न कर्यो न करेंगा
१३ , ,, न करे न करेंगा १४ ,, न कर्यो न करे न करेंगा
१५ करेंगा न कर्यो न करे न करेंगा

पञ्चसयोगि विकल्प ६

१ कर्यो करे करेगा न कर्यो न करे
२ ,, ,, ,, ,, न करेंगा
३ ,, ,, ,, न करे ,,
४ ,, ,, न कर्यो ,, ,,
५ ,, करेंगा ,, ,, ,,
६ करे ,, ,, , ,,

छे सयोगि विकल्प १

१ कर्यो, करे करेगा नकर्यो न करे न करेंगा।

इस ६३ विकल्पके स्वामिके अन्दर नरक तथा अभव्य जीव भूतकालमें पुद्गल आहारपणे नहीं ग्रहन किये एसे तीर्थंकरोंके शरीरादिके काममें आये हुवे पुद्गल नरक तथा अभव्यके आहार पण काममें नहीं आसक्ते है इसमें एकमत्त एसा है कि वह पुद्गल उसी रूपमें नरकादिके काम नहीं आसके। दुसरा मत है कि रूपान्तरमें भी काममें नहीं आते। ' केवली गम्य ']

(४) एव शुक्ल लेश्याका भी च्यार उदेशा परन्तु दडक तीन है मनुष्यके दडकमें जेस समुचयमें विस्तार किया है सयम सलेशी अलेशी सक्रिय अक्रिय तद्भव मोक्ष जाना काहा है वह सर्व कहेना। इति च्यार उदेशा समुचय और छे लेश्याके चौवीस उदेशा सर्व २८ उदेशा होता है।

२८ उदेशा ओघ (समुचय) लेश्या सयुक्त

२८ उदेशा भव्य सिद्धि जीवोंका पूर्ववत्

२८ उदेशा अभव्य सिद्धि जीवोंका परन्तु सर्व स्थान अस यम ही समझना

२८ उदेशा सम्यग्दृष्टी जीवोंका ओघवत

२८ उदेशा मिथ्यात्वी जीवोंका अभव्यवत्

२८ उदेशा कृष्णपक्षी जीवोंका अभव्यवत

२८ उदेशा शुक्ल पक्षी जीवोंका ओघवत्

इति १९६ उदेशा हुवे इति एगतालीसवा शतक समाप्तम्

सव भंते सेव भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर १९

श्री भगवती सूत्राकि समाप्ती।

सपत समय प्राय पैतालीस आगम माना जाते है जिस्मे पचमाङ्ग भगवति सूत्र बडा ही महात्ववाला है। इस भगवती सूत्रमें

(१) मुनीन्द्र-इद्रभूति अग्निभूति नग्रन्थपुत्र नारदपुत्र कालसवेसी गगयाजी आदि मुनियोंके प्रश्नके उत्तर

(११) नारकिके नेरिये आहारकी माफीक पुद्गल एकत्र करते है वह भी आहारकि माफीक चौभागी प्रणम्य प्रणमे प्रण मेगा पूर्ववत् ६३ विकल्प "चय"।

(१२) एव उपचयकि भी चौभागी और पूर्ववत ६३ विकल्प।

(१३) एव उदीरणा (१४) एव वेदना (१५) निर्जरा यह तीन द्वार कर्मोकि अपेक्षा है। अनुदय कर्मोकि उदीरणा, उदय तथा उदीरणाकर विपाक आये कर्मोकों वेदना वेदीये हुवे कर्मोकि निर्जरा करना इस्का भी पूर्ववत् च्यार च्यार भांग समझना।

(१६) नारकिके नेरिया कितने प्रकारके पुद्गलोंके भेदाते है? कर्मद्रव्योंकि अपेक्षा दोय प्रकारके पुद्गल भेदाते है (१) बादर (२) सूक्ष्म भावार्थ अपवर्तन कारण (अध्यवसायके निमत्त) से कर्मोके तीव्र रसको मद करना तथा उद्ववर्तन करणसे कर्मोके मद रसकों तीव्र करना अर्थात् न्युनाधिक करना। यहापर सामान्य सुत्र होनेसे पुद्गल भेदाना कहा है। कर्मपुद्गल यद्यपि बादर ही है परन्तु यहा बादर और बादरकि अपेक्षा सूक्ष्म कहा है परन्तु यहा जो सूक्ष्म है वह भी अनन्ते अनन्त प्रदेशी स्कन्धका ही भेद होते है। एव (१७) पुद्गलोंका चय (एकत्र करना) एव (१८) उपचय (विशेष धन करना) यह दोय पद आहार द्रव्य अपेक्षा कहेना। एव (१९) उदीरणा (२०) वेदना (२१) निर्जरा यह तीन पद कर्म द्रव्यापेक्षा पूर्व भेदाते कि माफीक समझना। आत्मा ध्यवसायके निमत्तसे अपवर्तन उद्ववर्तन करते हुवे जीव स्थिति घात तथा रसघात करे इसी माफीक स्थिति वृद्धि तथा रसवृद्धि करते है।

(१) देवीन्द्र–शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र चमरेन्द्र और ४ सुरियाम आदि देवोंके पुच्छे हुवे प्रश्नोंके उत्तर

(२) नरेन्द्र–उदाइ राजा, श्रेणक राजा, कोणक राजा, आदि राजावा के पुच्छे हुवे प्रश्नोंके उत्तर

(४) श्रावकों–आनन्द, कामदेव, सख, पोखली, मडुक, सुदर्शन और भी आलमीया ना गरीके, तुगीया नगरीके श्रावकोंके पुच्छे हुवे प्रश्नोका उत्तर।

(५) श्राविकावों–मृगावती जेयवन्ती सुलसा चेलना सेवानन्दा आदि श्राविकावोंके पृच्छा हुवा प्रश्नोंके उत्तर।

(६) अन्य तीर्थीयों–कालोदाइ सेलोदाइ सलोदाई शिवराज ऋषि पोगल नामका संन्यासी तथा सौमल ब्रहाण आदि अन्य तीर्थीयोंके पुच्छे हुवे प्रश्नोंका उत्तर।

इसके सिवाय इस आगमार्णवमें केवल गौतमस्वामिके पुच्छे हुवे ३६००० प्रश्नोका उत्तर भगवान वीर प्रभु दीया है।

इस सूत्र समुद्रसे अमूल्य रत्न ग्रहन करनेकि अभिलाषावाले भव्य आत्मावोंके लिये शास्त्रकारोंने च्यार अनुयोगरूपी च्यार नौकावों बतलाये हैं जेसे कि–

(१) द्रव्यानुयोग–जिस्मे जीव और कर्मोका निर्णार्थे षट्द्रव्य सात नय च्यार निक्षेपा सप्तभगी अष्टपक्ष उत्सर्गोपवाद सामान्य विशेष अबीर भाव त्रोंभाव कारण कार्य द्रव्यगुणपर्याय द्रव्यक्षेत्र कालभाव इत्यादि स्याद्वाद शैलीसे वस्तुतत्त्वका ज्ञान होना उसे द्रव्यानुयोग्य कहते हैं।

(२२) उवट्टीता=अपवर्तनद्वारा कर्मो कि स्थितिको न्यून करना उपलक्षणसे उद्धवर्तन द्वारा कर्मो कि स्थितिकी वृद्धि करना यह सुत्र तीन कालापेक्षा है (२२) भूतकालमे करी (२३) वर्तमानकालमें करे (२४) भविष्यकालमे करेगा ।

(२५) सक्रमण=मूल कर्म प्रकृतिसे भिन्न जो उत्तरकर्म प्रकृति एक दुसरी प्रकृतिके अ दर-सक्रमण करना इसमे भी अध्यवसायोंका निमत्त कारण है जेसे कोइ जीव साता वेदनिय कर्मको वेद रहा है अशुभ अध्यवसायोंके निमत्त कारणसे वह साता वदनियका सक्रमण असातावेदनियमे होता है अर्थात् वह सातावेदनिय भी असातामें सक्रमण हो असाता विपाकको वेदता है | इस्को भी तीन काल (२५) भूतकालमें सक्रमण किया (२६) वर्तमानमें सक्रमण करे (२७) भविष्यमे सक्रमण करेगा ।

(२८) निधसद्वार अध्यवसायके निमत्त कारणसे कर्म पुद्गलोंको एकत्र करना उसमें अपवर्तन उद्धवर्तनसे न्यूनाधिक करना उसे निधस केहते है जेसे सुइयोंके भाराको अग्निमें तपाके उपर चोट न पडे वहातक निधसनोर्थात न्यूनाधिक हो सके है एसा निधस भी जीव तीनों कालमे करे कर्यो करेगा ।३०।

(३१) निकाचित-पूर्वोक्त कर्म दलक एकत्र कर धन बधन जेसे तपाइ हुइ सुइयोंपर चोट देनेसे एक रूप हो जाती है उसमे सामान्य करण नहीं लग सके है वह भी तीन कालापेक्षा निकाचीत् कर्मा करे करेगा ॥ ३३ ।

(३४) नारकिके नेरिये तेजस कारमाण शरीरपणे पुद्गल ग्रहन किया भूतकालके समयमें वर्तमान कालके समयमे

(२) गणतानुयोग–जिस्में क्षेत्रका लम्बा पना चोड पना उर्ध्व अधो नदि द्रह पर्वत क्षेत्रका मान देवलोकके वैमान नारकोंके नरका वास तथा ज्योतीषी देवोंका वैमान ज्योतीषीयोंकि चाल ग्रह नक्षत्रका उदय अस्त समवत् होना तथा वर्ग मूल घन आदि फला वट इसकों गणतानुयोग कहते है।

(३) चरण करणानुयोग–जिस्में मुनिके पाच महाव्रत पाच समिति तीन गुप्ती दश प्रकार यति धर्म, सत्तरा प्रकारका सयम बारहा प्रकारका तप पचवीस प्रकारकि प्रतिलेखन गौचरीके ४७ दोषन इत्यादि तथा श्रावकोंके बारहव्रत एकसो चौवीस अतिचार इग्यारा प्रतिमा पूजा प्रभावना सामि वत्सल सामायिक पौषद आदि क्रियावों है उसे चरण करणानुयेण कहते है।

(४) धर्मकथानुयोग–जिस्में भूतकालमें होगये जैन धर्मके प्रभावीक पुरुष चक्रवर्त बलदेव वासुदेव मडलीक राजा सामान्य राजा सेठ सेनापति आदिका जो जीवन चारित्र तथा न्याय नीति हेतु युक्ति अल्कार आदिका व्याख्यान हो उसे धर्म कथानुयोग कहते है।

इस च्यार अनुयोगमें द्रव्यानुयोग कार्य रूप है शेष तीना नुयोग इसके क रण रूप है इस प्रभावशाली पञ्चमाङ्ग भगवती सूत्रमें च्यारों अनुयोग द्वारोंका समावेस है तथपि विशेष भाग द्रव्यानुयोग व्याप्त है इसी लिये पूर्व महा ऋषियोंने द्रव्यानुयोगका महानिधिकी औपमा भगवती सूत्रको दी है।

(१) भगवती सूत्रके मूल श्रुतस्कन्ध एक है

(२) भगवती सूत्रके मूल शतक ४१ है

पारगत अर्थात् शरीरी मानसी सर्व दु खोंका अन्तकर मोक्षमें जावे।

श्री भगवती सूत्र शतक २ उद्देशा १

(प्र) हे भगवान्। स्वय कृत दु खकों भगवते है।

(उ०) हे गौतम। कोइ जीव भोगवे कोइ जीव नही भी भोगवे। हे प्रभो इसका क्या कारण ह ! हे गौतम जीस जीवोंके उदयमें आया है वह जीव कृत कर्म भोगवते है और जीस जीवोंके जो कृतकर्म सत्तामें पडा हुवा है अबाधा काल पूर्वा परिपक्व नही हुवा है अर्थात उदयमें नही आया है वह जीव कृतकर्म नही भो भगवते है इस अपेक्षासे कहा जाते है कि कोइ जीव भोगवे कोइ जीव नही भी भोगवे। इसी माफीक नरकादि २४ दडक भी समझना। जैसे यह एक बचन अपेक्षा समुच्चय जीव और चौवीस दडक एव २५ सूत्र कहा है इसी माफीक २५ सूत्र बहु बचन अपेक्षा भी समझना। एव ५० सूत्र।

(प्र०) हे भगवान्। जीव अपने बन्धाहुवा आयुष्य कर्मकों भोगवते है।

(उ०) हा गौतम। जीव स्वय बान्धा हुवा आयुष्य कर्मकों स्यात् भोगवे स्यात नही भी भोगवे। हे प्रभो इस्का क्या कारण है ? हे गौतम जीस जीवोंके आयुष्य उदयमें आया है वह भोगवते है और जिस जीवोंके उदयमें नही आया है वह नही भोगवते है एव नरकादि २४ दडक भी समझना। इसी माफीक बहुवचनके भी २५ सूत्र समझना इति।

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम्।

(३) भगवती सूत्रके अन्तर शतक १३८ है
(४) भगवती सूत्रके वर्ग १९ है
(५) भगवती सूत्रके उदेशा १९२४ है
(६) भगवती सूत्रके हालमें श्लोक १५७७२ है
(७) भगवती सूत्रकि हालमें टीका करवन् १८००० है
(८) भगवती सुत्रकि वाचना ६७ दिने दी जाती है। *
(९) भगवतीसूत्र कि निर्युक्ति भद्रबाहु स्वामि रचीथी
(१०) भगवती सूत्रकि चुरणी पूर्वधरोंने रचीथी

*१६ पहलेसे आठवे शतक प्रत्यक शतक दो दो दिनोंसे वचाया जाय जिस्के दिन शोला होते है।

२१ नौवा शतकसे पन्दरवा (गोशाला) शतककों छोड वीसवा शतक एव शतककि वाचना उत्कृष्ट प्रत्यक शतक तीन तीन दिनसे वाचना दे जिस्का तेतीस दिन होते है।

१ पन्दरवा (गोशाला) शतक एक दिनमें वचाने अगर रह जाने तों आम्बिलकर दुसरे दिन भी वचावे।

३ एकवीसवा बावीसवा तेवीसवा शतककि वाचना प्रत्यक दिन एकेक शतककि वाचना देवे।

४ चौवीसवा पचवीसवा शतककि वाचना दो दो दिनि

१ छावीसवासे तेतीसवा शतक एक दिनमें वाचना देवे।

८ चौतीसवासे इगतालीसवा शतक आठ शतक, प्रत्यक दिन प्रत्यक शतक वचावे इसी माफीक भगवती सुत्रकी वाचना अपने शिष्यकों ६७ [illegible] पना हे [illegible] मुनियोंकों आम्बिलादि

थोकडा नम्बर ४

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशा ३

(आस्तित्व)

(प) हे भगवान्। आस्ति पदार्थ आस्तित्व पणे परिणमें और नास्तिपदार्थ नास्तित्व पणे परिणमे ।

(उ) हा गौतम आस्ति पदार्थ आस्तित्व पणे परिणमें और नास्ति पदार्थ नास्तित्व पणे परिणमें ।

भावार्थ–जैनसिद्धान्त अनेकान्तवाद स्याद्वाद संयुक्त है वास्ते पदार्थ सापेक्षा वचन है । जैसे अगुली अगुली पणेके भावमे आस्तित्व है और अगुली अगुष्टादिके भावमें नास्तित्व है वास्ते अगुली अगुलीके भावमें आस्तित्व परिणमते है इसी माफीक जीव जीवके ज्ञानादि गुण पणे आस्तित्व भाव परिणमते है इसी माफीक वस्तु वस्तुके भाव पणे आस्तित्व है । नास्ति नास्तित्वपणे परिणमें जेसे गर्दभ शृग यह नास्ति नास्ति पणे परिणमते है इसी माफीक जीवके अन्दर जडता भाव नास्ति है नास्ति भाव पणे परिणमते है इत्यादि ।

प्र० हे भगवान ! जो आस्ति आस्तित्व पणे परिणमे और नास्ति नास्तित्वपणे परिमणते है तो क्या प्रयोगसे परिणमते है या स्वभावसे परिणमते है ।

(उ) हे गौतम जीवके प्रयोगसे भी परिणमते है और स्वभावसे भी परिणमते है । जेसे अगुली ऋजु है उसको जीव प्रयोगसे [illegible] है वह जीव प्रयोगसे तथा बादल प्रमुख वह

(७) दहान करना प्रारभ किया उसे दाहान किया ही केहना ।

(८) मरना प्रारभ किया उसे मृत्यु हुवा ही केहना ।

(९) निर्जरा करना प्रारभ किया उसे निर्जरीया ही कहना ।

इस नौ पदोंके उत्तरमें भगवान फरमाते है कि हा गौतम चलना प्रारभ किया उसे चालीया यावत् निर्ज्जरना प्रारभ किया उसे निर्ज्जरिया ही कहना चाहिये ।

भावार्थ–यह प्रश्न कर्मों कि अपेक्षा है । आत्माके प्रदेशोंके साथ समय समयमें कर्मबन्ध होते है व कर्म स्थिति परिपक्व होनेसे समय समय उदय होते है । आत्मप्रदेशोंसे कर्मोका चलनकाल वह उदयावलिका है इन्ही दोनोंका काल असख्यात समयका अन्तर महुर्त परिमाण है परन्तु चलन प्रारभ समयकों चलीया कहना यह व्यवहार नयका मत है अगर चलन समयकों चलीया न माना जावे तों द्विनीयादि समय भी चलीया नहीं माना जावेगा, कारण प्रथम समय दुसरा समयमें कोई भी विशेषता नहीं है और प्रथम समयको न माना जाय तो प्रथम समयकि क्रिया निष्फल होगा जेसे कोइ पुरुष एक पटकों उत्पन्न करना चाहे तों प्रथम तन्तु प्रारभकों पट मानणा ही पडेगा । अगर प्रथम तन्तुकों पट न माना जाय तों दुसरे तन्तुमें भी पटोत्पती नहीं है वास्ते वह सब क्रिया निष्फल होगा और पटोत्पतीकि भी नास्ति होगा । इसी माफीक आत्म प्रदेशोंसे कर्म दलक चलना प्रारभ हुवा उसकों चलीया ही मानना। शास्त्रकारोंका अभिष्ट है इस मन्यनासे जमालीके मतका निराकार किया है ।

स्वभावसे परिणमते है । इसी माफीक कीतनेक पदार्थ आस्ति आस्तित्वपणे जीवके प्रयोगसे परिणमते हैं कितनेक पदार्थ आस्ति आस्तित्व स्वाभावे परिणमते है । एव नास्ति नास्तित्वपणे भो जीव प्रयोग तथा स्वभावे भी परिणमते है यहा तात्पर्य यह है कि स्वगुनापेक्षा आस्ति आस्तित्व परिणमते है और पर गुनापेक्षा नास्ति नास्तित्व परिणमन है । इसी माफीक दोय अलापक गमन करनेके भी समझना ।

काक्षा मोहनिय कर्मका अधिकार भाग १६ वा में छपा हुवा है परन्तु कुच्छ सबन्ध रह गया था वह यहांपर लिखाजाते है ।

(प्र) हे भगवान । जीव काक्षा मोहनिय कर्मकि उदीरणा स्वय कर्ता है स्वयं ग्रहना है कर्ता है स्वय सबरना है ।

(उ) हां गौतम । उदिरणा ग्रहना सवरना जीव स्वय ही करता है ।

(प्र) अगर स्वय जीव उदीरणा कर्ता है तो क्या उदय कर्मोकि उदीरणा करे, अनुदीरत कर्मोके उदीरणा करे । उदय आने योग्य कर्मोकि उदीरणा करे । उदय समयके पश्चात अणन्तर समयकी उदीरणा करे ।

(प्र) हे गौतम तीन पद उदीरणाके अयोग्य हैं किन्तु उदय आने योग्य कर्म है ॥

उसी कर्मोकि उदीरणा करते है ।

(प्र०) उदीरणा करते है वह क्या उत्स्थानादिसे करते है या अनुत्स्थानादिसे करते है ? उत्स्थानादिसे उदीरणा करते है । किन्तु अनुत्स्थानादिसे उदीरणा नहीं होती है ।

(१) चलन प्रारभ समयकों चलीया केहना स्थिति क्षयापेक्षा है।

(२) उदीरणा प्रारभ समयकों उदीरिया कहना—जो कर्म सतामें पडा हुवा है परन्तु उदयावलिकामें आनेयोग्य है उस कर्मों कि अध्यवसायके निमित्तसे उदीरणा करते है। उदीरणा करतेंकों असरुयात समय लगते है परन्तु यहा प्रारभ समयको पूर्वके दृष्टांत माफीक समझना चाहिये।

(३) वेदते हुवेके प्रारभ समयकों वेद्या कहना। जो कर्मउदय आये हो तथा उदीरणा कर उदय आविलकामें लाके प्रथम समय वेदणा प्रारभ कीया है उसकों पूर्व दृष्टात माफीक वेद्या ही कहेना।

(४) प्रक्षिण अर्थात आत्मप्रदेशोंके साथ रहे हुवे कर्म दलक आत्मप्रदेशोंसे प्रक्षिण होनेके प्रारभ समयको प्रक्षिण हुवा पूर्व दृष्टात माफीक कहना।

(५) छेदते हुवेकों छेदाया—कर्मोंकि दीर्घकालकि स्थिति-कों अपवर्तन करणसे छेदके लघु करना वह अपवर्तन करण अस-रुयाते समयका है परन्तु पूर्व दृष्टात माफीक प्रारभ समयकों छेद्या कहना।

(६) भेदते हुवेको भेद्या कहना—कर्मोंके तीव्र तथा मद रस कों अपवर्तन तथा उद्वर्तनकरण करके मदका तीव्र और तीव्रका मद करना वह करण असरुयाते समयका है परन्तु पूर्व दृष्टात माफक प्रारभ समय भेदते हुवेको भेद्या कहना।

(७) दहते हुवेको दहन कहेना। यहा कर्मरूपी काष्टकों शुक्ल ध्यानरूपी अग्निके अन्दर दहन करते हुवेकों पूर्व दृष्टतकी माफीक कहना।

(प्र०) हे भगवान् ! जीव कर्मोंको उपशमाते है वह क्या उदीरत कर्मोंको अनुदीरत कर्मोंका, उदय आने योग कर्मोंका, उदय समय पश्चात् अणन्तर समयको उपशमाते है ?

(उ०) हे गौतम ! अनुदय कर्मोंका उपशम होता है अर्थात् उदय नहीं आये एसे सत्तामें रहे हुव कर्मोको उपशमाते है वह उत्स्थानादिसे उपशमाते है एव कर्मोंको वदते है पर तु उदय आये हुवे कर्मोको वदत है एव निर्जरा पर तु उदय अणान्तर पूर्वक्त समय अर्थात् उदय आये हुवको भोगवनेके बाद कर्मोकि निर्जरा करत है इस सब पदके अन्दर उत्स्थानादि पुरुषार्थसे ही करते है। यहा गोसालादि नित्य वादीयों जो उत्स्थान बल कम्म वीर्य और पुरुषार्थको नहीं मानते है उन्हीं वादीयोंके मत्तका निराकार कीया है। इति ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशो ४

(वीर्य विषय प्रश्नोत्तर)

(प्र०) हे भगवान् । जीव जीवोंने पूर्व मोहनि कर्म सचय, किया है वह वर्तमानमें उदय होनेसे जीव परभव गमन करे ।

(उ०) हे गौतम । पूर्व आयुष्य क्षय होनेपर परभव गमन करत है ।

(प्र०) न करता है तो क्या वर्यसे

(८) मृत्यु मारमाँ मरिया कहना—यहा आयुष्य कर्मका प्रति समय क्षिण होने हुवेको पूर्वके दृष्टान्तकि माफीक मृर्या ही कहेना ।

(९) निर्जराके प्रारम समयको निर्जर्यो कहना=जो कर्म उदयसे तथा उदीरणासे वेदके आत्म प्रदेशोंसे प्रति समय निर्जरा करी जाती है उस निर्जराका काल असंख्याते समयका है परन्तु यह पूर्व दृष्टान्तसे प्रारम समयको निर्जर्यो कहना इति नौ प्रश्नोंका उत्तर दीया ।

(प्र०) हे भगवान् ! चलनेको चलीया यावत् निर्जरतेके निर्जर्यो यह नौ पदोंका क्या एक अर्थ भिन्न भिन्न उच्चारण भिन्न भिन्न वर्ण (अक्षरों) अथवा भिन्न भिन्न अर्थ भिन्न भिन्न उच्चारण, भिन्न भिन्न वर्णवाला है ।

उ०) हे गौतम ! चलते हुवेको चलीया, उदीरते हुवेको उदीरीया, वेदते हुवेको वेदीया और प्रक्षिण करते हुवेको प्रक्षिण किया यह च्यार पदों एकार्थी है और उच्चारण तथा वर्ण भिन्न भिन्न है यहां पर केवलज्ञान उत्पादापेक्षा है कारण कर्मोका चलना उदीरण तथा उदय हुवेको वेदना और आत्मप्रदेशोंसे प्रक्षिण करना यह सब पुरुषार्थ पहले नहीं उत्पन्न हुवे एसे केवलज्ञान पर्यायको उत्पन्न करनेका ही है वास्ते उत्पन्नपक्षापेक्षा इस च्यारों पदोंका अर्थ एक ही है ।

शेष रहे पांच पद (छेदाते हुवेको छेदीया यावत् निर्जरते हुवेको निर्जर्या) वह एक दुसरेसे भिन्न अर्थवाले है यह पर विगमपक्षकि अपेक्षा अर्थात् कर्मोका सर्वता नाश करना जेसे—

(उ०) हाँ, वीर्यसे ही परभव गमन करता है । अवीर्यसे नहीं ।

(प्र०) वीयस करते है तो क्या बालवीर्यस पंडितवीर्यस बालपंडित वीर्यसे परभव गमन करते हैं ।

(उ०) हे गौतम । पंडितवीर्य स मुनोंके और बालपंडित वीर्य श्रावकोंके होते है इसमे परभव गमन नही करते है क्यु कि परभव गमन समय जीवोंके पहेलो दुसरो और चोथो यह तीन गुणस्थान होते है वह तीनों गुण० बालवीर्य धारक हु वास्ते परभव गमन बालवीर्यसे ही होते है ।

(प्र०) पूर्व मोहनिय कर्म किया । वह वर्तमानमे उदय होने पर जीव उच गुणस्थानसे निचे गुणस्थानपर आ सक्ते है ।

(उ०) हाँ मोहनिय कर्मोदयसे निच गुण० आ सक्ता है ।

(प्र०) तो क्या बालवीर्यस पंडितवीर्यसे या बालपंडितवीर्यस

(उ०) पंडितवीर्य तथा बालपंडितवीर्यस निचा नही आवे । किन्तु बालवीयस उच गुणस्थानस निच गुणस्थान जावे । वाचनान्तरमें बालपंडित वीयस भी आना कहा है कारण मोहनिय (चारित्र मोहनि) कर्मका प्रबल उदय होनस मुनि हुवा भी दशवामे आवे बहास फेर नाचेक गुणस्थान आवे, भावार्थ है, इसी माफीक मोहनिय उपशमका भी दो सूत्र समझना परन्तु परभव गमन पंडितवीर्यसे और निच गुणस्थान बालवीर्यसे समझना ।

(प्र०) हे भगवन् । जीव हीन गुणोंको प्राप्त करता है वह क्या आत्मवीर्योस करता है या परात्मवीर्यसे ।

(उ०) आत्मवीर्य करके हीन गुणोंको प्राप्त करता है ।

(५) छेदाते हुवेकों छेद्या, तेरवे गुणस्थान रहे हुवे कर्मोंकि स्थितिकी घात करते हुवे योग निरुद्ध करते है ।

(६) भेदते हुवेको भेद्या=यह रसघातकि अपेक्षा है परन्तु स्थिति घात करतों रसघात अनन्तगुणी है वास्ते भिन्नार्थी है ।

(७) दहन करते हुवेकों दहन किया=यह प्रदेश बन्धापेक्षा है। पांच ह्रस्व अक्षर कालमे शुक्लध्यान चतुर्थ पाये कर्म प्रदेशका दहानापेक्षा होनेसे यह पद पूर्वसे भिन्नार्थी है ।

(८) मृत्यु होतेकों मूर्या कहना यह पद आयुष्य कर्मापेक्षा है। आयुष्य कर्मके दलक्षय जो पुनर्जन्म न हो एसे चरम आयुष्य क्षय अपेक्षा होनेसे यह पद पूर्वसे भिन्नार्थी है ।

(९) निर्जरते हुवेकों निर्ज्जर्या कहेना=सकल कर्मोका क्षय रूप निर्जर पूर्वे कबी न करी हुई चौदवे गुणस्थानके चरम समय २ सकल कर्मक्षयरूप होनेसे यह पद पूर्वके प.ोंसे भिन्नार्थी है ।

इस वास्ते पेहलेके च्यार पद एकार्थी और शेष पाच पद भिन्नार्थी है ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नम्बर २

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशा १

(४५ द्वार)

इस थो।डेके ४५ द्वार चौवीस दण्डक पर उतारा जावेगे, चौवीस ——— प्रथम नारकिके दंडकपर ४५ द्वार उतारे जाते है।

(प्र०) जीव मोहनिय कर्म वदतों हीन गुणस्थान क्यो भाता है ।

(उ०) प्रथम जीव सर्वज्ञ कथित तत्त्वोंपर श्रद्धा प्रतीत रखता था फीर मोहनिय कर्मका प्रबलोदय होनसे । जिन वचनोंपर श्रद्धा नही रखता हुवा अनेक पाषंडपरूपीत असत्य वस्तुकों सत्य कर मानने लग गया । इस कारणसे जीव मोहनिय कर्म वदतों हीन गुणस्थान भाता है ।

(प्र) हे करूणासिंधु । जीव नारक तीर्यंच मनुष्य और देव तावोंमें किया हुवे कर्म वीनों भुक्ते मोक्ष नहीं जाते है ।

(उ) हा च्यार गतिमें किये कर्म भोगवनेके सिवाय मोक्ष नहीं जाते है ।

(प्र) हे भगवान् ' कितनेक एसे भो जीव देखनेमें आते है कि अनेक प्रकारका कर्म काते है और उसी भवमें मोक्ष जाते है तों वह जीव कर्म कीस तरे भोगवते है ।

(उ) हे गौतम । कर्मोंका भोगवना दोय प्रकारसे होता है (१) आत्मप्रदेशोंसे (२) आत्मप्रदेशों विपाकसे, जिस्में विपाक कर्म तों कोई जीव भोगवे कोई जीव नहीं भी भोगवे । और प्रदेशोंसे तों आवश्य भोगवना ही पडता है कारण कर्म बन्धन तथा कर्म भोगवनमें अध्यवसाय निमत्त कारणभूत है जेसे कर्म बन्धा हुवा है और ज्ञान ध्यान तप जपादिसे दीर्घ कालकि स्थितिवाले कर्मोंका आकर्षन कर स्थितिघात रसघात कर प्रदेशों भोगवके निर्जरा कर देते है इस वातकों सर्वज्ञ अरिहंत अपने केवल ज्ञानसे जानते केवल दर्शनसे देखते है कि यह जीव उदय आये हुवे

असयोगी विकल्प ६

स	विकल्प	स०	विकल्प
१	भूतकालमे आहारीहा	२	वर्तमानमे आहार करे
३	भविष्यमे आहार करेंगे	४	भूत० नही आहारीहा
५	वर्त० नही आहारे	६	भवि० नही आहारेंगा

दो सयोगि विकल्प १५

१	आहारक नों करे	२	आहारक नों करेंगा
३	,, ,, नही कर्यो	४	,, ,, नही करे
५	,, ,, नही करेंगा	६	आहार करे और करेंगा
७	,, ,, नही कर्यो	८	,, ,, नही करे
९	,, ,, नही करेगा	१०	आहार करेंगा–नही कर्यो
११	,, ,, नही करें	१२	,, ,, नही करेंगा
१३	आहार नही कर्यो नही करे	१४	आहार नही कर्यो नही करें
१५	आहार नहीं करें नहीं करेंगा		

तीन सयोगि विकल्प २०

१	आहार कर्यो करे करेंगा	२	आहार कर्यो करे न कर्यो
३	,, ,, ,, नकरे	४	,, ,, करे न करेंगा
५	,, ,, करेंगा न कर्यो	६	,, ,, करेंगा न करे
७	,, ,, करेंगा न करेंगा	८	,, ,, न कर्यो न करेंगा
९	,, ,, न कर्यो न करेंगा	१०	,, ,, न करें न करेंगा
११	आहार करे करेंगा न कर्यो	१२	आहार करे करेंगा न करें
१३	,, करेंगा न करेंगा	१४	,, न कर्यो न करे
१५	,, न कर्यो न करेंगा	१६	,, न करें न करेंगा
१७	आहार करेंगा न कर्यो न करे	१८	आहार करेंगा न कर्यो न करें
१९	,, ,, न करें न करेंगा	२०	न कर्यो न करे न करेंगा

(प्र) प्रणातिपातकि क्रिया करते है तो क्या स्पर्शसे करते है या अस्पर्शसे करते है ।

(उ) क्रिया करते है वह स्पर्शसे करते है न कि अस्पर्शसे परन्तु अगर व्याघात (अलोककि) हो तो स्यात्। तीन दिशा, च्यार दिशा, पाच दिशा, और निर्व्याघात हो तो नियमा छे दिशावोंकों स्पर्श क्रिया करते है ।

(प्र) हे भगवान् । जीव क्रिया करते है वहा क्या कृत क्रिया है या अकृत क्रिया है ।

(उ) कृत क्रिया है परन्तु अकृत नही है ।

(प्र०) हे भगवान ! अगर कृत क्रिया है तो क्या आत्मकृत परकृत उभयकृत क्रिया है ।

(उ०) आत्मकृत क्रिया है किन्तु परकृत उभयकृत क्रिया नहीं है ।

(प्र०) स्वकृत क्रिया है तो क्या अनुक्रमे है या अनुक्रम रहित है ?

(उ०) अनुक्रमसे क्रिया है अनुक्रम रहित क्रिया नहीं है । जो क्रिया करी है करते है और करेगा वह सब अनुक्रमही है । भावार्थ क्रिया अनुक्रमसे ही होती है परन्तु अनानुक्रम नहीं होती है । क्रियामें कालकि अपेक्षा होती है और काल हे सो प्रथम समय निष्ट होने पर दुसरा तीसरादि क्रम सर होते है इत्यादि । एव नरकादि २४ दंडक परन्तु समुचय जीव और पाच स्थावरमें व्याघातापेक्षा स्यात् तीन दिशा, च्यार दिशा, पाच दिशा और निर्व्याघात अपेक्षा छे दिशा तथा शेष १९ दंडकमें भी छे दिशावोंमें

क्रिया करे। एव प्रणातिपात क्रिया समुच्चय जीव और चौवीस दडक २५ अलापक हुव इसी माफीक मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन, परपरावाद, रति, अरति, माय, मृषावाद, मिथ्यादर्शन, शल्य एव १८ पापस्थानकि क्रिया समुच्चयजीव और चौवीस दडकके प्रत्यक दडकके जीव करनेसे पचविसको अठारे गुणा करनेसे ४५० अलापक होते है। इति

सेव भते सेव भते तमेव सचम्।

थोकडा नम्बर ७

श्री भगवती सुत्र श० १ उ० ७

जो जीव जिस गतीका आयुष्य बाधा है और भावी उसी गतीमें जानेवाला है उसको उसी गतीका कहना अनुचित नहीं कहा जाता जैसे मनुष्य तिर्यचमें रहा हुवा जीव नारकीका आयुष्य बाधा हो उसको अगर नारकी कहा जाय तो भी अनुचित नहीं। नारकीमें जानेवाला जीव अपने सर्व प्रदेशोंको "सर्व" कहते है और नारकीमें उत्पन्न होनके सम्पूर्ण स्थानको 'सर्व' कहते है वह इस थोकडे द्वारा बतलाया जायगा।

(प्र०) नारकीका नैरीया नारकीमें उत्पन्न होत हैं वे क्या—

(१) देशसे देश उत्प होते है। जीवके एक भागके प्रदेशको देश कहते हैं और वहा नारकी उत्पन्न स्थानके एक विभागको देश कहते हैं।

(२) देशसे सर्व उत्पन होते हैं?

करता है या अदु खी है वह जीव दु खको स्पर्श करता है। अर्थात् दु ख है सो दु खी जीवोंको स्पर्श करता है या अदु खी जीवोंको स्पश करता है।

(उ०) दु खी जीवोंको दु ख स्पर्श करता है। किंतु अदु खी जीवोंको दु ख स्पर्श नहीं करता है। भावार्थ सिद्धोंको जीव अदु खी है उनोंको दु ख कभी स्पर्श नही करता है जो ससारी जीव जीस दु खको बाधा है वह अबाधा काल परिपक्क होनेसे उदयमें आया हो वह दु ख जीव दु खको स्पर्श करते है अगर दु ख बन्धा हुआ होनेपर भी उदयमें नहीं आया हो वह जीव अदु खी है वह दु खको स्पर्श नहीं करते है इस अपेक्षाको सवत्र भावना करना।

(प्र०) हे भगवान्! दु खी नैरिया दु खको स्पर्श करे या अदु खी नैरिया दु खको स्पर्श करे?

(उ०) दु खी नैरिया दु खको स्पर्श परन्तु अदु खी नैरिया दु खको स्पर्श नहीं करे भावना पूर्ववत् उदय आये हुवे दु खको स्पर्श करे। उदय नही आये हुवे दु खको स्पर्श नहीं करे। तथा जो दु ख उदयमें आये है उस दु खकि अपेक्षा दु खको स्पर्श नहीं करे और जो दु ख न बन्धा है न उदयमें आये है इसापेक्षा वह नारकि अदु खी है और दु खको स्पर्श नहीं करते है एव २४ दडक समझना भावना सर्वत्र पूर्ववत् समझना। इसी माफीक दु ख पर्याय अर्थात् निघनादि कर्म पर्याय एव दु खकि उदीरणा, एव दु खको वेदणा एव दु खकि निर्जरा दु खी होगा वह ही

समुच्चय और चौवीस २५ सूत्रपर पाच

पाच दडक लगानेसे १२९ अलापक हुवे ।

आगे मुनिके भिक्षाके दोषोंका अधिकार है वह शीघ्रबोध भाग चौथामें छप चुका है वहासे देखे ।

(प्र०) हे भगवान् ! अगर कोई मुनि उपोग सू'य अयत्नासे गमनागमन कर । वस्त्र पात्रादि उपकरणो ग्रहन करे या पीच्छा रखे उसकों क्या इर्यावही क्रिया लागे या सपराय क्रिया लागे ?

(उ०) उक्त मुनियोंको इर्यावही क्रिया नहीं लागे, किन्तु सपराय क्रिया लगती है । कारण जिस मुनियोंका क्रोध मान माया लोभ नष्ट हो गये है । उस जीवोंकों इर्यावही क्रिया लगती है और जिस जीवोंका क्रोध मान माया लोभ क्षय नहीं हुवे है उस जीवोंकों सपराय क्रिया लगती है । तथा जो सूत्रमें लिखा है इसी माफीक चलनेवाले होते है उस मुनिकों इर्यावही क्रिया लगती है और सूत्रमें कहा माफीक नहीं चले उसकों सपराय क्रिया लगती है अर्थात् सूत्रमें कहा माफीक वीतराग हो वह ही चाल सक्के है इति ।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नम्बर १२

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशा २

(प्रत्याख्यानाधिकार)

अन्य स्थलपर प्रत्याख्यान करनेके लिये मुनियोंके अनेक प्रकारके अभिग्रह और श्रावकोंके लिये ४९ भाग बतलाये है इसी भांगोंके ज्ञाता होनेसे हि शुद्ध प्रत्याख्यान करके पालन कर

(प्र०) नारकी नारकीमें उत्पन्न होता है वह क्या (१) अद्धासे अद्धा उत्पन्न होता है (२) अद्धासे सर्व (३) सर्वसे अद्धा (४) सर्वसे सर्व उत्पन्न होता है ?

(उ०) जैसे पूर्वोक्त आठ द्वार कहे हैं वैसे ही प्रथम उत्पन्न वाढमें चौथा भागा और आहारमें तीजा, चौथा भागेसे कहना। इति २४ दंडक पर १६–१६ द्वार करनेसे ३८४ भागे होते है।

(प्र०) हे भगवान् ! जीव विग्रह गतीवाला है या अविग्रह गतीवाला है ?

(उ०) स्यात विग्रह गतीवाला है स्यात अविग्रह गतीवाला भी है एव नरकादि २४ दंडक भी समझ लेना।

(प्र०) घणा जीव क्या विग्रह गतीवाला है कि अविग्रह गतीवाला है ?

(उ०) विग्रह गतीवाला भी घणा अविग्रह गतीवाला भी घणा।

(प्र०) नारकीकी पृच्छा ?

(उ०) नारकीमें (१) अविग्रह गतीवाला सास्वता (स्थानापेक्षा) (२) अविग्रह गतीवाला घणा, विग्रह गतीवाला एक (३) अविग्रह गतीवाला घणा और विग्रह गतीवाला भी घणा एव तीन भागा हुवा इसी माफक त्रस जीवोंके १९ दंडकमें ३–३ भागे गमानसे ५७ भागे हुवे और पाच स्थावर समुच्चयकी माफक अर्थात विग्रह गतीवाला भी घणा और अविग्रह गतीवाला भी घणा। पूर्वोक्त ३८४ और ५७ मिलके कुल भागा ४४१ हुवा।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम्।

सके है। शास्त्रकारोंने प्रत्याख्यान करनेकि चतुर्भागी बतलाई है। यथा=

(१) प्रत्याख्यान करानेवाला गीतार्थ=द्रव्य क्षेत्र काल भाव बल सहनन अवसर आदिके जानकार हो। प्रत्याख्यान करनेवाले भी गीतार्थ हो। प्रत्याख्यान करते समय करण योग शरीर सामर्थ्य आदिका ज्ञाता हो। यह प्रथम भाग शुद्ध है।

(२) प्रत्याख्यान करानेवाला गीतार्थ हो और प्रत्याख्यान करनेवाला अगीतार्थ हो। यह भी दुसरे नम्बरमें शुद्ध है कारण प्रत्याख्यान करानेवाला ज्ञाता होनेसे अज्ञात जनकों भी द्रव्यादि जानके प्रत्याख्यान करा देते है और संक्षिप्त समझानेपर भी प्रत्याख्यान शुद्ध पालन कर सके। गीतार्थोंकि निश्चय क्रिया करना स्वीकार करी है।

(३) प्रत्याख्यान करानेवाले अगीतार्थ और प्रत्याख्यान करनेवाला गीतार्थ इस भागाकों तीसरा दरजे शुद्ध काहा है कारण प्रत्याख्यान पालन करनेवाला पालन करनेमें गीतार्थ है परन्तु प्रत्याख्यान करानेवाला अगीतार्थ होनेसे उन्होंने किस करण योगसे प्रत्याख्यान कराया वास्ते इस भागाको शास्त्रकारोंने तीसरे दर्जे शुद्ध बतलाये है।

(४) प्रत्याख्यान करानेवाले और करनेवाले दोनों अगीतार्थ हो यह भागा बिलकुल ही अशुद्ध है।

सूत्रकार—

(प्र०) हे सर्वज्ञ! कोई जीव एसा प्रत्याख्यान करे।

(१) सर्व प्राण=बैकेन्द्रिय प्राण धारक।

थोकड़ा नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशा १

(आहाराधिकार)

अनाहारीक जीव च्यार प्रकारके होते है यथा

(१) सिद्ध भगवान सदैव अनाहारीक है।

(२) चौदव गुणस्थान अ तर महुर्त अनाहारीक है।

(३) तेरवां गुणस्थान केवली समुद्‌घात करते तीन समय अनाहारीक होते है।

(४) परभव गमन करते वखत विग्रह गतिमें १–२–३ समय अनाहारीक रहते है। इस थोकडेमें परभव गमन समय अनाहारीक रहते है उसी अपेक्षासे प्रश्न करेंगे और इसी अपेक्षासे उत्तर देंगे।

(प्र) हे भगवान ! जीव कोनसे समय अनाहारीक होते है?

(उ) पहले समय स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक दुसरे समय स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक। तीसरे समय स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक। चौथे समय निश्चय आहारीक होते है। भावार्थ। जीव एक गतिको त्यागकर दुसरी गतिको गमन करता है। शरीर त्याग समय यहांपर आहार (रोमाहार) कर परभव गमन समश्रेणी कर वहा जाके आहार कर लेता है वास्ते स्यात् आहारीक है। अगर मृत्यु समय यहा पर आहार नहीं करता हुवा समुद्‌घातकर परभव गमन समश्रेणि कर वहांपर पहले समय आहार किया हो। वह जीव स्यात् अनाहारी कहा जाता है। दुसरे समय स्यात् आहारीक जो जीव एक समयकि विग्रह गति करी हो वह दुसरे समय उत्पन्न स्थान जाके आहार करता है वास्ते स्यात् आहारीक तथा

(२) सर्व भूत=वनास्पति तीनों कालमें स्थित।

(३) सर्व जीव=जीवनके सुखदु खको जाननेवाली पाचे न्द्रिय जीव।

(४) सर्व सत्व=पृथ्वी अप तेउ वायु जीव सत्ता सयुक्त।

इस च्यारों प्रकारके जीवोंको मारनेका प्रत्याख्यान करने वा लोंकों क्या सुप्रत्याख्यान होता है या दु प्रत्याख्यान होता है अर्थात् अच्छे सुन्दर प्रत्याख्यान कहना या खराब प्रत्याख्यान कहना ?

(उ०) हे गौतम पूर्वोक्त सर्व जीवोंको मारनेका त्याग किया हो उसको स्यात् अच्छे प्रत्याख्यान भी कहा जाते है स्यात् खराब प्रत्याख्यान भी कह जाते है ।

(प्र०) हे भगवान् । इसका क्या कारन है ।

(उ०) जीस जीवोंको एसा जाणपणा नहीं है कि यह जीव है यह अजीव है यह त्रस है यह स्थावर है (उपलक्षणसे) " यह सन्नी, असन्नी, पर्याप्त, अपर्याप्त, सूक्ष्म, बादर, इत्यादि प्रत्याख्यान क्या वस्तु किस वास्ते किया जाते है, क्या इसका हेतु है, कितने करण योगसे मैं प्रत्याख्यान करता हूं " एसा जानपणा न होनेपर भी वह जीव कहेते है कि मैं सर्व प्राणभूत जीव सत्वके प्रत्याख्यान किया है वह जीव सत्य भाषाके बोलनेवाला नही है किन्तु असत्य भाषी है, निश्चयकर मृषावादी है, सर्व प्राण यावत् सत्वके लिये तीन करण तीन योगसे असयति है अव्रती है प्रत्याख्यानकर पापकर्म आते हुवेकों नही रोके है । सक्रिय है, आत्माकों सवृत नही करी है । एकान्त दडी (आत्माकों दडारण है)एकान्त बाल= अज्ञानी है ।

दो समयकि विग्रह करे तों स्यात् अनाहारीक होता है । तीसरे समय स्यात् आहारिक स्यात अनाहारीक अगर कोइ जीव दुवंका श्रेणिकर तीसरे समय उत्पन्न स्थानका आहार लेवे तो स्यात आहारीक है और त्रसनाळीके बाहार लोकके अन्तके खुणासे मृत्यु प्राप्तकर प्रथम समय सम श्रेणि करे दुसरे समय त्रसनालिमें आवे तीसरे समय उर्ध्व दिसामें आवे अगर वहा ही उत्पन्न होना हो तों तीसरे समय आहारीक होता है और उर्ध्वलोकके स्थावर नालिमें उत्पन्न होनेवाला जीव तीसरे समय भी अनाहारी रहेता वह जीव चोथे समय नियमा आहारीक होता है । टीकाकारोंका कथन है कि अगर निचे लोकके चरमान्तसे जेसे जीव मृत्यु करता है इसी माफीक उर्ध्व लोकके चरमान्तके खुणेमें उत्पन्न होनेकि एसी श्रेणि नहीं है वास्ते शास्त्रकारोंका फरमान है कि चोथ समय नियमा आहारीक होता है । इति समुच्चय जीव ।

नारकी आदि १९ दंडक पहले दुसरे समय स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक तीसरे समय नियमा आहारीक कारण त्रसनालिमें दोय समयकि विग्रह गति होती है और पाच स्थावरोंके पाच दंडकमें पहले दुसरे तीसरे समय स्यात आहारक स्यात अनाहारिक चोथे समय नियमा आहारीक भवना पूर्ववत् समझना ।

(प्र) हे भगवान् । जीव सर्वस स्वल्प आहारी कोनस समय होते है ?

(उ) जीव उत्पन्न होते पहले समय तथा मरणके अन्त समय अल्प आहारी होते है । भावार्थ जीव उत्पन्न होते है उस समय तेजस   यह दोय शरीर द्वारा आहारक पुद्गल लेते

यहापर उत्कृष्ट ज्ञान पक्षको स्वीकारकर स्वसत्ताको ध्याने, परसत्ताका त्यागन करना कारण आत्मा स्वसत्ता विलासी है जितने अस, परसत्ता, परप्रणतिमें, प्रवृति है इतने अगमें अज्ञानता है इस्के वास्ते शास्त्रकार फरमाते है ।

जिस जीवोंको एसा ज्ञान है कि इसमें जीव इसमें अजीव इसमें त्रस, स्थावर, सज्ञी, असज्ञी, पर्याप्ता, अपर्याप्ता, सूक्ष्म, बादर, यह प्रत्याख्यान इस करण योगोंसे ग्रहन किया है और इसी माफीक पालन करना है यावत् आत्मसत्ताको जाण, पर प्रणतिका प्रत्याख्यान करनेवाला कहता है कि मैं सर्व प्राणभूत जीव सत्वको मारनेका प्रत्याख्यान किया है वह सत्यभाषाका बोलनेवाला है निश्चय सत्यवादी है तीन करण तीन सयोगसे संयति है व्रती है प्रत्याख्यान कर आते हुवे पापको प्रतिहत करदीया है अक्रिय है संवृत आत्मा है अदडी है एकान्त पंडित है ।

भावार्थ—जिस पदार्थको ठीक तौरपर नही जाना हो उसीका प्रत्याख्यान केसे होसके अगर प्रत्याख्यान कर भी लिया जाय तो उसको पालन किस तौरपर करसके वास्ते शास्त्रकारोंका निर्देश है कि पेस्तर स्वसत्ता परसत्ता स्वगुण परगुण पदार्थोको ठीक ठीक जानों समझो फीरसे परवस्तुका त्यागकर स्ववस्तु (ज्ञानादि) मे रमणता करो ।

(प्र०) हे प्रभो ! प्रत्याख्यान कितने प्रकारके है ?

(उ०) प्रत्याख्यान दो प्रकारके होते है (१) मूलगुण प्रत्याख्यान (२) उत्तरगुण प्रत्याख्यान

है। सामग्री स्वल्प होनेसे स्वल्प पुद्गलोंका आहार लेते है और चरम समय उत्पातादि सामग्री शीतल होनेसे भी , स्वल्प आहार लेते है इसी माफीक नारकादि चौवीस दंडक उत्पन्न समय तथा चरम समय स्वल्प आहारी होते है।

(प्र) हे भगवान्। लोकका क्या सस्थान है ?

(उ) अधोलोक ती पायाके सस्थान है। उर्ध्व लोक उभी मादलक सस्थान है तीर्यग लोक झालरीक सस्थान है। सम्पूर्ण लोक सुप्रतिष्ट अर्थात तीन सरावला (पासलीया)के आकार पहला एक स रावला उंधा रखे उसपर दुसरा सरावला सीधा रखे तीसरा सरावल उसपर उंधा रखे अर्थात लोक निचेसे विस्तारवाला है विचमें संकुचित उपरसे विस्तार (पाचवा देवलोक) उसके उपर और संकुचित है विस्तार देखो शीघ्रबोध भाग १२वा। इस लोककि व्याख्या जिन, अरिहंत केवली सर्वज्ञ भगवान्ने करी है। जीवाजीव व्याप्त लोक द्रव्यास्ति नयापेक्षा साश्वत है पर्यायास्ति नयापेक्षा असाश्वत है।

(प्र०) हे भगवान्। कोई श्रावक सामायिक कर सामायिकमें प्रवृति कर रहा है उनकों क्या इर्यावहि क्रिया लागे या संपराय क्रिया लागे ?

(उ०) सामायिक संयुक्त श्रावकों इर्यावहि क्रिया नहीं लागे किं तु संपराय क्रिया लागे कारण क्रिया लगनेका कारण यह है।

(१) इर्यावही क्रिया केवल योगोंके प्रवृतिको लगती है जि होके क्रोध मान माया लोभ मूलसे नष्ट हो गये है तथा उपशान्त हो गये है एसे जो वीतराग ११-१२-१३ गुणस्थान वृति जीवोंकों इर्यावही क्रिया लगती है।

(प्र०) मूल गुण प्रत्याख्यान कितने प्रकारके है ?

(उ०) मूल गुण प्रत्याख्यान दो प्रकारके है । यथा=(१) सर्व मूल प्रत्य० (२) देश मूल प्रत्या ।

(प्र०) सर्व मूल गुण प्रत्याख्यान कितने प्रकारके है ।

(उ०) सर्व मूल गुण प्रत्या० पाच प्रकारके है यथा--

(१) त्रस स्थावर , सुक्ष्म बादर, किसी प्रकारके जीवोंको स्वय मारणा नहीं दुसरोंसे मरवाना भी नहीं । कोई जीवोंको मारता हो उसे अच्छा भी नहीं समझना जेसे मनसे किसीका मृत्यु न चिंतवना, बचनसे किसीकों मृत्यु एसा शब्द भी नहीं बोलना, कायासे किसीकों नहीं मारना अर्थात किसी भी जीवोंका बुरा नहीं चिंतवना, बचनसे किसीकों बुरा नहीं बोलना, कायासे किसीका बुरा नहीं करना यह साधुवोंका पहला महाव्रत है । तीन करण तीन योगसे जीव हिंसा नहीं करना ।

(२) क्रोधसे, मानसे, मायासे, लोभसे, हास्यसे, भयसे, मृषावाद नहीं बोलना, किसी दुसरोंसे नहीं बोलाना, कोई बोल्ता हो उसे अच्छा भी नहीं समझना, असत्य बोलनेका मन भी नहीं करना, बचनसे नहीं बोलना, कायासे इसार भी नहीं करना यह मुनियोंका दुसरा महाव्रत है । ,,

(३) ग्राममें नगरमे जगलमें स्वल्प वस्तु, महान् वस्तु, अणु (छोटी तृणादि) स्थुल वस्तु स्वल्प मूलकि महान्मूल्यकि सचित्त जीव सहित शिष्यादि, अचित जीव रहित सुवर्णादि तथा वस्त्र पात्रादि इत्यादि कोई भी वस्तु विगर दातारकी दीय स्वय् नहीं

(२) सपराय क्रिया=कषाय और योगोंकि प्रवृतिसे लगति है। कषाय सद्भावे पहले गुणस्थानसे दशवें गुणस्थानवृत्ति जीवोंको सपराय क्रिया लगती है श्रावक है सो पाचवे गुणस्थान है वास्ते सामायिक वृत श्रावककों इर्यावही क्रिया नही लाग परन्तु सपराय क्रिया लगती है।

(प्र) हे भगवान्! क्या कारण है।

(उ) सामायिक कीये हुवे श्रावक कि आत्मा अधिकरण अर्थात् क्रोधमानादि कर सयुक्त है वास्ते उसकों सपराय क्रिया लगति है।

(प्र) किसी श्रावकने त्रस जीव मारनेका प्रत्याख्यान किया। और पृथ्व्यादि स्थावर जीवोंकों मारनेका प्रत्याख्यान नहीं है। वह श्रावक गृहकार्यवसात पृथ्वीकाय खोंदतों अगर कोई त्रस जीव मर जावे तों उस श्रावकको व्रतोंके अन्दर अतिचार लगता है?

(उ०) उस श्रावककों अतिचार नहीं लगे कारण उस श्रावक का सकल्प पृथ्वीकाय खोदनेका था परन्तु त्रसकायकों मारनेका सकल्प नहीं था। हा त्रसकाय मर जानेमे त्रसकायका पाप आवश्य लगता है। परन्तु व्रतोंके अन्दर अतिचार नहीं लगते है, 'भावविशुद्धि' इसी माफीक वनस्पति छेदनेका श्रावकको प्रत्याख्यान है और पृथ्व्यादि खोदतों वनास्पतिका मूलादि छेदाय जावे तों उस श्रावकके व्रतोंमे अतिचार नहीं है। भावना पूर्ववत्।

(प्र०) कोई श्रावक तथारूपके मुनिकों निर्जीव निर्दोष असनादि आहारका दान दे उस श्रावकको क्या लाभ होते है?

लेना दुसरोंसे नही लीवाना, अगर कोई व्यक्ति विगर दी वस्तु लेता हो उसे अच्छा भी नहीं समझना, मनसे अदत्त ग्रहनका इरादा नहीं करना, वचनसे भाषण भी नहीं करना, कायासे उठाके लेना भी नहीं यह महा ऋषियोंका तीसरा महाव्रत है ”

(४) देवागना मनुष्यणी तीर्यंचणीके साथ मैथुनकर्म सेवन नहीं करना औरोंसे नहीं कराना अगर कोई करता हो उसे अच्छा भी नहीं समझना। मनसे सकल्प न करना, वचनसे मैथुन सबधी भाषा नहीं बोलना, कायसे कुचेष्टादि नहीं करना यह ब्रह्मचारी पुरूषोंका चतुर्थ महाव्रत है।

(५) स्वल्प बहुत, अणु, स्थुल, सचित्त, अचित्त एसा परिग्रह न रखना न रखाना, रखता हो उसे अच्छा भी नहीं समझना, ममत्व भाव रखनेका मनसे सकल्प भी नहीं करना, वचनसे शब्द भी उच्चारण नहीं करना, कायाकर भडोपकरण तथा अपने शरीर पर भी ममत्व भाव नहीं रखना यह निरग्रही महात्मावोंका पाचम महाव्रत है। ”

“ रात्री भोजन मुनियोंके प्रथम महाव्रतकि भावनामें निषेद है तथा श्रावकोंकि बाविस अभक्षोंमें बिलकुल निषेद है ”

इस पाचों मूलगुणोंके स्वामि–अधिकारी मुनि मत्तगज है।

(प्र०) देशमूलगुण प्रत्याख्यान कितने प्रकारके है ?

(उ०) देशमूलगुण प्रत्या० पाच प्रकारके है। यथा–

(१) स्थुल प्राणी जो हलने चलने त्रस जीवोंको जानके, देखके, [illegible] बुद्धि करके नही मारना।

(उ०) श्रावकके दीया हुवा आहारकी साहितासे उस मुनि कों जो समाधि मीली है वह ही समाधि आहारके देनेवाले श्राव कको मीलती है अर्थात आहारकि साहितासे मुनि अपने आत्म ध्यान ज्ञानके गुणोंकों प्राप्ती करते हैं वह ही आत्मध्यान ज्ञान श्रावकों भी मीलते है। कारण फासुक आहार देनेसे एकान्त निर्जरा होना शास्त्रकारोंने कहा है।

(प्र०) कोई श्रावक मुनिकों निर्जीव निर्दोष असनादि आहार देता है तो वह श्रावक मुनिकों क्या दिया कहा जाता है?

(उ०) वह श्रावक मुनिकों आहार दीया उसे जीवत दीया कहा जाता है कारण औदारिक शरीरका जीवत आहारके आधार पर ही है और एसा आहार देना (सुपात्रदान) महान् दुष्कर है एसा अवसर मीलना भी दुर्लभ है। वास्ते उस दातार श्रावकों सम्यग्दर्शनके साथ परम्परासे अक्षय पदकि प्राप्ती होती है। इति।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम्।

थोकडा नम्बर १०

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशा १

(अकर्मीकों गति)

(प्र०) हे भगवान्! अकर्मीकों भी गति होती है?

(उ०) हां गौतम! अकर्मीकों गति होती है।

(प्र०) हे भगवान! कौस कारणसे अकर्मीको गति होती है?

(उ०) जैसे एक तूम्बा होता है उसका स्वभाव हलकापणा होनेसे पाणीपर तीरणेका है परन्तु उसपर मट्टीका लेपकर अतापमें

(२) स्थुल मृषावाद जिससे राजदडे, लोकमें भडाचार हों दुनीयोंमे अप्रतित हो एसा मृषावाद नही बोल्ना। "जेसे कन्या, गाय, भूमिका स्थापण झूठी गावा देना।"

(३) स्थुल चौरी 'अदत्त' जिससे राज दडे, लोकमें भडा चार हों दुनियोंमे अप्रतित हो एसी चौरी न करना। जेसे खातर क्षण गाट छेदन ताला पर दूसरी चावी लगाना वट पाड,(घाडा पटणी लुट करणी) अन्यकि वस्तु ले अपणीं मालकी करना।"

(४) स्थुल मैथुना (सदारा सतोष) पर स्त्रि वैश्या विधवा कुमारीक कुलगना इत्यादिका त्यागकर मात्र सदारामे ही संतोष करना उसमें भी मर्याद रखना।"

(५) स्थुल परिग्रह (इच्छपरिमाण) इच्छाका परिमाण करनेके बादमें अधिक ममत्व भाव न बढाना।

इस पाच देशमूलगुण प्रत्याख्यानके अधिकारी श्रावक होते है इसमे मौंग्य तों दोय करण तीन योगोंसे प्रत्याख्यान होते है सामान्यतासे स्वइच्छा भी करण योगसे प्रत्याख्यान कर सक्ते है।

(प्र०) हे भगवान्। उत्तरगुण प्रत्याख्यान कितने प्रकारके है?

(उ०) दो प्रकारके है यथा (१) सर्व उत्तरगुण प्रत्या० (२) देश उत्तरगुण प्रत्याख्यान।

(प्र०) हे भगवान् सर्व उत्तरगुण प्रत्य० कितने प्रकारके है?

(उ०) सर्व उत्तरगुण प्रत्य० दश प्रकारके है—यथा—

(१) "अणागय" अमुक तीथीकों तपश्चर्य करनेका निर्णय कियाथा परन्तु मुकर करी हुइ तिथिकों किसी आचार्यादि वृद्ध

शुष्कके और मट्टीका लेप करे एसे आठ मट्टीका लेप करदेनेसे वह तुम्बा गुरुत्वकों प्राप्त हो जाता है फीर उस तुंबेकों पाणीपर रख देनेसे वह तुंबा पाणीके अधोभाग अर्थात् रसतलको पहुंच जाता है वह तूबा पाणीमे इधर उधर भटकनेसे किसी प्रकारके उपनम लगनेसे मट्टीके लेप उतर जानेसे स्वय ही पाणीके उपर आजाता है इसी माफीक यह जीव स्वभावसे निर्लेप है परन्तु आठ कर्मोसे गुरुत्वकों प्राप्तकर ससाररूपी समुद्रमें परिभ्रमण करता है । कभी सम्यग ज्ञानदर्शन चारित्ररूपी उपक्रमोंसे कर्म लेप दूर हो जानेसे निर्लेप हुवा तूबा गति करता है इसी माफीक अकर्मी जीवकि भी गति होती है उस गतिकों शास्त्रकारोंने—

(१) "निससगयाए" कर्मोंका सग रहित गति ।

(२) "निरगणयाए" कषायरूपी रग रहित गति ।

(३) "गइ परिणामेण" गति परिणाम अर्थात जीव कि स्वाभावे उर्ध्व जाने कि गति है । जेसे कारागृहसे छूटा हुवा मनुष्य अपना निजावसकों जानामें स्वाभावीक गति होती है इसी माफीक ससाररूपी कारागृहसे छुट जानेमे मोक्षरूपी निजावासमें जानेकि जीवंकि स्वाभावीक गति है ।

(४) 'बन्ध छेदन गति" जेसे मुग मठ चावलादि कि फली पूर्वबन्धी हुई होती है उस्कों आताप लगनेसे स्वयं फाटके अलग होजाती है इसी माफीक तपश्चर्यरूपी आताप लगनेसे कर्म अलग होते है और जीव बन्धन छेदनगति कर मोक्षमे चला जाता है ।

(५) "निरधण गति" जेसे अग्नि इधण न मीलनेसे शान्त होती है इसी माफीक रागद्वेष तथा मोहनिय कर्मरूपी

मुनियोंके व्यावच विहारादि कारण होनेसे उस तपकों मुकर करी तीथीके पेस्तर ही कर दीया जाय ।

(२) "अइक्त" पूर्वोक्त मुकर करी तीथी पर कीसी सबल कारणसे वह तप नहीं हुवा हो तों उस तपकों आगे कर सके ।

(३) "कोडी सहिय" जिस तपकी आदिमें जो तप कियाहो वह तप उस तपश्चर्यके अन्तमें भी करना चाहिये जेसे एकावली तपकि आदिमें एक उपवास करते है तों अन्तमें भी एक उपवास-से समाप्त करे एव छठ अट्टमादि ।

(४) "निर्यट्टय" निश्चय कर लिया कि अमूक तीथीकों अमुक तप करना तों फीर किसी प्रकारका कारण क्यो न हो पर-न्तु वह तप तों अवश्य करे ही ।

(५) "सागार" प्रत्याख्यान करते समय आगार रखने है जेसे "अन्नत्थणा भोगेण" इत्यादि उपवास एकासना अम्बिलादि तपमें आगार रखा जाते है ।

(६) "अणागार" किसी प्रकारका "आगार" नहीं रखा जावे जेसे अभिग्रह धारक मुनि उत्सर्ग मार्ग धारकोंके अभिग्रह आगार रहित ही होते है ।

(७) "परिमाण" दात्यादिका परिमाण करना तथा भिक्षा निमत्त मुनि अनेक प्रकारके द्रव्यादिका परिमाण करे ।

(८) "निरविसेस" सर्वता असानादिका त्याग करना ।

(९) 'साकेय' गठसी मुठसी कानसी आदिका सकेत करना जेसे कपडेके गाठ दी रहे वहा तक प्रत्याख्यान और गाठ छोडे वहा तक खुला रहे ।

कर्मरूपी अग्नि शान्त हो जाति है तथा इधनके अंदर अग्नि लगानेसे धुवा निकलके उर्ध्वगतिको गमन करता है एसे जीव कर्मरूपी अग्निको छोड उर्ध्व गति गमन करता है ।

(६) "पूर्व प्रयोगगति" जेसे तीरके बाणमे पेम्तार खुब वेग भरं दीया हो उस वेगके जोरसे तीरसे छूटा हुवा बाण जाता है इसी माफीक पूर्व योगोंका वेग जेसे बाण जाता हुवा रहस्तेमें तीरका सग नही है केवल पूवक वेगसे ही चल रहा है इसी माफीक मोक्ष जाते हुवे जीवोंको योगों कि प्रेरणा नही है किंतु पूर्व योगसे ही वह जीव सात राज उर्ध्व गतिकर मोक्षमे जाता है जेसे बाण मुद्रत स्थानपर स्थित हो जाता है इसी माफीक जीव भी मोक्षक्षेत्र तक जाके वहापर सादि अनन्त भागे स्थित हो जाता है इस वास्ते हे गौतम अकर्मी जीवोंको भी गति होती है ।

यह प्रश्न इस वास्ते पुच्छा गया है कि जीव अष्ट कर्मोका क्षय तो इस मृत्यु लोकमें ही कर देता है और विगर कर्मोके हलन चलन कि क्रिया हो नही सक्ती है तो फीर सातराज उर्ध्व मोक्ष क्षेत्र तक गति करते है वह किस प्रयोगसे करते है ? इसके उत्तरमें शास्त्रकारोंने छे प्रकारकि गतिका खुलासा किया है । इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नम्बर ११

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशा १

(दुःखाधिकार)

(प्र०) हे भगवान् ! दुःखी है वह जीव दुःखको स्पर्श

(२) स्थुल मृषावाद जिससे राजदडे, लौकमें भडाचार हों दुनीयोंमे अप्रतित हो एसा मृषावाद नही बोलना। "जेसे कन्या, गाय, भूमिका स्थापण झूठी गावा देना।"

(३) स्थुल चौरी 'अदत्त' जिससे राज दडे, लौकमें भडा चार हों दुनियोंमे अप्रतित हो एसी चौरी न करना। जेसे क्षातर क्षण गाठ छेदन ताला पर दूसरी चाबी लगाना वट पाड (धाडा पटणी लुट करणी) अन्यकि वस्तु ले अपणीं मालकी करना।"

(४) स्थुल मैथुना (सदारा सतोष) पर स्त्रि वैश्या विधवा कुमारीक कुलगना इत्यादिका त्यागकर मात्र सदारासे ही सतोष करना उसम भी मर्यांद रखना।"

(५) स्थुल परिग्रह (इच्छपरिमाण) इच्छाका परिमाण करनेके बादमें अधिक ममत्व भाव न बढाना।

इस पाच देशमूलगुण प्रत्याख्यानके अधिकारी श्रावक होते है इसमे मौख्य दों दोय करण तीन योगोंसे प्रत्याख्यान होने हे सामान्यतासे स्वइच्छा भी करण योगसे प्रत्याख्यान कर सक्ते है।

(प्र०) हे भगवान्। उत्तरगुण प्रत्याख्यान कितने प्रकारके है?

(उ०) दो प्रकारके है यथा (१) सर्व उत्तरगुण प्रत्या० (२) देश उत्तरगुण प्रत्याख्यान।

(प्र०) हे भगवान् सर्व उत्तरगुण प्रत्य० कितने प्रकारके है?

(उ०) सर्व उत्तरगुण प्रत्य० दश प्रकारके है—यथा—

(१) "अणागय" अमुक तीथीकों तपश्चर्य करनेका निर्णय कियाथा परन्तु मुकर करी हुइ तिथिकों किसी आचार्यादि वृद्ध

मुनियोंके व्यावच विहारादि कारण होनेसे उस तपको मुकर करी तीथीके पेस्तर ही कर दीया जाय ।

(२) "अइकत" पूर्वोक्त मुकर करी तीथी पर कीसी सबल कारणसे वह तप नहीं हुवा हो तों उस तपको आगे कर सके ।

(३) "कोडी सहिय" जिस तपकी आदिमें जो तप कियाहो वह तप उस तपश्चर्यके अन्तमें भी करना चाहिये जेसे एकावली तपकि आदिमें एक उपवास करते है तों अन्तमें भी एक उपवास-से समाप्त करे एवं छठ अट्टमादि ।

(४) "निर्याट्टय" निश्चय कर लिया कि अमूक तीथीकों अमुक तप करना तों फीर किसी प्रकारका कारण क्यो न हो पर-तु वह तप तों अवश्य करे ही ।

(५) "सागार" प्रत्याख्यान करते समय आगार रखने है जसे "अनत्थणा भोगेण" इत्यादि उपवास एकासना अम्बिलादि तपमें आगार रखा जाते है ।

(६) "अणागार" किसी प्रकारका "आगार" नहीं रखा जावे जेसे अभिग्रह धारक मुनि उत्सर्ग मार्ग धारकोंकि अभिग्रह आगार रहित ही होते है ।

(७) "परिमाण" दात्यादिका परिमाण करना तथा भिक्षा निमत्त मुनि अनेक प्रकारके द्रव्यादिका परिमाण करे ।

(८) "निरविसेस" सर्वता असानादिका त्याग करना ।

(९) 'सांकेय' गठसी मुठसी कानसी आदिका संकेत करना जेसे कपडेके गाठ दी रहे वहा तक प्रत्याख्यान और गाठ छोडे वहा तक खुला रहे ।

(प्र०) जीव असाता वेदनि कर्म किस कारणसे बाधते है ?

(उ) सर्व प्राणभूत जीव सत्वकों दु ख देवे तकलीफ देवे झूराणा करावे उपद्रव करे विघ्न करावे यावत् आश्रुपात करानेसे जीव असाता वेदनिय कर्म बावता है एव यावत् २४ दडक समझना ।

(प्र) जीव साता वेदनिय कर्म केसे बाधता है ?

(उ) प्राणभूत जीव सत्व बहुतसे प्राणभूत जीव सत्वकि अनुकम्पा करे । दु ख तकलीफ न दे। अश्रुपात न करावे यावत् साता देनेसे साता वेदनिय कर्म बाधते है । यावत् २४ दडक समझना इति ।

सेव भते सेव भते तमेव सचम् ।

थोकडा नम्बर १४

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशा ७

(काम भोग)

जीव अनादि कालसे इस आरापार ससार समुद्रमें परिभ्रमण करता है इसका मौख्य कारण इन्द्रियोंके वसीमूत हो स्वसत्ताकों भुल जाता है पर वस्तुकों अपनिकर उस्मे ही रमणता करता है वास्ते मोक्षार्थी भव्यात्मावोंको प्रथम इस इन्द्रियोंकों ओलखनी चाहिये । पाचेन्द्रियामें दोय इन्द्रियों तो कामी है जो शब्द और रूपके पुद्गलोंपर ही चैतन्यकों आकर्ष कर रही है और तीन इन्द्रियों भोगी है वह गन्ध अस्वादन और स्पर्शकों भोंगमें लेके चैतन्यकों

(१०) "अद्धाकाल" नवकारसी आदि दश प्रत्याख्यान।
प्रत्याख्यान करनेमें आगारोंका विवरण।

(१) 'अनाभोग' विस्मृति प्रत्याख्यान किया है परन्तु उसको भूल जानेपर वस्तु खानेमें आ जावे तो व्रत भग नहीं हुवे। परन्तु खाती वखत स्मृति हो कि मेने प्रत्याख्यान किया था। तो मुहसे निकाल उस वस्तुको एकान्त परिठ्ठवे अगर स्मृति होनेपर भी मुहकी वस्तु खाजावे तो व्रत भग होता है।

(२) 'सहसागारे', प्रत्याख्यान किया है और स्मृति भी है परन्तु चालतो वर्षातकी बुंद मुहमें पडे, दही बीलो तो छाटो मुहमें पडे। शकर तोल्तो रज मुहमें पडे, इसका आगार है। खबर पड नेसे उस्को पूर्वोक्त परट्ठ देना।

(३) 'महत्तरगार' अगर कोई महान् लाभका कारण है सघ समुदायका कार्य हो, बहुत जीवोंको लाभका कार्य हो, सघ आदिका कहना होनेसे (आगार।)

(४) "सर्व समाधि निमत्त" आन्तकादि महान् रोग तीव्र शुल सर्पादिका डक इत्यादि मरणान्तिक कष्ट होने समय औषधादि ग्रहण करनेका आगार।

(५) 'मच्छन्न काल' मेघके बादलोंसे, रजउर्ध्व गमनसे, महा नि दिग्दाहासे सूर्य दिखाई न देता हो ? उस हालतमें अधुरा पच्चखाण पारा जाय तो 'आगार'

(६) 'दिग्मोहेन'। दिशाका विपर्यास पण अर्थात् पूर्व दिशा को पश्चम दिशाका सकल्पकर कालकि पूर्ण खबर न पडनेसे प्रत्या० पारा हो तो 'आगार'

बेमान बना देती है वास्ते पाठकोंको इस मनघपर पूर्ण ध्यान देना चाहिये ।

(१) कामी इन्द्रियों=श्रोतेन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय ।

(२) भोगी इन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय ।

(प्र) हे भगवान् ! काम है वह क्या रूपी है ? अरूपी है?

(उ) काम रूपी है कारण शब्दके और रूपके पुद्गलोंको काम कहते है वह दोनों प्रकारके पुद्गल रूपी है ।

(प्र) काम हे सो क्या सचित्त है ? अचित्त है ?

[उ] काम, सचित भी है और अचित्त भी है । कारण सचित्त जीव सहित शब्द होना अचित्त जीव रहित शब्द । जीव सहित रूप [स्त्रीयोंका] जीव रहित रूप अनेक प्रकारके चित्रादि इन दोनोंकि विषय श्रोतेन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय ग्रहन करती है वास्ते सचित्त अचित्त दोनों प्रकारके काम होते है ।

(प्र) काम है सो क्या जीव है ? अजीव है ।

(उ) काम जीव भी है अजीव भी । भावना

श्रोतेन्द्रिय, आनेवाले पदार्थ

(७) 'साधु वचन' । साधु उग्वाडा पौरषी भणानेके शब्द सुनके पौरषीका प्रत्या० पारे अर्थात साधु छे घटी दीन आनेसे उग्घाडा पौरषी भणाते है। इसके ज्ञाते न होनेसे पौरषीका प्रत्याख्यान पारे। तों ' आगार '

(८) 'लेपालेप' जिस मुनिकों घृतका त्याग है भिक्षा देनेवाला दातारका हाथ, घृतसे लेपालेप था, हाथ पुच्छलने पर भी लेप रहे गया हो वह दातार भात पाणी देते समय लेपालेप लाग भी जावे तों भी व्रत भग नहीं होते है ' आगार '

(९) 'गृहस्थ सनप्टेन' शाक प्रमुख द्रव्य गृहस्थ लोक अपने लिये कुछ वगारादि दीया हो तथा रोटी आदि स्वल्प घृतसे चोपडी होय एसा ससृष्ट आहार लेना पडे तो " आगार "

(१०) 'उत्क्षिप्त विवेकेन' पुरी रोटी आदि द्रव्य पर कठिन विगई गुलादि रखा हो उसको आहार देते समय उठालीया हो परन्तु उसका कुछ अंश उस भोजनमें रह भी गया हो एसा आहार लेना पडे " आगार "

(११) 'प्रतित्य मृक्षितेन' रोटी प्रमुक करते समय कीसी कारणसे तेल या घृतकि अगली लगाई जाती है जिससे सुख पूर्वक वट सके एसा आहार भी लिया जाय तो " आगार "

(१२) 'पारिष्टापनिका कारेण' जो भिक्षा करतों आहार अधिक आया हो सब मुनियोंकों देनेपर भी ज्यादा हो वह एकासनदिके मुनि गुर आज्ञासे भोगव भी ले तो इसमे व्रत भग नहीं होते है परठणेमें जीवोंकि अयत्ना होती है।

(उ) काम दो प्रकारके है (१) शब्द (२) रूप।

(प्र) हे भगवान्! भोग क्या रूपी है? अरूपी है?

(उ) भोग रूपी है किन्तु अरूपी नही है। एव सचित्त अचित्त है जीव अजीव दोन प्रकारके है।

(प्र) भोग जीवके होते है? अजीवक होते है?

(उ) भोग जीवोंके होते है परन्तु अजीवोंके नहीं होते है कारण घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय होती है वह जीवके ही होती है न कि अजीवके।

(प्र) भोग कितने प्रकारके है?

(उ) भोग तीन प्रकारके है गन्ध रस स्पर्श

(प्र) हे भगवान् काम और भोग कितने प्रकारके है?

(उ) काम भोग पाच प्रकारके है शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श।

(प्र) हे भगवान्। जीव कामी है या भोगी है?

(उ) जीव कामी भोगी दोनों प्रकारका है। कारण। श्रोतेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय अपेक्षा जीव कामी है और घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय अपेक्षा जीव भोगी है। एव नारकादि १६ दडक कामी भोगी दोनों प्रकारके है। चोरिन्द्रिय दडकमें चक्षुइन्द्रियापेक्षा कामी शेष तीन इन्द्रिय अपेक्षा भोगी है शेष पाच स्थावर बे इन्द्रिय तेन्द्रिय एव ७ दडक कामी नहीं है परन्तु भोगी है कारण तेन्द्रिय तीनों इन्द्रियों अपेक्षा बेन्द्रिय दो इन्द्रिय और एकेन्द्रिय एकस्पर्शेन्द्रियापेक्षा भोगी है।

(१०) दिवस चरम प्रत्या० दिनके अन्तमें किये जाते है आगर ४ पूर्ववत

(११) उपवास तिविहार चोविहार तथा दिशाविगासीके प्रत्याख्यानमें च्यार च्यार आगार होते है । सर्व प्रकारके प्रत्याख्यान करानेका पाठ पाच प्रतिक्रमणकि पुस्तकोंसे देखे ।

(प्र) हे भगवान् । देश उत्तर गुण प्रत्याख्यान कितने प्रकारके है ?

(उ) देश उत्तर गुण प्रत्या० सात प्रकारके है ।

(१) दिशाव्रत=उर्ध्व अधो पूर्व पश्चम उत्तर दक्षिण इस छेवों दिशाका परिमाण-जीव जीव तकके करे । अमूक दिशामें इतने जोजनसे ज्यादा न जाना ।

(२) उपभोग, परिभोग, एकदफे काममें आवे या वारवार काममें आवे एसे द्रव्योंकि जावजीवके लिये मर्यादा करना तथा व्यापारादि कि भी मर्यादा करते हुवे १५ कर्मादानका परित्याग करना ।

(३) अनर्था दंड=निरर्थक आरत ध्यानका त्याग प्रमादके वस घृत तेल दुग्ध दहीं पाणी आदिको भाजन खुल्ला रखनेका त्याग, हिंसाकारी शस्त्र एकत्र करना नये तैयार कराना पुराणोंको सजबट करानेका त्याग पापकारी उपदेशका करनेका त्याग ।

(४) सामायिकव्रत-प्रतिदिन सामायिक करना ।

(५) दिशाविगासीकव्रत-छटे व्रतमें दिशावोंका परिमाण सातवा व्रतमें द्रव्यादिका परिमाण यह दोनों व्रत जावजीव तकक

वेमान बना देती है वास्ते पाठकोंको इस सबधपर ,पुण ध्यान देना चाहिये ।

(१) कामी इन्द्रियों=श्रोतेन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय ।

(२) भोगी इन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय ।

(प्र) हे भगवान् ! काम है वह क्या रूपी है ? अरूपी है ?

(उ) काम रूपी है कारण शब्दके और रूपके पुद्गलोंको काम कहते है वह दोनों प्रकारके पुद्गल रूपी है ।

(प्र) काम है सो क्या सचित्त है ? अचित्त है ?

[उ] काम, सचित भी है और अचित्त भी है । कारण सचित्त जीव सहित शब्द होना अचित्त जीव रहित शब्द । जीव सहित रूप [स्त्रीयोंका] जीव रहित रूप अनेक प्रकारके चित्रादि इन दोनोंकि विषय श्रोतेन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय ग्रहन करती है वास्ते सचित्त अचित्त दोनों प्रकारके काम होते है ।

(प्र) काम है सो क्या जीव है ? अजीव है ।

(उ) काम जीव भी है अजीव भी । भावना पूर्ववत् अर्थात् श्रोतेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रियके काममें आनेवाले पदार्थ जीव अजीव दोनों प्रकारके होते है ।

(प्र) काम जीवोंके होते है या अजीवोंके होते है ?

(उ) काम जीवोंके होते है किंतु अजीवोंके नहीं होते है । कारण श्रोतेन्द्रिय चक्षु इन्द्रिय होती है वह जीवके ही होती है न कि अजीवके ।

(प्र) हे भगवान् ! काम कितने प्रकारके है ?

है उसमें विस्तारसे रखे हुवे दिशा तथा द्रव्यादिकों सक्षिप्त करना जिस्के १४ नियमकों धारण करना ।

(६) पौषधव्रत—आहार पौषद जिस्में भी (१) सर्व आहारका त्यागरूप तथा देश आहारके त्यागरूप (एकासना तथा तथा तिविहार व्रत) (२) शरीर विभूषाका त्यागरूप पौषद (३) ब्रह्मचार्यव्रत पालन करने रूप पौषद (४) व्यापारका त्याग रूप पौषध यह च्यारों प्रकारके पौषदसे पौषद करना ।

(७) अतिथी सविभाग=साधु साध्वियोंकों फासुक निर्दोष आहार पाणी स्वादम (मेवा सुखडी) सादिम (लवग इलायची) वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण पाट फलग शय्या सस्तारक औषध भेषज्ञ एव १४ प्रकारसे दान देना । साधु अभाव स्वधर्मी भाइयोंकों भी भोजन कराना 'अपच्छमा' अन्त समय आलोचना पूर्वक पडित मरण समाधि मरणके लिये सलेखना करना इत्यादि ।

पाच अणुव्रतकों मूल गुण व्रत कहते है इस ७ व्रतोंकों उत्तर गुण व्रत कहते है एव १२ व्रतोंकों श्रावक धारण कर निरातिचार व्रत पालनेसे भगवानकि आज्ञाका आराधि हो सके है । वह ज० तीन, उ० पन्दरा भव करने है ।

(प्र०) हे भगवान् ! जीव क्या मूल गुण पचखाणी है ? उत्तर गुण पचखाणी है ? अपचखाणी है ?

(उ०) जीव तीनों प्रकारके है पूर्ववत् । कारण नारकादि २२ दटकके जीव अपचखाणी है और तीर्यंच पाचेन्द्रिय तथा मनुष्य मूल गुण पचखाणी उत्तर गुण पचखाणी और अपचखाणी तीनो प्रकारके होते है ।

(उ) काम दो प्रकारके है (१) शब्द (२) रूप।

(प्र) हे भगवान्! भोग क्या रूपी है ? अरूपी है ?

(उ) भोग रूपी है किन्तु अरूपी नही है। एव सचित्त अचित्त है जीव अजीव दोन प्रकारके है।

(प्र) भोग जीवके होते है ? अजीवके होते है ?

(उ) भोग जीवोंके होते है परन्तु अजीवोंके नहीं होते है कारण घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय होती है वह जीवके ही होती है न कि अजीवके।

(प्र) भोग कितने प्रकारके है ?

(उ) भोग तीन प्रकारके है गन्ध रस स्पर्श

(प्र) हे भगवान् काम और भोग कितने प्रकारके है ?

(उ) काम भोग पाच प्रकारके है शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श।

(प्र) हे भगवान्। जीव कामी है या भोगी है ?

(उ) जीव कामी भोगी दोनों प्रकारका है। कारण। श्रोतेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय अपेक्षा जीव कामी है और घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय अपेक्षा जीव भोगी है। एव नरकादि १६ दडक कामी भोगी दोनों प्रकारके है। चोरिन्द्रिय दडकमें चक्षुइन्द्रियापेक्षा कामी शेष तीन इन्द्रिय अपेक्षा भोगी है शेष पाच स्थावर बे इन्द्रिय तेन्द्रिय एव ७ दडक कामी नहीं है परन्तु भोगी है कारण तेन्द्रिय तीनों इन्द्रियों अपेक्षा बेन्द्रिय दो इन्द्रिय और एकेन्द्रिय एकस्प-र्शेन्द्रियापक्षा

समुच्चय जीवोंकि अल्पा बहुत्व (१)

(१) स्तोक मूल गुण पचखाणी जीव है ।

(२) उत्तर गुण पचखाणी असंख्यात गुण ।

(३) अपचखाणी अनन्त गुण

तीर्यंच पाचेन्द्रिकि अल्पा० (२)

(१) स्तोक मूलगुण पचखाणी जीव है ।

(२) उत्तर गुण पचखाणी असंख्यात गुण

(३) अपचखाणी असंख्यात गुण

मनुष्यकि अल्पा बहुत्व (३)

(१) स्तोक मूलगुण पचखाणी जीव है ।

(२) उत्तर गुण पचखाणी संख्यात गुण

(३) अपचखाणी असंख्यात गुण ।

(प्र) हे भगवान् ! जीव क्या सर्व मूलगुण पचखाणी है ? देश मूलगुण पचखाणी है ? अपचखाणी है ?

(उ) जीव तीनों प्रकारके है । कारण नरकादि २२ दंडक अपचखाणी है, तीर्यंच पाचेन्द्रिय देश मूलगुण और अपचखाणी है और मनुष्य तीनों प्रकारके है जिस्की अल्पा बहुत ।

समुच्चय जीवों कि अल्पा० (१)

(१) स्तोक सर्व मूल पचखाणी जीव है ।

(२) देश मूल गुण पचखाणी असंख्यात गुणे

(३) अपचखाणी अनन्त गुणा

तीर्यंच पाचन्द्रियकी अल्पा० (२)

(१) स्तोक देश मुलगुण पचखाणी जीव है ।

अल्पा बहुत्व

(१) स्तोक जीव कामी

(२) नो कामी नो भोगी जीव अनन्त गुण कारण भव केवली और सिद्ध केवली यह नो कामी नो भोगी है ।

(३) भोगी जीव अनन्त गुणा इसमें एकेन्द्रिय जीव सेमल है।

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

(२) अपचखाणी असख्यात गुणा

मनुष्यकि अल्पा० (३)

(१) स्तोक सर्व मूलगुण पच्चखाणी जीव है ।

(२) देश मूलगुण पचखाणी जीव असख्यात गुण

(३) अपचखांणी जीव असख्यात गुणा

जेसे सर्व मूल गुण पचखाणकि अल्पा बहुत्व कही है इसी माफीक सर्व उत्तर गुण देश उत्तर गुण पचखाणीकि भी अल्पा बहुत्व कहना।

(प्र०) हे भगवान्। जीवों सयति है ? असयति है ? सयता सयति है ? नो सयति नो असयति नो सयता असयति है ?

(उ०) जीवों चारों प्रकारके होते हैं। कारण नरकादि २२ दडक असयति है तीर्यंच पाचेन्द्रिय असयति, और सयतासयति है तथा मनुष्य असयति, सयति, सयतासयति, तीन प्रकारके है और सिद्ध भगवान नो सयति नो असयति, नो सयतासयति इस तीन मार्गोंमे नही किन्तु नो सयति, नो असयति, नो सयता-सयति है इसी वास्ते जीवों च्यारों प्रकारके है।

समुच्चय जीवोंकि अल्पा० (१)

(१) स्तोक सयति जीव।

(२) सयतासयति असख्यात गुणा

(३) नो सयति नो असयति नो सयतासयति अनन्तगुणा

(४) असयति जीव अनन्त गुणा

तीर्यंच पाचेन्द्रियकि अल्पा० (२)

(१) स्तोक सयतासयति

श्री फलोधी नगरमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजका चतुर्मासामें सुपनोंकी आवादानीका हिसाब।

(१) सवत् १९७७का

२०३९॥=) जमा सुपनोंकि आवादानी

६९१) पहला पर्युषणमें
१२०५) दूसरे पर्युषणमें
१७५) भगवतीसूत्रकि पुजाका १२५)के अन्दरसे
४।= शीघ्रबोध भाग ८ वा कि बचत
२०३९॥=)

२०३९॥=) खरच पुस्तकोंकि छपाईका

१७७।) नन्दीसूत्र १०००
१०३॥) अमे साधु शामाटे १०००
३५९।) सात पुष्पोंका गुच्छा १०००
९१॥) शीघ्रबोध भाग १० वा १०००
२७३॥) „ „ ११ वा १०००
२७३॥) „ „ १२ वा १०००
९११) „ „ १३ १४वा १०००
२३६।) द्रव्यानुयोग प्र० प्र १५००
१३।=) शीघ्रबोध भाग ९ वा की लागत
२०३९॥=)

(३) असयति जीव असंख्यात गुणा

मनुष्यमें अल्पाबहुत्व (३)

(१) स्तोक सयति जीवों

(२) सयता सयति जीव संख्यात गुणा

(३) असयति जीव असंख्यात गुणा

जैसे सयतिके च्यार पदोंसे पृच्छाकर अल्पाबहुत्व कहि है इसी माफीक पचखाणीकि भी कहेना । अल्पाबहुत्व सयुक्त इति ।

सेव भंते सेव भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नम्बर १३

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशो ६

(आयुष्य कर्म)

(प्र) हे भगवान् । कोइ जीव नरकमें उत्पन्न होनेवाला है वह जीव यहापर रहा हुवा नरकका आयुष्य बान्धता है ? नरकमें उत्पन्न होते समय नरकका आयुष्य बान्धता है ? नरकमें उत्पन्न होनेके बाद नरकका आयुष्य बान्धता है ?

(उ) नरकमें उत्पन्न होनेवाला जीव यहा मनुष्य तथा तीर्यचमें रहा हुवा नरकका आयुष्य बान्ध लेता है (कारण आयुष्य बान्धीयों विनों जीव पहलेके शरीरको नहीं छोडता है) नरकमें उत्पन्न होनेके बाद आयुष्य नहीं बान्धता है । इसी माफीक यावत् वैमानिक तक चौवीस दंडक समझना । सर्व जीव परभवका आयुष्य बन्ध लेनेके बाद ही परभवमें गमन करते है ।

अल्पा बहुत्व

(१) स्तोक जीव कामी

(२) नो कामी नो भोगी जीव अनन्त गुण कारण भव केवली और सिद्ध केवली यह नो कामी नो भोगी है ।

(३) भोगी जीव अनन्त गुणा इस्मे एकेन्द्रिय जीव सेमल है।

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम् ।

(प्र) हे भगवान् । यहा मनुष्य तीर्यंचमें रहा जीव नरकका आयुष्य बान्धा हुवा है वह जीव नरकका आयुष्य क्या यहापर वेदता है ? नरकमें उत्पन्न समय वेदता है ? नरकमें उत्पन्न होनेके बाद नरकका आयुष्य वेदता है ?

(उ) यहापर नरकका आयुष्य नहीं वेदता है कारण जहा तक मनुष्य तीर्यंचके शरीरको नहीं छोडा है वहा तक तों यहाका ही आयुष्यकों वेदेगा और जब यहाके शरीरकों छोड देगा तब नरकमें उत्पन्न समय तथा नरकमें उत्पन्न होनेके बाद नरकका ही आयुष्यकों वेदेगा अर्थात् नरकमें जाते समय यहाका शरीर छोड एकाद समयकि विग्रह गति भी करेगा तों नरकका ही आयुष्यको वेदगा । एव २४ दडक ।

(प्र) हे भगवान् । जो जीव नरकमें उत्पन्न होनेवाला है उसकों यहापर महावेदना होती है ? नरकमें उत्पन्न समय महावेदना होती हैं ? नरकमें उत्पन्न होनेके बादमें महावेदना होती है ?

(उ) यहापर तथा उत्पन्न होते समय स्यात् महावेदना स्यात् अल्प वेदना परन्तु उत्पन्न होनेके बाद तो एकान्त महावेदना अर्थात् असाता वेदनाकों ही वेदते है कदाच साता । तीर्थंकरोंके कल्याणकादिमें स्वल्प समय साता होती है । और तेरहा (१३) दडक देवतावोंके भी इसी माफीक परन्तु उत्पन्न होनेके बाद एकान्त साता वेदना वेदते है । कदाच देवागना तथा रत्न अपहरण समय असाताको भी वेदते है ।

श्री फलोधी नगरमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजका चतुर्मासामें सुपनोंकी आवादानीका हिसाब।

(१) संवत १९७७का

ज

२०१९|||=) जमा सुपनोंकि आवादानी

६९९।) पहला पर्युषणमें

१२०५।) दूसरे पर्युषणमें

१७५) भगवतीसूत्रकि पूजाका १२४)के अन्दरसे

४।= शीघ्रबोध भाग ८ वा कि बचत

२०३९|||=)

उ

१०३९|||=) न्नरच पुस्तकोंकि छपाईका

१७७।) नन्दीसूत्र १०००

१०३|||) अमे साधु शामाटे १०००

३५९।) सात पुष्पोंका गुच्छा १०००

९१|||) शीघ्रबोध भाग १० वा १०००

२७३||) ,, ,, ११ वा १०००

२७३||) ,, ,, १२ वा १०००

९११) ,, ,, १३ १४वां १०००

२३१।) द्रव्यानुयोग प्र० प्र १९००

१२ भाग ९ वां की लागत

दडक उत्पन्न होनेके बाद स्यात साता, स्यात असाता वेदते है ।

(प्र॰] हे भगवान्! जीव परमवका आयुष्य बान्धते है वह क्या जानते हुवे बान्धते है या अजानते हुवे बान्धते है ?

(उ) जीव पर भवका आयुष्य बान्धते है वह सब अजानपणेसे ही बान्धते है कारण आयुष्य कर्म छटे गुणस्थान तक बान्धता है और छटे गुणस्थानके जीव छद्‌मस्थ होते है । छद्‌मस्थोंका एसा उपयोग नहीं होता है कि इस टममें हमारा आयुष्य बन्ध राहा है इस वास्ते सर्व जीव आयुष्य बान्धते है वह विने जाने ही बाघते है । एव २४ दडक यावत् वैमानीक देव ।

(प्र॰) हे भगवान्! जीव कर्कश वेदना कीस कारणसे बान्धते है ?

(उ॰) प्रणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य एव अठारा पाप स्थान सेवन करनेसे जीव कर्कश वेदनी कर्म बान्धते है । वह वेदना उदय विपाक रस देती है तब स्कन्धकाचार्यके शिष्योंकों घाणीमें पीले गये स्कन्धक मुनिकि खाल उत्तारी गइ ऐसी असह्य वेदना होती है एव यावत् २४ दडक समझना ।

(प्र॰) हे भगवान्! जीव अकर्कश वेदना केसे बाघते है ?

(उ॰) अठारा पाप स्थानसे निवृति होनेसे अकर्कश वेदना बाघते है जिसका उदय विपाक रस उदयमें होते है तब मरू देवीके माफीक परम सात वेदनाको भोगवते हुवे काल निर्गमन करे एव अकर्कश वेदना एक मनुष्यके ही बाघती है शेष २३ दडकोमें नहीं ।

अल्पा बहुत्व

(१) स्तोक जीव कामी

(२) नो कामी नो भोगी जीव अनन्त गुण कारण भव केवली और सिद्ध केवली यह नो कामी नो भोगी हैं ।

(३) भोगी जीव अनन्त गुणा इस्में एकेन्द्रिय जीव सेमल हैं।

सेव भते सेव भते तमेव सचम् ।

(२) संवत् १९७८का

ज

२०७१) जमा पुस्तकोंकि आवादानी

उ

२०७१) खरच पुस्तकोंकि छपाई

१५७५) ज्ञानविलास नं० १००० जिसमे पचवीस पुस्तकोंका संग्रह है।

१००) शीघ्रबोध भाग १३-२४-२५ वां

२०७२)

श्री संघके सेवक–

जोरावरमल वैद-फलोधि।